केरल सिंह

केरल सिंह

मलयालम् भाषाका ऐतिहासिक उपन्यास

मूल लेखक

सरदार का० माधव पणिक्कर

अनुवादक

श्रीमती रत्नमयीदेवी दीक्षित

श्री सीताचरण दीक्षित

साहित्य अकादेमी की ओर से

पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
की ओर से
पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण
१९५६
मूल्य तीन रुपये

उद्योगशाला प्रेस किंग्सवे, दिल्ली में मुद्रित

हिन्दी-पाठकों से

मेरे लिए सन्तोषकी बात है कि मलयालम्‌से हिन्दीमें अनूदित किया जाने वाला सबसे पहला उपन्यास 'केरलसिंहम्' है, जो अब 'केरलसिंह'-के नामसे प्रकाशित हो रहा है.

इस उपन्यासका विषय है—विदेशी आधिपत्यसे अपनी स्वतन्त्रता-की रक्षाके लिए केरलीय जनताका वीरतापूर्ण संघर्ष. इस संघर्षके नेता पषश्शिराजा केरलवर्मा थे. वे वीरताके साक्षात् अवतार और अत्यन्त स्मरणीय पुरुष थे. विद्वान्, कवि और योद्धा—केरलवर्माने पन्द्रह वर्ष-से अधिक हैदरअली और टीपू सुलतानसे लोहा लिया था और जब टीपू-की सेनाएँ वापस चली गई और अंग्रेजोंने केरलपर अपना सीधा शासन स्थापित करनेका प्रयत्न किया तब उन्होंने अंग्रेजोंके विरुद्ध राष्ट्रीय प्रतिरोधका मोर्चा संगठित किया. इसमें वे इतने सफल हुए कि अंग्रेज अपने बड़े-से-बड़े प्रयत्नोंके बाद भी कोई प्रगति नहीं कर सके और उनका शासन उनके समुद्र-तटवर्ती दुर्गोंतक ही सीमित रहा. उनके विरुद्ध मोर्चे बाँधने वाला कोई छोटा-मोटा व्यक्ति नहीं, महा प्रतिभाशाली आर्थर वेलेस्ली था, जो इतिहासमें 'नैपोलियनका विजेता, ड्यूक आफ् वेलिंगटन' के नामसे प्रख्यात हुआ. उसे प्रचुर सैनिक साधन तो उप-

लब्ध थे ही, अपने भाई शक्तिशाली गवर्नर-जनरल लार्ड वेलेस्लीका पूर्ण समर्थन भी प्राप्त था. परन्तु असाई और वाटरलूके विजेताको केरलवर्माके रूपमें सेरको सवा-सेर मिला था. उसने अपनी सारी युक्तियाँ लड़ाई, परन्तु जब मलाबार छोड़ा उस समयतक केरलवर्माको पराजित नहीं किया जा सका था और वहाँ तब भी विद्रोह फैला हुआ था.

इस सराहनापूर्ण कथाके अनैतिहासिक और अतिरंजित समझे जानेकी सम्भावना थी, इसलिए मैंने मूल पुस्तकमें परिशिष्टके रूपमें 'वेलिंगटनके खरीतों' के कुछ ऐसे उद्धरण दे देनेकी सावधानी बरती थी, जिनसे पर्पशिराजाके विरुद्धकी गई कार्रवाइयोंका पता चलता है.

इस कथाका एक पहलू और भी है, जो इतिहासकारोंके लिए दिलचस्पीका होगा. यह पहलू है उस शिक्षाका, जो वेलेस्लीने केरलवर्माके विरुद्ध अपनी असफल कार्रवाइयोंसे ली और जिसका उपयोग उसने बहुत सफलताके साथ नैपोलियनके विरुद्ध स्पेनके युद्धमें किया. केवल युद्ध-प्रणालीको कुछ अंशोंमें बदल दिया गया—केरलवर्माके छापामार युद्धकी तरकीबोंका ही वेलेस्लीने मार्शल सोल्ट और उसकी सेनाओंके विरुद्ध प्रयोग किया था. वेलिंगटनने वाटरलूमें जो कीर्ति प्राप्त की उसकी प्रशिक्षण-भूमि केरल ही था.

केरलवर्माके संघर्षके एक और पहलू पर भी जोर देनेकी आवश्यकता है. वे एक सच्चे देशभक्त थे. उन्होंने अपनी प्रजाकी स्वतन्त्रताके लिए संघर्ष किया, न कि अपने राज्यको पुनः प्रतिष्ठित करनेके लिए. वे कोई राज्य-च्युत राजा नहीं थे, जिन्होंने अपने अधिकारोंके लिए युद्ध किया हो. वे सच्चे अर्थोंमें जन-आन्दोलनके नेता—शिवाजी और प्रताप के केरलीय प्रतिरूप थे.

कविके रूपमें उन्हें चार 'आट्टकथाओं (कथकलि-काव्यों) की रचनाका श्रेय प्राप्त है. यह स्मरणीय है कि उनमेंसे प्रत्येकका विषय पाण्डवोंका वनवास-जीवन है, जिससे मलाबारके वनोंमे उनके अपने ही वासकी झलक मिलती है. ये 'आट्टकथाएँ' साधारणतः 'कोट्टयं कृतियों'

के नामसे प्रसिद्ध हैं और इनकी गणना सर्वोत्तम कथकलि-गीतिनाट्यों-में की जाती है. अब भी ये साहित्य तथा नाट्य-काव्य दोनोंके रूपमें अत्यन्त लोकप्रिय हैं. कहा जाता है कि केरलवर्मा स्वयं एक श्रेष्ठ अभि-नेता थे और अपनी ही 'आट्टकथाओं' के अनेक वीर पात्रोंका अभिनय किया करते थे.

मैंने 'केरलसिंहम्' में उन्नीसवीं शताब्दीके प्रारम्भिक कालके केर-लीय सामाजिक जीवनके चित्रणका भी प्रयत्न किया है. लगभग ५० वर्षोंके विध्वंसकारी युद्धोंके परिणामस्वरूप उस समयका समाज प्रायः नष्ट-भ्रष्ट हो गया था. जिन सामाजिक बन्धनोंसे केरलीय जनता एकता-के सूत्रमें बँधी थी वे शिथिल पड गए थे और जिन प्रदेशोंसे टीपूकी सेनाएँ खदेड़ी गई थीं उनमें अराजकताकी-सी स्थिति फैली हुई थी. इसी अवस्थाका प्रतिबिम्ब इस उपन्याससे उपलब्ध होता है.

इस कृतिके हिंदी-पाठकोंसे मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि इसमें जिस समाज और जिन आचार-व्यवहारोंका चित्रण किया गया है, वे सम्भव है, उन्हें विलक्षण और अपरिचित प्रतीत हों. मलाबारमें कौटु-म्बिक सम्बन्धोंका आधार प्रधानतः मातृ-सत्ता है. दूसरोंके लिए इस प्रणालीको समझना सरल नहीं है. केरलके सामाजिक आचार शेष भारतके सामाजिक आचारोंसे सदा भिन्न रहे हैं और इसीलिए इस उपन्यासकी बहुत-सी बातें अनोखी मालूम हो सकती हैं. परन्तु उन्हें एक अपरिचित समाजकी प्रतिच्छविके रूपमें देखना चाहिए और ऐसे लोगोंके आचार-व्यवहारके रूपमें समझना चाहिए, जो अपनी सामाजिक परम्पराओंको अधिक-से-अधिक मूल्यवान मानते हैं.

जहाँतक 'केरलसिंहम्' के हिंदी-अनुवादका संबंध है, कहना न होगा कि साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित यह अनुवाद ही अधिकृत एवं प्रमाणित है.

नई दिल्ली **—का० मा० पणिक्कर**

प्रस्तावना

येषां वंशे समजनि हरिश्चन्द्र नामा नरेन्द्रः
प्रख्यापति: पतग ! यदुपज्ञं च कौमारिलानां ।
युद्धे येषामहित हतये चण्डिका सन्निधत्ते
तेषामेषां स्तुतिषु न भवेत् कस्य वक्त्रं पवित्रं ॥

कोट्टयंके राजाओंकी प्रशंसामें महापण्डित उद्दण्ड शास्त्रीने उपर्युक्त उद्गार व्यक्त किये थे. "जिनके वंशमें राजा हरिश्चन्द्रने जन्म लिया, जिन्होंने केरलमें कौमारिल आदि मीमांसा-शास्त्रोंका प्रचार किया, जिनके शत्रुओंको नष्ट करनेके लिए श्रीचण्डिका देवी स्वयं युद्ध-भूमिमें अवतरित होती हैं, उन राजाओंकी स्तुति करनेसे किसका मुख पवित्र न होगा?"

यद्यपि यह श्लोक पुरळी-राजाओंकी प्रशस्तिमें लिखा गया है, फिर भी केरलवर्मा पष्शि राजाके सम्बन्धमें अक्षरशः सत्य है. सत्यसंधतामें वे हरिश्चन्द्रके समान थे. पाण्डित्यके विषयमें विशेष कहनेकी आवश्यकता ही नहीं है, क्योंकि यह उनकी कृतियों द्वारा, जिनका आज भी केरलीय जनता अभिनन्दन करती है, सुव्यक्त है. उनकी युद्ध-कुशलताके विषयमें इतना ही कहना पर्याप्त है कि उन्होंने उस कर्नल आर्थर वेलेस्लीको भी पराजयका स्वाद चखाया, जिसने लोकनेता नेपोलियनको हराकर ड्यूक

आफ् वेलिंगटनकी उपाधि प्राप्त की थी. इसलिए यह मानकर कि केर-लीयोंके गौरव-स्तम्भ केरल वर्मा पष्शि राजाके पवित्र इतिहासका वर्णन करनेसे किसीका भी मुख पवित्र हो जायगा, उद्दण्ड शास्त्रीका अनुकरण करनेमें संकोचकी आवश्यकता नहीं है.

इतिहास स्वीकार करता है कि पष्शि राजाके साथ युद्ध करने-में जो अनुभव मिला उसीके बलपर वेलेस्ली नेपोलियनको हरा सका. उसने पष्शिराजाके साथ युद्ध करनेके लिए पहाड़ी प्रदेशोंमें छोटे-छोटे दुर्ग बनाकर सारे देशपर अधिकार कर लेनेका प्रयत्न किया था. युद्धके इस तरीकेको अंग्रेजीमें 'ब्लाक हाउस सिस्टम्' कहते हैं. स्पेनमें उसने इसीका अवलम्बन करके नेपोलियनको हराया था.

यह उपन्यास पष्शि राजा और वेलेस्लीके बीच हुए युद्धके आधार-पर लिखा गया है. इसलिए कहनेकी आवश्यकता नहीं कि इसका आधार न तो उस समयके केरलका इतिहास है और न राजा केरल वर्माकी जीवनी ही है. केरल वर्माके जीवनमें जो-कुछ अति विशिष्ट प्रतीत हुआ, उसके एक अंशका संकेत-मात्र इसमें किया गया है.

मलयालम् भाषामें केरलवर्माकी जीवनीका न होना केरलीयोंके लिए अभिमानकी बात नहीं है. देशके स्वातन्त्र्यकी रक्षाके लिए आक्रमणकारी शक्तियोंके साथ युद्ध करते हुए बिना हार माने वीर-स्वर्ग प्राप्त करने वाले इस महान् वीरके समान अन्य पुरुष समस्त भारतके इतिहासमें विरले ही हैं. महाराणा प्रताप, छत्रसाल बुन्देले आदिका ही स्थान केरल वर्मा पष्शि राजाका भी है. परन्तु केरलीय जनताने उन्हें भुला-सा दिया है. साहित्य और इतिहास दोनोंके प्रकाण्ड पण्डित श्री टी० के० कृष्ण मेनवनने इनके बारेमें कहा है—"१७९२ में जब अंग्रेजोंने केरलमें शासन प्रारम्भ किया तबसे उनके और कोट्टयंके तत्कालीन राजा 'वपश्शि' (?) केरलवर्माके बीच लड़ाई शुरू हुई"—(कोकिल संदेश व्याख्या). अर्थात् हमने उन्हें इतना भुला दिया कि 'पष्शि' बदलकर 'वपश्शि' बन गया !

कप्पन कृष्ण मेनवनका 'केरलवर्मा पष्शि राजा' नामक गद्य-नाटक ही इनके संबंधमें रचित पहला मलयाल-ग्रंथ है. यह वीररस-प्रधान नाटक महाराजाके स्वभाव-माहात्म्य, आदर्श-महत्त्व तथा वीर्य-पराक्रमको पर्याप्त रूपमें व्यक्त करता है. श्री के० सुकुमारन् बी० ए० ने 'जन-रंजिनी' नामक मासिक पत्रिकामें महाराजाकी जीवनीपर 'पष्शि राजा' शीर्षकसे दो लेख प्रकाशित कराये थे. ये लेख मुख्यत: मिस्टर लोगनकी 'मलाबार मैन्युएल' के आधारपर लिखे गए थे. फिर भी इनसे महाराजा-के जीवनकी मुख्य घटनाओंकी जानकारी मिलती है. इस 'लोगन मैन्युएल' और वैलिंगटनके खरीतों (वेलिंगटन-डिसपैचेज) में पष्शि राजाके संबंधमें बहुत-सी जानकारी उपलब्ध है.

'वैलिंगटन डिसपैचेज' नामक पुस्तकके पष्शि राजा-संबंधी कुछ अंश इस पुस्तकके अन्तमें परिशिष्टके रूपमें दे दिये गए हैं. ग्रंथकर्त्ता साधारणत: नायकके गुणोंको स्पष्ट करनेके लिए प्रतिनायकपर दोषा-रोपण किया करते हैं. परिशिष्टसे स्पष्ट हो जायगा कि मैंने इस मार्गका अवलम्बन नहीं किया है.

श्री टी० के० कृष्ण मेनवनने जिसको 'बपदिश' बताया है उस 'पष्शि' नामके बारेमें भी दो शब्द कह देना आवश्यक है. केरलवर्माके पष्शि राजा नामसे विख्यात होनेका कारण उनका 'पष्शि-राज-मंदिर' में रहना है. कोट्टयं राज्यके बड़े राजा ये कभी नहीं थे. कोट्टयं-राजवंशकी एक शाखा पष्शिमें रहती थी. पष्शि दुर्ग और राज-मंदिर 'माट्टन्नूर' से चार मील दक्षिण 'कूत्तुपरम्मु' के मार्गपर है. आज जो बड़ा मार्ग बना है वह उनके महलके बीचसे जाता है. उस स्थानसे लग-भग एक फर्लांग दूर खेतके उस पार एक राजमहल आज भी मौजूद है. उसमें गोद ली हुई एक रानी, उनके पुत्र केरलवर्मा राजा और दो बालक आज भी रहते हैं.

कोट्टयं राज्यका सीमा-सरहद-सम्बन्धी तथा अन्य आवश्यक ज्ञान

प्राप्त करानेमें जिन्होंने मेरी सहायताकी उन मित्रवर श्री कूटाळि यजमानन् कुञ्ञिक्कम्मारन् नम्पियारके प्रति मै अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ. पष्शि राज-मंदिर और कैतेरीमें उनके अतिथिके रूपमें मैं रह सका था. उन्हीं साहित्य-मर्मज्ञ, समाजाभिमानी, नम्पियार महानुभावको अपने स्नेह तथा आदरके उपलक्ष्यमें यह ग्रंथ समर्पित करता हूँ.

—का० माधव पणिक्कर

पहला अध्याय

उन दिनों डाकुओं, कंपनीवालों* और राज्य-भ्रष्ट राजाओंके उपद्रवोंके कारण कोट्टयंसे पानूर जानेवाला रास्ता बहुत कम चलता था. यदि नितांत अनिवार्य ही हो जाता तो भी बड़े-बड़े लोग सशस्त्र अनुचरोंके बिना उस मार्गसे नहीं निकलते थे. मार्गके दोनों पार्श्वोंपर फैली हुई भूमि स्वामियोंकी लापरवाहीके कारण चोर-डाकुओंका वास-स्थान बन गई थी. कम्पनीवालों और कोट्टयंके राजाके बीच आये दिनके संघर्षोंके कारण यह प्रदेश निवासके योग्य ही नहीं रह गया था.

हमारी कहानी जिस दिनसे प्रारंभ होती है उस दिन तीसरे पहर एक अनागत-श्मश्रु युवा लगभग अठारह वर्षकी युवतीके साथ उस मार्गसे चला जा रहा था. दोनों इतने अधिक श्रान्त थे कि एक पग भी आगे बढ़ना कठिन हो रहा था. युवाकी कमरमें बँधी कटार और हाथकी तलवार साफ बता रही थी कि वह नायर† है. उसका डील-डौल उमरके हिसाबसे कहीं अधिक विकसित था. सत्रह वर्षका वह युवक आगे-पीछे देखता हुआ सावधान होकर चल रहा था और पत्ते हिलनेकी आवाजसे भी चौकन्ना हो उठता था.

---

*ईस्ट इण्डिया कम्पनी.

†केरलीय क्षत्रिय, जो बिना कटार या तलवारके घरसे बाहर नहीं निकलते थे और थे वीरताके लिए प्रसिद्ध.

युवती उस समयकी वेश-भूषाके अनुसार एक वस्त्र पहने और दूसरा ओढ़े थी. उसके चेहरेपर आत्यंतिक दुःखकी छाया-सी पड़ी हुई थी. फिर भी, उसपर प्रथम दृष्टि पड़ते ही किसीके लिए यह समझना कठिन नहीं था कि वह कुलीन घरानेकी है और केरल रमणियोंके सौन्दर्यका सजीव उदाहरण है.

वे आपसमें बिना कोई बातचीत किये चुपचाप चले जा रहे थे. थोड़ी देरके बाद युवतीने वेदनामय स्वरमें कहा—"अब तो एक पग भी चलना दूभर है. भूख और प्याससे मैं विवश हो गई हूँ.

युवक—अब तो मुश्किलसे दो मील ही रास्ता शेष रहा है. देरी करेंगे तो रात हो जायगी. इस मार्गमें कहीं कोई घर भी तो नहीं है. हाय, देवी श्रीपोर्कली !* मैं क्या करूँ? दीदी, तुम मेरा हाथ पकड़कर चलो.

युवती—मुझसे अब कुछ नहीं हो सकेगा. पैर उठाकर आगे रखनेकी भी शक्ति अब मुझमें नहीं है. मैं एक ओर बैठ जाती हूँ. तुम इधर-उधर देखो, अगर कोई मदद मिल सके तो ठीक है.

युवक—यह कैसे होगा ? तुमको इस विजन पथमें अकेली छोड़कर मैं कैसे जाऊँ? तुम अकेली यहाँ कैसे बैठी रहोगी, दीदी ? अब जो होना हो सो हो, हम थोड़ी देर यहीं आराम करेंगे. भगवती ही कुछ रास्ता दिखायँगी.

दोनों मार्गके एक ओर एक वृक्षकी छायामें बैठ गये. भूख और प्याससे व्याकुल और दिन-भर चलनेसे थकी हुई वह युवती शीघ्र ही निद्राके वशीभूत हो गई.

युवक किंकर्तव्यविमूढ़-सा होकर सोचमें पड़ गया. समय बीता जा रहा था. गन्तव्य स्थान अब भी तीन मील दूर था, यह मार्ग दिनमें ही विपत्तिका राज-पथ बना रहता था, फिर रातका तो कहना ही क्या ? लोगोंको पकड़कर गुलाम बनाकर बेच देनेकी प्रथा उन दिनों भी प्रचलित थी. कुंञिक्कोय नामके एक प्रबल मुसलमानके अनुचर चारों ओर घूमते

*पप्शि राज-वंशकी कुलदेवी, रण-चंडिका. पोर माने युद्ध, कलि माने आवेश.

रहते थे और जिन्हें भी वे विजन प्रदेश अथवा रात्रिमें इक्का-दुक्का पा जाते उन्हें पकड़ ले जाते थे. यही एक चिंता थी, जो युवकको अधिक व्याकुल कर रही थी. वह उपाय सोच ही रहा था कि दूरसे दो पुरुष आते दिखलाई दिये. वे दोनों सशस्त्र थे और बाह्य भाव-भंगी तथा चाल-ढालसे कोई अफसर मालूम होते थे. यह अनुमान करना भी कठिन नहीं था कि उनमेंसे एक स्वामी और दूसरा सेवक है. युवक पहले तो कुछ डरा, किन्तु बादमें दृढ़ताके साथ वह अपनी तलवारकी मूठ थामकर उनके निकट आनेकी प्रतीक्षा करने लगा.

पथिकोंने सोई हुई युवती और उसकी रक्षाके हेतु खड़े हुए युवकको देखा. पास पहुँचनेपर उस पथिकने, जो हाथमें ढाल तथा तलवार लिये और कमरमें रिवाल्वर कसे आगे-आगे चल रहा था, युवकके सामने आकर कहा—"मालूम होता है आप किसी विपत्तिमें फँस गए हैं. यदि हम कोई सहायता कर सकते हों तो बताइए !"

युवक—आज सुबहसे ही हम लोग पैदल चल रहे हैं. मेरी यह बहन भूख और प्याससे पीड़ित होकर अब और चलनेमें असमर्थ हो गई है. इसीलिए हम यहाँ बैठ गये हैं. दिन बीता जारहा है. श्रीपोर्कली भगवती- की ही शरण है.

श्रीपोर्कली भगवतीका नाम सुनते ही दोनों आगन्तुकोंके मुख आंतरिक भक्तिसे उज्ज्वल हो उठे. प्रमुख व्यक्तिने कहा—"कोरा,* पासके बागमें जाकर चार कच्चे नारियल तोड़ ला !"

कोरा—स्वामी, किसी अनजान व्यक्ति के बागमें जाकर नारियल तोड़ूँ, और बादमें लड़ाई-झगड़ा हो जाय तो······?

स्वामी—यह सारी भूमि तम्पुरान † की है—जल्दी जा और

*कोरन् नामका सम्बोधन. कोरन-कुमारन्-कुमार.

†राज-वंशके सब पुरुषोंको 'तम्पुरान' कहा जाता है, यथा बड़े तंपुरान, छोटे तम्पुरान आदि. इसी प्रकार राज-वंशकी स्त्रियोंको 'तम्पुराटी' कहा जाता है. यहाँ तम्पुरान शब्दका उपयोग महाराजाके अर्थमें किया गया है.

श्रीपोर्कली भगवतीके अभिषेकके लिए माँगकर ले आ.

इस उत्तरके बाद अनुचर निश्शंक होकर बागके अहातेमें गया और नारियल तोड़कर ले आया. फिर उसने कमरसे चाकू निकालकर दो नारियल साफ करके युवकके हाथोंमें दिये. युवकने मुर्झाई लताके समान पड़ी हुई क्लांत बहनको धीरे-से जगाकर एक नारियल दिया. युवती बिना इधर-उधर देखे नारियल का वह अमृत-तुल्य मधुर जल एक साँसमें ही पी गई. थकावट दूर करनेके लिए भगवान्ने नारियलके जलके समान श्रेष्ठ अन्य पेय मनुष्यको कौन-सा दिया है ? उसकी शीतलता शरीरमें फैलते ही मानो युवतीको नवजीवन प्राप्त हो गया. मन्त्र-शक्ति-के द्वारा मृत्युके मुखसे बच जानेपर जो विस्मय होता है, कुछ वैसे ही विस्मयके साथ उसने चारों ओर दृष्टि फेरकर देखा. सुकुमार होनेपर भी दृढ़ गात्र, सशस्त्र होनेपर भी दयामय, गांभीर्य और पौरुषकी मूर्ति, एक नर-केसरी उसके सामने खड़ा है. अपनी विवशताके स्मरणसे, या इस प्रकार मार्गमें असहाय पड़ जानेकी आत्म-ग्लानिसे अथवा स्त्री-पुरुषके प्रथम दर्शनमें होनेवाले भावोन्मेषसे उसने संकोच तथा लज्जाके वशीभूत होकर अपना सिर नीचे झुका लिया. बादमें उसने ज्यों ही तुरन्त उठनेका प्रयत्न किया तो उसे देखकर पथिकने कहा—"थोड़ी देर और विश्राम कीजिए. अँधेरा होनेके पूर्व ही मैं आपको किसी ठीक स्थानपर पहुँचा दूँगा."

इसका उत्तर युवकने दिया—हमें अभी तीन-चार मील और चलना है. अब देर करना ठीक नहीं, हमें जाने दीजिए.

पथिक—ठीक है, परन्तु यह तो बताइए कि आप दोनों अकेले इस रास्तेपर कैसे आ गए ? देखनेसे तो यही लगता है कि आप लोग अनु-चरोंके साथ पालकीपर यात्रा करनेके अभ्यासी हैं.

युवकने इसके उत्तरमें एक दुःखभरी कहानी सुनाई. उसने कहा—"गत रात्रि कंडेरीमें* कुछ सशस्त्र लोगोंने हमारे घरपर आक्रमण किया.

*स्थान विशेष.

सामना करनेवाले दो बड़े भाइयोंको मार डाला. घरमें आग लगा दी. हम दोनों भाई-बहन जलते हुए घरसे भाग निकले······"

पथिकका मुँह क्रोधसे लाल हो उठा. उसने कहा—"कोट्टयंके इतने निकट ही लोग उपद्रवी बन गए ? खैर ! कुछ पता है, यह राक्षसी कृत्य किसने किया ?"

युवक—कुरुम्ब्रनाट्टुके राजाके लोग हैं, ऐसा सुना है. वे कर उगाहनेके लिए कंडेरीमें आये थे. मेरे बड़े भैयाने अन्नदाताका पक्ष लिया, इसलिए शायद उनके बीच कुछ कहा-सुनी हो गई. मेरा अनुमान है, यही एक कारण है.

"ऐसा भी कहते सुना है कि कैतेरी* अम्पु नायरकी यह करतूत है"—युवतीने कहा.

"दीदी, बेकार क्यों तम्पुरानके लोगोंको भला-बुरा कहती हो ? अम्पु यजमान† कभी ऐसा नहीं कर सकते."

"मैंने तो मौसीके मुखसे सुना था."

"मौसी तो कहेंगी ही. वे कुरुम्ब्रनाट्टुके राजाकी पक्षपातिनी जो हैं. अम्पु यजमानको हमसे कोई विरोध नहीं है, वे ऐसा नहीं कर सकते." युवकने कहा.

पथिक—क्या आप लोग कैतेरी अम्पुको जानते हैं ? कैसे कह सकते हैं कि उसीने यह सब नहीं करवाया ?

युवकने कहा—कभी नहीं. बड़े दादा कहा करते थे कि अम्पु यजमान तम्पुरानके दाहिने हाथ हैं. और अम्पु यजमानको दोष देनेवाली मेरी यह दीदी और हम सब तम्पुरानके पक्षमें हैं.

---

*घरका नाम. प्रथाके अनुसार, केरलमें प्रत्येक व्यक्तिके नामके पूर्व उसके घरका नाम जोड़ दिया जाता है. आजकल यह प्रथा कम हो गई है. उदाहरण—कैतेरी अम्पु नायर, चन्द्रोत्तु नम्पियार आदि.

†यजमान, यजमानन्—श्रीमान्. स्वामीके लिए सेव्य-सेवक-भावका आदर-सूचक शब्द.

युवती—मैंने जो सुना था सो कह दिया, बस.

"ठीक है किन्तु अम्पु आग लगानेवाला न हो, सो बात नहीं है. कितने ही घरोंको उसने जलवा डाला है. परन्तु यह काम उसका नहीं है. वह तो उस देशमें था ही नहीं." पथिकने कहा.

"क्या आप अम्पु यजमानको जानते हैं ?" युवकने पूछा.

"हाँ, थोड़ा-बहुत जानता हूँ."

"दादाके मुखसे सुना है कि इतना वीर और समर्थ पुरुष कोई है ही नहीं. मेरी इच्छा है कि उनके नेतृत्वमें युद्ध करनेका सुअवसर पाऊँ. क्या आप मुझे उनके पास पहुँचा सकते हैं ?" युवकने भक्ति-गद्‌गद स्वरमें कहा.

पथिकने एक मुस्कराहटके साथ उत्तर दिया—"तुम तो अभी बच्चे हो. तुम अभी अम्पुके साथ पर्वतों और वनोंमें भटक-भटककर कैसे युद्ध करोगे ? तुम्हारा शस्त्राभ्यास भी पूरा नहीं हुआ. और, अब लड़ाई पहले-जैसी रही नहीं. ढाल और तलवार लेकर पंक्ति बनाकर खड़े हो जानेसे काम नहीं चलता. वनमें, पहाड़ोंमें, खंदकोंमें छिपकर लड़ना पड़ता है. आहार और निद्राका भी कोई ठिकाना नहीं रहता. यह सब तुमसे हो सकेगा क्या ?"

युवकने कहा—इन सब बातोंकी मुझे चिन्ता नहीं है. मेरा अभ्यास पूर्ण हो गया है. तम्पुरान और यजमान जहाँ हैं, क्या मैं वहाँ नहीं जा सकता ?

युवतीने अपने भाईकी बातपर कहा—"बहुत ठीक ! मुझे भी अनाथ छोड़कर जानेकी उतावली हो गई ?"

युवक—दीदी, रुष्ट न हो. तम्पुरानकी सेवामें जानेके समय यह सब नहीं सोचना चाहिए. कैतेरीमें भी माक्कम् केट्टिलम्मा* और उनकी बहन

*राज-पत्नी. केरलमें राजाकी पत्नी राज-वंशकी नहीं होती थी. राजाओंके विवाह उच्च नायर-कुटुंबोंमें होते थे. रानी (शासिका) बनने-का अधिकार राजाकी बहन अथवा बहनकी सन्तानको होता था. अत-

अकेली ही तो हैं. अम्पु यजमान तो सदा उनके साथ बने नहीं रहते.

युवती—क्षमा करो भैया, मैं अपने इस समयके दुःखके कारण ही ऐसा कह गई. तुमने जो कहा वही ठीक है. तम्पुरान हैं तभी हम हैं. तुम मुझे मामाके पास पहुँचाकर तम्पुरानकी सेवामें चले जाना.

पथिक—तुम दोनों राजी हो गए, अब तुमको अम्पु नायरके पास पहुँचानेकी जिम्मेदारी मैंने ली. अब समय अधिक हो चला है. थकान मिट गई हो तो अब देरी नहीं करनी चाहिए. तुम लोगोंको कहाँ जाना है ?

युवकने कहा—हमारे मामा चन्द्रोत्तु* प्रभुके एक प्रबन्धक हैं. जानेके लिए अब कोई और स्थान न होनेके कारण दीदीको वहीं पहुँचानेका विचार किया है.

"चलो, मेरा रास्ता भी वही है. आजकी रात वहीं बिता लेंगे, नम्पियारसे † मिलना भी है. अच्छा तो चलें." पथिकने कहा और वह सबको साथ लेकर चल पड़ा.

अब कम्मू और उसकी बहनकी चालमें पहलेकी-सी असहाय दीनता नहीं थी. युवकका हृदय पषश्शि‡ राजाके प्रताप और सामर्थ्यको सोच-सोचकर प्रफुल्लित हो रहा था. केरलकी स्वतंत्रताके लिए सर्वस्व त्याग करके, सब प्रकारके क्लेशोंको अंगीकार करके जीवन-भर युद्ध करनेवाले वीर पुरुषके नामके स्मरण-मात्रसे ही उसका हृदय आह्लादसे भर उठता था. उनका नेतृत्व स्वीकार करके, उन्हें ईश्वरके समान आराध्य मानकर, उनकी छत्र-छायामें लड़नेवाले वीर-केसरियोंको एक-

---

एव राजाकी पत्नीको 'केट्टिलम्मा' अथवा 'राज-पत्नी' कहा जाता था. ट्रावनकोरमें 'अम्मच्चि' (अम्माजी) कहा जाता था. अवशिष्ट राजवंशोंमें ये प्रथाएँ आज भी जारी हैं.

*पानूर प्रदेशके एक मुख्य सामन्त. प्रभु—सामन्त, लार्ड.

†राजाकी दी हुई एक पदवी, वंश-परंपरासे चलनेवाला उपनाम.

‡पषश्शि नामक स्थान में रहनेवाले राजा. इस ग्रंथके नायकके लिए विशेष रूपसे प्रयुक्त नाम—पषश्शिराजा.

एक करके मन-ही-मन गिनता हुआ मानो वह आनन्द-सागरमें डुबकियाँ लगाने लगा. वह खुशीसे फूला नहीं समाता था कि उन्हींमेंसे एक वीर होनेका सुअवसर उसे भी शीघ्र मिलनेवाला है. भाइयोंकी मृत्युका, गृह-दाहका, यहाँ तक कि अपना और अपनी एक-मात्र सहोदराकी अनाथा-वस्थाका भी उसे स्मरण नहीं रहा. एक-मात्र वीर्य और पराक्रम दिखाकर कीर्ति-संपादन करनेका पंथ ही उसे अपने सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा था.

युवतीका ध्यान दूसरी तरफ था. मार्गमें असहाय पड़े-पड़े मर जानेसे, या किसीके हाथ में पड़कर निकृष्ट जीवन बितानेसे मेरी और मेरे भाईकी रक्षा करनेवाला यह महानुभाव कौन होगा ? उसके कसरती सुदृढ़ देह-गठन, भाव-गम्भीरता और मुखपर दमकते हुए तेजको देखकर यह अनुमान करना कठिन नहीं था कि वह कोई असाधारण शक्तिशाली पुरुष है. यह जानकर कि वह अम्पु नायरका मित्र है, उसने यह भी अनुमान कर लिया कि वह तम्पुरानके पक्षका है. चन्द्रोत्तु गृहपतिसे* मिलने जानेकी बातसे निश्चित हो गया कि वह अभिजात वर्गका है. उसके चेहरेको देखकर अपने अनुमानको परख लेनेके विचारसे जब उसने फिर एक बार उसकी ओर देखा तो मालूम हुआ कि वह स्वयं भी कुतूहलके साथ उसकी ओर देख रहा है. आँखें मिलते ही उसने शीघ्रतापूर्वक अपनी आँखें हटाकर भाईसे कहा—"कम्मू, कल तुम मुझे छोड़कर इनके साथ चले जाओगे, तो मैं क्या करूँगी ? हमेशाके लिए मामीके साथ रहना उचित होगा क्या ?"

कम्मू—दीदी, इतनी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं है. यदि मैं अम्पु यजमानके आश्रयमें रह गया, तो क्या वे मदद नहीं करेंगे ? इस देशमें उनके मित्र और विश्वस्तजन बहुत हैं. यदि मैं सच्चे हृदयसे उनकी सेवा करूँगा तो वे हमको कभी नहीं त्यागेंगे.

पथिक—तुम लोगोंको अम्पुपर इतना भरोसा है ? एसी उसने क्या

*घर अथवा परिवारके मुख्य पुरुष.

बात की है ?

इसका उत्तर कम्मूने नहीं बल्कि उसकी दीदीने दिया—"अम्पु अज-मानने क्या किया है सो तो सारा देश जानता है. कष्टोंसे तम्पुरानकी प्रजाकी रक्षा करते हुए और आततायियोंको दण्ड देते हुए हमने उनको कितनी ही बार देखा है."

प्रश्नकर्ता पथिककी आँखें हर्षाश्रुओंसे भर आईं, पर भाई-बहनने इसे नहीं देखा.

इस बीच वे लगभग दो मील चल चुके थे. अब संध्या होने ही वाली थी. किसीसे छिपा नहीं रहा कि उण्णिनंङा–(यही युवतीका नाम था) को चलनेमें बहुत कष्ट हो रहा है. और यह भी लगभग निश्चित था कि संध्याके पूर्व चन्द्रोत्तु-भवनमें पहुँचनेका प्रयास सफल नहीं हो सकता. परन्तु कम्मू अथवा उण्णिनंङाको इसका कोई भय नहीं था.

थकी हुई उण्णिनंङाको और अधिक न थकानेके विचारसे वे धीरे-धीरे चल रहे थे. जब वे लोग चन्द्रोत्तु-भवनके मोड़पर पहुँचे तो उस समय रात एक-दो घंटे बीत चुकी थी. अब तकका मार्ग समतल प्रदेश-में था इसलिए अधिक कठिनाई नहीं हो रही थी. चन्द्रोत्तु-भवन अब भी एक-दो फर्लांग दूर, खेतोंके उस पार था. अंधेरी रातमें खेतोंकी पगडंडी-से चलना भी सरल नहीं था. फिर भी वे चल पड़े. सबसे आगे सशस्त्र सेवक, बादमें कम्मू, उसके पीछे उण्णिनंङा और अंतमें सबके नेताके रूपमें पथिक-प्रमुख थे. वे थोड़े ही चले होंगे कि उण्णिनंङा सहसा चीख पड़ी—'हाय, काँटा चुभ गया'. अब उसने भाईके कंधेपर हाथ रखकर चलना आरम्भ किया, किन्तु चलना संभव नहीं था. और अंधेरेमें काँटा निकाला भी कैसे जाता !

उस सबल पुरुषने यह कहते हुए कि अब तो निकट ही है, उसे अपने हाथोंमें उठा लिया और अपने अनुचरसे कहा–"कोरा, जल्दी-जल्दी चलो." और वह तेजीसे आगे बढ़ने लगा.

उण्णिनंङाने इस तरह हाथोंपर उठाकर ले चलनेका बहुत विरोध

किया, परन्तु उसका सारा विरोध मानो बहरे कानोंमें पड़ा. और वे तेजी-से चलकर चन्द्रोत्तु-भवनकी सीढ़ियोंपर पहुँच गए.

"लो, पहुँच गए. अब तो चुप हो जाओ!"—पथिक-प्रमुखने सावधानीके साथ उण्णिनंङाको नीचे उतारते हुए स्नेहके साथ कहा. ये शब्द उण्णिनंङाके कानोंमें मानो अमृत-धाराके समान प्रविष्ट हुए. अब तक उसने कभी पुरुषका स्पर्श नहीं किया था और आज एकाएक इस पुरुषके हाथोंमें इस प्रकार असहाय पड़ जानेसे उसे बेहद दुःख हो रहा था. किन्तु धीरे-धीरे वह शांत हो गई.

जब वे कोरन्का अनुसरण करते हुए परकोटेको पार करके मुख्य गृहके संमुख पहुँचे तो गृहपति एक-दो अनुचरोंके साथ दालानमें बैठे बातचीत कर रहे थे. जैसे ही उन्होंने आगन्तुकोंको देखा उनके आश्चर्यकी सीमा न रही और आँखके इशारेसे अनुचरोंको दूर करनेके पश्चात् वे बोले—"यह क्या ? अम्पु ! ऐसे कैसे आये ? अन्नदाता सकुशल तो हैं ? ये सब कौन हैं ?"

गृहपतिके स्वागत-शब्द सुनकर उण्णिनंङा और कम्मू कितने परि-भ्रान्त हुए यह बताना सम्भव नहीं है.

अम्पु नायरने उत्तर दिया—सब बातें बादमें होंगी. यह बालिका यहाँके एक प्रबन्धकर्ताकी भानजी है. बहुत थकी हुई है. इसके पैरमें काँटा चुभ गया है.

उस भाई-बहनको उनके मामाके यहाँ भेजनेकी व्यवस्था करके चन्द्रोत्तु नम्पियार अम्पु नायरका हाथ पकड़कर यह कहते हुए भवनके अंदर चले गए कि—"आओ, सब विस्तारसे कहना होगा. मुझे बहुत-कुछ जानना है."

दूसरा अध्याय

चन्द्रोत्तु-परिवार इरुवनाट्टु प्रदेशमें राज करनेवाले सामन्त-वंशोंमेंसे एक था. धन, प्रताप तथा बलमें आगे बढ़े हुए परिवार उत्तर केरलमें कम नहीं थे, किन्तु प्रतिष्ठामें नम्पियारसे बढ़कर कोई नहीं था. उनको अभिमान था कि न तो वे कभी किसीके आधीन रहे और न उन्होंने किसीका अधिकार मानकर शासन ही किया. उन दिनों राजे-रजवाड़े आस-पासके छोटे-छोटे क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमा लिया करते थे. किन्तु यह एक परिवार ऐसा था जो किसीकी अधीनता स्वीकार किये बिना, और किसीसे मनसब या ओहदा प्राप्त किये बिना ही अपना काम चला रहा था.

उस समय इरुवनाट्टुके सामन्तोंमें सर्व-प्रधान नम्पियार ही थे. वे कुञ्ञिक्कण्णन्के नामसे प्रसिद्ध थे और उनकी आयु लगभग पचपन वर्षकी थी. मांसल शरीर, किंचित् बढ़ी हुई तोंद और पलकोंके भारीपनसे अर्ध-निमीलित-सी दिखनेवाली आँखें यह बता रही थीं कि वे एक सुख-लोलुप शासक हैं. सच पूछा जाय तो युद्ध आदिमें कुञ्ञिक्कण्णन् नम्पियारकी कोई विशेष अभिरुचि भी नहीं थी. हैदरअलीके युद्धोंके जमानेमें वे बालक ही थे. तब वे चन्द्रोत्तु-भवनकी स्थानीय जायदादकी देख-रेख करते हुए मय्यषीमें फ्रांसीसी लोगोंकी अधीनतामें निवास कर रहे थे। हैदरअलीके बाद जब टीपू सुलतानने केरलपर आक्रमण किया तब भी उन्हें कोई विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ा. इरुवनाट्टुमें रहनेवाले नम्पि-

यारोंको टीपूने बहुत कष्ट दिया और चन्द्रोत्तु-भवनके गृहपतियोंको भी कम कष्ट नहीं उठाने पड़े, परन्तु कुञ्ञिक्कण्णन् नम्पियार तब भी अपनी पत्नी सहित सुखसे काल-यापन करते रहे. चार वर्ष पूर्व जब वे गृहपति बने थे तभी चन्द्रोत्तु-भवनमें रहनेके लिए आये थे.

मय्यषीमें दीर्घ कालतक वास करनेके कारण कुञ्ञिक्कण्णन् नम्पियार आचार-विचार आदिमें अन्य केरलीय प्रभुजनोंसे भिन्न थे. वे फ्रांसीसी भाषा जानते थे, यूरोपियनोंके सहवासमें रहते थे और युवावस्थामें उन्हें यूरोपीय रहन-सहनका शौक हो गया था—इस सबके कारण उन्हें केरलमें ही नहीं समस्त भारतमें घटनाओं तथा होनेवाले परिवर्तनोंका मोटा ज्ञान रहता था. परन्तु इधर जबसे वे गृहपति बने थे, पाश्चात्य संस्कृति-संबंधी उनका भ्रम कम होने लगा था और अब वे सब कार्य अपनी स्थिति और मान-मर्यादाके अनुसार ही करते थे. जब कम्पनी-वालोंने उस क्षेत्रपर अधिकार कर लिया तो इनका यूरोपीय भाषा-ज्ञान तथा लोक-परिचय इरुवनाट्टुके अन्य नम्पियारोंको बहुत सहायक हुआ. कम्पनीके साथ समस्त व्यवहारमें उस क्षेत्रके प्रभुगण* इनकीही सलाह-पर चलते थे. तलश्शेरी† (तेलिचेरी) का सुपरवाइजर भी यह बात जानता था और इसीलिए इनका मान भी करता था. इसका यह अर्थ नहीं कि वह इनसे हार्दिक स्नेह करता हो अथवा राज्य-कार्यमें इनके ऊपर भरोसा रखता हो. उसे केवल यह भय था कि इनको विरोधी बनाना कम्पनीके लिए हानिकारक हो सकता है. इसी भयसे वह इनके साथ शिष्टताका व्यवहार करता था.

अपने सम्मान्य अतिथि अम्पु नायरको पहचानते ही किसी गंभीर परिस्थितिका अनुमान करके वे इस राज-पुरुषको अन्तर्गृहमें ले गये. वहाँ उन्होंने महाराजाके कुशल-समाचार पूछनेके बाद प्रश्न किया—"क्या

---

*लार्ड, सामन्त, प्रभाव रखने वाला.

†आधुनिक तेलिचेरी. उत्तर मलाबारमें ईस्ट इंडिया कम्पनीका मुख्य केन्द्र.

युद्धके भीषण बन जानेकी आशंका है ?"

अम्पु—मालूम तो होता है कि कंपनीवालोंने ऐसा ही निश्चय कर लिया है. संधि करके शान्तिसे रहना उनको स्वीकार नहीं है. उनके लिए इतना पर्याप्त नहीं है कि सब लोग उनके साथ मित्रताका व्यवहार करते रहें. वे चाहते हैं कि सब उनका एकाधिपत्य स्वीकार करें.

नम्पियार—हाँ, ठीक है. अब संभव भी नहीं कि कंपनीके रहते हुए इस देशमें हमारे लोग राज्य कर सकें. उनके लिए राजा और सामंत, ब्राह्मण और चाण्डाल सब एक-से हैं. सभीको उनके सामने सिर झुकाना चाहिए.

अम्पु—अच्छा, तो करके देखें. हमारे महाराजाके रहते हुए इस देशमें यह कभी नहीं होगा. और इस प्रकार शासन करनेके लिए उनके पास शक्ति कहाँ है ?

नम्पियार—ठीक है कि महाराजा हार नहीं मानेंगे. वे वीर पुरुष हैं. परन्तु केरलको कम्पनीवालोंकी अधीनता स्वीकार करनी ही पड़ेगी. यह मत सोचना कि वे अशक्त हैं. तलश्शेरीमें भले ही उनकी बड़ी सेना न हो, किन्तु उनकी शक्ति विश्व-भरमें व्याप्त है. तीन-चौथाई भारतवर्ष उनके अधीन हो चुका है.

अम्पु—हाँ-हाँ, देखेंगे उनकी शक्ति ! वयनाट्टुके जंगलोंमें गोरी सेनाकी चाल देखेंगे. आपको याद है, टीपू सुलतानकी सेना यहाँ कितनी नष्ट हुई थी ?

नम्पियार—इनकी भी सेना बहुत नष्ट हो जायगी. जबतक हमारे महाराजा हैं तबतक युद्ध भी चलता रहेगा. परन्तु यह टीपूकी कहानी नहीं है. इनकी सेना अगणित है. जहाज और बन्दूक असंख्य हैं, धन-शक्ति अपार है. द्वीप-द्वीपान्तरोंसे सेना आयगी. धीरे-धीरे, एक-एक करके सबको अधिकारमें कर लिया जायगा.

अम्पु—इसीलिए आपका आदेश है कि उनकी अधीनता स्वीकार कर ली जाय ?

नम्पियार—गलत मत समझिए ! आज केरलके गौरवके रक्षक तम्पुरान ही हैं. यदि वे भी हार मान लेंगे तो केरल-लक्ष्मी नष्ट हो जायगी. इतना ही नहीं, हम सबके लिए यह अत्यन्त अपमानका विषय होगा. यदि तम्पुराननने ही सिर झुका दिया तो हम सब अपने सिर कैसे उठा सकेंगे ?

अम्पु—यही एक समाधान है. मैंने नीलेश्वरसे यहाँतक भ्रमण किया है. कोई भी यह सलाह नहीं देता कि तम्पुरान हार मान लें. उनके दृढ़ निश्चयके लिए सभीको आदर है. फिर हम कैसे हार जायँगे ?

नम्पियार—तम्पुरान नहीं हारेंगे यह निश्चित है. परन्तु कंपनीवालोंके लिए एकका जीवन-काल निस्सार है. उनके बाद केरलके स्वातंत्र्यकी रक्षा कौन करेगा ?

अम्पु—आपका कहना ठीक है. परन्तु तम्पुरानकी मृत्युके बाद जीवित रहनेकी इच्छा हममेंसे किसीको नहीं है. तब जैसा भाग्य होगा, वैसा होगा. जबतक जीवित हैं तबतक तो स्वतंत्रतासे जियेंगे, यही सोचा है.

नम्पियार—अच्छा, आज यहाँ कैसे आना हुआ यह तो बताइए !

अम्पु—हाँ, अब स्पष्ट ही करूँ. कंपनीके नये सेनानायकने यदि युद्ध ज्यादा बढ़ा दिया तो आप-जैसे लोगोंकी सहायताके बिना हम क्या कर सकेंगे ?

इस सीधे-सादे प्रश्नसे नम्पियारके मुखपर कोई भाव-परिवर्तन नहीं हुआ. उन्होंने धीरेसे उत्तर दिया—"इस विषयमें अपनी राय तो मैंने दे ही दी. यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि मैं किसके पक्षमें हूँ. परन्तु तलश्शेरी दुर्गके अधीन रहनेवाले हम लोग क्या कर सकते हैं ?"

अम्पु—आपकी स्थिति तो तम्पुरान जानते ही हैं. आप सीधे युद्धमें सहायता दें, ऐसा आग्रह भी वे नहीं करते. वे अपने लोगोंको व्यर्थ नष्ट नहीं कराना चाहते.

नम्पियार—तो फिर मुझसे क्या सहायता चाहते हैं ? यदि धनकी सहायताकी बात है तो यहाँ जो-कुछ है वह सब तम्पुरानका ही है, आप

निवेदन कर दीजिए.

अम्पु—अभी धनकी आवश्यकता नहीं है. आगे हो सकती है. तब धन कहाँ-कहाँसे मँगवाना होगा यह सब उनको मालूम है.

नम्पियार—यदि जन नहीं चाहिये, धन भी नहीं चाहिए तो फिर क्या सहायता करूँ ?

अम्पु—बताता हूँ. हमारे पास तो तलवार और धनुष-बाण ही हैं. इससे कुछ तो काम बन जायगा, विशेषकर जंगलोंमें तो धनुष-बाणसे काम चल ही जाता है. परन्तु यदि पाँच-एक-सौ बन्दूक और आवश्यकताके अनुसार कारतूस न हों तो कंपनीकी सेनाका सामना कैसे किया जायगा? तलश्शेरीसे सब मिल सकता है, परन्तु वहाँसे हटानेके लिए आपकी सहायता चाहिए.

नम्पियार—यहाँ तक पहुँचा सको तो आगे मैं मार्ग बना लूँगा. तलश्शेरीमें ही यदि हमारे आदमीके हाथ सौंप दिया जाय तो थोड़ा-बहुत मैं भी अपने साथ ले आऊँगा. हर सप्ताह किसी-न-किसी कामसे सुपरवाइजरसे मिलने मुझे वहाँ जाना तो पड़ता ही है.

अम्पु—आप एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी ले रहे हैं. कंपनीवालोंको जरा भी शंका हो गई तो कितना कठिन होगा, आप जानते ही हैं.

नम्पियार—आप-जैसे लोग जानपर खेलनेको तैयार हों, तो मुझसे क्या इतना भी न होगा ? यह जिम्मेदारी मैंने ले ली.

अम्पु—एक बात और है—जितनी चाहिएँ उतनी बंदूकें हमें तलश्शेरीमें नहीं मिलेंगी. क्या और कोई रास्ता है ? मय्यषीमें तो आपका बहुत प्रभाव है ?

नम्पियार—समझ गया. जरूरी कार्रवाई कर लूँगा.

अम्पु—आपने इतना काम उठा लिया है. अब और कहनेमें संकोच होता है किन्तु काम बड़ा संगीन है. उसे करने योग्य कोई दूसरा दिखलाई नहीं पड़ता.

नम्पियार—कुछ भी हो, कहो तो सही. जो-कुछ मुझसे बनेगा, सब

करनेके लिए तैयार हूँ.

अम्पु—आप तलश्शेरीके बिलकुल पास हैं—इसलिए कहता हूँ. वहाँ जो-कुछ होता है उसकी ठीक सूचनाएँ पानेके लिए कुछ प्रबंध कर रखा है. शत्रु-पक्षके विचार और तैयारियोंका पता रखना ही तो युद्धमें सबसे अधिक आवश्यक होता है. वहाँसे संदेशवाहक द्वारा सीधे भेजना संभव नहीं है. उसके लिए भी आपकी सहायता चाहिए.

नम्पियार—तलश्शेरीमें आपका जो आदमी है वह विश्वास-पात्र है ?

अम्पु—उनसे आपका अच्छा परिचय है. मेरी जानकारी तो यह है कि वे आपके मित्र भी हैं.

नम्पियार—कौन ? मेरी समझमें नहीं आया.

अम्पु—आपसे कहनेमें कोई संकोच नहीं करूँगा—अली मूसा मय-य्कार.

नम्पियार—तो यह भी मैंने स्वीकार किया.

बातचीत थोड़ी देर और चलती रही. बादमें राजसी भोजन हुआ और सोनेके लिए जाते समय अम्पु नायरने कहा—"हाँ, तो कल सुबह मुझे जाना है. तब तक मालूम नहीं आप जाग पायेंगे या नहीं. इसलिए अभीसे आज्ञा लिये लेता हूँ."

"मुझे यह जाननेकी आवश्यकता नहीं कि आप कहाँ जायँगे, परन्तु मुझे कल सुपरवाइजरसे मिलनेके लिए तलश्शेरी जाना है. मैं दिन निकलनेके बाद जाऊँगा."

"मैं भी उसी ओर जा रहा हूँ. आप तलश्शेरी जा रहे हैं तो सेवक-के रूपमें मुझे भी ले जा सकते हैं. ले चलें तो अच्छा हो."

"मेरे साथ छः पालकीवाले और दस सिपाही होते हैं. यदि सिपाहियों-में मिल जानेमें कठिनाई न हो तो ठीक है. वहाँ जानेके लिए आपपर कोई रोक-टोक तो नहीं ?"

"रोक-टोक तो नहीं है, परन्तु मैं नहीं चाहता कि मेरे तलश्शेरी जानेकी बात किसीको मालूम हो."

× × × ×

सारा काम इच्छानुसार हो गया फिर भी अम्पु नायरको बहुत देर तक नींद नहीं आई. जब भी वह आँखें बन्द करता या खोलता तो सामने एक ही चीज घूमती दिखाई देती—उण्णिनंङाका परिश्रान्त और भय-विह्वल मुख. बहुत प्रयत्न करनेपर भी वह वीर पुरुष अपने हृदयसे उस चित्रको नहीं हटा सका. धीरे-धीरे उस मुखका भाव बदलने लगा. पहले जो मुख श्रान्त दिखाई देता था अब उसपर प्रसन्नता और सलज्ज मधुरिमा दिखाई देने लगी. भयके लक्षण हट गए और विश्वास तथा प्रेम स्पष्ट दिखाई देने लगा. यह सब आनन्ददायक तो था, किन्तु स्वामीके कार्यसे मनको हटानेवाला था. इसलिए अम्पु नायरने नम्पियारके साथ हुई बातोंमें मन लगानेका प्रयत्न किया. परन्तु सब विफल हुआ. उन विचारोंके बीच भी उसे अपने वक्षपर मालाके समान विश्राम करती हुई युवतीके स्पर्शका सुख अनुभव होने लगा.

रातके अन्तिम पहरमें ही उन्हें नींद आ सकी. इतनेपर भी आहार, निद्रा आदि छोड़कर जंगलों और पहाड़ोंपर रहनेका अभ्यासी होनेके कारण ब्राह्म-मुहूर्तमें जाग जानेमें उसे कोई कठिनाई नहीं हुई. नित्य-कर्मसे निवृत्त होकर दालानमें आया तो कम्मू भी वहाँ उपस्थित हो गया था.

अम्पु नायरने कहा—क्यों कम्मू, कलकी थकान मिट गई ? तम्पु-रानकी सेवामें आनेके लिए तैयार हो क्या ?

कम्मूने उत्तर दिया—आपको पहचाने बिना ही कल हम लोग कुछ-का-कुछ कह गये. हमारे घरके जलाये जानेके मामलेमें आपपर शंका करनेके कारण दीदी बहुत दुःखी हो रही है.

"उसमें ऐसी क्या बात है ? इतना ही तो कहा था कि लोग ऐसा

कहते हैं ? इसमें दुखी होनेकी क्या जरूरत ? तम्पुरानके पास जानेकी अनुमति तुम्हारी दीदीने दे दी ? तुम चले जाओगे तो उनकी सहायताके लिए यहाँ कोई नहीं होगा."

"आपके साथ मैं कही भी जाऊँ, दीदीको मंजूर है. मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही मुझे अपने साथ ले चलिए !"

"यह तो संभव नहीं है. मुझे और कई जगह जाना है. मैं कब तम्पु-रानके पास पहुँचूँगा यह भी नहीं जानता. थोड़े दिन तुम यहीं रहो."

इस आज्ञाके विपरीत कम्मूने कुछ नहीं कहा, परन्तु उसकी भाव-भंगिमासे अम्पु नायरको मालूम हो गया कि उसे बहुत दुःख और निराशा हुई है. उन्होंने कुछ सोचकर कहा—"तुम्हें यह स्वीकार नहीं है तो थोड़े दिन कैतेरीमें जाकर रहो. मैं तम्पुरानके पास पहुँचते ही तुमको बुला लूँगा."

तुरन्त तलवार उठाकर युद्ध-भूमिपर जानेके इच्छुक कम्मूके लिए यह प्रस्ताव भी सन्तोषजनक नहीं था. फिर भी इस विचारसे उसे सान्त्वना मिली कि कैतेरीमें रहूँगा तो राज-पत्नीकी ही सेवामें रहना होगा.

उसकी विचार-धारा पहचानकर अम्पु नायरने कहा—"कैतेरीमें सब स्त्रियाँ ही हैं. तंपुरानके सम्बन्धके कारण शत्रु वहाँ भी आक्रमण कर सकता है. कुछ प्रबन्ध होने तक कम-से-कम एक विश्वस्त व्यक्तिका वहाँ रहना आवश्यक है. इसलिए, तुम वहाँ रहोगे तो तम्पुरानको भी प्रसन्नता होगी. हाँ, तो तुम्हारा अभ्यास पूर्ण हो गया है ?"

"बहुत-कुछ पूर्ण हो गया है."

"तो आज ही कैतेरी चले जाओ !"

अम्पु नायरने नौकरको बुलाकर एक ताल-पत्र मँगवाया और अपने रजत-नाराचसे* लिखा—"इस व्यक्तिको अपने घरमें रखो. शीघ्र ही बुला लूँगा." पत्रपर अपनी बहनका नाम लिखकर उसे कम्मूके हाथोंमें

*ताल-पत्रपर लिखनेकी चाँदीकी लेखनी.

देते हुए उन्होंने कहा—"सुविधा देखकर रवाना हो जाओ. सामर्थ्य और विश्वस्तता दिखानेके अवसर तुम्हें काफी मिलेंगे."

"दीदीसे विदा लेने-भरकी देर है"—कम्मूने कहा और वह अपने निवास-स्थानकी ओर रवाना हो गया.

अम्पु नायर अपने कर्तव्यपर विचार करते हुए उसी दालानमें बैठ गये. नौकरसे मालूम हुआ कि नम्पियार नित्य-कर्म तथा पूजा-पाठमें लगे हुए हैं और उन्हें एक-दो घण्टे लगेंगे. अम्पुने सोचा कि नम्पियार-के साथ तलश्शेरी जानेसे दूसरोंकी जानकारीसे बचकर कई काम कर सकते हैं. अपने पराक्रमके लिए प्रख्यात, कंपनीके नये सेनापति, कर्नल वेलेस्लीके क्या-क्या विचार हैं, सेना आदिकी क्या स्थिति है, बम्बईसे कितनी सेना आई है, उनके पास कितनी बन्दूकें हैं, हमारे लोगोंमेंसे कौन-कौन उनके साथ मिल गया है, इस सबकी जानकारी हो जायगी. कुरुम्ब्रनाट्टुके राजा विभीषण बनकर शत्रुकी शरणमें गये हैं, यह सर्व-विदित था. उनसे विशेष भय भी नहीं था. परन्तु देशमें एक ऐसी जन-श्रुति फैली हुई थी कि अन्य प्रमुख सरदारोंमेंसे कुछको विभीषण बना-कर और कुछको उपहार आदि देकर कंपनीवालोंने अपने साथ मिला लिया है. तम्पुराननने यही ठीक तरहसे जाननेके लिए उन्हें इस समय तलश्शेरी भेजनेका निश्चय किया था. तम्पुरानके पक्षवालोंमेंसे भी एक-दोके बारेमें जो अफवाहें सुनाई देती थीं उनका तथ्य जानना भी आव-श्यक था.

इस प्रकार जब वे विविध चिन्ता-तरंगोंमें डूब-उतरा रहे थे उसी समय कम्मू फिर उनके सामने उपस्थित हुआ. थोड़ी दूरीपर उण्णि-नंङा भी खड़ी थी.

अम्पु नायरने उण्णिनंङाको लक्ष्य करके पूछा—"पैरमें अब तो दर्द नहीं है ?"

"दर्द तो काँटा निकालते ही मिट गया था"—उण्णिनंङाने उत्तर दिया. कुछ देर कोई कुछ नहीं बोला और बादमें उण्णिनंङाने ही बात आगे

बढ़ाई और कहा—"मुझ असहायका अब यही एक सहारा बचा है. इसे मैं आपके हाथ सौंपती हूँ. श्रीपोर्कली भगवतीकी इच्छा जैसी हो !"

"कम्मूकी जिम्मेदारी अब मेरी है. डरनेकी आवश्यकता नहीं. तम्पुरानका साथ देनेवाले सब एक परिवारके बन जाते हैं. मैं भ्रातृ-हीन था, अबसे कम्मू मेरा भाई बन गया"—अम्पु नायरने कहा.

"बिना पहचाने मैं बहुत-कुछ ऊल-जलूल कह गई. कृपा करके आप सब क्षमा कीजिएगा. अपनी बातें याद करके मुझे असह्य लज्जा हो रही है."

"इतना दुखी होनेकी क्या बात है ? तम्पुरान और उनके अनुचरोंके प्रति तुम लोगोंकी श्रद्धा और भक्तिको देखकर हम गद्गद् हो जाते हैं."

"अब इस ओर कब आना होगा ?"

"तम्पुरानकी सेवामें निरत लोगोंका कार्यक्रम निश्चित कैसे रह सकता है ? ईश्वर सहायता करें कि शीघ्र ही आकर मिल सकूँ."

नम्पियार यजमान नित्य-कर्म आदिसे निवृत्त होकर यात्राके लिए तैयार हो गये. एक अनुचरसे यह समाचार पाकर अम्पु नायरने कहा—"तो अब आप विश्राम करें. कम्मू, रवाना होनेमें विलम्ब न करना !"

अम्पु नायर नम्पियारकी राह देखने लगे और उण्णिनंङा आँखें बन्द करके तम्पुरान, अम्पु नायर और अपने भाई तीनोंके लिए श्रीपोर्कली भगवतीसे प्रार्थना करके अन्त:पुरमें चली गई.

तीसरा अध्याय

पुण्यभूमि भार्गव-क्षेत्रके* लिए वह समय मानो आपत्ति-काल था. तिरुवितांकूर† और कोच्चि‡ क्रमशः ब्रिटिशोंके अधीन हो चुके थे. परन्तु अराजकतारूपी दुर्मूर्तिका नग्न तांडव अपने पैशाचिक रूपमें प्रकट हुआ था, कोच्चिके उत्तरके राज्योंमें. पालकाट्टुशेरी* से हैदरअली जब अपनी सेना केरलमें लाया तबसे इन राज्योंमें न तो सन्तोष रहा, न शान्ति रही और न जनतामें पारस्परिक संबंध ही अवशिष्ट रह गया. हैदरके आक्रमण न रोक सकनेके कारण सामूतिरि† आदि राजा तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगोंने अपने महल, भंडार आदि छोड़कर तिरुवितांकूरमें

*केरल. ऐतिह्यके अनुसार, भार्गव परशुरामद्वारा समुद्रसे निकाला हुआ देश.

†मूलशब्द-श्रीवाळंकोड़ (श्री—श्री, वाळुं—निवास, कोड़—स्थान). अपभ्रंश—तिरुवांकोड़, ट्रावनकोर, तिरुवितांकूर.

‡कोचीन. संस्कृत—गोश्री.

*पालकाड़ नामका स्थान. 'पाल' (संस्कृत—'सप्तच्छद') नामक वृक्षोंका वन. वर्तमान—पालघाट.

†कोषिकोड़ (कालीकट) के राज-वंशका नाम. राजाको भी सामूतिरि कहा जाता है.

शरण ग्रहण कर ली थी. जो लोग अन्य राज्योंमें शरण नहीं ले सकते थे वे जंगलोंमें छिप गये. बहुत-सी जनताने इस्लाम धर्म स्वीकार करके आत्म-रक्षा कर ली.

परन्तु देशवासियोंने मैसूरकी सेनाको क्षण-भर भी चैन नहीं लेने दी. बादमें टीपू सुलतानने जो ये घोषणाएँ कीं कि मलयाली लोग शैतानकी जाति हैं, नायरोंको देखते ही गोली मार देनी चाहिए और केरलको जीतकर अपने अधीन करनेसे अपने राज्यकी हानि ही हुई है आदि, उनसे उस समयकी केरलीय जनताकी अवस्थाका अनुमान किया जा सकता है. महाभारतके शान्तिपर्वमें भीष्म पितामहने अराजकताकी जो व्याख्या की है वह उस समयके केरलके सम्बन्धमें अक्षरशः सत्य उतरती है.

टीपू और उसके प्रतिनिधियोंके कुशासनसे मलयालियोंके ऊपर जो विपत्तियाँ आई उनका वर्णन नहीं किया जा सकता. परन्तु स्वातंत्र्य-प्रिय नायर जनता सभी आपत्तियोंको सहती हुई मैसूर-व्याघ्र*के साथ बराबर युद्ध करती रही. राजाओं और नेताओंके इधर-उधर भाग जाने-से ये युद्ध भी एक प्रकारसे असंगठित ही थे. ऐसा कोई नेता नहीं था, जो सामूतिरिके राज्योंमें अथवा चिरैकल† आदि देशोंमें नायरोंका यथोचित संगठन करके उन्हें युद्धके लिए सन्नद्ध करता. लोगोंने केवल कोट्टयं राज्यमें ही उत्तम नेतृत्वके अधीन युद्ध किया. अन्य राजाओं तथा देश-प्रमुखोंके‡ समान कोट्टयंके राजाने भी तिरुवितांकूरमें शरण ले ली थी. किन्तु उस समय उत्तराधिकार-क्रममें चतुर्थ राजा केरलवर्माने उच्च

* 'टाइगर आफ़ मैसूर', टीपू सुलतान.

† केरल के एक राज-वंश का नाम.

‡ उस समय केरलमें सामन्तशाही राज्य था. सामन्तोंसे विचार-विनिमय किये बिना राजा कोई काम नहीं करते थे. उन्हीं सामन्तोंको देश-प्रमुख कहा गया है.

स्वरसे इस भीरुताकी निन्दाकी और वे स्वदेश तथा प्रजाकी रक्षा-के लिए कटिबद्ध होकर अपने स्थानपर बने रहे. केवल इक्कीस वर्षके उस राजकुमारके नेतृत्वमें कोट्टयं, वयनाट्टु आदि स्थानोंके नायर वीर एकत्रित हुए और उन्होंने मैसूरकी शक्ति को ध्वस्त करने का बीड़ा उठाया. उनका निवास-स्थान पप्शिश-राजमहल ही स्वतंत्र केरलकी राजधानी बना.

टीपू साम, दाम, दंड, भेद आदिकी सब चालें चलकर भी उस सर्व-प्रिय प्रतापी राजाको हराने अथवा नष्ट करनेमें विफल रहा. पप्शिशके इस शैतान कुमारको नष्ट करनेके लिए उस दशकंधरतुल्य टीपूने समरदक्ष सेनापतियोंकी अधीनतामें भारी सेना भेजी. जब उसकी सेनाका पारावार सारे देशमें फैल गया तो पुरळीश्वर* केरलवर्माने 'वन ही गति' समझकर पुरळी पहाड़ों और जंगलोंमें शरण ली. परन्तु मैसूरकी सेना जहाँ कहीं तंबू लगाकर निवास करती वहाँ रातमें अचानक तंपु-रानके लोग आक्रमण कर देते और सेनाकी खाद्य-सामग्री नष्ट करके तंबुओंमें आग लगाकर भाग जाते. इस प्रकार टीपूकी शक्तिको चुनौती देते हुए, उसके अधिकारको नष्ट करते हुए और केरलकी स्वातंत्र्य-पताका ऊँची फहराते हुए केरलवर्मा दस वर्षतक युद्ध करते रहे.

इसी समय टीपूको एक और प्रबल शत्रुका सामना करना पड़ा. बंग-देश और मद्रास आदि स्थानोंमें शासक बनी हुई अंग्रेजोंकी ईस्ट इंडिया कंपनी और टीपूके बीच युद्ध छिड़ गया. केरलमें यह बात फैल गई कि कार्नवालिस नामक गवर्नर-जनरलकी देख-रेखमें टीपूसे युद्ध करनेके लिए भारी सेना सजाई गई है. तलश्शेरी शहरमें कंपनीके व्यापारकी रक्षाके लिए एक दुर्ग और कुछ सेना थी. कंपनीके सेनानायकोंका इरादा था कि टीपूपर पूर्वसे आक्रमण किया जाय और साथ-ही-साथ पश्चिममें

---

* केरलवर्मा. पुरळी नामक पहाड़ राज्य के अन्दर होनेके कारण पुरळीश्वर.

केरल प्रदेशसे भी आक्रमण करके फ्रांसीसी लोगोंके साथ उनका संबंध काट दिया जाय. इस प्रयत्नमें सहायता देनेके लिए कंपनीने केरलके राजाओंसे भी प्रार्थना की. टीपूको हरानेमें मदद करनेपर उन राजाओं-को फिरसे उनके राज्योंमें अधिष्ठित करनेका वचन भी दिया गया. कंपनीके अधिकारियोंने घोषित किया कि कंपनीकी दिलचस्पी केवल व्यापारमें है, राज्य-संपादन करनेमें नहीं. जैसे-तैसे सामूतिरि आदि राजा कंपनीको सहायता पहुँचानेके लिए तैयार हो गए.

पच्चीस वर्षोंसे परदेशोंमें निवास करनेवाले राजाओंकी अपेक्षा कई-गुनी अधिक सहायता 'मैसूर-व्याघ्र' के निष्कासनमें केरलवर्माने दी. उनका प्रताप, उनकी जन-शक्ति, और उनका युद्ध-कौशल कंपनीवालों-को भली भाँति ज्ञात था; अतएव उन्होंने इस 'पप्शि राजा'को अपना उत्तम बन्धु मान लिया. परन्तु संधि-पत्रद्वारा इस प्रकारका सम्बन्ध कायम होनेके पूर्व केरलवर्मा कोई सहायता देनेको तैयार न हुए. इस-लिए एक ऐसा संधि-पत्र बनाया गया जिसके अनुसार टीपूके साथ युद्ध करनेमें दोनों पक्ष एक-दूसरेको सहायता दें और जब केरल टीपूसे मुक्त हो जाय तब परंपरागत रूपमें कोट्टयंके अधीन रहे हुए प्रदेशको केरल-वर्माके स्वतंत्र अधिकारमें दे दिया जाय.

युद्ध समाप्त होनेके बाद ही केरलवर्मा कंपनीकी असली चालको समझे. टीपू और कंपनीके बीचके संधि-पत्रमें कहा गया कि टीपू केरलका राज्य कंपनीको सौंप रहा है. अतएव अपनी विजयके उन्मादमें कंपनीके अधिकारी केरल-राजाओंको उनका राज्य वापस करनेकी प्रतिज्ञा भूल गये और उन्होंने राजाओंको सूचित कर दिया कि अब केरलका शासन कंपनीके हाथमें है.

कंपनीके इस निश्चयका विरोध करनेकी शक्ति सामूतिरि आदि राजाओंमें नहीं थी. कंपनी जान चुकी थी कि भारतवर्षमें सबसे धनी और समृद्ध प्रदेश केरल है. उसकी मुख्य व्यापारिक वस्तुएँ इलायची, काली मिर्च आदि केरलकी ही उपज थीं. इनपर अधिकार पानेके लिए

उन्होंने पुर्तगीज और डच लोगोंसे कितना युद्ध किया था. अब देश ही हाथमें आ गया तो क्या उसे केवल कुछ लेखोंके आधारपर इन दुर्बल राजाओंके हाथमें सौंप दिया जाय, जिनमें टीपूका भी सामना करनेकी शक्ति नहीं थी ? ऐसा करनेका कंपनीका कोई इरादा नहीं था.

परन्तु उस समय कंपनीके पास केरलमें इस अधिकारको कायम रखनेके लिए उपयुक्त सैन्य-शक्ति, कर वसूल करनेके लिए कर्मचारी, शान्ति और व्यवस्थाके संरक्षणके लिए योग्य साधन नहीं थे. फलत: इस घोषणासे देशमें अराजकताका और भी बोल-बाला हुआ. दीर्घ काल-तक अन्य देशोंमें रहकर लौटे हुए राजाओं तथा अन्य कर्मचारियोंको एक-मात्र यही चिन्ता थी कि कंपनीका शासन पूर्णतया जमनेके पूर्व अधिक-से-अधिक धन किस प्रकार वसूल किया जा सकता है. बहुत-से लोग अपने-आपको राजाओंके कर्मचारी बताकर शस्त्रोंके बलपर प्रजाके धन-धान्य आदिका अपहरण करने लगे.

असानीसे कर वसूल करनेका प्रबंध न होनेके कारण कंपनीने वह काम पाँच वर्षके इकरारपर राजाओंको सौंप दिया था. यह मार्ग केवल इसलिए अपनाया गया था कि राजा लोग उस समय शान्त हो जायँ और समय आनेपर उनसे फिर राज्य छीन लिया जाय. इससे भी देश-वासियोंके कष्टोंमें वृद्धि ही हुई.

उण्णिमूत्ता-जैसे प्रमुख डाकू और कुञ्जिक्कोय-जैसे दास-विक्रेता खुले-आम गाँवों और शहरोंमें अपनी पैशाचिक प्रवृत्तियाँ चला रहे थे. कंपनी-में उनका मुकाबला करनेकी शक्ति नहीं थी. संक्षेपमें, केरलकी अवस्था भीषणतम अराजकताकी थी.

× × × ×

कंपनीका सीधा विरोध करनेका साहस केवल केरलवर्माने ही किया. यह मालूम होते ही कि कंपनी संधि की शर्तें पूर्ण करनेको तैयार नहीं है, उन्होंने युद्ध करनेका निश्चय कर लिया था. उनकी कार्रवाइयोंसे

कोट्टयं और वयनाट्टुमें कम्पनीका अधिकार शून्यवत् हो गया. कंपनी-के अधिकारियोंने अपनी पूर्व-रीतिके अनुसार कुरुम्ब्रनाट्टुके राजाको साथ लेकर केरलवर्मासे लड़नेका शक्ति-भर प्रयत्न किया, परंतु न तो उन देशोंसे एक पैसा ही वसूल हुआ और न कोई आदमी ही युद्धके लिए मिला. युद्धद्वारा राज्यपर अधिकार करनेकी शक्ति उस समय बम्बई-सरकारके पास भी नहीं थी. इसलिए संधि करना ही उचित जानकर वैसा करनेकी आज्ञा तलश्शेरीस्थित सुपरवाइजरको दे दी गई.

केरलवर्मा पुनः पष्शिदुर्गके शासक बन गये.

केरलवर्मासे संधि करनेका एक कारण और भी था. कंपनी फिरसे टीपू सुलतानके साथ युद्ध करनेकी तैयारी कर रही थी. इस बार गवर्नर-जनरलने मैसूरके शासकको बिलकुल मिटा देनेका निश्चय कर लिया था. योजना यह थी कि उसपर बंगलौर और कटकसे एक साथ हमला किया जाय. केरलवर्माके विरोधी रहनेपर कटकसे आक्रमण करना संभव नहीं होता. अतएव उन्हें प्रसन्न करके मित्र बना लेने का मार्ग ही श्रेयस्कर समझा गया.

श्रीरंगपट्टनके युद्धमें टीपू मारा गया और सारा मैसूर-राज्य कंपनीके हाथमें आ गया. अब केरलवर्मासे उसे कोई प्रयोजन नहीं रहा और उसके अधिकारियोंने पैंतरे बदल दिये. उन्होंने खुल्लम-खुल्ला कहना शुरू कर दिया कि केरलवर्माके शासनाधीन राज्य भी दूसरे राज्योंके समान कंपनीके अधिकारमें हैं. परिणामतः कंपनी और केरलवर्मा के बीच फिरसे युद्ध छिड़ गया. हमारी कहानी का आरम्भ इसी समय होता है.

केरलवर्मा पष्शिराजाकी आयु उस समय ४७ वर्षके आस-पास थी. वे सब प्रकारसे एक असाधारण पुरुष थे. केरलके पौरुषकी तो मानो वे मूर्ति ही थे. कष्ट सहन करने योग्य दृढ़ और बलिष्ठ दीर्घ शरीर, सुडौल कंधे और ग्रीवा, विशाल वक्षस्थल और आजानुबाहु यह उनकी आकृति थी. उन्नत ललाट, शौर्यसे भरी आँखें, निश्चयकी दृढ़ता और

स्थैर्यके द्योतक अधर-पुट आदि उनके मुखको असामान्य गौरव प्रदान करते थे. उनकी पैनी-आँखें तो मानो दूसरोंके हृदयमें प्रवेश करके अन्तस्‌का रहस्य देख सकती थीं. उनकी मुखाकृति इतनी भव्य थी कि प्रथम दृष्टिमें ही हृदय भक्ति और आदरसे भर उठता था.

उनका पराक्रम, आज्ञा-शक्ति, धैर्य, प्रताप, नीति-चातुर्य आदि केरलमें ही नहीं अन्य प्रदेशोंमें भी प्रख्यात था. पचीस वर्षतक सब प्रकारके कष्ट सहन करके केरलके स्वातंत्र्यकी रक्षा करनेवाले इस महापुरुषको केरलीय जनता दिव्य विभूति मानकर पूजने लगी तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? परन्तु श्रद्धा और आदरका कारण सिर्फ यही नहीं था. दीनोंके लिए उनकी दया असीम थी. अपने आश्रितोंकी रक्षाके लिए प्राणोंको भी होम देनेके लिए वे सदैव तत्पर रहते थे. उनके इस गुणको स्मरण करके डाकू लोग भी उनके पक्षके लोगोंके घरोंसे दूर ही रहते थे. कोई भी हो, एक बार शरणमें आनेके बाद त्यागा नहीं गया. इन सब गुणोंके अलावा उन्हें सबका प्राणप्रिय बना देनेवाली एक बात यह थी कि राजा होकर भी वे युद्ध-भूमिमें, वनमें और सर्वत्र साधारण योद्धाके समान रहते थे. कष्ट-सहनमें, खान-पानमें, निद्रा-विश्राममें, वे अपने और दूसरेके बीच कोई भेद नहीं करते थे. ऐसे केरलवर्मदेव केरलीय जनताके लिए देवता बन गए तो इसमें क्या आश्चर्य ?

कोट्टयं राज-वंशमें पाण्डित्य और साहित्य-सेवाकी जो वृत्ति परंपरासे चली आ रही थी वह उनमें पराकाष्ठातक पहुँच गई थी. संगीत-शास्त्र तथा नृत्य-कलामें उनकी बराबरी करनेवाले उस समय केवल एक ही महानुभाव थे—तिरुवितांकूरके राजा, रामराजा बहादुर धर्मराजा नामसे प्रख्यात श्रीराम वर्मा. युद्धोंके इस कालमें ही केरलवर्माने बक-वध, कालकेय वध, और कल्याण-सौगन्धिक आदि आट्टकथाओं.* (कथकलीके लिए उपयुक्त साहित्य-कृतियों) की रचना की और ये कृतियाँ अपने अनु-

* कथकलीके लिए निर्मित काव्य-साहित्य विशेष. गीति-कथाएँ.

पम गुणोंसे मलयालम साहित्यके कण्ठाभरण और केरलीय नृत्य-कलाके अमूल्य रत्न-भंडारके रूपमें आज भी विद्यमान हैं.

फिरसे युद्ध छिड़नेपर महा पराक्रमी आर्थर वेलेस्ली कंपनीकी सेना-का नायक नियुक्त किया गया. जब वह तलश्शेरी पहुँचा तब युद्धकी प्रणाली ही कुछ अलग दिखलाई पड़ी. तंपुरान अपने दो भानजों और कुछ विश्वसनीय अनुचरोंको साथ लेकर पुरळी पर्वतपर चले गए. देशका शासन चलानेके लिए उन्होंने पप्पर्यवीट्टिल चन्तुको, और कर वसूल करने तथा जन-रक्षाके लिए कैतेरी अम्पु नायरको नियुक्त कर दिया. अविञ्ञि-क्काट्टु केट्टिलम्मा–तंपुरानकी प्रथम पत्नी—भी उनके साथ वनवासमें चली गई.

जब जनताने सुना कि तंपुरानने पपश्शिका राजमहल त्यागकर वन-वास स्वीकार किया है तो उसके दिलोंमें केरलके भविष्यके संबंधमें चिन्ता व्याप्त हो गई. उनका निर्णय जानकर कंपनीवालोंने भी अपने मनसूबे व्यक्त करनेमें देरी न करनेका निश्चय किया.

चौथा अध्याय

अम्पु नायरका पत्र लेकर कम्मारन् नायर (कम्मू) सायंकालतक कैतेरी-भवनके निकट पहुँच गया. सह्याद्रि-सन्तानोंके समान विराजमान पहाड़ियोंकी पट-भूमिकापर धान्य-संकुल खेत, अधित्यकामें अधिष्ठित सुपारी, नारियल और कटहल आदिकी लहलहाती हुई वाटिकाएँ— यह थी केरलके साधारण नायर-परिवारोंके निवास-स्थान की रूप-रेखा. मकान प्रायः खेतों और वाटिकाओंके बीचमें होते थे. कैतेरी-भवन भी इससे भिन्न नहीं था. मार्गसे खेतमें उतरकर चार-पाँच सौ गज चलनेपर एक देवी-मन्दिर और एक बड़ा मकान दृष्टिगत होता था. पूर्व दिशामें कुछ हटकर, खेतके पास जो एक भवन दिखाई दे रहा था, वह उस कालमें नायरोंके शस्त्राभ्यास के लिए उपयोगमें आनेवाली और कुलीन परिवारों में अनिवार्य रूपसे बनाई जानेवाली 'कळरी' (युद्धाभ्यासशाला) थी. मकानके पीछे ऊँची-ऊँची टेकड़ियाँ खड़ी थीं— मानो गृह-रक्षाके लिए बनाये गये दुर्ग हों. उस पूर्वाभिमुख भवनके सामने और दक्षिण भागमें धानके खेत थे.

ऊँची प्राचीरोंसे घिरा हुआ कैतेरी-भवन बाहरसे देखनेवालोंको दिखलाई नहीं पड़ता था. कम्मू मार्गके आस-पास रहनेवाले लोगोंसे रास्ता पूछता हुआ जब कैतेरी-भवनकी प्राचीरके पास पहुँचा तो उसे एक मधुर गान सुनाई पड़ा, जो मानो उसके श्रवण-पुटोंमें अमृत-वर्षा करता हुआ

उसका स्वागत कर रहा हो—'शरणं भव सरसीरुह्-लोचन. शरणागत-वत्सल ! जनार्दन !'

गीतकी यह पल्लवी (टेक) सुनकर उसने निश्चय कर लिया कि गानेवाली माक्कम् केट्टिलम्मा ही है. स्वरके माधुर्य और अभ्यासकी निपुणताने क्षण-भरके लिए उसे अभिभूत कर लिया. केट्टिलम्मा किसी विशेष कार्यमें व्यस्त नहीं है यह समझकर उसने आँगनमें प्रवेश किया.

पष्शिश-राजमहलको छोड़कर वन जाते समय तंपुरान अपनी प्रथम पत्नीको साथ ले गये थे. द्वितीय पत्नी माक्कम्ने साथ जानेका बहुत आग्रह किया, परन्तु उन्होंने उसे यौवनवती और शरीर-श्रममें अनभ्यस्त जानकर घरमें ही रहने देना ठीक समझा.

बड़ी रानीके बारेमें भी उनकी यही इच्छा थी, किन्तु उन्हें साथ चलनेसे नहीं रोक सके. उन्होंने टीपूके साथ हुए युद्धमें पूरे समय साथ रहकर सुख-दुःख की भागिनी बनकर सेवा की थी. ऐसी सहधर्मिणीको रोकनेकी हिम्मत ही उन्हें नहीं हुई. परन्तु दूसरी पत्नी न केवल युवती ही थी वरन् उसे संगीत आदिसे भी विशेष प्रेम था. अतः तंपुरान उसे सुकुमार प्रकृतिकी समझते थे. कदाचित् उन्होंने वनमें दो पत्नियोंके साथ रहनेसे संभाव्य कठिनाइयोंकी कल्पना भी की होगी. कुछ भी हो, माक्कम् केट्टिलम्मा को कैतेरी† वापस जाना ही पड़ा.

कैतेरी-भवन की गृहेश्वरी उण्णियम्मा माक्कम्की बड़ी बहन और तम्पुरानके एक प्रमुख सेवक पष्यंवीट्टिल चन्तुकी पत्नी थी. चन्तु पहले-पहल केवल दौड़-धूप का काम करनेवाले एक छोकरेके रूपमें तम्पुरानके पास आया था, परन्तु बादमें अपने सामर्थ्य और तम्पुरानके आश्रितोंके प्रति सहज वात्सल्यके कारण उनके मुख्य अधिकारियोंमेंसे एक बन गया. टीपूके साथ युद्धके समय वह तंपुरानका दाहिना हाथ था. स्थान-मानादिसे हीन होनेपर भी तम्पुरानकी आज्ञासे अम्पु नायर

† माक्कम् और उसके भाई अम्पु नायरका घर.

आदिने उसे कैतेरी-परिवारका संबंधी बनाना स्वीकार किया था.

चन्तुको तम्पुरानकी दृष्टिमें जो स्थान और देशमें जो प्रमुखता प्राप्त थी उसपर उण्णियम्माको बहुत अभिमान था. एक-दो वर्ष बाद जब तम्पुराननें उण्णियम्माकी छोटी बहन माक्कम्को पत्नीके रूपमें स्वीकार कर लिया तो उसे अपनी पदवीमें कमी महसूस होने लगी. उसे माक्कम्के प्रति जो ईर्ष्या हुई वह धीरे-धीरे व्यंग्यके रूपमें प्रकट होने लगी. परन्तु बड़ी बहनके इस विरोधी रुखका कारण शुद्ध-हृदय माक्कम्की समझमें नहीं आया. तम्पुरानके देशमें रहते समय माक्कम् राजमहलमें ही रहती थी, इसलिए उण्णियम्माको अपना मनोभाव प्रदर्शित करनेका अवसर नहीं मिला था. जब वे वनवासी हो गए तब माक्कम् केट्टिलम्माको घर लौटना पड़ा* और उण्णियम्माको अवसर मिल गया.

कैतेरी-भवनमें उण्णियम्मा, उसके दो बच्चे, माक्कम् और उनकी स्वर्गवासिनी ज्येष्ठ सहोदरीकी एक सन्तान—नीलुक्कुट्टी—ही रहते थे. नीलुक्कुट्टीकी माताकी मृत्यु उसके शैशवमें ही हो गई थी, अतएव माक्कम्ने ही उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था. पप्श्शिमें भी नीलुक्कुट्टी माक्कम्के साथ रही थी.

कैतेरी-कुटुम्बकी और भी शाखाएँ थीं. वे सब अलग-अलग घरोंमें रहती थीं. 'कैतेरी वडक्केवीट्टिल' नामके भवनमें चार-पाँच पुरुष, सात-आठ स्त्रियाँ और उन सबके बच्चे अपने मामा इक्कण्डन् नायरके आश्रयमें रहते थे. इक्कण्डन् नायरकी आयु साठ वर्षसे ऊपर थी. परन्तु

---

* केरलमें मातृसत्ता प्रचलित है, जो भारतके किसी अन्य प्रान्तमें नहीं है. अतएव विवाहके बाद भी लड़कियोंके लिए माताका घर ही अपना घर होता है, पतिका घर नहीं. लड़केका घर भी यही होता है. इसलिए भाई और बहनका घर एक ही हुआ. वंशकी स्थापना लड़कोंसे नहीं, लड़कियोंसे होती है. इस प्रथाको मलयालममें 'पेन्वष़ी' कहते हैं, जिसका अक्षरशः अर्थ है—'स्त्री द्वारा'.

उनमें शक्तिकी कमी बिलकुल नहीं थी. साठ वर्ष पूर्ण हो जाने पर भी वे एक युवतीको विवाह करके ले आये थे. लोगोंका कहना था कि वे तांत्रिक हैं, श्मशानमें जाकर देवीका पूजन किया करते हैं और 'पंच मकार' (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मानिनी) के सेवनमें रुचि रखते हैं. एक बात तो निश्चत है—स्वयं इक्कण्डन नायर ही स्वीकार करते थे कि बिलायती मद्य उन्हें विशेष प्रिय है. व्हिस्की, ब्रैंडी आदिकी प्रशंसा उनके मुँहसे सुननेपर ऐसा मालूम होता था कि समुद्र-मंथनसे सुधा प्राप्त करके देवगण उसके गुणोंका वर्णन कर रहे हों.

स्वामिनीकी आज्ञा से सेविका बाहर आई और उसने रुखाई के साथ कम्मूसे पूछा—"क्या बात है ? कहाँसे आये हो ?

"अम्पु यजमानने केट्टिलम्माके लिए एक पत्र दिया है. वही लाया हूँ."

"तो बैठो, मैं अन्दर जाकर बताती हूँ."

थोड़ी देरमें उण्णियम्मा, माक्कम् और नीलुक्कुट्टी बरामदेमें आ गईं. बहनोंमें आयुका अन्तर बहुत न होनेपर भी माक्कम् केट्टिलम्माको पहचाननेमें कम्मूको देरी नहीं लगी. दोनों सुन्दरी थीं, परन्तु उसने निश्चय जान लिया कि खूब गहने पहने हुए, पानसे होठोंको लाल किये हुए और सुवर्ण-वसन आदिसे सुसज्जित स्त्री विरह-पीड़िता राज-पत्नी नहीं हो सकती. इतना ही नहीं, बड़ी बहन की संशयमय दृष्टि और अप्रसन्न मुद्रा भी बता रही थी कि यह राज-पत्नी माक्कम् नहीं है. अपने मनमें संकल्पित रूप जिसमें देखा उसीको उसने पहचाना. शोकाकुल होनेपर भी स्वभावसे प्रसन्न-मुख, विरहोचित अल्प भूषा, निराडंबर शुभ्र वेश, अंजन-रहित आँखें माक्कम् केट्टिलम्माको पहचाननेमें कम्मूकी सहायक हुईं. उसको झुककर नमस्कार करके उण्णियम्माके हाथकी उपेक्षा करके, उसके ही हाथमें उसने अम्पु नायरका पत्र समर्पित किया. उसने यह नहीं जाना कि इस एक गलती से ही उसने एक पक्का शत्रु बना लिया.

उण्णियम्माका मुख लाल होते और भाव बदलते माक्कम्ने ही देखा. उसने पत्रको देखे बिना ही उण्णियम्माकी ओर बढ़ा दिया.

उण्णियम्माने उत्तर दिया—नहीं, तुम ही देखो. तम्पुरानकी कोई बात होगी.

माक्कम्—तो भी क्या हुआ ? आपसे छिपानेकी क्या बात है ?

"ओ हो ! जरा कोई सुने तो सही ! तुम लोगोंका भाव ऐसा ही तो है ! मैं कौन होती हूँ ? आ गई हूँ कहींसे ! दादाने भी तो तुमको ही लिखा है. अपना काम तुम ही देख लो !" कहती हुई उण्णियम्मा तमककर अंदर चली गई.

माक्कम्ने पत्र पढ़नेके बाद पूछा—दादा अच्छे तो हैं ?

"जी हाँ!"

"आपको यहाँ रहनेके लिए लिखा है. इसमें कोई कठिनाई नहीं है. परन्तु प्रश्न यह है कि काम क्या होगा?"

"शायद यह सोचकर भेजा होगा कि जहाँ स्त्रियाँ अकेली रहती हैं वहाँ एक पहरुवा ही हो जाय."

माक्कम्ने मुस्कराहटके साथ उत्तर दिया—ठीक ! कैतेरीमें भी पहरे-की आवश्यकता दादाको महसूस हो रही है तो हालत गंभीर ही होनी चाहिए. परन्तु जबतक श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपा है, ऐसी अवस्था नहीं होगी."

"यदि मेरे मुँहसे कोई गलत बात निकल गई हो तो क्षमा कीजिए. जबतक स्वामी नहीं बुलाते तबतक आपका आज्ञाकारी बनकर रहनेसे बढ़कर मेरे लिए और क्या है ?"

"अच्छा, इसमें लिखा है कि आपका अभ्यास पूर्ण हो गया है. तो हमारी अभ्यास-शालामें जिनका अभ्यास पूर्ण नहीं हुआ उनको आप सिखा सकते हैं ?"

"जी हाँ. मैं वही काम करूँगा."

"धनुष और तलवारके अतिरिक्त बन्दूक चलाना भी आपने सीखा है ?"

"बहुत अभ्यास है ऐसा तो नहीं कह सकता, फिर भी अचूक बन्दूक चला लेता हूँ, बस."

"तो मैं भी सीखना चाहती हूँ. पहाड़ोंपर जानेके पहले उन्होंने मुझे रिवाल्वर भेंट किया था और कहा था—'अब अधिक काम इससे होता है, इसे सदा साथ रखना. परन्तु इसका प्रयोग सिखानेका समय नहीं रहा. कभी होगा भी, पता नहीं. "

अन्तिम वाक्यसे प्रकट हुई अधीरताको शीघ्रतासे छिपाकर माक्कम्-ने फिर कहा—"अच्छा तो उसे ले आती हूँ."

और वह रिवाल्वर लाने अन्दर चली गई.

कम्मूके मनमें न जाने क्या-क्या विचार उठने लगे. कितनी कुलीन! कितना विनय ! कैसी स्नेहमयी वाणी ! कितना गाम्भीर्य ! उसका हृदय विस्मयसे भर उठा. कैतेरीमें रहनेका आदेश जब अम्पु नायरने दिया था तब उसको सन्तोष नहीं हुआ था. परन्तु अब, केट्टिलम्मासे मिलकर बातें करनेके बाद, वह कैतेरीमें रहना अपना परम सौभाग्य समझने लगा.

केट्टिलम्मा रिवाल्वर लेकर बाहर आ गई. उसने यह कहते हुए हथियार कम्मूके हाथमें दे दिया कि "इसे कैसे चलाते हैं मैं नहीं जानती. मय्यषीके किसी साहबने इसे तम्पुरानको उपहारके रूपमें दिया था."

कम्मूने इस प्रकारका हथियार पहले कभी नहीं देखा था. वह जेबमें रखने योग्य छोटा और इतना हल्का था कि बच्चे भी खेल सकें.

अपनी हथेलीके अन्दर आ जानेवाली उस छोटी-सी चीजको देखकर पहले महाराजाने उसे खिलौना ही समझा था और यही समझकर उसके बारेमें बात भी की थी. परन्तु भेंट देनेवाला फ्रांसीसी सेनाका एक उच्च अधिकारी था और उसने इस हथियारकी बहुत प्रशंसा की थी. इसीलिए महाराजाने एक दूसरे यूरोपीय सैनिक अधिकारीको, जो उनसे

मिल्न आया था, यह रिवाल्वर दिखाया. इसे चलाकर उस अधिकारी-ने अपना मत दिया कि इसके समान ठीक निशाना मारनेवाला हथियार कठिनाईसे मिलेगा. फिर भी महाराजा-जैसे पुरुषोंके लिए इसका भार बहुत कम था.

तंपुरान जब पपश्शि छोड़ रहे थे तब उन्होंने यह रिवाल्वर माक्कम्-को दे दिया था. पता नहीं उन्होंने इस प्रकारकी भेंट अपनी प्रियतमाको क्यों दी. कदाचित् उन्होंने सोचा होगा कि यदि मेरी मृत्यु अथवा पराजय हो जाय तो मेरी प्रिय पत्नी गिरफ्तारी आदि अवश्यंभावी परिणामों-से इसके द्वारा अपनी रक्षा कर लेगी—कदाचित् वे उसे यह उपाय सुझा रहे थे. अथवा उन्होंने यह सोचा होगा कि काल-स्थितिके अनुसार स्त्रियों-के लिए भी स्वयं रक्षा-मार्ग खोजना आवश्यक हो सकता है. अथवा, अपने-से ही शस्त्र-विद्या सीखी हुई माक्कम्की शिक्षा पूर्ण करनेकी दृष्टिसे उन्होंने ऐसा किया हो. केट्टिलम्माका विचार था कि तंपुरानने यह सब सोचकर ही यह भेंट दी होगी.

परन्तु लाभ क्या ? धनुष और तलवारका पर्याप्त परिचय होनेपर भी केट्टिलम्माको बन्दूकसे कारतूस निकालना तक मालूम नहीं था. उसने उसे अनेक बार हाथमें लेकर और उलट-पुलटकर देखा, परन्तु वह उसके लिए एक खिलौना-मात्र ही बना रहा. इसका दुःख उसके मनमें भरा हुआ था. जब कम्मूने कहा कि बन्दूकका भी अभ्यास उसने किया है तो इसे चलाना सीख लेनेकी इच्छा माक्कम्के हृदयमें प्रबल हो उठी.

कम्मूने विनयके साथ रिवाल्वर हाथमें लिया और उसे देखा. खोल-कर निश्चय कर लिया कि इसमें कारतूस नहीं भरा हुआ है. और उसे दाहिने हाथमें लेकर, अँगूठेसे घोड़ा दबाकर चलानेकी विधि बता दी.

उसने बताया कि यहाँ कारतूस रखा जाता है, इस प्रकार बन्द किया जाता है, फिर चलानेके लिए यह जो अँगूठा-जैसा दीख रहा है, इसे खींचकर छोड़ देते हैं.

"कारतूस मेरे पास हैं. एक-दो बार इसे चलाकर दिखाइए !" केट्टिटलम्माने कौतुकके साथ कहा.

इस नये हथियारमें ध्यान लग जानेसे वह वीरांगना क्षण-भरके लिए अपनी बहनके व्यंग्यादिकी तथा अन्य सब दुःखोंकी वेदना भूल गई. उसने ऐसा आनन्द अनुभव किया मानो किसी कामिनीने नया अलंकार अथवा किसी शिशुने नया खिलौना पा लिया हो. वह शीघ्रतासे जाकर कारतूस ले आई.

कम्मूने निस्संकोच भावसे उसमें कारतूस भरकर कहा—"यह दूरके शत्रुको मारनेके लिए उपयोगी नहीं हो सकता, पास आनेवालेको एक ही वारमें गिराया जा सकता है. और इससे लगातार छः वार कर सकते हैं.

वह आँगनमें उतरा. केट्टिटलम्मा भी साथ हो ली. कम्मूने एक पत्ता लेकर तालाबके पासके एक पेड़पर काँटेसे खोंस दिया; फिर अपने स्थान-पर लौटकर 'देखिए' कहते हुए, हाथ आगे बढ़ाकर रिवाल्वर चला दिया. गोली सीधी जाकर उस पत्तेके बीचमें लगी.

"लक्ष्य खूब सधा, जरा मैं भी देखूँ"—कहते हुए केट्टिटलम्माने रिवाल्वर अपने हाथमें ले लिया.

रिवाल्वरके शब्दसे भयभीत होकर जब उण्णियम्मा बाहर दौड़ी आई तो उसने देखा कि मावकम् खुश होकर रिवाल्वर हाथमें लिये खड़ी है. उसके क्रोध और ईर्ष्याकी सीमा न रही. उसने बड़बड़ाना आरम्भ कर दिया—'देखो तो, यह मेरी बहन है! अपरिचित युवकके साथ कैसी हिली-मिली आँगनमें खड़ी है ! अपनी मान-मर्यादाका कोई ख्याल ही नहीं ! क्या यह अनुचित नहीं है ?'

मावकम् तो शस्त्राभ्यासके उत्साहमें सब-कुछ भूल गई थी. उसने यह कहते हुए कि देखूँ, तुमने जहाँ निशाना मारा वहाँ मैं भी मार सकती हूँ या नहीं और रिवाल्वर चलाया. गोली लक्ष्यसे तीन इंच दूर लगी.

कम्मूने कहा—धनुष चलानेवालोंका लक्ष्य चूक नहीं सकता. हाथ जरा खोलकर अँगूठेसे कई बार अभ्यास कीजिए. हाथ सध जायगा."

"एक बार फिर देखूँ" कहते हुए केट्टिटलम्माने फिर गोली छोड़ी. इस बार वह लक्ष्यके अधिक समीप लगी. इससे उत्साहित होकर उसने और गोली चलाई. चौथी बार लक्ष्य-वेध हो गया और मानकम्के मुख-पर सफलता-सूचक मंदहास दमक उठा. उसने कहा—"जब पधारेंगे तब उनको दिखाऊँगी कि इससे क्या कर सकती हूँ, और किसने यह विद्या सिखाई है यह भी निवेदन करना नहीं भूलूँगी."

"मैंने तो कुछ भी नहीं सिखाया. रिवाल्वर खोलकर दिखा देनेके सिवा मैंने किया ही क्या है ?" कम्मूने विनय प्रकट करते हुए कहा.

"और कैसे सिखाते ?" मान्कम्ने पूछा और फिर कहा—"अभ्यास-शालामें सिखाना शुरू करनेके पहले ही अपने सामर्थ्य की परीक्षा तो दे दी ! संकोच करनेकी कोई बात नहीं. सिखानेवाले चले गए तो हमारी अभ्यास-शाला अनाथ हो गई थी, अब उसे सिखानेवाला गुरु मिल गया. अब उस ओर चलो तुम्हारे भोजनादिका प्रबन्ध कर दूँ."

कम्मूसे इस प्रकार कहकर जैसे ही वह बरामदेमें आई वैसे ही उसे उण्णियम्माके वाग्बाणोंकी तीक्ष्णता अनुभव करनेका अवसर मिला, "मान-मर्यादा का उल्लंघन करके चाहे जिसके साथ इस प्रकारका व्यव-हार करना इस घरके लिए अपमानजनक है. राज-पत्नी होने के अभि-मानमें कुछ भी करने लगो, परन्तु पूछनेवाले भी होंगे" आदि-आदि बहुत-कुछ बकवास उसने की. मान्कम् बहुत देरतक इन बातोंको सुनी-अन-सुनी करके चुपचाप खड़ी रही, फिर भी जब उण्णियम्माने अपना विष-वमन बन्द न किया तो उसने नम्रतापूर्वक पूछा, "आखिर मैंने किया क्या है, जो आप यह सब कह रही हैं ?"

यह प्रश्न उण्णियम्माकी क्रोधाग्निमें घृताहुतिके समान पड़ा. उसने कहा—"शर्म नहीं आती ? कहींसे आये किसी भी पुरुषके साथ खड़ी

मटक-मटककर बातें कर रही है. देखनेको और किसीके आँखें नहीं हैं? कुलका नाश करनेके लिए पैदा हुई ज्येष्ठा* !

माक्कम् और अधिक सुननेके लिए वहाँ खड़ी नहीं रही और अपने कमरेमें चली गई.

*श्री का विपरीत शब्द. पौराणिक कथाके अनुसार, समुद्र-मंथनसे श्रीके पूर्व ज्येष्ठा भगवती निकली थी, जो सब अवगुणोंसे पूर्ण और सर्वथा अशुभकारिणी है. सब अशुभ स्थानोंमें उसका निवास माना जाता है. श्रीके पूर्व प्रकट होनेके कारण उसे ज्येष्ठा (बड़ी) कहा गया है.

पाँचवाँ अध्याय

पुरळी पर्वतमाला कोट्टयं-प्रदेशके मेरुदण्डके समान है. हाथियों, व्याघ्रों, चीतों, जंगली भैंसों आदि हिंस्र पशुओंसे भरे इन पहाड़ोंपर वेड़र* और कुरिच्यर† आदि वन्य जातियोंके अतिरिक्त कोई नहीं रहता. पहाड़ी जंगलमें ऊँचे-ऊँचे वृक्षोंकी चारों ओर फैली शाखाओं और प्रशाखाओंके कारण सूर्यकी किरणें भी वहाँ प्रवेश नहीं कर पातीं. वृक्षोंपर चढ़ी और घने रूपमें फैली समस्त भूभागको छिपा लेनेवाली लताओं और झाड़ियोंके कारण वन्य पशुओंके लिए भी उसके अन्दर घूम-फिर सकना सुगम नहीं है. वर्षा-काल आरम्भ हो जानेसे वृक्षोंकी शाखा-प्रशाखाएँ नव-नव पल्लवोंके साथ लहलहा उठी थीं और प्रकृतिदेवी अपने इस हरित वैभवका प्रदर्शन करके मानो नवोन्मेषके साथ आह्लादित हो रही थी.

---

* वेड़ या वेड़न्का बहु वचन. एक वनवासी जाति. व्याध जाति.

† कुरिच्य अथवा कुरिच्यन्का बहु वचन. एक वनवासी जाति, जिसे न केवल अस्पृश्य माना जाता था, वरन् सवर्ण लोगोंसे एक निश्चित दूरीपर रखा जाता था. अब भी इस जातिके इक्के-दुक्के लोग वनोंमें पाये जाते हैं. विश्वसनीयता और वीरता इन लोगोंके विशेष गुण थे.

लगभग पच्चीस वर्षोंसे पुरळी पर्वत कोट्टयं राज्यकी दूसरी राजधानी बना हुआ था. हैदरअलीके जमानेमें केरलवर्माने जब इस वनका आश्रय लिया था तभी उन्होंने इसकी गोदमें अभयका मूक संदेश पा लिया था. और तभीसे अपनी दूरदर्शिताके कारण, आवश्यकता पड़नेपर उपयोग करनेके लिए उसे सुसज्जित करके निवासयोग्य भी बना रखा था. वनके अन्तरालमें एक भाग साफ कराकर एक छोटा-सा मकान, एक देवीका मन्दिर, अनुचर-परिचरोंके रहनेके लिए लम्बी शालाएँ, अस्त्र-शस्त्र संग्रह करके छिपा रखनेके लिए तलघर आदि सभी आवश्यक घर-मकान तैयार कर लिए गये थे. वहाँतक पहुँचनेका मार्ग कुछ खास-खास नेताओं और विश्वास-पात्र कुरिच्योंके अतिरिक्त किसीको मालूम नहीं था.

लोगोंका ख्याल था कि जब तम्पुरान कंपनीके साथ संधि करके राज्य कर रहे थे तभी उन्होंने परदेशी खनकोंको बुलाकर वहाँ कुछ सुरंगें बनवा ली थीं और गुफाओंमें भी कुछ काम करवा लिया था. परन्तु सबकी जानकारी तम्पुरान और उनके दो भानजों, और कुरिच्योंके नायक तथा एक-दो मुख्य सेवकोंके अतिरिक्त किसीको नहीं थी.

उन्होंने मान रखा था कि जन्म-पत्रीके दुष्ट ग्रहोंके अनुसार शनिके प्रभावके कारण कानन-वास करना होगा. इसीलिए उस ज्योतिष-शास्त्रज्ञने केवल पुरळी पर्वत ही नहीं वरन् वयनाट्टुके अन्य दुर्गम वन-प्रदेशोंमें भी ऐसी तैयारियाँ कर रखी थीं. यह बात खास खवासोंको ही ज्ञात थी. उन सब स्थानोंमें कुरिच्यों और वेड़ोंका पहरा रहता था. इसलिए शत्रुके हमलेका डर वहाँ बिलकुल नहीं था.

कंपनीवालोंने समझा कि तम्पुराननें उनके भयसे ही राजमहल छोड़कर पहाड़ोंमें शरण ली है. परन्तु यथार्थ बात यह नहीं थी. वे युद्धसे चिर-परिचित थे और जानते थे कि युद्ध करनेकी सुविधा पहाड़ोंके बीचसे ही अधिक होगी. इधर कर्नल वेलेस्ली और उसके सेनानायक तम्पुरानके जंगलोंमें चले जानेसे प्रसन्न हुए और उन्होंने मान लिया कि

कोट्टयंपर अधिकार करनेका सुअवसर आ गया है. इसकी प्रारम्भिक कार्रवाईके रूपमें उन्होंने एक फरमान जारी करनेका निश्चय किया. जिसका सारांश यह था कि "सब लोगोंको चाहिए कि वे पषश्शि राजा कहलानेवाले केरलवर्मा अथवा उनके साथियोंको किसी प्रकारकी सहायता न दें. जो-कोई सहायता करेगा उसे कंपनीकी ओरसे कठोर दण्ड दिया जायगा. जिन लोगोंने आजतकके युद्धोंमें भाग लिया है वे यदि शस्त्र रखकर कंपनीकी अधीनता स्वीकार कर लेंगे तो उन्हें क्षमा कर दिया जायगा."

कंपनीके पिट्ठू कुछ देशी प्रमुखोंने परामर्श दिया कि महाराजाकी गैरहाजिरीमें इस प्रकारकी घोषणा आवश्यक सैन्य-शक्तिके प्रदर्शनके साथ मानंचेरीमें ही की जाय तो प्रजा खुल्लम-खुल्ला तम्पुरानको छोड़कर कंपनीके आश्रयमें आ जायगी. कंपनीवालोंने समझ लिया कि इस प्रकार कोट्टयं राज्यमें अपनी सत्ता स्थापित करनेके बाद पुरळी पर्वतको घेरकर तम्पुरानको पकड़ लेना कठिन न होगा. देशवासियोंको अपने अधीन करके तम्पुरानके पास भोजन-सामग्रीका जाना रोककर, कंपनीके सैनिकों-द्वारा चारों ओरसे एक साथ आक्रमण करवाना यह उनकी योजना थी.

तम्पुरानने अपने गुप्तचरोंके द्वारा इस योजनाका पूरा पता लगा लिया था. और, कंपनीने इसके लिए कितनी सेना एकत्रित की है, उसका क्या बल है, उसके मार्ग कौन-कौन-से होंगे आदिकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए उन्होंने अपने विश्वस्त सेवक अम्पु नायरको तलश्शेरी भेजा था. अम्पुने अपने अनुसंधानोंका परिणाम अबतक उन्हें नहीं बताया था.

जिस दिन मानंचेरीमें घोषणा होनेवाली थी उस दिन तीसरे पहर तम्पुरान अपने निवास-स्थानके निकट एक वृक्षकी छायामें बिछायत करके बैठे हुए थे. उनके पास ही अपना उत्तरीय बिछाकर अरळात्तु नम्पि भी बैठे हुए थे. थोड़ी दूरपर चार-पाँच कर्मचारी अदबके साथ खड़े थे.

तम्पुरान बोले—शायद आज दोपहरको कंपनीवाले मानंचेरीमें

ढिंढोरा पीटकर घोषणा करने वाले थे. उसके बारेमें कोई समाचार नहीं आया.

नम्पि—वे घोषणा करके चले भी गये होंगे. हमें क्या ? इतना तो निश्चित है कि जनता उनकी आज्ञा नहीं मानेगी.

कण्णोत्तु नम्पियार—कंपनीवाले कितना भी ढिंढोरा पीटें, कोट्टयं-की प्रजा उनके अधीन नहीं हो सकती. और घोषणा करने आये हुए ढिंढोरची लोगोंको यों ही छोड़ दिया जायगा ऐसा भी नहीं लगता.

तम्पुरान—मुझे यही भय है. यदि प्रजा कंपनीकी सेनासे लड़ पड़ी तो कठिन हो जायगा. बन्दूकोंसे लैस सेनाके सामने खाली हाथ या ईंट-पत्थर लेकर खड़े हो जानेका क्या परिणाम होगा ? मैंने कहला भेजा था कि सब लोगोंको शान्त रहना चाहिए.

तलय्कल चन्तु—कंपनीवालोंको विजयोन्मादमें जीतका प्रदर्शन करनेकी इच्छा हुए बिना नहीं रह सकती. इसलिए वे कोई भी कारण बनाकर प्रजापर आक्रमण कर सकते हैं.

तम्पुरान—चन्तु ठीक कहता है. जय-भेरीके साथ श्रीगणेश करने-पर ही कंपनीवालोंको प्रजासे सहायताकी कोई आशा हो सकती है. वे लोग पूरे मानंचेरी प्रदेशको रक्तसे सान देनेमें संकोच नहीं करेंगे. तभी तो ढिंढोरा पीटकर यह कह सकेंगे कि केरलवर्मा अपने मानंचेरीकी भी रक्षा नहीं कर सका ? कुरिच्यर अंधेरा होनेके पहले आ नहीं जायेंगे ?

मानंचेरीमें क्या हुआ यह जाननेकी उत्सुकताका संवरण कोई भी नहीं कर पा रहा था. धीरमति, अनुद्विग्न-मना तंपुरानको भी इस नाटक-की नान्दी कैसे हुई यह जाननेकी उत्कंठा थी. सब-के-सब मानंचेरीके समाचार लेने गए हुए कुरिच्योंके लौटकर आनेकी राह देख रहे थे.

इसी बीच एक व्यक्ति शीघ्र गतिसे जंगलमें रास्ता बनाता हुआ आता दिखाई पड़ा. हाथमें ढाल और तलवार तथा कमरमें लटकती हुई कटार देखनेसे ही स्पष्ट था कि आनेवाला कुरिच्य नहीं, नायर है. नम्पि-यार तम्पुरानका इशारा समझकर दूरसे आते हुए व्यक्तिके पास गया.

पूछनेपर आगन्तुकने कहा–"अम्पु यजमानके पाससे आ रहा हूँ. समाचार देनेके लिए उन्होंने भेजा है."

"क्या हुआ वहाँ ?"

"कंपनीवालोंकी सेना आज सुबह मानंचेरीमें पहुँच गई थी. वे लोग ढिंढोरा पीटकर लोगोंको इकट्ठा करके घोषणा पढ़ने लगे. परन्तु पहला वाक्य भी पूरा नहीं कर पाये. पढ़नेके लिए जो व्यक्ति खड़ा हुआ उसे यजमानने एक गोलीसे गिरा दिया. उसके बाद जो लड़ाई हुई उसमें कंपनी-की पूरी सेनाका सफाया कर दिया गया."

कण्णोत्तु नम्पियार शीघ्रताके साथ तम्पुरानके पास गये और उन्होंने उन्हें समाचार दिया.

तम्पुरान—अम्पु अद्भुत आदमी है ! उसने कैसे यह किया ? समाचार लानेवालेको यहाँ बुलाओ.

तम्पुरान तथा अन्य सभी लोगोंने मानंचेरीकी घटनाका पूर्ण विवरण जाननेके लिए संदेश-वाहकसे तरह-तरहके प्रश्न किये. उसके उत्तरोंसे जो मालूम हुआ वह इस प्रकार है—

कंपनीकी सेना जब मानंचेरी पहुँची तब वहाँके लोग बहुत भयभीत हुए. परन्तु अम्पु नायरने आदमी भेजकर घर-घर खबर भिजवाई कि सब वयस्क पुरुष घोषणा सुननेके लिए अवश्य पहुँचें. फलतः सेनापति लारेंसके ढिंढोरा पिटवानेपर झुंड-के-झुंड लोग मन्दिरके अहातेमें एकत्रित हो गए. अम्पु नायरके लोग भी उनमें शामिल थे. समाचार जाननेके लिए तम्पुरानने जिन कुरिच्योंको भेजा था उन्हें कंपनीकी सेनाके वापसी-के मार्गपर छिपाकर खड़ा कर दिया गया. जब सेना बन्दूकोंसे लैस होकर तैयारीसे खड़ी हो गई तब बड़ा साहब कुर्सीपर बैठा. उसके बाद घोषणा पढ़नेकी आज्ञा दी गई. पढ़ना शुरू ही हुआ था कि अम्पु नायरने दुभाषियेको गोलीसे गिरा दिया. इसपर साहब बन्दूक लेकर खड़ा हुआ तो उसे भी गोलीका निशाना बना दिया गया. सेना एकदम गोली चलाने लगी. कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुए. परन्तु सेनानायककी मृत्युसे

और चारों ओरसे घिरे होनेके कारण उन सबको एक-एक करके नायरोंकी तलवारोंके घाट उतरना पड़ा. जो बाकी बचे वे भाग खड़े हुए, परन्तु उन्हें कुरिच्योंके तीरोंका शिकार होना पड़ा.

तम्पुरानने सब सुननेके बाद कहा—श्रीपोर्कली भगवतीकी ही सहायतासे यह सब संभव हुआ. घटना छोटी होनेपर भी इसका फल बड़ा होगा. केरल-भरके लोग इसको एक शुभ शकुन मानेंगे.

वक्कूर एमन नायर—तम्पुरानके श्रीमुखसे निकला हुआ वचन सत्य है. तम्पुरानकी प्रजाके लिए यह एक जय-भेरी ही है. जो संकोच कर रहे हैं उनका साहस बढ़ेगा. अम्पुने उचित ही किया है.

कण्णोत्तु नम्पियार—लेकिन आगे ? वेंकाट्टु* और डिण्डिमलइ† दोनों स्थानोंमें कंपनीकी सेना मौजूद है, वयनाट्टुमें भी कई स्थानोंपर छावनी पड़ी है. इन सबपर एक साथ आक्रमण किया जा सके तो ही हम बच सकते हैं.

तम्पुरान—उसीकी तैयारी मैं कर रहा हूँ. वयनाट्टुकी स्थिति एडच्चेरी कुंकन सँभाल लेगा. वेंकाट्टुके लोगोंके लिए भी सेना भेज चुका हूँ. परन्तु डिण्डिमलइकी सेनाका मोर्चा लेना कठिन मालूम होता है. उसका स्थान सबल है. एमनका क्या मत है ?

एमन नायर—आगे बढ़कर आक्रमण करना हमारा आखिरी कदम होना चाहिए.

कण्णोत्तु नम्पियार—सबसे आवश्यक तो यह है कि पपृश्शिपर जो सेना घेरा डाले हुए है उसको नष्ट किया जाय. राज-मन्दिरमें ही म्लेच्छ सेनाका निवास करना हमारे लिए लज्जाकी बात है. वह तो हमारे पौरुषको ही चुनौती दे रही है. कंपनीके लोग जबतक पपृश्शि और कोट्टयंमें बने हैं, मेरा मन शान्त नहीं रह सकता.

---

* एक स्थान.

† एक पहाड़.

तम्पुरान यह सुनकर मुसकरा दिये. वे बोले—शंकरनको दो टूक बारकी ही नीति पसन्द है. तुम और अम्पु एक-से ही हो. सामर्थ्य हाथमें तो है, सिरमें नहीं है. यदि पषश्शिको सँभाल सकता तो क्या उसे छोड़कर जंगलमें आता ? हमारे लोग कंपनीकी बन्दूकोंके शिकार हो जायँ तो क्या लाभ ? मान लो कि आज हमने उन्हें पषश्शिसे हटा भी दिया तो क्या वे कल ही अधिक बड़ी सेना तलश्शेरीसे भेज नहीं सकते ? यदि मुझसे पहले पूछा गया होता तो शायद मानंचेरीमें भी मैं युद्ध न होने देता. पहाड़ोंमें कंपनीवालोंको घुसने न दें और इधर-उधर उनकी छावनियोंको नष्ट करते रहें. फिर वे जंगलोंमें सेना लायँगे और तबभी उनको नष्ट करने में हमें कठिनाई नहीं होगी. इसके विपरीत खुले मैदानमें उतरकर युद्ध करनेमें हमें सफलता नहीं मिल सकती.

सबने मान लिया कि बुद्धिमत्ताका मार्ग यही है. परन्तु कण्णोत्तु नम्पियारको यह पसन्द नहीं आया.

"अम्पु कहाँ गया ? और कुरिच्यर कहाँ हैं ?" तम्पुराननें पूछा.

मानंचेरीसे आये नायरने उत्तर दिया—एक-दो दिन बाद सेवामें उपस्थित हो जायँगे यह निवेदन करनेका आदेश दिया है. कुरिच्योंको साथ लेकर गये हैं

तम्पुरान—पता नहीं अब और क्या-क्या पराक्रम दिखाने गया है. कुछ-न-कुछ उपद्रव तो करेगा ही. यहाँ आ जाता तो कुछ समाधान होता..

अम्पु नायरका स्वभाव ही आज्ञासे अधिक काम करके दिखानेका था. उसकी स्वामि-भक्ति और पराक्रमसे तम्पुरान भलीभाँति परिचित थे. साथ-साथ वे यह भी जानते थे कि उसे किसी भी विपत्तिमें कूद पड़नेमें संकोच नहीं होता. सारी परिस्थितियोंको सोचे-समझे विना तत्काल लाभ देखकर साहस भी कर बैठता है. चिन्ता-सूचक भावके साथ उन्होंने कहा—"सब सोचते हैं, मानो यह पहले-जैसा ही युद्ध है. उस समय कंपनीके दिन अच्छे नहीं थे. उसको अनेक प्रबल शत्रुओंका सामना करना पड़ रहा था. आज वह स्थिति नहीं है. इधर-उधर जाकर उसकी सेनाको

परेशान करनेसे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा. टीपूके साथके युद्धसे ही पता चल गया है कि कर्नल वेलेस्ली कितना पराक्रमी है. उसे इधर भेजनेसे ही पता चलता है कि उनकी तैयारी कम नहीं है.'

तम्पुरानका कथन ठीक था. सभी जानते थे कि अबकी लड़ाई पहले-जैसी नहीं होगी. तलश्शेरीमें जो तैयारियाँ हो रही थीं उसकी थोड़ी-बहुत जानकारी उन सभीको थी. इसलिए उनके दिलोंमें भी कुछ भय होने लगा था. किन्तु महाराजा किसी ओरसे भी परिभ्रान्त नहीं थे. ब्रिटिश साम्राज्यकी सारी शक्ति एकत्र होकर आ जाय तो भी वे पराधीनता स्वीकार करनेवाले नहीं थे. यह निश्चय करके कि आगेकी कार्रवाई सोच-विचार करके ही होनी चाहिए, वे बहुत देरतक चुप रहे और फिर कण्णवत्तु-नम्पियारको पास बुलाकर बहुत देरतक गुप्त मंत्रणा करते रहे.

कण्णवत्तु नम्पियार तम्पुरानके प्रधानमंत्रीके स्थानपर थे. उनका कण्णवत्तु-कुटुम्ब उत्तर केरलके प्रमुख परिवारोंमेंसे एक था. सम्पत्ति, लोकप्रियता और परंपरागत शासनाधिकारसे यह कुटुम्ब अपने क्षेत्र का शासन सुचारु रूपसे करता रहा था. इसने कभी किसी राजाका अधिकार स्वीकार नहीं किया और न किसी प्रबल राजाने इनपर अधिकार चलाने-का कभी कोई प्रयत्न ही किया. स्वबल के अलावा बन्धु-बलसे भी कण्ण-वत्तु नम्पियार उस समय प्रबल और एक स्वतंत्र शक्तिके रूपमें था. कल्याट्टु, वेंङा आदि प्रदेशोंके सामन्तोंके साथ इस कुटुम्बका बन्धुत्व पुरातन कालसे चला आ रहा था. ऐसे समर्थ कण्णवत्तु शंकरन नम्पियार को महाराजाने अपना प्रधानमंत्री बनाया, इससे उनकी नीतिनिपुणता-का प्रत्यक्ष परिचय मिलता था.

शंकरन नम्पियार बाल्य-कालसे ही तम्पुरानके साथी थे. तम्पुरानके प्रति उनकी भक्ति और उनके प्रति तम्पुरानका विश्वास केरलमें सर्वजन-विदित था. यद्यपि तम्पुरान कहा करते थे कि नम्पियार अविवेकी हैं, कभी-कभी अनुचित साहस कर बैठते हैं. फिर भी, वास्तवमें नम्पियार दूरदर्शिता रखनेवाले उत्तम सचिव थे.

एक बात से महाराजाको बराबर चिन्ता होती रहती थी. अनेक असंगोंसे उन्हें प्रतीत हुआ था कि नम्पियार और अम्पु नायरके बीच कुछ मनमुटाव है. कारण यह था कि साहसी अम्पु नम्पियारके आदेशों-से आगे बढ़कर अपने-आप भी कुछ-न-कुछ कर लेता था. नम्पियारका ख्याल था कि अम्पुको ऐसा करनेका साहस इसलिए होता है कि उसकी बहन महाराजाकी प्रिय पत्नी हैं. अम्पुके मनमें यह विचार भरा हुआ था कि नम्पियारमें अग्रसर होनेकी शक्ति कम है और पीछे बैठकर सोचने-की ही शक्ति अधिक है. जो कुछ भी हो, यह स्पष्ट था कि उन दोनों के बीच विशेष स्नेह-भाव नहीं था.

मंत्रीसे मंत्रणा करनेके बाद महाराजाने निश्चय किया कि मंचेरी अत्तन कुरुक्कळके साथ संधि करनेका जो विचार चल रहा है उसे पूर्ण करनेके बाद ही कंपनीके साथ मोर्चा लेना चाहिए. नम्पियारने महाराजा-से कहा कि उत्तर केरलके नायर-प्रमुख कंपनीके साथ भिड़ते रहें तभी उसकी शक्ति छिन्न-भिन्न होगी और हमारे ऊपर नहीं आयगी. इसलिए, कल्याट्टु तथा वेङ आदिके सामन्तोंको प्रोत्साहित करके उनके साथ बन्धुत्व दृढ़ करना, स्वतंत्र रूपसे सेना तैयार करवाना, कंपनीके विरोधियोंको पक्षमें कर लेना और उनके द्वारा कंपनीके यातायात तथा भोजन-सामग्रीके आने-जानेमें बाधाएँ डलवाना यह सब सर्वाधिक आवश्यक है. यह सब करनेकी आज्ञा महाराजाने कण्णवत्तु नम्पियारको दे दी.

छठा अध्याय

●

बारह वर्षोंसे जो हार-ही-हार हो रही है उसका किसी भी प्रकार अन्त करनेके लिए कंपनीके अधिकारी व्याकुल हो उठे. समय भी उनके अनुकूल था. दक्षिणापथमें दश-कंधरके प्रतापके समान राज्य करनेवाला टीपू दो वर्ष पूर्व श्रीरंगपट्टनके युद्धमें धराशायी हो चुका था. मैसूर राज्य कंपनीके अधीन था. महाराष्ट्र साम्राज्यके नायक आपसमें फूट होनेके कारण दुर्बल हो रहे थे. पेशवा कंपनीके आश्रयमें जानेके लिए तैयार थे. यद्यपि सिंधिया, होलकर आदिको निःशेष करनेका गवर्नर-जनरलने निश्चय कर लिया था, तथापि तैयारी पूर्ण करनेके लिए कम-से-कम एक वर्षकी और आवश्यकता थी. इसलिए उन्होंने अपनी सारी शक्ति लगाकर पषृशि राजाको दबानेका निश्चय किया. कर्नल ड्यू और मेजर कामरान आदि सेनानायकोंके अनुभवसे गवर्नर-जनरलने जान लिया था कि यह काम किसी साधारण व्यक्तिका नहीं है. इसलिए उसने टीपूके साथके युद्धमें असामान्य कूट कौशलका प्रदर्शन करनेवाले अपने भाई आर्थर वेलेस्लीको इस कामके लिए नियुक्त किया. यद्यपि अभी वह बत्तीस वर्षकी आयुका युवक ही था फिर भी उसमें वह विचारशीलता और सामर्थ्य विद्यमान था, जिसने आगे चलकर लोकनेता नेपोलियनको हरानेमें उसे सफल बनाया. भारतमें सभी जानते थे कि यह वीर, जो बाद में वेलिंगटनके नामसे प्रसिद्ध हुआ, गवर्नर-जनरल वेलेस्लीका दाहिना हाथ है.

कर्नल वेलेस्लीकी मुखाकृति पाश्चात्य सामन्तोंके अनुरूप थी. अविवेक नामकी चीज़ उसमें थी ही नहीं. मितभाषिता, मित आहार-विहार एवं अत्यधिक कष्ट-सहिष्णुता आदि उसके सहज गुण थे. सुना जाता है कि लम्बे समयतक ब्रिटिश साम्राज्यके प्रधान राजनीतिज्ञ और विश्वके प्रथम सेनानीके रूपमें काम करनेवाले इस महापुरुषके मुखसे न तो कभी कोई विचारहीन शब्द निकला और न कभी उसने कोई विचारहीन कार्य ही किया. इतने महान् योद्धाका केरल-स्थित ब्रिटिश सेनाका सेनापति नियुक्त किया जाना ही यह प्रमाणित करता है कि कंपनीके लोग पष्शिराजासे कितने डरते थे और उनके नेतृत्वमें चलनेवाले स्वातंत्र्य-संग्रामको कितना गंभीर समझते थे.

वेलेस्लीको केरल आये चार महीने हो चुके थे. वह पूर्ण रूपसे उस प्रदेशकी जानकारी भी प्राप्त कर नहीं सका था कि वर्षा आरंभ हो गई, और वर्षाके दिनोंमें वह तम्पुरानके साथ युद्ध छेड़नेको तैयार न हुआ. उसने सारा वर्षा-काल केरलकी स्थिति तथा लोगोंकी प्रवृत्तियोंको समझने और युद्धकी योजना बनानेमें व्यतीत किया. उसने अनेक बार नीलेश्वरसे कोषिक्कोड, (कालीकट) तककी यात्रा की और वहाँकी भू-प्रकृति तथा जनता और नेताओंकी विचार-धारा एवं मनोभावों आदिको समझनेका प्रयत्न किया.

श्रावण मासका आगमन हुआ. इस समय भी तलश्शेरीमें युद्धकी कोई तैयारी दिखलाई नहीं पड़ी. बम्बईसे गोरी पलटन और देशी सेना तथा तोपें और बन्दूकें आदि भारी संख्यामें आ रही थीं. परन्तु उन्हें एकत्र करनेके अलावा युद्धकी कोई प्रत्यक्ष तैयारी वेलेस्लीने नहीं दिखाई.

तलश्शेरी दुर्गके सुपरवाइजर आदि अधिकारी अधीर होने लगे. उनमेंसे अनेकने कर्नल वेलेस्लीको तुरन्त युद्ध आरम्भ करनेकी आवश्यकता सुझाई. सबको वेलेस्लीने एक ही उत्तर दिया—"समय नहीं हुआ, जब होगा तब करूँगा."

किसीको भी नहीं मालूम था कि वेलेस्ली क्या करनेवाला है. कोट्टयं और कूत्तुपरम्पु* दोनों स्थानोंमें दो बड़ी सेनाएँ रखनेपर भी उसने उनको निश्चित आज्ञा दे रखी थी कि किसीसे भी झगड़ा न करें. इतना ही नहीं, वयनाट्टु आदि स्थानोंकी सेनाको वापस बुला लिया था. कोट्टयं और कूत्तुपरम्पुके अतिरिक्त मणत्तनामें कंपनीकी सेना थी. वेलेस्ली खुल्लम-खुल्ला अपने मित्रोंसे कहा करता था कि वह मणत्तना-से भी सेनाको वापस बुलानेवाला है.

तलश्शेरीके सुपरवाइजर बेबरको यह सब बहुत अखर रहा था. जहाँ सेना विशेष थी वहींसे कंपनीके व्यापारके लिए काली मिर्च आदि वसूल होती थी. जबसे कर्नल सेनाओंको वापस बुलाने लगा तबसे व्यापार-सामग्रीकी वसूली भी कम हो गई. अब यदि मणत्तनासे भी सेना हटा ली गई तो कंपनीके गोदामोंके खाली पड़े रहनेकी नौबत आ जायगी.

उसे चिन्ता थी कि कहीं इस बारेमें बम्बईके गवर्नरने जवाब तलब किया और यह उत्तर दे दिया गया कि सेना-नायकको व्यापारमें दिलचस्पी नहीं है इसलिए ऐसा हो रहा है, तो नौकरीसे ही हाथ धोना पड़ेगा. कंपनीसे तो कोई बहाना भी बना सकता था, केवल एक चेता-वनी ही मिलती, इसलिए इस ओरसे बेबरको विशेष व्याकुलता नहीं थी. परन्तु, बम्बई-सरकारसे छिपाकर मय्यपी†के फ्रांसीसी व्यापारियों-के साथ स्वयं जो व्यापार करता था वह भी इस वर्ष असंभव हो जायगा. कंपनीके नियमोंके अनुसार अन्य यूरोपीय लोग देशवासियोंसे काली

---

* एक स्थान विशेष, जहाँ 'चाक्यार कूत्तु' हुआ करता था. कूत्तु-पुराण कथाओंके विशेष अंशोंका अभिनय, जो चाक्यार जातिका कोई एक आदमी करता है. उसे साधारणतः 'चाक्यार कूत्तु' कहते हैं.

† उत्तरी मलाबारका तत्कालीन फ्रांसीसी केन्द्र.

मिर्च आदि नहीं खरीद सकते थे. जबसे केरल टीपूके हाथोंसे कंपनीके हाथोंमें आया तबसे फ्रांसीसी और पुर्तगीज लोगोंका इस देशसे व्यापार करना असाध्य हो गया था. तलश्शेरीके सुपरवाइजरका काम करनेवाले लोगोंके लिए यह एक बड़ी कमाईका जरिया था. विदेश भेजनेके लिए एकत्र किया हुआ माल हिसाबमें लिये बिना ऊँचे भावपर दूसरोंको बेच दिया जाता था और इस कार्यमें सुपरवाइजरका सहायक लुई पेरेरा नामका एक दुभाषिया था.

लुई पेरेराने पहलेके सुपरवाइजरके खानसामाके रूपमें काम शुरू किया था. उस लम्पट व्यक्तिकी दुर्वृत्तियोंमें सहायक और दूत बनकर धीरे-धीरे वह दुभाषियेके स्थानपर नियुक्त हो गया. इसी समय केरल टीपूसे कंपनीवालोंको मिला था. कंपनीके कर्मचारियोंकी अनीति और लोभको भली भाँति समझनेवाला लुई निम्न श्रेणीके कुछ कर्मचारियोंकी सहायतासे मय्यरीके फ्रांसीसी व्यापारियोंको छिपकर काली मिर्च बेचने लगा. इससे उसने बहुत कमाई की. किन्तु गोरोंके प्रति अपनी नम्रता और व्यवहारमें उसने कोई अन्तर नहीं पड़ने दिया.

जबसे बेबर तलश्शेरीका सुपरवाइजर बनकर आया तबसे लुई पेरेराकी शुक्रदशा आरम्भ हो गई. बेबर अविवाहित था. उसने सुन रखा था कि तलश्शेरी गोरे लोगोंके लिए अप्सराओंसे भरा स्वर्ग है. इस विषयमें पेरेरासे संकेत कर देना ही पर्याप्त था. उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि पेरेरा व्यापार-कार्यों में अति चतुर और प्रथम कोटिका दुभाषिया है. पेरेराकी प्रेरणासे पहले-पहल अनेक अप्सराएँ निशा-कालमें बेबरके भवनको स्वर्ग बनाती रहीं, परन्तु कोई तीन वर्ष पूर्वसे चिरतक्कुट्टी नामकी एक उर्वशीने सबका निष्कासन करके वहाँ अपना एकाधिकार जमा लिया था.

निम्न श्रेणीके कर्मचारियोंके आश्रयमें छिपा व्यापार करनेवाला पेरेरा जब सुपरवाइजर का एक-मात्र कृपा-पात्र बन गया तो वह अपना

काम निर्भय होकर खुल्लम-खुल्ला चलाने लगा. लोगोंका कहना था कि इस व्यापारमें चिरतक्कुट्टी भी हिस्सेदार थी.

वेलेस्लीकी नई नीति इन लोगोंके लिए एक उपद्रव बन गई. पेशगी ली हुई रकमकी काली मिर्च भी मय्यषीमें पहुँचानी असंभव मालूम होने लगी. अब यदि मएत्तनासे भी छावनी हटा दी गई तो जो परिणाम होगा वह पेरेराने ठीक तरहसे सुपरवाइजरको समझा दिया.

सुपरवाइजरके बंगलेसे एक फर्लांगकी दूरीपर वेलेस्लीका निवास-स्थान था. मानंचेरीकी लड़ाईके दूसरे दिन दस बजेके आस-पास बेबर अपनी पालकीपर सवार होकर वेलेस्लीसे मिलनेके लिए उसके निवास-स्थानपर आया.

वेलेस्ली अपने काममें लीन था. उसके कमरेकी दीवारपर उत्तर केरलका एक बड़ा मानचित्र टँगा हुआ था. उसमें वह लाल और नीली पेंसिलसे चिह्न लगा रहा था और अपनी भावी प्रवृत्तियोंके बारेमें विचार कर रहा था. कमरेमें सेनाके एक-दो उपनायक, एक दुभाषिया और वेश-भूषा आदिसे नायर-प्रमुख दीखनेवाला एक व्यक्ति मौजूद था.

सुपरवाइजरका आदरके साथ अभिवादन करते हुए वेलेस्लीने कहा—मुझे आपकी कुछ सलाहकी जरूरत थी. आपके पास एक आदमी भेजने-की सोच ही रहा था कि आप स्वयं आ गये. अच्छा हुआ.

सुपरवाइजर—मैं भी कुछ विचार-विनिमय करनेको इधर आनेकी बात दो दिनसे सोच रहा था. व्यस्त होनेसे न आ सका.

कर्नल—हम जो सोच रहे हैं सो थोड़ेमें बताता हूँ. केरलवर्माके विरुद्ध तुरन्त कार्रवाई करनेका निश्चय मैंने कर लिया है. अब वर्षा भी समाप्त हो गई है. देर करनेकी जरूरत नहीं है.

सुपरवाइजर—हाँ, उसका घमंड बढ़ता जा रहा है. मानंचेरीकी पराजयका बदला तुरन्त न लिया गया तो देशवासियोंके दिलोंमें हमारे प्रति आदर कम हो जायगा. आपने युद्ध करनेका ही निश्चय कर लिया तो जीतके बारेमें शंका करनेकी गुंजाइश ही नहीं है.

कर्नल—युद्धके बारेमें फिर निश्चय करूँगा. अभी मेरा उद्देश्य वह नहीं है. इस नकशेमें आप लाल रेखासे अंकित जो स्थान देखते हैं, उन सब स्थानोंमें छोटे-छोटे किले बनवाऊँगा.

सुपरवाइजरने दीवारपर टँगे नकशेको एक बार अच्छी तरह देख लिया. फिर आश्चर्यके साथ उसने कहा—"वयनाट्टु और कोट्टयंके सभी मुख्य स्थान इसमें आ गये हैं. इतने किले बनवानेके लिए पैसा कहाँसे आयगा ?"

कर्नल—इसीके लिए मैं आपसे सलाह लेना चाहता था. युद्धके लिए आवश्यक धन एकत्रित करनेका काम आपका है. इरुवनाट्टुमें तुरन्त ही किला बन जाना चाहिए. और स्थानोंमें भी तुरन्त ही निर्माण-कार्य आरम्भ हो जाना चाहिए. कुल मिलाकर खर्चके लिए तत्काल दो लाख पौंडकी जरूरत है. आप यह रकम फौरन मेरे पास पहुँचा दें.

सुपरवाइजर—क्या ? दो लाख ? उसके बदले दो हजार भी यहाँ नहीं हैं. खजानेमें पैसा कहाँसे आये ? व्यापार तो चलता ही नहीं. अब मणत्तनासे भी सेना हटा देंगे तो काली मिर्चका एक दाना भी गोदाममें नहीं आ पायगा.

कर्नल—यह सब कहनेसे कोई लाभ नहीं. मेरी युद्ध-नीति निश्चित हो गई है. उसके लिए आवश्यक धन चाहिए ही. यहाँके खजानेमें न हो तो कलकत्ताको लिखकर मँगा लूँगा.

कलकत्ताको लिखनेकी बात सुनते ही सुपरवाइजर चौंका. अपने प्रिय भाईकी सलाहके विपरीत गवर्नर जनरल कुछ नहीं करेंगे, वह सब खूब अच्छी तरह जानता था. अपनी नौकरी, चोरीकी कमाई और भावी तरक्की—सभी कर्नलके विरोधसे मारी जायगी. यह समझकर सुपर-वाइजरने चतुराईसे काम लेनेका निश्चय किया. उसने कहा—"अगर युद्ध-की जरूरतोंके लिए आपको रुपया चाहिए ही तो वह जुटाना होगा, मैंने उसकी कठिनाईकी बात सोचकर कहा था. लेकिन यह तो बताइए, जब इतनी बड़ी सेना हमारे पास है, तब जंगलोंमें छिपते फिरनेवाले एक

देशी राजाको नष्ट करनेमें क्या कठिनाई है. उसकी मददके लिए ज्यादा-से-ज्यादा हजार लोग होंगे. हम तो बम्बईसे आई हुई सेना और बन्दूकोंसे एक साम्राज्य ही स्वाधीन कर सकते हैं.

कर्नल मुसकराया. उसने कहा—"कर्नल ड्यूने भी ऐसा ही सोचा था. फल क्या निकला ? उसकी सेनामेंसे अब कितने बचे हैं ? बन्दूकोंमें कितनी उपयोगी रह गई हैं ? मैं ऐसा युद्ध नहीं करता. मैं सेनाको नहीं लड़ाता, बुद्धिको लड़ाता हूँ."

सुपरवाइजर—फिर भी क्या जंगलमें असहाय पड़े एक हजार लोगोंको सर करनेके लिए इतनी बड़ी सेनाकी आवश्यकता है ?

कर्नल—यही तो आपकी गलतफहमी है. वे हजार लोग नहीं हैं. एक ही व्यक्ति है—केरलवर्मा. उसको दबानेके लिए ही बुद्धि चाहिए. और क्या आप यही मानते हैं कि उसके साथ हजार आदमी ही हैं ?

सुपरवाइजर—इससे ज्यादा हो ही नहीं सकते. सारे देशवासी हमारे अधीन हैं.

कर्नलने दुभाषियेसे कहा—हमने अभी जिन सामन्तोंके विरुद्ध तुरन्त कार्रवाई करनेका निश्चय किया है उनके नाम इनको सुना दो.

दुभाषिया पढ़ने लगा—"कटत्तनाट्टु राजा, अविञ्ञाट्टु नायर, पेरुवयिल नम्पियार, चुषलि नम्पियार, इरुवनाट्टु नम्पियार लोग, कल्याट प्रभु, वयनाट्टु एमन नायर"...

सुपरवाइजर—ये सब कंपनीके पक्षके हैं. सभी कंपनीको अपनी काली मिर्च आदि भी बेचते हैं.

कर्नल जोरसे हँस पड़ा—ठीक ! ठीक ! ये सब हमको मिर्च बेचते हैं. परन्तु उन रुपयोंसे वे क्या करते हैं यह भी आपने कभी सोचा है ? केरलवर्माको जो सहायता मिलती है, वह सब इन लोगोंसे ही मिलती है. जंगलमें रहनेवालोंका प्रबंध ये ही करते हैं. बन्दूक आदि जरूरी सामान जमा कर देते हैं. हमारी योजनाएँ उनको बता देते हैं. एक बात जान लीजिए कि इस देशका हर आदमी केरलवर्माके साथ है. सबको डराकर

अलग किये बिना हम युद्ध करेंगे तो हमारा कोई आदमी नहीं बचेगा.

सुपरवाइजर--- इसका क्या सबूत है कि ये सब केरलवर्माके पक्षमें हैं ? इनमेंसे कई लोग सदा ही हमारे पास आनेवाले और हमें मदद करनेवाले हैं.

कर्नल—सबूत ? हाँ, इसीकी मुझे पहलेसे शंका थी. परन्तु इसका सबूत देनेवाले ये हैं.—दूसरे कमरेमें जो नायर खड़ा था उसकी ओर कर्नलने संकेत किया.

सुपरवाइजर—तो आप क्या करनेवाले हैं ?

कर्नल—अभी निश्चय नहीं किया. लेकिन आगे इस प्रकार काम नहीं चलने दूँगा. सहायकोंको नष्ट कर देनेसे केरलवर्मा आप-ही-आप नष्ट हो जायगा.

सुपरवाइजर—फिर भी व्यक्तियों और उनकी मान-मर्यादा आदि-का ख्याल किये बिना ही यदि कठोर कार्रवाई की गई तो यह भी हो सकता है कि जनता एकदम विद्रोह कर दे. तब हमारे व्यापारका क्या होगा ?

कर्नल—व्यापार-आपार मैं कुछ नहीं जानता. और यह तो मैंने पहले ही सोच लिया है कि जनता बिगड़ेगी. उसका उपाय तब सोचा जायगा.

सुपरवाइजरने समझ लिया कि कर्नलने अपनी नीति तथा युद्ध-योजनाको गुप्त रखा है और उस सम्बन्धमें उससे बातें करना वृथा है. फिर भी उसने सोचा कि मराठ्तनासे सेना हटानेसे उसे विरत करनेका एक प्रयत्न करना चाहिए. इस इरादेसे उसने कहा—"आपकी युद्ध-नीति आदि समझनेका सामर्थ्य मुझमें नहीं है. लेकिन जो स्वयं दबे हुए हैं उनको और दबाना एक अनोखी नीति मालूम होती है."

कर्नल—मेरे दोस्त ! युद्धमें मेरा लक्ष्य सिर्फ कार्य-सिद्धि है, वीरतापूर्वक स्वर्ग पाना नहीं. हमारी उद्देश्य-सिद्धिके साधनोंमें युद्ध केवल एक साधन है. हम केरलपर अपना अधिकार करना और

अपने शत्रुको नष्ट करना ही तो चाहते हैं ? आप जो सोचते हैं कि दोनों पक्षोंके लोगोंका पंक्ति बनाकर आमने-सामने खड़े हो जाना और एक-दूसरेको मार डालना ही युद्ध है, सो ठीक नहीं है. कम-से-कम मेरी युद्ध-नीति ऐसी नहीं है. और जहाँतक मैं जानता हूँ, केरल-वर्माकी भी रीति यह नहीं है. मेरी रीति वे जानते हैं और उनकी रीति मैं जानता हूँ. आप क्यों इस झंझटमें पड़ते हैं ?

सुपरवाइजर—आपका कहना ठीक होगा. परन्तु अपनी सेनाको इस प्रकार हटानेमें कितनी मान-हानि होती है ? अब मणत्तनामें ही हमारी सेना रह गई है. आप उसे भी हटा रहे हैं !

कर्नल—आपके विचार मैं समझ गया. लेकिन उस बारेमें बातें करना व्यर्थ है.

कर्नल उठकर खड़ा हो गया. यह समझकर कि हमारा अपमान कर रहे हैं, सुपरवाइजर भी तुरन्त वापस हो गया.

सुपरवाइजरके जानेके बाद कर्नल वेलेस्ली अपने निर्णयके अनुसार हुक्म देने लगा. पहला हुक्म चुषलि नम्पियारको गिरफ्तार करके तलश्शेरीमें लाकर रखनेका था. इस कामके लिए सेनाकी एक टुकड़ीको भेज भी दिया. वयनाट्टुमें एमन नायरको पकड़कर श्रीरंग-पट्टन ले जानेकी भी आज्ञा दी गई. वेलेस्ली भी जानता था कि यह काम उतना सरल नहीं है. एमन नायर एक महा प्रतापी सामन्त था. पूरा वयनाट्टु उसकी आज्ञाके अधीन था. कर्नल जानता था कि सीधे युद्ध करके उसे पकड़ लेनेकी शक्ति इस समय कंपनीके पास नहीं है. इसलिए मित्रताका भाव दिखाकर धोखेसे पकड़नेका उपाय सुझाया गया. कटत्तनाट्टुके राजाके पास इस आशयका पत्र लेकर एक सेना-पतिको भेजा गया कि उनके षड्यन्त्रोंका पता चल गया है और यदि वे तुरन्त अपने कामोंसे विरत न हुए तो कंपनी उनके पोरळातिरि*

* केरलका एक राज-वंश.

वंशका समूल उच्छेद कर देगी.

इस प्रकार जब वह गंभीर कार्रवाइयोंमें निमग्न था उसी समय मेजर होम्स नामक एक उप-सेनापति जरूरी बातें करनेके इरादेसे अन्दर आया. उसने कहा—"केरलवर्मा और उनकी सेनाने कुट्टिया-डिच्चुरं पार कर लिया है—ऐसा समाचार मिला है. शायद वे मणत्तना-की छावनीपर आक्रमण करेंगे."

कर्नल—सेनाको पहले ही हटा लेना चाहिए था. अब सोचनेसे क्या लाभ ? केरलवर्मा उस सेनाको नष्ट करके ही छोड़ेंगे, अच्छा, उनकी सहायताके लिए दो सौ सैनिकोंके साथ आप अभी चले जाइए.

अपनी एक टुकड़ी शत्रुके मुखमें पड़ गई यह जानकर भी उस धीर सेनापतिके भावोंमें कोई अन्तर नहीं पड़ा. वेलेस्ली पराजयोंसे निराश होनेवाला व्यक्ति नहीं था. मेजर होम्सको आज्ञा देनेके बाद उसने अपना काम जारी रखा.

जब मेजर होम्स चला गया तब उस नायर-प्रमुखने दुभाषियेके द्वारा कहलाया—"पहले निवेदन किया ही था कि कण्णवत्तु नम्पियारने सेनाके साथ वयनाट्टुमें प्रवेश कर लिया है. महाराजाने इस समय स्व-स्थान छोड़कर कुट्टियाडिच्चुरंके लिए प्रस्थान किया है. इस समय महाराजाके केन्द्र-स्थानमें कोई बड़ा पहरा नहीं होगा. इसलिए उस स्थान-को आसानीसे स्वाधीन किया जा सकता है."

"क्या कहा ?" जरा विस्तारसे सुननेके इरादेसे कर्नलने पूछा.

पुरली पर्वतमें महाराजाके स्थानके बारेमें और उस स्थानपर अधिकार कर लेनेपर वहाँकी बन्दूकें तथा अन्य हथियार भी हाथ आनेकी सुविधाके बारेमें उस व्यक्तिने विस्तारपूर्वक जानकारी दी. कण्णवत्तु नम्पियार और महाराजाके दूर होनेसे वहाँ पहरेके लिए कुछ कुरिच्यर ही होंगे यह भी उसने ब्रिटिश सेनापतिको बताया. कर्नलको विश्वास नहीं हुआ. अपनी सैनिक-सामग्रीकी रक्षाकी पर्याप्त व्यवस्था किये बिना

केरलवर्मा दूसरे स्थानोंमें कैसे जायेंगे ? अपनी शंका दुभापियेके द्वारा उसने जताई.

नायरने कहा—सुनिए. वह स्थान अत्यन्त सुरक्षित है. आप कितनी भी बड़ी सेना लेकर जायें, उसे खोजने और स्वाधीन करनेमें समर्थ नहीं होंगे. लेकिन वहाँ पहुँचनेका एक गुप्तमार्ग है, जो महाराजाके एक-दो विश्वस्त और प्रमुख लोगोंको ही मालूम है. हम वहाँ जाकर एक-दो दिन छिपकर रहे तो वह स्थान स्वाधीन कर सकेंगे. इतना ही नहीं, उनको पकड़ भी सकेंगे.

"अच्छा, तो आज रातको खानेके बाद मेरे पास आओ, तब निश्चय करेंगे"—यह कहकर वेलेस्लीने उसे विदा कर दिया.

सातवाँ अध्याय

कर्नलसे विदा लेकर जब नायर बाहर निकला तो वह मनमें खुश हो रहा था कि अब मेरा मनोरथ पूर्ण होनेमें विलम्ब नहीं है. उसे निश्चय था कि महाराजा अब पकड़े ही गये. अपनी चालके विफल होनेकी उसे कोई आशंका नहीं थी. कर्नल अपने वादे का पक्का मालूम होता था. अतएव वह अपनी भावी उन्नति और ऐश्वर्य की कल्पनाएँ कर-करके बड़े-बड़े मनसूबे बाँधने लगा.

मुख्य मार्गसे होकर वह उस मणि-हर्म्यके पीछेके रास्तेपर पहुँचा, जो सुपरवाइजरने चिरुतक्कुट्टीके लिए बनवा दिया था. वह भवन तलश्शो-रीके नयनाभिराम सौधोंमेंसे एक था. जबसे चिरुतक्कुट्टी का संबंध सुपरवाइजरके साथ हुआ तबसे वह जनताके आदरकी पात्र न होनेपर भी तत्कालके लिए तो सम्मानित बन ही गई थी. दो-चार वर्ष पूर्व तल-श्शोरीमें आई हुई वह बे-घर-बार स्त्री काल-क्रमसे वहाँकी रानी-जैसी बन गई थी. लोग समझते थे कि उसके पास अनन्त धन-संपत्ति है. कंपनीके नौकर उसकी पालकीके वाहक थे. लोगोंका कहना था कि घरमें भी वह जो गहने-कपड़े पहनती है उनका समस्त केरलमें मिलना दुर्लभ है.

लोगोंकी मान्यता यह थी कि उसके निवासके लिए सुपरवाइजरने जो भवन बनवा दिया है वह देवेन्द्रके सौधको भी मात देनेवाला है. साथ ही यह अफवाह भी फैली हुई थी कि बड़े-बड़े सामन्त, राजा-महा-

राजा और व्यापारी भी उससे मिलनेके लिए आया करते हैं. इतना तो सत्य है कि ईस्ट इंडिया कंपनीके विरोधी हो जानेपर कण्णूरकी रानी उसके घर गई थी और उसने उसे अनेक बहुमूल्य उपहार देकर प्रसन्न किया था. सारे देशमें प्रसिद्ध था कि यदि कंपनीसे कोई काम निकलवाना हो तो उसका राज-मार्ग चिरुतक्कुट्टीको किसी तरह प्रसन्न कर लेना ही है.

इस मनोहर मन्दिरकी अधिष्ठात्री देवीका दर्शन और वन्दन करके जाना अपनी उन्नतिमें भी सहायक होगा, ऐसा सोचता हुआ नायर उस भवनका अवलोकन करने लगा. इसी अवसरपर उसने वहाँ जो-कुछ देखा उससे वह आश्चर्य-चकित हुए बिना न रह सका. घरके पीछेका द्वार खोलकर कैतेरी अम्पु नायर बाहर निकल रहे थे. अम्पु नायरने भी चारों ओर दृष्टि फिराई तो उन्हें नायर दिखलाई पड़ा. दोनोंने एक-दूसरेको पहचान लिया. अम्पु नायरने क्षण-भर कुछ सोचा और फिर वे चिरुतक्कुट्‌ीके घरमें ही लौट आए और निर्भयताके साथ सामनेके द्वारसे निकलकर शीघ्रताके साथ चलने लगे.

अम्पु नायरके घरमें लौटते ही नायर शीघ्रताके साथ वेलेस्लीके बंगलेपर वापस गया. वहाँ उसने दुभाषियेसे कहा—"तम्पुरानके मुख्य कार्यकर्ताओंमेंसे एक अकेला तलश्शेरीमें आया हुआ है. मानंचेरीमें आक्रमण करनेवाला वही है. यदि मेरे साथ चार लोगोंको भी भेज दिया जाय तो उसे पकड़कर ला सकता हूँ." फलतः कर्नलकी आज्ञासे दस शस्त्रधारी उसके साथ कर दिये गये और वह बाहर निकला.

यह अनुमान करके कि अम्पु नायर शहरकी मुख्य सड़कोंसे नहीं निकलेगा, नायर तलश्शेरीसे बाहर जानेके मार्गकी ओर रवाना हुआ. शहरके बाहर निकलनेके बाद उसे पता चला कि अम्पु नायर किस मार्गसे गया है. लोगोंसे पूछा तो उन्होंने बाताथा कि उसके बताये हुए हुलियेका एक व्यक्ति कभी जल्दी चलता और कभी दौड़ता हुआ पानूरके रास्तेसे जा रहा था. नायरके साथ कंपनीके लोग भी उसी रास्तेपर आगे बढ़े.

अम्पु नायरको जब मालूम हुआ कि लोग उनका पीछा कर रहे हैं तो उन्हें भाग निकलना ही रक्षाका एक-मात्र उपाय सूझा. परन्तु वे जानते थे कि देश कैसा है और शत्रुकी शक्ति कितनी है, अतएव उन्हें भाग निकलना सरल नहीं मालूम हुआ. फिर भी श्रीपोर्कलभगवतीका स्मरण करते हुए वे जितना हो सका उतनी तेजीसे भागने लगे. उनका ख्याल था कि किसी प्रकार मुख्य मार्गसे हटकर, बाग-बागीचोंसे होकर, वृक्षोंकी आड़में लुक-छिपकर कंपनीके क्षेत्रसे बाहर निकल जायें तो रक्षा हो जायगी. कुछ दूर जानेके बाद उन्हें ख्याल हुआ कि बागोंकी दीवारों आदिसे रास्ता रुक सकता है, इसलिए इतने समयतक गलत रास्तेपर चलनेकी बुद्धिहीनताको कोसते हुए वे फिर मुख्य मार्गपर आ गए.

"वह जा रहा है"—गरजते हुए कंपनी के आदमी आगे दौड़े. एक-दो तीर भी पास आकर गिरे. शिकारियोंसे घिरे हुए व्याघ्रके समान अम्पु नायर परिश्रान्त हो गए. थकावटकी परवाह किये बिना पूरी शक्तिसे भागने लगे. थोड़ा आगे बढ़नेपर मार्ग कुछ मुड़ा हुआ दिखाई दिया. जब ऐसे स्थानपर पहुँचे जहाँ सिपाही उन्हें देख नहीं सकते थे, तो शीघ्रताके साथ मुड़कर, वे अहातेमें प्रवेश करके एक वट-वृक्षकी ओट में बैठ गये.

अम्पु नायर मुड़कर भाग गये ऐसा शक कंपनीके सिपाही नहीं कर सके, इसलिए वे सीधे मार्गसे ही बढ़ते गये. बहुत दूर जानेपर भी जब उन्हें उनका कोई चिन्ह नहीं मिला तो उन्होंने लोगोंसे पूछा. लोगोंने बताया वैसा कोई आदमी उस मार्गसे नहीं गुजरा. तब सिपाहियोंको दो टुकड़ियोंमें बाँटकर आस-पासके अहातोंमें खोजनेके लिए भेज दिया गया.

शत्रुओंके कुछ आगे बढ़ जानेके बाद अम्पु तलश्शेरी वापस चले जानेका इरादा कर रहे थे परन्तु उसी समय दो सिपाही उस अहातेमें आ पहुँचे और केवल दो आदमी देखकर, अम्पू आत्म-रक्षाके लिए हाथ-में पिस्तौल लेकर बैठ गये. वृक्षके पास पहुँचते ही सिपाही चीख पड़े—"यह खड़ा है." और अम्पुकी गोली उसी समय एकके सीनेसे पार हो गई. दूसरेका विस्मय अभी खत्म भी न हुआ था कि उसके ऊपर अम्पु-

की तलवार जा पड़ी. पिस्तौलकी आवाज सुनकर शत्रु वहाँ पहुँच जायँगे यह सोचकर अम्पु फिर भागने लगे.

समय तीसरे पहरका हो रहा था. विरोधी दलके नेताकी व्याकुलता बढ़ गई. कर्नलसे उसी रातको मिलना आवश्यक था. काम गंभीर था इतना ही नहीं, वह अपना सारा भविष्य उसपर निर्भर समझता था. संध्या होनेके पूर्व तलश्शेरी पहुँचकर आवश्यक आज्ञा लेकर कार्यसिद्धिके लिए प्रयत्न करना चाहिए. इस व्यक्तिके पीछे बेकार दौड़नेसे कोई लाभ नहीं. इस प्रकार सोचकर वह वापस जानेका इरादा करने लगा.

वे सब पानूर-प्रदेशमें पहुँच चुके थे. कंपनीके सैनिकोंका नायक—नायर सोच रहा था कि हम कंपनीके अधिकार-क्षेत्रकी सीमापर पहुँच गये हैं और अब अम्पुको पकड़ना संभव नहीं है. इसी बीच उसने देखा, अम्पु चन्द्रोत्तु भवनके खेतोंके बीचकी पगडंडियोंसे जा रहे हैं. उसका क्रोध फिर धधक उठा. पगडंडियोंपर दौड़ना संभव न होनेके कारण अम्पु धीरे-धीरे सँभल-सँभलकर चल रहे थे. अपने अनुचरोंको उत्तेजित करता हुआ नायर भी खेतोंमें उतर पड़ा.

अम्पुने सोचा कि यदि सीधा चन्द्रोत्तु-भवनमें जाऊँ तो कंपनीवाले उनको भी परेशान करेंगे, इसलिए वह एक छोटे मार्गसे एक खुले अहाते-में उतरकर भागने लगे. परन्तु जा पड़े उण्णिनंङाके सामने. वह रात-का खाना बनानेके लिए घड़ा लेकर तालाबकी ओर पानी लेने जा रही थी.

अम्पुको देखकर उसने सहसा यह उद्‌गार निकाला—"हाय ! यजमान !"

"चुप !" अम्पुनायरने इशारेसे कहा. फिर उन्होंने शीघ्रतासे कहा, "मेरे पीछे लोग आ रहे हैं. मुझे शीघ्र कहीं छिप जान है."

उण्णिनंङाको सारी दुनिया ही आँखोंके सामने घूमती हुई दिखाई दी. अम्पुनायरको परिश्रान्त और क्षीण देखकर वह और भी घबरा गई.

उसने कहा—"दीवार लाँघकर घरके आँगनमें चले जाइए. वहाँ कोई नहीं है. मामी और बच्चे चन्द्रोत्तु-भवन गये हैं."

अम्पुनायरने सोचा कि यदि शत्रुको मालूम हुआ तो वह घरमें आग लगा देगा. पर वे लाचार थे. शीघ्रताके साथ दीवार फाँदकर घरके अन्दर चले गये.

कंपनीके सिपाहियोंको खेतोंमें चलनेका अभ्यास नहीं था, इसलिए वे बड़ी कठिनाईसे पार पहुँचे. तब अम्पुनायर वहाँ कहीं नहीं थे. तालाब-से पानी लेकर जानेवाली युवतीको उन्होंने देखा

नेताने उससे कड़ककर पूछा— "बोल, लड़की ! इधरसे कोई गया है !"

उण्णिनंङाने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और वह जोरसे चिल्लाने लगी—"बचाओ, बचाओ ! चोर ! चोर ! "

"इसका मुह बन्द कर रे ! नेताने आज्ञा दी. उसका चीखना सुन-कर चन्द्रोत्तुके कुछ लोग भी वहाँ पहुँच गये.

"मुसीबत है," शत्रु-दलके नेताने कहा—"अब यहाँ नहीं रुकना. लेकिन हाथमें मिलेको छोड़ना भी नहीं." और उण्णिनंङाको उठाकर वे वापस खेतमें उतर पड़े. चन्द्रोत्तुवालोंने उनका पीछा करनेका प्रयत्न किया, परन्तु उस दलके नेताकी पिस्तौलके कारण वे वापस चले आये और चन्द्रोत्तु नम्पियारके पास जाकर उन्होंने समाचार दिया.

अम्पुनायरने उस घरको बचानेकी इच्छासे चन्द्रोत्तु-भवनका ही रास्ता पकड़ लिया था, इसलिए खेतकी घटनाका समाचार उन्हें बादमें मिला. इस ख्यालसे भी उनको बहुत दुःख हुआ कि मेरे ही कारण वह निर्दोष कुमारी इतनी घोर विपत्तिमें पड़ी. भेड़ियोंके हाथमें पड़ी हिरणी-जैसी उस बालिकाकी हालत सोचकर उन्होंने निश्चय किया कि किसी भी तरह उसकी रक्षा तो करनी ही होगी. परन्तु महाराजका काम भी वैसा ही गंभीर था. तलश्शेरीमें जो समाचार मिले थे उन्हें शीघ्र-से-शीघ्र तम्पुरानको बताना अत्यावश्यक था. एक क्षणका भी विलम्ब भीषण

विपत्तिका कारण बन सकता था. इस धर्म-संकटसे बचनेका कोई उपाय न देखकर उसने नम्पियारसे मिलकर सलाह लेनेका निश्चय किया.

एकान्तमें नम्पियारसे मिलनेमें अम्पुनायरको कठिनाई नहीं हुई. उन्होंने सब बातें विस्तारसे चन्द्रोत्तु नम्पियारको बतलाईं.

नम्पियारने पूछा—"अब क्या किया जाय ?"

"उस बालिकाको छोड़ देना हमारे स्वाभिमानको क्षति पहुँचानेवाला होगा. कौन जानता है, वह दुष्ट उसके साथ कैसा-कैसा उपद्रव करेगा ? गुलाम बनाकर बेच देनेमें भी संकोच नहीं करेगा."

"तो करना क्या चहिए ?"

"अभी एक आदमी भेजकर यह सब तलश्शेरीके सुपरवाइजरको बताया जाय तो शायद कुछ काम चले. यदि एक ऐसा पत्र उसके पास भेजा जाय कि चन्द्रोत्तु-भवनमें आकर यहाँकी एक लड़कीको पकड़कर वे लोग ले गये तो बचत हो सकती है."

"ऐसा पत्र भेजनेसे भी क्या लाभ ? जबतक सुपरवाइजर खोज-खबर लेगा तबतक कितने दिन बीत जायँगे. फिर, यदि सैनिक अधिकारी यह कहें कि शत्रुको सहायता देनेके कारण पकड़ा है ?"

"इस सबका उपाय चिरुतक्कुट्टी निकाल लेगी. सुपरवाइजरको अर्जी भेज देनेसे ही काम नहीं चलेगा, चिरुतक्कुट्टीको भी बताना होगा."

नम्पियारने आश्चर्यके साथ पूछा—"क्या ? चिरुतक्कुट्टी आपक पक्षमें है ?"

"यह बात नहीं है . परन्तु वह मेरे लिए कुछ भी करनेमें संकोच नहीं करेगी."

"रहस्य जाननेकी इच्छा नहीं है, लेकिन यदि कोई दूसरा जाकर कहे तो क्या चिरुता मानेगी ?"

"उसके लिए मैं एक पत्र लिख दूँगा."

इतना कहकर एक पत्र 'भोज-पत्र' और नाराच लेकर उन्होंने

लिखा—"उण्णिएनंङाको किसी भी प्रकार बचाना चाहिए. बाकी सब यह पत्रवाहक बतायगा." और पत्र नम्पियारके हाथमें दे दिया.

"बाकी मैं कर लूँगा"—नम्पियारने कहा.

अम्पु नायरको थोड़ा-सा समाधान हुआ. अब उन्होंने महाराजाके कामके लिए तुरन्त जानेकी आज्ञा माँगी. परन्तु नम्पियारने इतनी थकी हुई हालतमें जाने देनेसे इंकार कर दिया, फलतः अम्पुको रुकना पड़ा. सायंकाल उस देशके किसी सामन्तके समान पालकीमें चढ़कर, अनुचर-परिचारकों आदिके साथ ही वे निकल सके.

निराश होकर लौटे नायर और सिपाही संध्याके उपरान्त तलश्शेरी पहुँचे. नायरने दुभाषियेके द्वारा खबर दी कि अम्पु भागकर चन्द्रोत्तु-भवनके किसी अहातेमें छिप गया और हम उसे छिपनेमें मदद करने-वाली स्त्रीको पकड़कर ले आये हैं.

दुभाषियेने कहा—यह सुनकर कर्नल क्या कहेंगे, मैं नहीं जानता. वे स्त्रियों और बच्चोंको तंग करना भयानक अपराध मानते हैं. ऐसे लोगोंको भयानक दण्ड देनेमें भी वे संकोच नहीं करते.

नायर काँप उठा. उसने भी सुन रखा था कि कर्नल स्वतः शान्त स्वभाव होनेपर भी आज्ञाका उल्लंघन करनेवालोंको किसी प्रकार भी दबा देनेकी वृत्ति रखते हैं. उसने सोचा कि यदि यह बात सच है तो मेरा काम उनको पसन्द नहीं आयगा और वे मुझे अन्याय करने वाला कहकर दण्ड भी दे सकते हैं. उसकी समझमें नहीं आया कि क्या करना चाहिए. दुभाषियेने परामर्श दिया कि उसे सैनिक बंधन-में न रखकर सुपरवाइजरसे कहकर जेलमें रखवा देना चाहिए. यह नायरको स्वीकार नहीं था. उस दुष्टने यह सोचकर कि कुञ्जि-कोया*को बेच देनेसे अच्छा मूल्य मिल सकता है, दुभाषियेकी बातका

* एक मुसलमान दस्यु तथा दास-व्यापारी. उस समय इन पेशों-में मुसलमानोंका एकाधिपत्य था.

बहुत-कुछ विरोध किया. परन्तु जब उसने देखा कि कर्नलके क्रोधकी बात सोचकर ही दुभाषिया काँपा जा रहा है तो उसने उसकी बात मान ली.

तालाबके पाससे निर्दयतापूर्वक पकड़ी गई उण्णिनंङाको मार्गमें बहुत कष्ट और अपमान सहना पड़ा. खेत पार करके कुछ दूरतक एक सैनिक उसे लादकर ले गया था. जब देखा कि कोई पीछा नहीं कर रहा है तब नीचे उतारकर उसे पैदल चलनेका आदेश दिया गया. वह थक जानेके कारण चलनेमें असमर्थ हो गई तो नेताने उसपर गालियोंकी वर्षा की. इससे कुछ विशेष लाभ न हुआ तो क्रोधान्ध होकर उसे मारा-पीटा भी.

प्रहारों-पर-प्रहार होनेपर भी वह कन्या न तो रोई, और न उसने किसी प्रकारकी वेदना ही व्यक्त की. यथार्थमें उसे कोई दुःख महसूस नहीं हो रहा था. जब अम्पु मार्गमें पहली बार मिले थे तबसे ही उस वीर-पुरुषकी छवि उसके हृदयमें अंकित हो गई थी. वह सदा सोचा करती थी—'कितनी दया, कितना दाक्षिण्य, कितना पौरुष !' उसके साथ जानेका सुअवसर अपने भाईको मिला इसलिए अपने भाईसे भी उसे ईर्ष्या-सी होती थी. परन्तु उसके कारण उनके साथ मेरा भी कुछ संबंध है—यह सोचकर प्रसन्न भी होती थी. अब अपने उन्हीं हृदयेश्वरके लिए इतना कष्ट सहनेको मिला—इसे वह अपने लिए अभिमानका हेतु मानने लगी. वह सोचती थी—'कुछ भी हो, वे तो बच गये. मुझे कुछ भी हो जाय, कोई परवाह नहीं'. अम्पु नायर मुझे बचानेके लिए कुछ किये बिना नहीं रह सकते यह भी वह जानती थी.

तलश्शेरी पहुँचनेके बाद उण्णिनंङाको सैनिकोंके पहरेमें एक कमरेमें बन्द करके नायर दुभाषियेके पास गया था. पहले उसकी इच्छा थी कि उसे किसी अलग कमरेमें अपने ही अधिकारमें रखे, किन्तु सैनिकोंके विरोधके कारण वह वैसा नहीं कर सका. कुछ देरमें जेलमें रखनेकी आज्ञा लेकर दुभाषिया वहाँ आ गया.

आठवाँ अध्याय

महाराज केरलवर्मा कुट्टियाडिच्चुरम्* से उतरकर आ रहे हैं, यह समाचार देश-भरमें दावानलके समान फैल गया. मानंचेरीकी घटनासे उत्साहित केरलीय जनताका हृदय तंपुरानकी इस धीरतासे आह्लादित हो उठा. ये दोनों घटनाएँ वेलेस्लीके आनेके बादसे डरी और दबी हुई जनताके लिए अपने स्वातंत्र्यपर भरोसा और साहस करनेकी शक्ति बढ़ानेवाली थीं. सबको मालूम हो गया कि टीपूको जीतनेवाले वेलेस्लीकी भी तंपुरान परवाह नहीं करते. सबको अब यह विश्वास भी हो गया कि तंपुरान कंपनीके बलसे डरकर नहीं बल्कि युद्ध करनेके इरादेसे जंगलोंमें अपनी तैयारीकी सुविधा देखकर गये थे. आगे क्या होगा—इस कुतूहलने अब जनताके हृदयमें प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया.

सर्वत्र यह अफवाह फैल रही थी कि महाराजाके निकटवर्ती देश-भरमें घूम-घूमकर प्रजाको उत्साहित कर रहे हैं, तंपुरानने कैतेरी अंपुनायर और पषयंवीटिट्ल चन्तु नायरको यह कार्य सौंपा है; इनके अतिरिक्त, अनेक सामंत और राजा गुप्त रूपसे तम्पुरानको सहायता पहुँचा रहे हैं.

देशके सभी सामन्त और राजा लोग यद्यपि हृदयसे तंपुरानके पक्षमें थे, तथापि कंपनीकी सैनिक-शक्तिसे डरकर चुप थे. तंपुरानको

*कुट्टियाडि नामक स्थानकी पहाड़ी घाटी. चुरम्—घाटी.

सीधे आक्रमण करते देखकर वे भी प्रसन्न हुए. उनके अतिरिक्त भी तंपुरानके अनेक प्रबल सहायक थे. उण्णिमूप्पन नामक एक मुस्लिम नेताने टीपूकी सेनाओंसे निकले हुए सैनिकोंको एकत्र करके एक सेना बना ली थी और वह मुरिङोट्टुके पासके प्रदेशमें अपना अड्डा बनाकर आक्रमणात्मक प्रवृत्तियाँ किया करता था. वह भी वेलेस्लीके भयसे तम्पुरानकी शरणमें आ गया था. यह भी अफवाह फैली हुई थी कि मंचेरी अत्तन कुरुक्कळ भी साथ देनेके लिए तैयार है.

जब तम्पुरान कुट्टियाडिच्चुरम्से उतरे उस समय उनके पास केवल दो सौ नायर और डेढ़ सौ कुरिच्यर थे. इतनी छोटी-सी सेनाके साथ कंपनीकी मणत्तना-स्थित सेनासे लड़नेका इरादा उनका नहीं था. उन्होंने सुन रखा था कि उत्तरसे कंपनीकी सेनाके लिए भारी मात्रामें रसद लाई जा रही है और उसकी रक्षाके लिए केवल सौ सैनिक ही नियुक्त हैं. सचमुच वे इसपर अधिकार करनेके इरादेसे ही आगे बढ़े थे.

तम्पुरानके आनेकी बात जोर-शोरसे पहले तलश्शेरीमें ही पहुँची. मणत्तनाके सेनानायक कप्तान स्टुवर्टको तो उस समय इसका पता चला जब कि उसके पास तलश्शेरीसे यह समाचार लेकर एक दूत पहुँचा कि तीन दिन के अन्दर ही मेजर होम्सकी अधीनतामें वहाँ कुमुक पहुँचा दी जायगी. लगातार युद्धोंमें विजय प्राप्त करनेवाली कर्नाटकी सेनाकी एक सर्व-सुसज्ज टुकड़ी मौजूद होनेपर भी कप्तान स्टुवर्ट यह समाचार पाकर घबरा उठा. उसने निश्चय किया कि मणत्तनासे निकलकर मेजर होम्सके साथ मिलकर ही तम्पुरानका सामना करना ठीक होगा.

तम्पुरानको गुप्तचरोंसे मालूम हुआ कि सेना मणत्तनासे हटाई जायगी और उसकी सहायताके लिए तलश्शेरीसे एक सैनिक टुकड़ी तुरंत रवाना की जा रही है. इसपर रसद लानेवालोंको रोकनेके लिए उण्णिमूप्पनको भेजकर तम्पुरान स्वयं मणत्तनाकी ओर मुड़े. उस समर-

चतुरका इरादा था कि मेजर होम्सके पहुँचनेके पहले ही इस सेनाका सफाया कर दिया जाय.

तम्पुराननने गुप्त पहाड़ी मार्गोसे कुरिच्योंको पहले ही मणत्तनाकी ओर रवाना कर दिया और यह अफवाह फैला दी कि वे स्वयं सेना समेत उण्णिमूप्पनसे मिलने जा रहे हैं. उन्होंने स्पष्ट रूपसे कहा कि जब मेजर होम्स आ रहा है तब मणत्तनापर आक्रमणसे कोई लाभ नहीं. कप्तान स्टुवर्टके गुप्तचरोंने तंपुरानकी योजनाओंको जाननेका प्रयत्न किया. उनको मालूम हुआ कि उन्होंने कुरिच्योंको वापस पहाड़ोंमें भेज दिया और स्वयं वे कंपनीकी सेनाके भयसे मणत्तना न जाकर मुरिङ्गोटुके लिए रवाना हो गए हैं.

यह सुनकर कप्तान स्टुवर्टने कहा—मुझे पहले ही विश्वास नहीं था कि तंपुरान आयँगे. और आ ही गये तो उन्हें दिखा दूँगा.

उस रातको जंगल अथवा नगरमें कहीं भी कोई हलचल नहीं थी. रात्रिके अन्तिम पहरमें चन्द्र अस्त हो गया. कंपनीके सेनानायक कप्तान स्टुवर्टने राजसी भोजन करके और स्वदेश में अमृतके समान मानी जानेवाली व्हिस्की पीकर सुख-निद्राका अवलंबन किया. सजग पहरेदार सेना छावनीके चारों ओर पहरा देती रही. रात वैसी ही शान्तिसे बीत गई.

प्रभात हो ही रहा था. सिपाही जल्दी उठकर नित्य-कर्ममें लग गये. समय-निष्ठाको जीवनका धर्म माननेवाला कप्तान स्टुवर्ट भी उठकर, अपने पलंगपर ही बैठा नित्य-कर्मोंमें प्रथम स्थान प्राप्त चाय-पान कर रहा था.

इधर-उधर कुछ शोर-गुल सुन कर वह उठ खड़ा हुआ. पता नहीं कहाँसे असंख्य बाण छावनीमें आकर गिर रहे थे. पहरेदार एक-एक करके धराशायी हो रहे थे. उसने पास रखी हुई बिगुल उठाकर विपत्ति-सूचक आह्वान किया. असमय ही इस बिगुलसे आश्चर्य-चकित होकर सैनिकगण अपने-अपने हथियार लेनेके लिए दौड़ पड़े. नित्य-कर्म पूरा किये

बिना ही सैनिकोंके इधर-उधरसे भागनेके कारण जो गड़बड़ी मची उसका वर्णन नहीं किया जा सकता. लगातार बरसनेवाले बाणोंसे बहुत-से लोग काल-कवलित हो गये. पिस्तौल लेकर खड़े अपनी सेनाको प्रोत्साहित करते हुए स्टुवर्टको भी एक बाण लगा. उसने अपनी जंघामें लगे हुए बाणको निकालकर फेंक दिया और वैसे ही आज्ञा देता और सेनाको तैयार करता हुआ अपने स्थानपर खड़ा रहा.

कुरिच्योंके आक्रमणसे जब गड़बड़ी बढ़ गई तब एकाएक शर-वर्षा बन्द हो गई. इसका कारण जाननेका अवसर भी नहीं मिला था कि छावनीके एक पार्श्वसे बन्दूकोंकी आवाज सुनाई देने लगी. कप्तान स्टुवर्टने समझ लिया कि शत्रु सीधा आक्रमण कर रहा है. उसकी सेनाको तैयार होनेका समय भी नहीं मिला. अप्रत्याशित आक्रमणसे जो गड़बड़ी हुई वह भी भयानक थी. इस हालतमें सीधे आक्रमण करनेवाले शत्रुका सामना करना उसने असंभव समझा.

घावसे बहते हुए रक्तसे लोहू-लुहान वह हूण-सेनापति अपनी बढ़ती हुई कमजोरीकी परवाह न करके सेनाको आज्ञा देता जा रहा था. परन्तु थोड़े ही समयमें मुँहसे शब्द निकालना भी असंभव हो गया और वह वहीं गिर पड़ा. सेनापतिके गिरनेसे सेना और भी विह्वल हो उठी. कुछ लोग युद्ध-भूमिको छोड़कर भागने लगे, उनपर कुरिच्योंके तीर अचूक रूपसे पड़े. सामनेसे आक्रमण करनेवाली सेनाने अनवरत गोलियाँ बरसाते हुए छावनीमें प्रवेश किया. महाराजा उसका नेतृत्व करते हुए सामने ही थे.

कम्पनीकी सेनाके बहुत-से लोग देरतक युद्ध करते रहे, लेकिन नायकके न रहनेसे वे अधिक समयतक टिके न रह सके. जो खड़े थे, वे क्षण-भरमें घेर लिये गये. विरोधी व्यूहमें पड़े सैनिक जानपर खेल गये. फिर भी अन्तमें उन्हें आयुध रखकर हार माननी ही पड़ी.

जब दिन निकला तबतक मणत्तनाका युद्ध भी समाप्त हो चुका था. कम्पनीकी सेनामें कोई भी नहीं बचा. तम्पुरानने घायल कप्तान स्टुवर्टकी भलीभाँति सेवा करनेका आदेश दिया और मृतोंका यथाविधि

संस्कार करानेकी व्यवस्था भी कर दी. भागे हुए सैनिकोंको पकड़ने और उनके शस्त्रास्त्रोंपर अधिकार करनेके लिए एक टुकड़ी नियुक्त कर दी गई.

मण्णत्तनाकी विजयसे पाँच सौ बन्दूक, उनके लिए आवश्यक अन्य सामग्री, सेनाके लिए संग्रहीत रसद और तीन हज़ार रुपये तम्पुरानके हाथ लगे. इसके अलावा उन्होंने जो विशेष रूपसे संग्रहीत कराया, वह था—सैनिकोंके कपड़े और हथियार.

दस बजे सुबहतक वह प्रदेश इतना शान्त हो गया कि किसीको पता भी न लगता था कि वहाँ उस दिन कोई युद्ध हो चुका था. महाराजाने वहाँके भगवती-क्षेत्रमें जाकर भक्तिपूर्वक स्नान, आराधना आदि की. बादमें एक प्रशान्त राज्यके शासकके समान प्रसन्न-वदन होकर कार्य-विचार के लिए तत्काल निर्मित किये गये राज-सिंहासनपर आसीन हो गये. यह सिंहासन वट-वृक्षकी वेदीपर बनाया गया था. सबसे पहले उनके समक्ष बन्दी सैनिक उपस्थित किये गये. वे मैसूर देशके थे. इसलिए महाराजा स्वयं उनसे कन्नड़ भाषामें प्रश्न करने लगे. जब यह प्रकट हुआ कि उनके दिलोंमें अंग्रेज कम्पनीके लिए कोई श्रद्धा-भक्ति नहीं है और वे केवल पैसा कमानेके लिए उनकी सेनामें भरती हुए हैं तो उनसे पूछा गया कि यदि उसी वेतनपर उन्हें तम्पुरानकी सेनामें काम मिले तो वे करेंगे या नहीं. आपसमें विचार-विनिमय करके उन्होंने अपने नायकके द्वारा सहमति व्यक्त की. इसपर उन्हें कुछ पुरस्कार दिया गया और वे तम्पुरानके आदमी बन गये.

देशके प्रमुख व्यक्ति भी महाराजाके दर्शन करने आये. उनमेंसे लगभग सभी समय-समयपर आवश्यक सहायता करनेवाले थे. उनको भी यथायोग्य पारितोषिक देकर सन्तुष्ट किया गया. उपज और देशवासियों-की कठिनाइयों आदि सभी विषयोंपर उनके साथ विचार-विमर्श करके तम्पुरानने उन्हें यह आश्वासन देकर विदा किया कि 'ईश्वरकी कृपासे सब ठीक हो जायगा.'

इतना सब हो जानेके बाद महाराजाने कुरिच्योंके नेता तलय्कल चन्तुको बुलवाया. लोग कहते थे तम्पुरान और चन्तु राम और गुहके समान हैं. चन्तु एक निम्न जातिका व्यक्ति था. उसमें शिक्षा, प्रभुत्व, वाग्मिता, कुछ भी नहीं था. परन्तु महाराजा कहा करते थे कि उसकी-जैसी स्वामि-भक्ति, बुद्धि, सहृदयता और स्थैर्य केरल-भरमें किसी दूसरेमें नहीं है. किसी भी विपत्तिमें चन्तुसे परामर्श किये विना महाराजा कोई कदम नहीं उठाते थे. और चन्तुके दिलमें भी एक ही भाव था—कितना भी कष्ट सहन करके, किसी भी समय, किसी भी कार्यमें, तम्पुरानकी सेवा करना ! कुरिच्य लोग चन्तुको केवल नेता ही नहीं, अपना आराध्य मानते थे. चन्तुकी आज्ञा ही उनके नियम थे, वही उनका धर्म था. तम्पुरान स्पष्ट कहा करते थे कि सब नायर जनता मुझे छोड़ दे और केवल ये कुरिच्यर मेरे साथ रहें तो भी मैं कम्पनीके साथ मोर्चा ले सकता हूँ.

चन्तु तम्पुरानके समक्ष विनयावनत खड़े हो गये. महाराजाने कहा—"चन्तु* की सहायतासे हमें पूर्ण विजय मिल गई. अब क्या करना चाहिए ?"

चन्तु—दासका क्या सामर्थ्य है ? स्वामीके ही प्रभावसे यह सब होता है. नहीं तो चन्तु और कुरिच्यरसे क्या हो सकता है ?

"हमारे बीच इन औपचारिक बातोंकी क्या आवश्यकता है ? हमें आगेकी बात सोचनी है. देशसे क्या समाचार आया है ?"

तम्पुरानके गुप्तचर अधिकतर कुरिच्यर थे. उनको कहीं भी जानेमें बाधा नहीं थी, इसलिए समय-समयपर सभी समाचार तम्पुरानको मिल जाते थे.

चन्तुने कहा—कम्पनीकी एक और सैनिक-टुकड़ी इधर आ रही है. अब वह कुत्तुपरम्पुसे रवाना होगी. आजके समाचार मिलनेपर उसका निश्चय क्या होगा, पता नहीं लेकिन—

---

*बराबर वालोंसे बात करनेमें बहुधा 'तुम' या 'आप' सर्वनामोंका प्रयोग न करके नामका ही उपयोग किया जाता है.

महाराजा—'लेकिन' कहकर रुक क्यों गये ?

"रास्तेमें ही उसे रोक लेनके लिए कैतेरी यजमान†ने सेनाकी तैयारी कर रखी है. एक सौ कुरिच्योंको भी भेज देनेको कहा है."

"अम्पु क्या-क्या कर बैठेगा, पता नहीं. तलश्शेरीसे आनेवाली सेना नगण्य नहीं है. सुना है उसके साथ दो तोपें भी हैं. जाकर मुकाबला करे और अधिक संकटमें पड़ जाय तो कठिन हो जायगा. उसको शीघ्र वापस बुलाना है."

"इसके बाद कुछ आवश्यक कार्यके लिए सेवामें उपस्थित होंगे, यह भी कहला भेजा है."

"अच्छा चन्तु, एक काम करो. आज हमको यहाँसे जो युद्ध-सामग्री कपड़े, रुपये आदि मिले हैं, सबको तुरन्त पहाड़के किलेमें पहुँचा दो. इसके लिए कुछ कुरिच्योंको साथ लेकर तुम्हें ही जाना होगा. किसीको पता न चले, यह सब तहखानोंमें रख दिया जाये—इडच्चेन कुंकन‡से भी कह देना !"

"स्वामीके वापस जानेके पहले दासका यहाँसे हटना उचित है ?"

"इधर आनेवाले मेजर होम्सका उधर जाकर स्वागत करना चाहता हूँ. कल सुबह रवाना होऊँ तो शामको कण्णवत्तु पहुँच जाऊँगा. फिर अम्पु क्या करता है यह देखकर चार दिनमें लौट आऊँगा."

महाराजाकी आज्ञा शिरोधार्य करके वह विश्वस्त सेवक चला गया. बादमें यह निश्चय किया जाने लगा कि रातको कथकलीके लिए कौन-सी कथा चुननी चाहिए. रोज कम-से-कम दो घंटे कथकली न देखें तो तम्पुरानको अच्छा नहीं लगता था. ऐसे अवसरोंपर अपने अनुचरोंको ही नट बनाकर कथकली करवाया करते थे.

तम्पुरानके कथकली-संघके गुरु उनके सेनानायकोंमेंसे ही एक थे. उनसे सलाह की गई कि उस दिन कौन-सी कथा होनी चाहिए. इस विचार-

†कैतेरीके श्रीमान्—अम्पु नायर.

‡पषश्शिराजाके प्रधान सेनापति.

विमर्शमें सभी प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित थे. सबकी राय हुई कि स्वयं तम्पुरानकी लिखी हुई 'कालकेय वध' नामकी कथा उपयुक्त होगी. परन्तु महाराजाकी राय थी कि तिरुवितांकूरके महाराजाकी लिखी 'पूतना-वध' नामक कथा होनी चाहिए.

कथकली-आचार्यने अन्तिम निर्णय दिया—दक्षिणमें प्रचलित एक कथाका हमारे संघने अभी अभ्यास किया है. 'नल-चरित' चार दिनकी कथा है, उसमें तीसरे दिनकी कथा सुन्दर है.

महाराजाने उत्तर दिया—हाँ, कथा मैंने पढ़ी है. तिरुअनन्तपुरम्से* महाराजाने एक ग्रंथ मेरे पास भेजा था. कविता प्रथम कोटिकी है. परन्तु अभिनय-योग्यता उतनी नहीं है. खैर नई तो है, देख लेंगे .

युद्ध-भूमिको लीला-भूमि बना लेनेकी समचित्तता महाराजाका विशेष गुण था. अधिक कालसे उनके साथ रहनेवाले सेनानियोंको उनका यह स्वभाव मालूम था. विजय-भेरीके बाद 'केळिक्कोट्टु'†का उनका नियम केरल-भरमें सभी जानते थे. तम्पुरान कहा करते थे—"केळिक्कोट्टु सुनकर शत्रु जान ले कि मैं कहाँ हूँ. उसे ऐसा नहीं मालूम होना चाहिए कि हम डरके कारण छिपे हुए हैं."

राज्य-कार्यों और कथकलीमें व्यस्त होनेपर भी तम्पुरान घायल पड़े हुए कप्तान स्टुवर्टको नहीं भूले. उन्होंने उस सेनानायकको उण्णिमूपनके पास कैदमें रखनेके लिए भेज दिया.

---

* श्रीअनन्तपुरम्. अपभ्रंश—तिरुवंतरम्, ट्रिवेंड्रम्.

† केळि—केलि, खेल. कोट्टु—बाजा, बजाना. जिस घरमें कथकली होती है उसमें सायंकाल लोगोंको सूचना देने और आमंत्रित करनेके लिए विशेष प्रकारका बड़ा ढोल बजाया जाता है. इस क्रियाको 'केळिक्कोट्टु' कहा जाता है.

नवाँ अध्याय

मावकम् केट्टिलम्माकी धारणा हो गई थी कि उसके जीवनका आनन्द-सूर्य सदाके लिए अस्त हो गया है. दु:सह विरह-वेदना, प्राणेश्वर-की संभाव्य विपत्तियोंके कारण सतत चिन्ता, उनकी संदिग्ध गति-विधि एवं शत्रुओंद्वारा होनेवाले कष्टोंसे निरन्तर व्याकुलता आदिके कारण वह अनन्त सन्ताप-समुद्रमें डूबती-उतराती रहती थी. वह जानती थी कि उसके पतिकी विजय और जीवनपर कितने महत्कार्य अवलंबित हैं. फिर भी विरहके दु:खकी आत्यन्तिक वेदनामें यह विचार उसे सान्त्वना प्रदान नहीं करता था.

वह अपने सहज धैर्य और वीर-पत्नी होनेके अभिमानसे अपनी व्याकुलता प्रकट किये बिना दिन काट रही थी. किन्तु उण्णियम्माने अपनी शत्रुतासे उसका जीवन दूभर कर रखा था. जबसे वह पषश्शिसे वापस आई थी तबसे उसके प्रति उण्णियम्माका विद्वेष बहुत अधिक बढ़ गया था. वह सदैव श्रवण-वेधक वाग्शरोंका प्रयोग करनेपर तुली रहती थी. केट्टिलम्मा कुछ करे या न करे, उण्णियम्माके वाग्बाण बे-रोक-टोक चला ही करते थे. यदि वह कोई गृह-कार्य करने लगती तो ताना देकर कहती—"बड़ी रानी बनकर, सज-धजकर रहनेके सिवाय हो किस काम-की ? पता नहीं कबतक यह पदवी और शान चलेगी!" यदि गालियोंकी वर्षाके कारण वहाँसे चली जाती तो कहती—"ओहो! उसके हाथ तो मक्खनके बने हैं! काम करे तो पिघल जायँगे ! बाबा, ऐसा कैसे चलेगा!"

शुभ्र वस्त्र धारण करती तो उसके मुखसे निकलता—"वेश्या-जैसी सजी है ! पता नहीं किसको दिखानेके लिए ! इस वंशमें कोई कलंक न लगाय तो बस !" आदि.

बड़ी बहनकी इस प्रकारकी बातोंसे माक्कम्को बहुत दुःख होता था, परन्तु उसने कभी एक शब्द भी उलटकर नहीं कहा. आजकल इन गालियोंके रूपमें भिन्नता आ गई थी. पहले उण्णियम्माके लिए भी तम्पुरान आराध्य-मूर्ति थे, परन्तु अब उनपर भी आक्षेप करनेमें उसे संकोच नहीं होता था. पहले कभी-कभी इस विषयमें माक्कम् नम्रताके साथ टोंक दिया करती थी—"उन्होंने ऐसा क्या किया है, दीदी ? ऐसा न कहो. कोई सुनेगा तो कितनी लज्जाकी बात होगी !" इसका उत्तर दुगुनी तीव्रतासे मिला करता था—"उन्होंने क्या किया ? कोई सुने तो सुने ! क्या कोई खा जायगा ? देखूँगी जल्दी ही उनका और तुम्हारा यह बड़प्पन !"

ये बातें दिनमें दस बार उण्णियम्मा दुहराने लगी. जब वह तम्पुरानके बारेमें कुछ कहने लगती तो माक्कम् कान बन्द करके वहाँसे चली जाती ! मेरे साथ द्वेष और मत्सर है तो रहे, परन्तु महाराजाके साथ यह विद्वेष क्यों पैदा हो गया ? माक्कम्को इस उलझनका उत्तर ढूँढ़े न मिलता.

कम्मूको कैतरीमें रहते अब दो सप्ताह बीत चुके. जबसे वह कळरी- (अभ्यासशाला) में शिक्षा देने लगा तबसे उस घरमें कुछ बाह्य अन्तर दिखाई देने लगा. जिन बालकोंका शस्त्राभ्यास पूर्ण नहीं हुआ था वे फिरसे ढाल और तलवार लेकर अभ्यास करने लगे. उनको नये-नये तरीके सिखानेमें कम्मू भी तत्पर हो गया. बीस-तीस युवक कळरीमें दिनभर दौड़-धूप किया करते थे. ऐसा लगता था मानो एक नये प्राणका संचार हुआ हो.

उत्तरके घरमें* इक्कण्डन नायरको यह सब पसन्द न आया. उनका

* मुख्य घरके आस-पासके घरोंका परिचय दिशाका नाम जोड़कर देनेकी प्रथा है. जैसे उत्तरका घर, दक्षिणका घर आदि.

कहना था कि जब कैतेरी-भवनके कोई पुरुष यहाँ नहीं हैं तब मेरी अनुमतिके बिना जो यह किया गया सो अनुचित है. उन्होंने दो बार आदमी भेजकर अपना मत उण्णियम्मा और माक्कम्पर प्रकट भी कर दिया था, परन्तु इस हस्तक्षेपके बारेमें दोनों बहनोंका मत एक ही था—"हमारे परिवारिक कार्योंसे उत्तर-गृहवालोंका कोई वास्ता नहीं हैं." उण्णिअम्माने स्वयं ही उत्तर भिजवा दिया था—"इस घरका कार्य यहाँ-के पुरुषोंके कहे अनुसार चलेगा. औरोंको उससे कोई मतलब नहीं." इससे सन्तुष्ट न होकर एक बार इक्कण्डन नायर स्वयं ही इन स्त्रियोंको शासित करने आये. साहस बटोरनेके लिए उन्होंने तलश्शेरीसे आई हुई विशेष मदिराका सेवन कर लिया था. फिर भी उण्णिअम्माके सामने उनकी जबान न खुल सकी.

कळरीके अभ्यासोंमें माक्कम् स्वयं भाग नहीं लेती थी. परन्तु नीलुक्कुट्टीको, शस्त्राभ्यासकी आवश्यकता समझकर, उसने कम्मूके हाथों सौंप दिया था. नीलुक्कुट्टी कौमार्यकी अवस्था पार कर चुकी थी, इसलिए उसे दूसरे बालकोंके साथ भेजना अनुचित समझकर माक्कम्ने कम्मूको निर्देश किया कि वह सुबह-शाम उसके घरके आँगनमें ही शिक्षा दिया करे. अभ्यासके समय माक्कम् भी दालानमें बैठा करती थी. कभी-कभी वह स्वयं भी पिस्तौल चलानेका अभ्यास किया करती थी.

मण्तनाका युद्ध जिस दिन हुआ उसी दिन उसकी वार्ता समस्त देशमें फैल गई थी. प्रातः स्नान और भगवतीका दर्शन करके जब माक्कम् घर वापस आई तब कम्मूने उसे यह समाचार दिया. यह सुनकर कि तम्पुरान स्वयं युद्धका संचालन कर रहे हैं, माक्कम्के हृदयसे यह प्रार्थना निकल पड़ी—"श्रीपोर्कली भगवती! उनकी रक्षा करना!" शैशवसे ही युद्ध-भूमि-पर जीवन-यापन करनेवाले महाराजा युद्ध कर रहे हैं, यह सुनकर उस वीरांगनाको कोई भय नहीं हुआ. परन्तु परिस्थितियोंकी विषमताने उसे आर्त्त कर दिया.

"कुछ भी नई बात मालूम हो तो समाचार देना," कहती हुई

केट्टिलम्मा अन्दर चली गई. परन्तु सायंकाल हो जानेपर भी कोई समाचार नहीं आया. कम्मूने किसीको भेजकर पता लगानेका प्रयत्न किया, परन्तु युद्धके परिणामके बारेमें कुछ जान नहीं सका. माक्कम्का हृदय व्याकुल हो उठा. मनमें बार-बार शंकाएँ उठने लगीं—"क्या युद्धमें कुछ अनहोनी हो गई? क्या हार गये?" परन्तु उण्णियम्मा प्रसन्न हो रही थी. कहती भी रही—"तुम्हारे तम्पुरानका काल आ गया ! अधिक घमंड करनेका यह फल तो होगा ही !"

माक्कम्ने रातका भोजन भी नहीं किया. असह्य सिर-दर्दके बहाने जल्दी ही कमरेका दरवाजा बन्द करके लेट गई. परन्तु व्याकुल हृदयको शान्ति और निद्रा कहाँ ? कितने भी प्रयत्न किये, फिर भी मन युद्धकी चिन्तामें ही निरत रहा. आँखें बन्द करती तो संहारक रुद्रके समान हाथमें तलवार लेकर खड़े तम्पुरानका रूप सामने आ जाता !

इस प्रकार लगभग आधी रात बीत गई. तब उण्णियम्माके कमरेका दरवाजा खुलनेकी आवाज आई. थोड़े ही समयमें पष्यंवीट्टिल चन्तु नायरकी हँसी और बातें भी सुनाई दीं.

चन्तु नायरकी आवाज और बात करनेके ढंगमें माक्कम्को कुछ अन्तर मालूम हुआ. यह स्पष्ट था कि वह शराबके नशेमें बातें कर रहा है. जब उसकी आवाज ऊँची हो जाती तो उण्णियम्मा टोंकती—"धीरे-धीरे बोलो. वह ज्येष्ठा जागती होगी तो सुन लेगी." दंपतिका स्वैरालाप सुननेकी इच्छा माक्कम्को बिलकुल नहीं थी, किन्तु तम्पुरानका नाम बार-बार सुनाई पड़ा इसलिए ध्यान हठात् उस ओर आकर्षित हो गया. संभाषण-विषयके उत्साहमें अथवा मद्य-लहरीके प्रभावसे चन्तु जोरसे ही बोलता गया.

सारी स्थिति और अवस्थाकी गंभीरता माक्कम्की समझमें आ गई.

"इसका घमंड अब देखूँगी केट्टिलम्मा* है न ? मुझे एक

---

* राज-पत्नी. देखो, पाद-टिप्पणी पृष्ठ ६.

नौकरानी-जैसी समझती है. दिखा दूँगी !"

"यदि चन्तु मर्द है तो आजसे तीसरे दिन देख लेना. तब देखूँगा कि मान और स्थान किसके हाथ रहता है. अब किसीके आश्रयमें रहनेकी आवश्यकता नहीं है. चन्तुका सामर्थ्य दुनिया देख लेगी."

इस प्रकार गन्धर्वनगर बनाते-बनाते वे दोनों सो गये.

माक्कम्को व्याकुलताके कारण नींद नहीं आई. बादमें यह निश्चय करनेमें विलम्ब नहीं लगा कि क्या करना चाहिए. किसी प्रकार उसने थोड़ा समय और बिताया. बादमें धीरेसे अपने शयन-कक्षका द्वार खोलकर बाहर निकली और उसने कम्मूको जगाया. उससे कहा—"रात्रिके अन्तिम पहरमें यहाँसे रवाना होना आवश्यक है. उसके लिए एक पालकी और छै-सात अत्यन्त विश्वस्त अनुचरोंकी आवश्यकता है. इस प्रबंधका पता और किसीको न चले."

कम्मू अपनी स्वामिनीकी आज्ञाका पालन करनेके लिए तुरन्त तत्पर हो गया. कळरीके सामने ही सोए हुए दो शिष्योंको जगाकर उसे यात्राके लिए आवश्यक प्रबंध कर लेनेमें कोई कठिनाई नहीं हुई. नक्षत्रोंकी स्थितिसे उसने अनुमान कर लिया कि इस समय रातके दो बजे होंगे. कळरीके छात्र उसी स्थानके थे. इसलिए पालकी, वाहक तथा अनुचर आदि तुरन्त तैयार हो गये. निश्चित समयपर केट्टिलम्मा कम्मू तथा पाँच-छः नायर वीरोंके साथ रवाना हो गईं.

माक्कम्ने आज्ञा दी थी कि प्रभात होनेके पूर्व कारेट्ट नामक स्थानपर पहुँच जाना चाहिए. वह कहाँ और किसलिए जा रही थी यह सब कम्मू तथा अनुचरोंको ज्ञात नहीं था.

पष्यंवीट्टिल चन्तु प्रभात होनेके पहले ही पत्नी-गृहसे† चल पड़ा. प्रभात होते ही कूत्तुपरंपु पहुँच जानेका वादा था. इसलिए और कोई न देख

† पत्नीका घर. देखो, पाद-टिप्पणी पृष्ठ ३१

पाये इस इच्छासे भी, वह बहुत सबेरे ही घरसे निकल गया. पतिके जानेके बाद उण्णियम्मा फिरसे सो गई. दिन-चढ़े उठकर, नित्य-कर्मादिसे निवृत्त होकर वह जब अन्तःपुरमें आई तब उसे मालूम हुआ कि केट्टिटलम्मा घरमें नहीं है. दासीने बताया कि कळरीमें शिक्षा देनेवाले आशान‡ कम्मू भी नहीं हैं. सुनकर उण्णियम्माने प्रलाप करना शुरू कर दिया—

"कितनी लज्जाकी बात है ! किसने सोचा था कि इस वंशमें ऐसा भी होगा ! किसीके साथ भागनेका साहस उसे कैसे हो गया !" आदि.

उसको कोई शंका रही ही नहीं. माक्कम्के बारेमें कोई भी बुरी बात मान लेनेके लिए वह सदैव तैयार रहती थी. जबसे कम्मू वहाँ आया है, वह उसका और केट्टिटलम्माका नाम जोड़-जोड़कर ऊल-जलूल बका करती थी. यह घरकी दासियोंको भी विदित था. माक्कम्के प्रति स्नेह और श्रद्धाके कारण अबतक किसीने उसकी बातोंपर विश्वास नहीं किया था. अब यह मालूम होने पर कि उस युवकके साथ रातमें केट्टिटलम्मा भाग गई है, वे भी उण्णियम्माके साथ हो गईं.

केट्टिटलम्माके भाग जानेकी बात देश-भरमें फैल जानेमें देरी नहीं लगी. इससे अत्यधिक सन्तुष्ट होनेवाले उत्तरी घरके लोग ही थे. गृह-स्वामी इक्कण्डन नायर पता लगानेके लिए सुबह-सुबह ही कैतेरीमें आ धमके. उन्होंने अपने मनके भाव इन शब्दोंमें व्यक्त किये—

"औरतोंको छूट देनेका फल यही होता है. घरमें पुरुष हो तभी मान-मर्यादाकी रक्षा हो सकती है. अम्पु अपने तम्पुरानके पीछे फिरता है. घरमें औरतें अपनी मनमानी करें तो पूछनेवाला कौन है ?

"मैंने तो कहा था. मगर वह तो केट्टिटलम्मा (राज-पत्नी) है न ? बड़ी बहन हूँ तो क्या हुआ ? मेरा कहना वह क्यों माने ? कितनी लज्जाकी बात है !"—उण्णियम्माने कहा.

इस प्रकार आरम्भ हुआ संभाषण जब समाप्त हुआ तो उण्णियम्मा

---

‡ आचान, आयान, आचार्य.

को लगा कि "बड़े मामाकी बात ठीक है" और "बड़े मामाजी"को महसूस हुआ कि "इस घरके लोगोंके दोष इस लड़कीमें नहीं हैं." जब इक्कण्डन नायरने कहा कि "यह सब तम्पुरानके दोष और अम्पुके गुरुत्व-अभिमानसे हुआ है" तो वह भी उण्णियम्माको ठीक जँचा. वे प्रसन्न होकर अपने घरको चले गये.

इक्कण्डन नायर जब उण्णियम्मासे ये सब बातें कर रहे थे तब माक्कम् अनुचरोंके साथ कारेट्टं प्रदेश पार कर चुकी थी. उसके बादका मार्ग ऐसे विजन वनसे था जहाँसे लोग-बाग बहुत कम आया-जाया करते थे. पहले वहाँ लोग रहा करते थे, परन्तु हैदरके आक्रमणके बाद आबादी बहुत कम रह गई थी. सारा स्थान झाड़-झंखाड़ोंसे भरा हुआ था. इधर-उधर मकानोंके कुछ खण्डहर दिखाई पड़ते थे, जिनसे पता चलता था कि कभी यहाँ आबादी रह चुकी है. टीपूके अधिकार-के समय यह स्थान चोरों और डाकुओंका अड्डा बन गया था, इसलिए लोग यहाँसे दूर-दूर ही रहे. टीपूके बाद गाँवों और शहरोंसे दूरके भागों-में शासन-व्यवस्था पुन: स्थापित नहीं हो पाई, फलत: उन उपद्रवियोंका प्राबल्य बढ़ता ही गया. इस वन-प्रदेशको अनेक तस्कर-नायकोंने अपना अड्डा बना रखा था, परन्तु उनमें कुंञालि मोय्तीन (कुञ-अलि मोहि-उद्-दीन) नामका एक तस्कर-नायक सबसे प्रबल और भयानक था.

जब यह मालूम हुआ कि इसी मार्गसे जाना है तो पालकी-वाहकोंने आपत्ति की. उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि "हमारी आपत्तिका कारण अपने प्राणोंका भय नहीं, वरन् केट्टिलम्मापर संभावित विपत्ति-का ख्याल है. कुंञालि मोय्तीनके साथ सौ-डेढ़ सौ लोग होंगे. आवश्यक हथियार भी होंगे. हमारे साथके लोग क्या कर सकेंगे ?"

इसका उत्तर कम्मू नहीं दे सका. पालकीके अन्दरसे माक्कम्ने ही कहा—"मोय्तीन यदि तम्पुरानके लोगोंको तंग करेगा तो वह इन वनोंमें कितने दिन जी सकेगा ?" फिर उसने आदेश दिया—"तुम लोगोंमेंसे एक

मोय्तीनके अड्डेपर जाकर बता आये कि मैं इस मार्गसे जा रही हूँ. वह सब प्रबन्ध कर देगा."

पालकी एक स्थानपर रोककर कम्मू स्वयं मोय्तीनका अड्डा खोजनेके लिए निकला. उसके जानेके थोड़ी ही देर बाद कुछ हथियारबन्द लोग आते हुए दिखाई दिये. एक भीमकाय पुरुष हाथमें तलवार लिये उनके आगे-आगे चल रहा था. लम्बी दाढ़ी-मूँछें, लाल-लाल आँखें और टोपी आदि देखकर माक्कम्ने अनुमान कर लिया कि वह कोई मुसलमान तस्कर है. उसने यह भी सोचा कि यह मोय्तीन ही हो सकता है. उसका हाथ तुरन्त अपनी कमरमें छिपी हुई पिस्तौलपर जा पहुँचा.

तस्कर-नेताकी आकृति, उसकी रुक्षता और उसके अनुचरोंके मुखसे प्रकट होनेवाली क्रूरतासे माक्कम्का हृदय भी अस्थिर हो उठा. फिर भी वह "जो हो, सो हो" सोचकर पिस्तौल हाथमें लेकर खड़ी हो गई. पालकीके वाहक वहाँसे इस प्रकार गायब हो गए जैसे भेड़ियेको देखकर बकरियाँ भाग खड़ा होती हैं. अब उसकी सहायताके लिए केवल वे नायर-बालक ही थे, जिनका अभ्यास अभी पूरा नहीं हुआ था. उनके चेहरोंसे भी ऐसा प्रकट हो रहा था कि वे बहुत डर गये हैं.

वाहकोंका भागना, नायर-युवकोंके भयभीत चेहरे और क्रोध तथा धैर्यके साथ खड़ी माक्कम्—यह सब देखकर उस तस्करने परिहासके साथ अट्टहास किया. उस विजन प्रदेशमें उसका अट्टहास किसी पिशाचके दुस्सह गर्जनके समान मालूम हुआ. परन्तु प्रतिध्वनिके वायुमें विलीन होनेसे पहले ही उसका भाव बदल गया. उसके सामने लगभग एक फुटकी दूरीपर एक बाण आकर गिरा. उसी समय दाहिनी और बाईं ओर भी उतनी ही दूरीपर एक-एक बाण आकर गिरा. तस्करने चारों ओर देखा, पर कहीं कोई दिखलाई नहीं पड़ा.

उन अस्त्रोंका संदेश दोनों पक्षोंकी समझमें आ गया. यदि वह पीछे हटनेके अलावा जरा भी हिले तो अगला तीर उसका कण्ठ छेदकर निकल

जायगा. इन विषयोंका पर्याप्त परिचय रखनेवाला मोय्तीन क्षण-मात्रमें सब-कुछ समझ गया. माक्कम्ने भी जान लिया कि यह बाण फेंकनेवाले कुरिच्य लोग ही हैं."कीचक मरा तो मारा भीमसेनने" इस न्यायके अनुसार माक्कम्को यह भी मालूम हो गया कि यदि कुरिच्यर (कुरिच्य लोग) मेरे सहायक हैं तो यह मेरे प्रियतम महाराजाकी ही आज्ञासे हैं. अपनी रक्षाके बारेमें तम्पुरानकी चिन्ताका खयाल करके वह गद्गद् हो उठी.

मोय्तीनको भी कोई शंका नहीं थी. उसके आवास-स्थान इस वनमें उसे रोकनेवाला कुरिच्योंके अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता; यदि कुरिच्यर इसमें शामिल हैं तो यह तम्पुरानकी आज्ञासे ही होगा; इसका अर्थ है कि ये पथिक तम्पुरानके बन्धुजन हैं—यह खयाल आनेके बाद अपना कर्तव्य निश्चित करनेमें उसे विलम्ब नहीं हुआ. एक इशारेसे अपने अनुयायियोंको वापस भेजकर सामने पड़े बाण को उसने उठा लिया. फिर एक-दो कदम आगे चलकर, माक्कम्को झुककर सलाम करनेके बाद उसने कहा—"तम्पुरानके स्वजनोंके लिए हमारे स्थानमें कोई रोक-टोक नहीं है. मोय्तीन भी तम्पुरानका सेवक है. इसलिए थोड़ी देर आराम करके आगे बढ़ें तो बड़ी कृपा होगी."

इसका उत्तर माक्कम्के अनुचरोंमेंसे एकने दिया—"केट्टिलम्मा कुछ जरूरी कामसे शीघ्र ही जाना चाहती हैं."

"केट्टिलम्मा" सुनते ही मोय्तीनने एक बार फिर झुककर सलाम किया और कहा—"अम्पु यजमान हमारे मालिक हैं. मोय्तीनके योग्य क्या कार्य है ? हुक्म दीजिये. आपका हुक्म ईश्वरके हुक्मके समान माना जायगा."

माक्कम्—आपके बारेमें मैंने भी सुना है. मुझे जल्दी-से-जल्दी उस स्थानपर पहुँचना है जहाँ तम्पुरान विराजमान हैं. कुछ सहायकोंको मेरे साथ भेज दीजिए.

मोय्तीन—इस जंगलके आगे, पहाड़के नीचेतक मैं पहुँचा दूँगा. उसके आगेका मार्ग मुझे भी मालूम नहीं. कुरिच्यर ही जानते हैं.

माक्कम्—फिर मैं आज ही कैसे पहुँच सकूँगी ?

मोय्तीनने जरा सोचकर उत्तर दिया—मैं पहाड़के नीचे पहरा देने वाले कुरिच्य-नायकको समाचार दूँगा. आप पधारी हैं, यह सुनते ही क्या वे आवश्यक प्रबन्ध नहीं करेंगे ?

माक्कम्ने इस बातको मान लिया. तबतक कम्मू भी आ गया. मोय्तीनके अनुचर फल-मूलादि लेकर आये. भोजन और विश्राम करके केट्टिलम्माने पहाड़के लिए प्रस्थान किया.

दसवाँ अध्याय

अविञ्ञिक्काट्टु केट्टिलम्मा (बड़ी राज-पत्नी) भोजनके बाद चाँदीके पानदानसे आवश्यक-सामग्री लेकर पान खानेकी तैयारीमें थीं. स्नान करके शुभ्र वस्त्र और आभरण आदि धारण करके, काजल लगाकर वे इस काननमें भी अपने राजमहलके समान ही रहती थीं. इस विषयमें पहले-पहल कुछ लोगोंने आलोचना की थी तबके ट्टिलम्माने स्वयं उत्तर दिया था—"तम्पुरान जहाँ विराजमान है वहीं मेरे लिए राज-प्रासाद है. मेरे लिए जंगल और घरमें क्या भेद ? जहाँ मेरे स्वामी हैं वहाँ चाहे जंगल हो चाहे पष्शिशका महल हो, मेरे लिए एक-सा है." इसके प्रतिकूल कुछ कहनेका साहस किसीको नहीं हुआ. महाराजाने तो केट्टिलम्माके इस व्यवहारका अभिनन्दन ही किया.

केट्टिलम्माकी उम्र चालीस वर्षकी हो चुकी थी. वे पन्द्रह वर्षकी आयुमें महाराजाकी पत्नी बनकर पष्शिशमें आई थीं. उस दिनसे अवतक उस साध्वीको अपन देशमें रहनेका अवसर कम ही मिला है. विवाहके एक-दो मास बाद ही उसे पतिका अनुगमन करके वनमें निवास करना पड़ा था. अन्य राजा अपनी पत्नियोंके साथ तिरुवितांकूरमें शरण लेने गये तब कुञ्ञानि* केट्टिलम्माने केरलवर्माके साथ पुरळी पहाड़में शरण ली.

---

* अविञ्ञिक्काट्टु कुञ्ञानि केट्टिलम्मा. अविञ्ञिक्काट्टु—घरका नाम, कुञ्ञानि—स्वनाम, केट्टिलम्मा—राज-पत्नी. बड़ी राज-पत्नी.

पहले पच्चीस वर्ष वही वन उनका भवन रहा. कंपनीके साथ संधिके बाद जब थोड़े दिन महाराजाने राजधानीमें वास किया था तब वे भी उनके साथ पषश्शिमें रहती थीं. परन्तु वहाँ उनको सचमुच कोई विशेष सुख नहीं मिला. उन्होंने महसूस किया कि वन-भोग ही राज-भोगोंसे अच्छे हैं.

इस ढलती हुई आयुमें भी उनके सौंदर्यमें कोई कमी नहीं आई थी. नवनीतके समान कोमल शरीरको स्वर्ण-वर्ण असाधारण कान्ति प्रदान कर रहा था. ऊर्मिल, लंबी केश-राशि स्नानके उपरान्त छोर बाँधकर छोड़ दी गई थी. विशाल नेत्र, काम-धनुषके समान भृकुटियाँ, रत्न-जटित कर्ण-फूल, ताम्बूल-लालिमाके बिना ही लाल बने अधरोष्ठ, मुख-कमलमें सदा प्रत्यक्ष प्रफुल्लता आदि इस तथ्यको व्यक्त कर रहे थे कि कुञ्ञानि केट्टिलम्मा ही तम्पुरान-जैसे महापुरुषकी धर्म-पत्नी बनने योग्य हैं. शरीर थोड़ा मांसल होने लगा था और यही एक कारण था जिससे लोग उनकी आयु चालीसके लगभग मानते थे.

सकल कला-निष्णात पतिके साहचर्यके कारण केट्टिलम्माने भी साहित्य-संगीत आदिमें प्रवीणता प्राप्त कर ली थी. सुना जाता था कि कथकलिके लिए तम्पुरान जो गीत लिखते थे उन्हें केट्टिलम्माको गाकर सुना देनेके बाद ही ग्रंथमें लिखा जाता था.

श्रीरामचन्द्रके पीछे सीताके समान पतिका अनुगमन करके वनवास स्वीकार करनेवाली इस पति-परायणाकी महाराजाके अनुयायी देवीके समान आराधना करते थे. उस स्थानमें केट्टिलम्मा और उनकी एक परिचारिकाके अतिरिक्त कोई स्त्री नहीं थी.

एक सेवकने आकर कैतेरी केट्टिलम्माके आगमनकी सूचना दी और भोजनके उपरान्त पानमें चूना लगाने बैठी हुई कुञ्ञानि केट्टिलम्माका विश्राम समाप्त हो गया. पान को वैसे ही छोड़कर वे बाहर आईं और उन्होंने पालकीसे उतरकर आती हुई माक्कम्का स्नेह-सिक्त मन्द हासके साथ स्वागत किया. परस्पर आश्लेषणसे एक देह बना वह राज-पत्नी-युगल अंदर चला गया.

"घरमें सब कुशलसे तो हैं ? सूचना दिये बिना कैसे चली आईं ?" कुञ्ञानि केट्टिलम्माने पूछा.

"कार्य बड़ा महत्त्वपूर्ण है. यह सोचकर स्वयं ही निकल पड़ी कि यदि महाराजाको शीघ्र-से-शीघ्र खबर कर दी जाय तो शायद आनेवाली विपत्तिका उपाय हो जायगा."

बड़ी राज-पत्नीने माक्कम्के मुखसे कार्यकी गंभीरताका अनुमान कर लिया. उन्होंने कहा—"आज चार दिन हो गए, तम्पुरान कुट्टियाडिच्चुरम्से उतरकर नीचे गये हैं. कल मण्णत्तानामें थे. आज सुना है कण्णवत्तुमें होंगे. बात क्या है ?"

"जीजी, आपसे क्या छिपाना है ? कंपनीकी सेनाकी एक टुकड़ी इस स्थानपर अधिकार करनेके लिए निकली है."

"इस स्थानपर ? यहाँ वे कैसे पहुँचेंगे ? मार्गमें सभी जगह आवश्यक पहरा जो है ?"

"वे सीधे रास्तेसे नहीं आ रहे हैं. पीछेके गुप्तमार्गसे सुरंगमें आयँगे और फिर उसी मार्गसे आगे बढ़ेंगे."

बड़ी केट्टिलम्माको आश्चर्य हुआ. सुरंगका गुप्तमार्ग तम्पुरानके मुख्य सलाहकारोंको भी नहीं मालूम था. सीधे मार्गके अलावा कोई सुरंगका मार्ग है भी, इसकी जानकारी भी कण्णवत्तु नम्पियार, तलैय्कल चन्तु, अम्पु नायर, पष्यंवीट्टिल चन्तु, महाराजा, उनके दो भानजों और केट्टिलम्माके अलावा किसीको नहीं थी.

बड़ी केट्टिलम्मा जरा सोचकर बोलीं—उनको उस मार्गका पता नहीं हो सकता. यदि उसके बारेमें अनुमान कर लें तो भी कितना ही ढूँढ़ें, उसे नहीं पा सकते. हमारे बीच भी तम्पुरान और राजकुमारोंको छोड़कर चार ही लोग उसे जानते हैं.

माक्कम्—आपका कहना ठीक है, परन्तु इन चारोंमें ही कोई एक उनका मार्ग-प्रदर्शन करे तो ?

"यह कभी नहीं हो सकता. तम्पुरानको उनमेंसे एक भी धोखा नहीं दे सकता."

"तो सुनिये, अब हमारी स्थिति चारों ओर आग लगाकर बीचमें रहने-जैसी है. पषयंवीट्टिल चन्तु नायर कंपनीका आदमी बन गया है. वही हमको धोखा देगा."

बड़ी केट्टिलम्माको विश्वास नहीं हुआ. चन्तु धोखा देगा यह कैसे मानें ? बचपनमें वह अनाथ और अशरण होकर तम्पुरानके पास अनुग्रह-याचनाके लिए आया था और तम्पुरानने उसे इतने ऊँचे स्थानतक उठाया. आजतक वह उनका दाहिना हाथ रहा. कितना भी बुरा हो तो भी क्या वह खिलानेवाले हाथको ही काट लेगा ? अभी तो तम्पुरान उस-पर कितना विश्वास करते हैं. वह स्वपुत्रके समान प्रेम करनेवाले तम्पु-रानको अकारण ही धोखा देगा ?

उनके हृदयमें इसी प्रकारके विचार दौड़ने लगे. कुछ समयतक वे चुपचाप बैठी रहीं. इस बीच उन्हें क्रमशः चन्तुके स्वभावमें आया हुआ अन्तर याद आने लगा. अपने साथके व्यवहारमें ही जो भिन्नता दिखाई दी उसका भी स्मरण उन्हें हुआ. अबतक इस सबको उन्होंने उसकी बुद्धिहीनता समझकर उपेक्षित कर रखा था. सब मिलाकर जब सोचा तो यथार्थतापरसे कुछ परदा उठा. अन्तमें उन्होंने पूछा—"मेरी बहन ! तुमने यह सब कैसे जाना ?"

गत रात्रि की सारी घटना माक्कम्ने विस्तारपूर्वक बड़ी केट्टिलम्मा-को सुना दी.

बड़ी केट्टिलम्माने कहा—कुछ भी हो. हम जान तो गये. अब परि-हार हो सकता है. आज रातके पहले वे पहाड़की तलहटीतक भी नहीं पहुँच सकते. महाराजाको तुरंत समाचार देना चाहिए. उनको रोकनेके लिए तो उनका आना आवश्यक नहीं है, तलय्कल चन्तु यहाँ पहुँच गये हैं."

उसी समय उन्होंने तलय्कल चन्तुको बुलवाया. जब उस वनचर-

नायकको सब बातें सुनाई तो उसके मुखसे एक मन्दहास निकल पड़ा. उसने कहा—"ताँबा प्रकट हो गया न ? कुछ दिनोंसे मुझे शंका थी ही. अन्नदाताके स्नेह और विश्वासको सोचकर कुछ कहा नहीं, लेकिन सावधान तो था ही. आने दीजिए उसको और उसके कंपनीवालोंको. एक भी जीवित नहीं जा पायगा."

कुरिच्य-नेता आज्ञा लेकर गया. उसने तम्पुरानको समाचार देनेके लिए आदमी भेज दिया और केन्द्र-स्थानके गुप्त मार्गकी रक्षाके लिए स्वयं निकला. सुरंगका दरवाजा बड़े-बड़े शिला-खंडोंसे बन्द कर देनेके लिए आदमी नियुक्त किये गये. लगभग दो सौ कुरिच्योंके साथ वह अविलम्ब जंगलोंमें छिप गया.

इधर दोनों राजपत्नियाँ इस समाधानके साथ अन्तःपुरमें चली गईं कि पपयंवीट्टिल चन्तुके विश्वास-घातका उपाय कर दिया गया. स्नान और भोजनके पश्चात् माक्कम् और कुञ्ञानि केट्टिलम्मा बैठकर बातें कर रही थीं. महाराजाका दाक्षिण्य, धीरता, पराक्रम आदि ही उनके संभाषणका केद्र-विन्दु था. कुछ देर बाद माक्कम्ने पूछा—"आजकल कविता नहीं लिखते क्या ?"

बड़ी केट्टिलम्माने उत्तर दिया—'कृम्मीर वधं' नामकी एक कथा लिख रहे हैं. पहला भाग लिख चुके हैं."

"जितना हो चुका है उतना दिखायँगी ? आप ही के पास होगी न पाण्डुलिपि ?"

"अवश्य, परन्तु अपूर्ण विद्या आचार्यको भी नहीं दिखानी चाहिए. और काव्य-रचनामें तो तुम आचार्या भी हो."

"मैं आचार्या हूँ ? तम्पुरान जो गीत आदि रचते हैं उनको गाकर ठीक करना और ताल, लय आदिके अनुसार संशोधित करना किसका काम है ? इसे कौन नहीं जानता ?"

कुञ्ञानि केट्टिलम्माने सन्दूक खोलकर धागेमें बँधे हुए चार-पाँच

ताली-पत्र लेकर माक्कम्‌के हाथपर रख दिए. माक्कम् दोनों हाथोंमें लेकर पढ़ने लगी—

कालाम्बुदरुचि तेडु' विपिने कामिनि ! वन्नतिनालतिगहने
डोलायितमिह मामक हृदयं लोकोत्तर गुणशालिनि ! सदयं *

(अर्थात्—काले बादलके समान अंधकारमय विपिनमें, इस अति गहन वनमें आनेसे, हे कामिनि ! लोकोत्तर गुणशालिनि ! मेरा हृदय दयासे द्रवित होकर दोलायमान हो रहा है.)

यह पद पढ़ते-पढ़ते माक्कम्‌का कंठ गद्‌गद् हो आया. हृदयमें हिलोरें मारनेवाले विचारोंको दबाते हुए उसने कहा—"स्वानुभवका वर्णन करनेवाली कविताका महत्त्व कुछ अलग ही है. ये शब्द उन्होंने आपसे ही कहे होंगे."

"चुप पगली !" बड़ी केट्टिटलम्माने स्नेहपूर्वक डाँटा.

"जीजी, आपने इसका क्या उत्तर दिया यह जाननेकी उत्सुकता बढ़ रही है." कहती हुई वह आगे बढ़ी—

कान्ता ! चिन्तिक्कलितिलेरे एन्तोरु
सन्ताप मिन्निह मे !

(अर्थात्—हे कान्त ! इससे अधिक सन्ताप मेरे लिए और क्या हो सकता है ?)

महीपाल रत्नञ्जीडु' मुकुटेषु विळंडुन्न
मणिदीपमतायुल्ल तव पदयुगलं,
मार्गमध्ये, तप्त मणलिलिङने मरुवीडुन्नतिनाल
मनसि मे शोकं वळरुन्नू, मेनितळरुन्नू तापं
कलरुन्नू हन्त ! किमिहञान परयुन्नू †

---

* 'कृम्मीरवधं-आट्टकथा' में यह वर्णन उस समयका है जबकि द्वैत-वनमें युधिष्ठिर पांचालीसे बातचीत कर रहे थे. 'आट्टकथा' : अभिनय-कथा, कथकलि-साहित्य.

† पांचाली का उत्तर.

(राजाओंके मुकुट-रत्न तुम्हारे इस दोनों चरणोंको जब मैं मार्गकी गर्म रेतपर पड़ते देखती हूँ तब मनका दुःख असह्य हो उठता है, शरीर विवश हो जाता है, हृदय जल उठता है ! हाय ! मैं क्या करूँ ?)

माक्कम्की आँखोंमें आँसू भर आये. बनवास का दुःख जो भुलाये हुए थी उस बड़ी केट्टिलम्माका हृदय भी उद्विग्न होने लगा. कुछ समयतक वे चुप रहीं, फिर माक्कम्ने कहा—"जीजी, यह गीत तो आपने ही लिखा होगा ! स्त्री-हृदयके लिए इतना योग्य पद और कोई नहीं लिख सकता."

"तुम क्या कहती हो ? तम्पुरानकी कवितामें मैं हस्तक्षेप करूँगी ?"

"आप कुछ भी कहें जीजी, मैं तो नहीं मान सकती. उस '**बाले ! नी केल मम वाणी**' ('बाले ! मेरी बात सुनो!'—युधिष्ठिरका उपर्युक्त कथन) आदि पदका उत्तर आप ही इतना ठीक लिख सकती हैं !"

"इतना मजाक मत उड़ाओ, नहीं तो मुझे भी कुछ कहना होगा. मालूम है रातको तम्पुरान किसके बारेमें श्लोकोंकी रचना करते हैं ? अभी दो ही दिन हुए, मेरे हाथमें एक श्लोक आया है."

माक्कम्ने अनुनयके स्वरमें कहा—वह क्या है, जीजी ?

बड़ी केट्टिलम्माने हँसते हुए उत्तर दिया—"दिखाती हूँ, दिखाती हूँ !" और वे सावधानीसे रखा हुआ एक ताल-पत्र उठा लाईं. "बताऊँ, कहाँसे मिला यह ? दोपहरको जिस पलंगपर वे विश्राम करते हैं उसके तकियेके नीचेसे !"

"दीजिए, पढ़ूँ !"

"नहीं, नहीं ! मैं ही पढ़ूँगी"—कहती हुई बड़ी केट्टिलम्मा सुनाने लगीं—

जाती ! जगतानुकम्प भव ! शरणामये ! मल्लिके ! कूप्पुकै, ते.
कैते ! कैतेरि माक्कम् कबरियिलणिवान कय्युयतु' दशायां.

एतानेतान मदीयानलरशर परितापोद्यानाशुनी तान्
नीतान् नीतानुयातींडुक चट्टुल कयलकरिण तन् कर्णमूले.

(अर्थात्—हे जाति-पुष्प ! मेरे ऊपर दया करो ! हे मल्लिके ! मैं हाथ जोड़ता हूँ. तुम्हारी शरण आता हूँ. हे केतकी पुष्प ! जब कैतेरी माक्कम् तुम्हें हाथमें लेकर बालोंमें लगानेके लिए उठाये तब मेरे हृदयका कुछ-कुछ विरह-ताप उस सुन्दरीके कर्णमूलमें विस्तारपूर्वक कह देना.)

और फिर उन्होंने कहा—"देखा, स्वानुभवका वर्णन करनेवाली कविताका महत्त्व ! फिर भी इस विरहकी अवस्थामें मेरी छोटी बहन फूलोंसे सजकर बैठेगी यह बात मेरी समझमें नहीं आई."

माक्कम्—मुझे तो फूल छुए भी कितने महीने हो गए ! उनके दिल-में ऐसा क्यों आया ? जीजी, तुम्हें मुझसे जरा भी प्रेम हो तो इसको फाड़ डालो !

"वाह-वाह ! तम्पुरानका लिखा ताल-पत्र फाड़ डालूँ ? कवि लोग ऐसा बहुत-कुछ लिखेंगे. इसमें क्या ? लेकिन एक बात तो स्पष्ट हो गई—तुम साथ न हो तो भी सदा हृदयमें रहती हो ! यही सबसे बड़ी बात है न ?"

"जीजी, आपका प्रेम और दाक्षिण्य ही मेरे लिए सबसे बड़ी वस्तु है. वह पत्र एक बार मुझे दिखाइए."

"और यदि तुम उसे फाड़ डालो तो मैं तम्पुरानसे क्या कहूँगी ? प्रतिज्ञा करो कि नहीं फाड़ोगी, तो दूँगी."

"आपकी सौगंध ! नहीं फाड़ूँगी !"

"यदि तुम फाड़ डालो तो यह श्लोक मुझे कंठस्थ है—मेरे हृदयस्थ है. उसको कोई नष्ट नहीं कर सकता. कितना अच्छा श्लोक है !"

माक्कम्ने उसे हाथमें लेकर दो-तीन बार पढ़ा. इसपर हँसते हुए बड़ी केट्टिलम्माने कहा—"याद कर रही हो ? कर लो ! कर लो ! जाकर जाति, मल्लिका, केतकी, सभी पुष्प एक साथ लगाओ. परन्तु जब लगाना तब वे कुछ कहते हैं या नहीं, सावधानी से सुन लेना."

इस प्रकार सौहार्दमय सम्भाषण करते हुए उन दोनोंने समय बिताया.

उधर, तलक्कल चन्तुका भेजा हुआ कुरुच्य संध्या समय कण्णवत्तु पहुँचा. निश्चित समयपर ही तम्पुरान एक छोटी सेनाके साथ वहाँ पहुँच चुके थे. मेजर होम्सकी सेनाके मणत्तनाकी ओर जानेपर तीनों ओरसे उसपर आक्रमण करनेकी उनकी योजना थी. उनके भानजे केरल वर्मा राजकुमारके अधीन कुछ नायर और कुरिच्य-योद्धा मणत्तनासे दूर जंगलमें थे. अम्पु नायरकी सेनाने मानंचेरीसे रवाना होकर कंपनीकी सेनापर पीछेसे आक्रमण करनेका निश्चय कर रखा था. इस प्रकार दोनों ओरसे आक्रमण होनेपर जब उसके जानेका कोई मार्ग न रहे तब उसको नष्ट कर देनेके लिए तम्पुराननें अपनी सेना मोर्चेपर जमा रखी थी. इसके लिए आवश्यक निर्देश दिये जा चुके थे. ऐसे समयपर अम्पु नायर दर्शनके लिए उपस्थित हुए.

अम्पुकी मुख-मुद्रासे ही तम्पुराननें ताड़ लिया कि वे किसी गंभीर विषयपर बात-चीत करने आये हैं. उन्होंने शान्तिके साथ पूछा—"क्यों अम्पु, सब काम कैसा है?"

"महाराज ! श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे सब शुभ ही हुआ. उत्तरके सभी नायर अपनी शक्ति-भर मदद करेंगे. कटत्तनाट्टु तम्पुरान सीधे सामने आना छोड़कर सब-कुछ करनेको तैयार हैं. इरुवनाट्टुके सब नम्पियार भी वैसे ही हैं. चिरैकल तम्पुरान भी मदद करेंगे."

"फिर तुम क्यों इस प्रकार कटार निगले-जैसे खड़े हो ?"*

"निवेदन कर रहा हूँ. हमारे सामने एक भयानक स्थिति आ गई है."

"स्पष्ट कहो. छिपाते क्यों हो ?"

"कम्पनीका नया सेना-नायक सामान्य नहीं है. उसने सीधे हमारे

---

* व्यंग्याभासपूर्ण वाक्प्रयोग. घबराये हुए और स्तब्ध. दूसरा वाक्प्रयोग—"कटार निगलना है, आड़ी निगलना है, अभी निगलना है, यहीं निगलना है"—असाध्य कार्य का आग्रह करना.

साथ लड़नेके बदले हमारे सहायकोंका मूलोच्छेद करनेका निश्चय किया है. इरुवनाट्टुमें जो किला बनाया जा रहा है उसका यही उद्देश्य है. कट्टनाट्टुके तम्पुरानको डरानेके लिए भी एक आदमी भेजा गया है. शेप सबको भी नष्ट कर देनेका उद्देश्य है."

"हमारे गुप्त साथी कौन-कौन हैं, उसको कैसे मालूम होगा ?" उनके नाम तो हमारे मन्त्रियोंके अतिरिक्त किसीको भी मालूम नहीं हैं ?

"ऐसा एक व्यक्ति अब उनके पक्षमें हो गया है."

"क्या ? हमारा सचिव ?"

अम्पुने पप्पयंवीट्टिल चन्तु नायरसे तलश्शेरीमें भेंट होनेसे लेकर अन्त-तकका सारा वृत्तान्त तम्पुरानको कह सुनाया. वह सब सुनकर धीराग्रणी और स्थिरश्री महाराजा भी आश्चर्य और दुःखसे स्तब्ध हो गए. मेरा विश्वास-पात्र सेवक चन्तु ही विरोधी होकर कम्पनीका साथ देगा ? पिछले पच्चीस वर्षोंकी कहानी तो कुछ और ही बताती है. कितनी-कितनी विपत्तियोंमें चन्तुने मेरा साथ दिया. अपने प्राणोंको तृणवत् मानकर कितनी बार मेरी रक्षाके लिए असाधारण धैर्य दिखाया. वह अनाथ होकर बाल्य-कालमें मेरे पास आया था, और उसकी विश्वस्तता, धैर्य आदि देख-कर ही तो मैंने उसे इतना बढ़ाकर प्रतिष्ठित बनाया ! पपयंवीडु* में जब सन्तान नहीं थी तब अपने प्रभावसे उस प्राचीन कुटुम्बमें उसे गोद लिवाकर उसे देशका प्रमुख बनवाया ! कैतेरीकी बड़ी पुत्रीसे विवाह कराकर उसका गौरव बढ़ाया ! मंत्रियोंमेंसे एक बनाकर अत्यधिक अधिकार भी दिया. इस कृपाके अनुरूप ही आजतक उसने मेरी सेवा की. अब वह मेरे और स्वदेशके प्रति विश्वास-घात करेगा यह कैसे माना जाय ?

तम्पुरान चिन्ता-क्लान्त होकर बहुत देरतक चुप रहे. उन्होंने यह

*घरका नाम, 'पपयंवीडु' चन्तुके बदले 'पपयंवीट्टिल' चन्तु कहा जाता है.

शंका भी की कि यह सारा एक दुःस्वप्न होना चाहिए.

इस दीर्घ मौनको अम्पुने तोड़ा. उसने कहा—"तम्पुरानके पहाड़ोंमें पधारनेके पूर्व ही मुझे यह शंका हुई थी. कुछ दिनोंसे अपने उत्तरके गृहाधिपतिके साथ मित्रताका व्यवहार देखकर मैंने जाँच-पड़ताल की, परन्तु कुछ स्पष्ट मालूम नहीं हुआ. नये कर्नल का दुभाषिया वेश बदल-कर उस घरमें आता है, यह समाचार मुझे मिला था. अन्तमें जब तलश्शेरीमें मिला तब सारा रहस्य प्रकट हो गया."

"अब हमें क्या करना चाहिए ?" तम्पुरानने पूछा.

"यदि अंगुलीमें विष चढ़ जाय तो उसे काट देना ही उचित है."

तम्पुरान चुप रहे. अम्पु कहता गया—"इस समय संकोच करना बहुत संकटमय हो जायगा. हमारे सभी सहायकोंको वह कर्नलद्वारा नष्ट करा देगा. अभी निश्चयपूर्वक यह नहीं मालूम कि वज्राघात कितने लोगोंपर हुआ है."

तम्पुरान—दूध पिलानेवाले हाथसे ही जहर कैसे दूँ ? उसे पकड़-कर कैदमें नहीं रख सकते क्या ?

"उसका धैर्य, पराक्रम और युद्ध-कुशलता आप जानते हैं. उस दुःशासनको बन्दी बनाना संभव नहीं मालूम होता. इसलिए आज्ञा कीजिए—"

"उसने हमारे लिए क्या क्या किया ! एक बारकी गलतीसे सारी पूर्वकथाको कैसे भुला सकता हूँ ?"

"दासको लगता है कि इस समय दया करना गलत होगा. आज्ञा दीजिए स्वामी !"

तम्पुरान धर्म-संकटमें पड़ गये. बोले—"मुझे कुछ नहीं सुनना. जैसा ठीक समझो, करो."

उसी समय कुरिच्य दूत वहाँ आपहुँचा. उसके पाससे बड़ी केट्टि-लम्माका यह संदेश पाकर कि "महाराजका तुरन्त यहाँ पधारना आवश्यक है" तम्पुरानके हृदयमें और भी घबराहट पैदा हो गई. पचीस वर्षके

भीषण युद्ध-कालमें कभी कुञ्आनि केट्टिलम्माको तम्पुरानने घबराते हुए नहीं देखा. युद्ध-कार्योंसे चिरपरिचित उस वीर क्षत्राणीका युद्धमें फँसे हुए पतिको इस प्रकारका संदेश भेजना अवश्य ही किसी गंभीर कारणका द्योतक है, यह तम्पुरानने निश्चय जान लिया. हेतु न जाननेसे वहाँ पहुँचनेके लिए वे व्याकुल हो उठे. उन्होंने कहा—"अम्पु, कलके युद्धके लिए अब मैं नहीं रुक सकूँगा. तुरन्त पहाड़पर पहुँचनेकी आवश्यकता है. यहाँकी सेना तुम्हारे नेतृत्वमें युद्ध करे. मानंचेरीमें कोई दूसरा सेना-नायक तो है न ?

"जी, हाँ."—अम्पुने तत्काल उत्तर दिया—"कोई गड़बड़ी नहीं होगी. शक्ति-भर सँभालनेका प्रयत्न करूँगा."

तम्पुरानने कहा—कोई दुस्साहस नहीं करना. सोच-विचारकर काम करना."

और तत्काल ही वे रवाना हो गये.

ग्यारहवाँ अध्याय

दूसरे दिनका युद्ध महाराजाकी योजनाके अनुसार ही चला. मेजर होम्सके अधीन कम्पनीकी जो सेना आई वह तीनों ओरसे आक्रमण करके छिन्न-भिन्न कर दी गई. मेजर होम्स और चार गोरे उप-सेनानायकोंने हथियार डालकर हार स्वीकार कर ली. तम्पुरानकी सेनाको बहुत-सी बन्दूकें और युद्ध-सामग्री मिली. अम्पु गोरे नायकों और सामग्रीको लेकर पहाड़पर चढ़ने लगे.

जब यह समाचार सन्देशवाहकके द्वारा तलश्शेरीमें पहुँचा तो वहाँ वर्णनातीत कोलाहल मचा. शान्त स्वभाव वेलेस्ली कुपित होकर संहार-रुद्रके समान अपने कार्यालयमें टहल रहा था. उसकी क्रोधान्ध जल्पनाओंका सारांश यह था कि यदि तम्पुरानको जीतना हो तो पहले तलश्शेरी दुर्गके सब कर्मचारियोंको फाँसीपर चढ़ा देना होगा.

वह मन-ही-मन सोचने लगा—कप्तान स्टुवर्ट घायल होकर शत्रुके हाथमें पड़ गया और उसकी सारी सेना नष्ट हो गई. इतना ही नहीं, उस छावनीका सारा सामान शत्रुके हाथ लग गया. अब मेजर होम्स अपने चार साथियोंके साथ कैद हो गये हैं. यद्यपि यह सब मेरी योजनाओंमें बाधक नहीं हो सकता, फिर भी इतना तो स्पष्ट है कि इस प्रकार बार-बारकी पराजयोंका कारण हमारे अन्दरका षड्यंत्र ही है. इस अनुमानको सबल बनानेके लिए और भी बातें दिखाई दे रही थीं.

शत्रुको मदद करनेके अपराधमें जिस उण्णिनंङाको सिविल अधिकारियोंको सौंपा गया था उसे बिना जाँच-पड़तालके छोड़ दिया गया. तम्पुरानको मदद करनेवाले प्रभुजनोंको पकड़नेके लिए जिन लोगोंको भेजा गया था वे सब पराजित होकर लौट आये. केवल चुष्ली नम्पियारको पकड़ा जा सका. वह भी इसलिए कि नम्पियार बीमार होनेके कारण हट नहीं सकते थे. वयनाट्टिल एमन नायरको भी गिरफ्तार करके श्रीरंगपट्टन ले जा सके. अन्य लोगोंके घरोंमें जब कम्पनीके लोग पहुँचे तब उनमेंसे हर एक किसी-न-किसी कारणवश बाहर था. वेलेस्लीने निश्चित अनुमान कर लिया कि शत्रुको हमारी योजनाओंका तुरन्त पता देनेवाला कोई प्रबल गुट तलश्शेरीमें मौजूद है. उसका दमन किये बिना हमारी योजनाएँ सफल नहीं हो सकतीं.

सबसे पहले उसने सुपरवाइजर बेबरको बुलवाया—और उसे सारी स्थिति समझाई. बेबरने इस भावसे कि कर्नल मेरे ऊपर विद्रोहका अपराध लगा रहे हैं, कहा—"इस प्रकारका कोई संगठन तलश्शेरीमें हो ही नहीं सकता. आप तो खिसियाकर अपनी पराजयोंका रोष नागरिक अधिकारियोंपर उतारना चाहते हैं." कर्नल भी जानता था कि यथार्थमें सुपरवाइजर निर्दोष है. उसकी सहायताके बिना शहरमें शासन चलानेका अधिकार सेनापतिको नहीं था. इसलिए उसने उसे भय दिखाकर काम चलानेके इरादेसे कहा—"मैंने जो बात कही है वह कितनी गंभीर है, आप जानते हैं ? जब यह सब कलकत्ता में मालूम होगा तो संकट पैदा हो जायगा."

बेबरने समझ लिया कि अपने बड़े भाई गवर्नर-जनरलको बताकर मुझे दण्ड दिलानेकी बात वेलेस्ली समझाना चाहता है. परन्तु इससे वह डरा नहीं. वह जानता था कि गवर्नर-जनरलका एक विरोधी दल भारतमें ही मौजूद है. वह यह भी जानता था कि इंग्लैंडमें कम्पनीके सर्वाधिकारी डनडास उसी पक्षके समर्थक हैं और इस बीच गवर्नर-जनरलको कई चेतावनियाँ भी मिल चुकी हैं. जबसे कर्नल वेलेस्ली तल-

श्शेरी आकर अपना अधिकार दिखाने लगा तबसे बेबर बम्बईमें रहने-वाले अपने ऊपरी अधिकारियोंसे बराबर सलाह किया करता था. उनका निर्देश था कि नागरिक कर्मचारियोंको सैनिक अधिकारियोंकी आज्ञा माननेकी आवश्यकता नहीं है और यदि वे बाध्य करें तो अधिकारी स्वयं इस विषयमें लंदनसे लिखा-पढ़ी करेंगे. इस आधारपर ही बेबरने उत्तर दिया—"ठीक है, आप लिख सकते हैं. मुझे निर्देश मिला है कि नागरिक शासकोंपर सैनिक अधिकार नहीं चल सकता. मैं भी बंबईको लिख दूँगा कि आप क्या चाहते हैं."

कर्नल वेलस्ली केवल सेनापति ही नहीं था. उसमें राजनीति-ज्ञान भी इंग्लैंडका प्रधानमंत्री बनने योग्य था. उसने समझ लिया कि किस बलपर बेबर इस प्रकारकी बात कह रहा है, इसलिए उसने अनुनयकी भाषामें कहा—"हमारे बीच फूट पड़ गई तो कंपनीका हित नहीं होगा. इस शहर-में कुछ लोग हमारे विरुद्ध काम करते हैं इसका मुझे प्रमाण मिल चुका है. मेरी प्रार्थना है कि आप उनको दबानेका प्रयत्न करें."

बेबरने कहा—यदि ऐसा कोई संगठन हो तो मैं अवश्य ही उसे दबा-ऊँगा, परन्तु इसका प्रमाण क्या है ?

कर्नल—सुनिए, आपको वह स्त्री जेलमें रखनेके लिए सौंपी गई थी. आपने उसे छोड़ क्यों दिया ? उसका अपराध कुछ मामूली तो नहीं था ?

उण्णिानंङाकी रिहाईकी घटना इस प्रकार घटी थी—उसके कैद में डाले जानेके दूसरे दिन प्रातःकाल चन्द्रोत्तु नम्पियार बेबरके पास पहुँचे. मय्यषीमें रहनेके कारण वे यूरोपियन आचार-विचारसे परिचित थे और इसी कारण कंपनीके अधिकारी उनसे सौहार्द भी रखते थे. बीच-बीच में तलश्शेरी आकर नम्पियार उनका सत्कार करते और उन्हें उपहार आदि भी देते थे. इस कारण भी वे उनके प्रिय पात्र थे. जब उन्होंने आकर बेबर-को बताया कि मेरे आश्रयमें रहनेवाली एक युवतीको सैनिक लोग मर्यादा रहित तरीकेसे पकड़ लाये हैं, तो बेबरने स्वीकार किया कि यह एक अन्यायपूर्ण काम है. उसने उस समय उत्तर दे दिया—"सोचेंगे."

अम्पु नायरका पत्र लेकर नम्पियार चिरुतक्कुट्टीसे मिल चुके थे यह बेबरको मालूम नहीं था. पत्र पढ़कर चिरुतक्कुट्टीने कहा—"उनके लिए सब-कुछ करना मेरा कर्तव्य है. यह क्या कोई बड़ी बात है ?" साथ ही उसने कहा—"आपसे मिलनेका अवसर मिला, मेरा अहोभाग्य! थोड़े ही दिन पहले अम्पु यजमानने मुझे बताया था कि मुझे जो आज्ञा मिलती है वह कहाँसे आती है. मैं अपनी शक्ति-भर प्रयत्न करती हूँ."

चिरुतक्कुट्टीकी नम्रता और सुव्यवहारसे नम्पियारके मनमें उसके प्रति आदरका भाव पैदा हुआ. उन्होंने कहा—"आपसे मिलनेका सुअवसर मिला इसलिए मुझे भी प्रसन्नता हुई. यहाँके समाचार जानते रहनेपर ही तम्पुरानके प्राणोंकी रक्षा निर्भर है."

चिरुतक्कुट्टी—यह मैं जानती हूँ. तम्पुरान तो हम सबके हैं, किसी एकके नहीं !

इसके बाद नम्पियार चले आये. जब वे सुपरवाइजरके साथ बातें कर रहे थे उस समय चिरुतक्कुट्टी अन्दर कमरेमें बैठी थी. बेबर अपने अतिथिको विदा करके अन्दर गया तो चिरुतक्कुट्टीने उससे पूछा—"चन्द्रोत्तु यजमान किसलिए आये थे ?"

बेबर—उनके घरसे सैनिक एक लड़कीको पकड़कर ले आये हैं. उसके बारेमें फरियाद करनेके लिए आये थे.

चिरुतक्कुट्टी—क्या अन्याय है ! सैनिक लोग ऐसा करने लगें तो देशमें औरतें कैसे जियें ? ऐसी हालतमें जनता कम्पनीकी क्या खाक सहायता करेगी ?

"सभी देशोंमें सैनिक ऐसे ही होते हैं. उनको न न्यायका खयाल होता है, न मर्यादाका. वेलेस्लीके आनेके बादसे तो उनका खयाल हो गया है कि देशका सर्वाधिकार उनके ही हाथोंमें है"—सुपरवाइजरने उत्तर दिया.

"तो आपने उस लड़कीके बारेमें क्या सोचा है ?"

"कचहरीमें एक अर्जी ले आनेको कहा है. उस लड़कीका भी बयान लेना होगा."

इस समय इतना ही काफी है सोचकर चिरुतक्कुट्टी चुप हो गई.

ग्यारह बजे उण्णिनंङा सुपरवाइजरके सामने पेश की गई. यद्यपि उसने पिछले दिन कम्पनीके कर्मचारियोंके हाथों घोर कष्ट सहे थे और वह रात-भर कैदमें निराहार पड़ी रहनेके कारण थकी हुई थी, फिर भी उसका मुख खिली हुई शशि-कलाके समान प्रसन्न और सुन्दर था. अतएव इस परिस्थितिमें भी वह उपस्थित लोगोंके स्नेह और अनुकम्पाकी पात्री बन गई. सब-कुछ सहनेकी तत्परता और धैर्यके सिवा उसके चेहरेसे दुःखका कोई लक्षण प्रकट नहीं होता था. वह एक संतरीके साथ कचहरी-में लाई गई और नतमस्तक खड़ी हो गई. उसने किसीकी ओर ध्यान नहीं दिया.

सैनिकोंके अपनी रिपोर्ट सुनानेके बाद सुपरवाइजरने उससे पूछा—तुम क्या कहती हो ? इस रिपोर्टमें कहा गया है कि तुमने एक विद्रोही-की मदद की. क्या यह सच है ?

उण्णिनंङाने सिर उठाकर देखा. सुपरवाइजरकी कुर्सीके पीछे चन्द्रोत्तु नम्पियारको खड़े देखकर उसके मुखकी निराशा-जनित निर्वि-कारता कम हो गई. नम्पियारका मुख प्रसन्न दिखलाई पड़ा इसलिए उसने यह भी अनुमान कर लिया कि कोई विशेष कष्ट नहीं होगा.

दुभापियेने जब सुपरवाइजरका प्रश्न दुहराया तब उसने बातको पूरी तरह समझ लिया. उसने निर्भीक और निःसंकोच होकर उत्तर दिया—"मैंने किसी राज-द्रोहीको कोई सहायता नहीं दी".

सुपरवाइजरने आज्ञा की—क्या हुआ, सो पूरी तरह बताओ.

उण्णिनंङाने जो-कुछ कहा उसका सारांश यह है कि—शामको जब मैं पानी भरनेके लिए जा रही थी तब मैंने एक आदमीको खेतोंसे भागते हुए अहातेमें घुसते देखा. उसके पीछे चार-पाँच लोग वहाँ आये और मुझसे कड़ाईके साथ बातें करने लगे. मैं डरके मारे बोल भी नहीं सकी थी कि

उन्होंने बलात् मुझे पकड़ लिया और यहाँ ले आये."

उण्णिआनंङाकी छोटी उमर, उसके कहनेकी सहज स्वाभाविकता और सैनिकोंके मर्यादाहीन व्यवहारका विचार करके सुपरवाइजरने उसे छोड़ देनेका आदेश दिया. चन्द्रोत्तु नम्पियार उसे लेकर कचहरीसे बाहर निकल आये.

नम्पियारने चिरुतक्कुट्टीसे मिलकर उसे धन्यवाद दिया. उसने उण्णिआनंङाके साथ उन्हें बड़े सौहार्दके साथ स्वीकार किया और उनके कृतज्ञता-प्रकाशनका उत्तर देते हुए कहा—"अम्पु नम्पियारके लिए मैं सब-कुछ करनेके लिए बाध्य हूँ. अब आपसे भी परिचय हो गया."

नम्पियारने कहा—आपने इसके प्राण और मानकी रक्षा की है. इतना ही नहीं, सच पूछिए तो आपने मेरे ही मानका संरक्षण किया है. उसका बदला मैं कैसे चुका सकता हूँ ? फिर भी स्मरण-स्वरूप मेरी यह अँगूठी स्वीकार कीजिए.

अपनी अँगुलीसे उतारकर उन्होंने एक लाल रत्न जड़ी हुई अँगूठी चिरुतक्कुट्टीके सामने रख दी. चिरुतक्कुट्टीने उसे आदरके साथ स्वीकार करते हुए कहा—"आप जो-कुछ देंगे उसे मैं आशीर्वादके रूपमें ग्रहण करूँगी."

इस प्रकार उण्णिआनंङा कारागृहसे छूट गई. जब यह समाचार कर्नल वेलेस्लीके पास पहुँचा तभीसे उसका क्रोध प्रज्ज्वलित हो उठा था. किन्तु नागरिक अधिकारियोंके हाथमें सौंपे हुए व्यक्तिको नियमानुसार छोड़ देनेपर आपत्ति करनेका उन्हें कोई अधिकार नहीं था. अब बहुत-सी बातें एक साथ सामने आ जानेपर उसने सबसे पहले वही बात कह डाली. सुपरवाइजरने उत्तर दिया—"उस लड़कीको नियमानुसार कारावासमें कैसे रखा जा सकता था ? बयान लेनेपर स्पष्ट हो गया था कि वह अपराधिनी नहीं है."

कर्नल—आपका कथन ठीक होगा. उस बारेमें मैं कुछ नहीं कहता. परन्तु यह बताइए कि मेजर होम्सके कूत्तुपरंपुसे रवाना होनेके पहले ही

उनकी यात्राके मार्ग और सैनिकोंकी संख्या आदि सब बातोंका पता शत्रुको कैसे चला ?

सुपरवाइजर—इसका उत्तर देना मेरा काम नहीं है. यदि आप मेरी राय जानना चाहते हैं तो मैं कहूँगा कि सेनापतिकी विचारहीनता या असमर्थताके कारण ही ऐसा हुआ होगा.

कर्नल वेलेस्लीका चेहरा क्रोधसे लाल हो उठा. लेकिन अपने क्रोध-को पीकर उसने कहा—"मेरे प्रबन्धमें कुशलताकी कमी मालूम होती है. आगेके लिए सावधान हो जाना मेरा काम है. परन्तु उन कमियोंका ज्ञान शत्रुको होता है तो यह भी निश्चित है कि उसके सहायक इसी शहरमें हैं. मैं इसी बारेमें कह रहा हूँ. ऐसे विद्रोहियोंका दमन किये बिना काम नहीं चलेगा."

सुपरवाइजर—आपका मतलब यह है कि नागरिक अधिकार भी आपके हाथोंमें आ जाना चाहिए. मुझे बहुत पहले ही यह शंका थी. इस शहरका अधिकार आपके हाथोंमें देना नियमोंके अनुसार सम्भव नहीं है. मैं जबतक यहाँ सुपरवाइजर रहूँगा तबतक ऐसा होने भी नहीं दूँगा."

कर्नल—युद्ध-संचालनके लिए यदि आवश्यक हुआ तो मैं सैनिक-नियम चालू करनेमें कोई संकोच नहीं करूँगा. तब किसीकी सम्मति लेनेके लिए मैं नहीं रुकूँगा.

सुपरवाइजरने ताड़ लिया कि यह सब सैनिकोंकी स्वाभाविक उद्दंडतासे कहा गया है और यदि इसके सामने जरा भी सिर झुका दिया गया तो कम्पनीके प्रति अपराधी बनना होगा. इसलिए उसने कहा—"यदि आपने ऐसा किया तो मैं अपनी सारी शक्ति लगाकर आपकी कोशिशोंको रोकना अपना कर्तव्य समझूँगा. मेरी अधिकारी बम्बई-सरकार है. उसकी आज्ञाके बिना यहाँका अधिकार मैं किसीको नहीं दे सकता."

इतना कहकर वह क्रोधके साथ वहाँसे चला गया.

उसके जानेके बाद कर्नल अपनी आरामकुर्सीपर बैठकर सोचने लगा. उसने निश्चित मान लिया कि यद्यपि हमारी छोटी-छोटी टुकड़ियोंको

शत्रुने नष्ट कर दिया है फिर भी वह मुख्य योजनाको विफल नहीं कर सकता. उसने यह भी अनुमान कर लिया कि एमन नायरको श्रीरंगपट्टन भेजनेसे और चुषली नम्पियारको गिरफ्तार कर लेनेसे जनता भयभीत तो हुई ही होगी.

जब उसने समझ लिया कि सुपरवाइजर मेरी आज्ञा नहीं मानेगा तब वह आगेके कार्यक्रमपर विचार करने लगा. सुपरवाइजरको डरानेके खयालसे उसने कह तो दिया कि शहरको सैनिक अधिकारमें ले लिया जायगा, परन्तु वह जानता था कि यह कार्य सुसाध्य नहीं है. गवर्नर-जनरलकी आज्ञाके बिना ऐसा करनेका अधिकार किसीको नहीं था. कर्नल वेलेस्ली जानता था कि भाई और स्वेच्छाचारी गवर्नर-जनरल होता हुआ भी मार्क्विस वेलेस्ली बम्बई-सरकारसे परामर्श किये बिना ऐसी आज्ञा नहीं देगा. इस स्थितिमें, यदि अपने कार्यका श्रीगणेश विजय-से ही आरम्भ करना हो तो कूटनीतिसे काम लेना होगा. पहली आव-श्यक बात यह है कि तम्पुरानको सहायता पहुँचानेवाले संगठनका पता लगाया जाय और उसके नेताओं आदिके बारेमें अकाट्य प्रमाण प्राप्त किये जायँ.

उसने देशी कार्योंके सचिव लोबो सिकुवेरा नामक दुभाषियेको बुलवाया. वह व्यक्ति अनेक भाषाएँ जाननेवाला, समर्थ और बुद्धिशाली था. मैसूर-युद्धके पूर्व वह कर्नल वेलेस्लीका दुभाषिया नियुक्त हुआ था. वेलेस्लीके साहचर्यसे उसकी बुद्धि और भी निखर आई थी. शासन-कार्य-का भी उसको आश्चर्यजनक ज्ञान था. वेलेस्लीके प्रति स्नेह और आदर-के कारण वह उसका और भी प्रिय बन गया था.

कुछ दिन पहले कर्नलने अपनी शंकाएँ उसपर प्रकट कर दी थीं. सुपर-वाइजरके साथ सम्भाषणके बाद उसने उसे ही पता लगानेके लिए नियुक्त किया. उसने कहा—"मैं कह नहीं सकता कि ये सब खोज-खबर हमें कहाँ पहुँचायगी. यथा-समय सब प्रमाणोंके साथ आपको बताऊँगा."

कर्नल—महाराजाका प्रबन्धकर्ता वह नायर कहाँ है ? उससे इस

काममें मदद मिल सकती है.

सिकुवेरा—चन्तु नायर सामान्य व्यक्ति नहीं है. केरलवर्माके पास उसका बहुत बड़ा स्थान था. अब, पता नहीं क्यों, उतना ही वैर भी है. वह तम्पुरानकी छावनीपर अधिकार करने गया है. दो दिनमें वापस आ जायगा.

कर्नल—स्वजन-द्रोहियोंपर भरोसा मत रखना. वह समर्थ और बुद्धिशाली अवश्य है. उससे अपना काम निकाल लेना चाहिए, किन्तु हमारी गुप्त बातें उसको मालूम न हों.

सिकुवेरा—अबतक यही किया है.

कर्नल—आनेके बाद तुरन्त ही मैं उससे मिलना चाहता हूँ. कई बातें सीधे उससे पूछकर ही जाननी हैं.

कर्नलने दुभाषियेको विदा कर दिया. बादमें जितनी बातें मालूम हुई थीं, विस्तारपूर्वक अपने भाईको लिख भेजीं.

बारहवाँ अध्याय

उस दिन विविध प्रकारकी मनोव्यथाओंके साथ तम्पुरान कण्णवत्तुसे रवाना हुए थे. पपयंवीट्टिल चन्तुकी वंचनाके बारेमें सोचते-सोचते उनकी खिन्नता बढ़ती गई. किसने सोचा था कि ऐसा भी एक दिन आयगा ! जब पहली बार मैसूरके साथ युद्धके लिए निकले थे तब चन्तु पानवाला लड़का बनकर उनके साथ गया था. उस बाल्यावस्थामें ही उसकी स्वामि-भक्ति, सामर्थ्य आदिपर वे प्रसन्न हुए थे. वे यह भी सोचने लगे कि आज उसके इस प्रकार विश्वासघाती बन जाने का कारण मेरा दुर्भाग्य ही होगा. अम्पु और चन्तुके आपसी संबंध कुछ बिगड़े हुए हैं यह उन्हें मालूम था. उन्हें शंका थी कि उसका कारण अम्पुका अहंकार है. फिर भी क्या अम्पुसे प्रतिकारके लिए वह अपने अन्नदाता-को, अपनी समस्त उन्नतिके हेतुभूत महाराजाको ही बलि चढ़ा देगा ? क्या यह नहीं हो सकता कि अम्पुके समझनेमें ही कोई गलती हो गई हो ? इस प्रकारकी अनेक शंकाएँ उनको सता रही थीं.

इससे भी अधिक व्याकुल करनेवाली बात वेलेस्लीकी युद्ध-नीति थी. सहायकोंका पता लगाकर कंपनी उनका सर्वनाश करनेपर तुल जाय तो स्वयं जंगलमें रहकर कुछ भी करें, प्रजासे मिलनेवाली सहायतापर प्रतिकूल

असर पड़ना निश्चित था. महाराजा जानते थे कि देशके प्रभुजनोंकी सहायतासे ही कंपनीके साथ युद्ध करना संभव हो रहा है. भोजन-सामग्री और शस्त्रास्त्रका संग्रह देशकी जनताकी सहायताके बिना असंभव है. वेलेस्ली भय दिखाकर उस सहायताको रोक दे तो इधर-उधर छोटी-मोटी सेनाओंको हरा देनेसे क्या लाभ ?

इस प्रकारकी मनोदशामें, सहायकोंके नाम शत्रुको बतानेवाले चन्तु-पर तम्पुरानका क्रोध बढ़ने लगा. पालकीमें उन्हें नींद नहीं आई. रात एक लम्बे दुःस्वप्न-जैसी मालूम होने लगी.

प्रभातमें तम्पुरान अपने केन्द्र-स्थानमें पहुँच गये. आस-पासमें ही छावनीके अन्दर कुछ विशेष हलचल मालूम होती थी. मार्गपर पहरा देने वाले कुरिच्योंकी संख्या साधारणसे बहुत अधिक थी. दूरसे ही नारोंकी ध्वनि और जंगलकी अशान्ति, पक्षियों और पशुओंकी जाग्रति आदि देख-सुनकर उन्हें आश्चर्य होने लगा कि कानन-राज्यकी एकान्त शान्ति इस प्रकार क्यों भंग हो रही है ! वे कहा करते थे कि मेरी यह राजधानी संसारका सबसे अक्षुब्ध स्थान है. उनकी चुनौती थी कि कथकलीके वाद्य-संगीतके अतिरिक्त और कोई नाद यहाँ सुनाई नहीं पड़ेगा. परन्तु आज वहीं यह सब उथल-पुथल !

बिना कहे ही महाराजकी चिन्ताका अनुमान करके, अथवा स्वयं सब कुछ जाननेकी उत्सुकताके कारण शिबिका-वाहक शीघ्रतासे चलने लगे. वास-स्थानके प्राकारके अन्दर प्रवेश करते ही उनके स्वागतके लिए दोनों केट्टिलम्मा एक साथ दालानमें निकल आई थीं. माक्कम्को देखकर तम्पुरानका आश्चर्य और भी बढ़ गया. बिना बुलाये माक्कम् अकेली पहाड़ पार करके यहाँ आई तो अवश्य ही बात गंभीर होनी चाहिए— यह अनुमान दृढ़ हो गया. वन-प्रदेशकी इस हलचलमें और अपने पास आये संदेशमें अवश्य ही कोई संबन्ध है, इसमें उन्हें कोई संदेह नहीं रहा.

दोनों पत्नियोंका अभिवादन स्वीकार करकेत म्पुराननें पूछा—"क्यों कुञ्ञानी, इतनी शीघ्रतासे क्यों बुलवाया ?"

"मेरे कहनेसे काम नहीं चलेगा. माक्कम् कहेगी. उसीने हमें बचाया है" बड़ी केट्टिटलम्माने कहा.

इतने दिनोंके बाद प्रथम-दर्शन सपत्नीके सामने होनेसे माक्कम्को कुछ कुंठा प्रतीत हो रही थी. महाराजा जब उसका उत्तर सुननेके लिए उसकी ओर मुड़े तो उसने लज्जासे सिर झुका लिया.

उचितज्ञ बड़ी केट्टिटलम्माने कहा—"मैं जाकर स्नान करती हूँ. बहनको जो-कुछ कहना है सो तबतक कह देगी." और वे माक्कन्को एक नज़र देखकर मुसकराती हुई बाहर चली गई.

तम्पुरान पलंगपर बैठ गये. माक्कम्को भी पास बिठा लिया. फिर बोले—"कहो ! कुशल तो है ?"

"क्या कुशल है ?" माक्कन्ने धीमे स्वरमें उत्तर दिया. "आपसे दूर रहकर कुशल ? इसके अलावा कोई असुख नहीं है."

"स्वयं अकेली निकल पड़नेका कारण तो गंभीर होना चाहिए ? कहो, क्या बात है ?" तम्पुरान ने पूछा.

माक्कम्ने निःसंकोच सारी बात विस्तारके साथ बता दी. तम्पुरान-ने जब यह सुना कि चन्तु कंपनीके सैनिकोंके साथ गुप्त मार्गद्वारा इस केन्द्र-स्थानपर ही आक्रमण करने चला है तो उनके मुखका भाव बदल गया. क्रोधसे आँखें लाल हो गई. अपने शान्त, सौम्य, दाक्षिण्य-मूर्ति स्वामीको संहार-रुद्रके समान रुक्ष मुख-भावके साथ देखकर मावकम् भी डर गई. तम्पुरान शपथ लेने लगे—"मैं श्रीपोर्कली भगवतीके चरणोंमें प्रतिज्ञा करता हूँ···" परन्तु बीचमें ही माक्कम् रोती हुई और यह कहती हुई उनके चरणोंमें गिर पड़ी कि "नहीं, नहीं ! क्रोधमें आकर शपथ न लीजिए !" तम्पुरान रुक गये. क्षण-भरमें शान्त होकर भयभीत केट्टिटलम्माको सान्त्वना देते हुए वे बोले—"माक्कम्, तुमने मुझपर एक नहीं, दो उपकार किये, चन्तुके विश्वास-घातका समाचार देना और इस क्रोधको शान्त करना. इस दूसरे उपकारके लिए मैं तुम्हारा सदा आभारी रहूँगा. निष्काम रूपसे, भगवच्चरणोंमें सब-कुछ समर्पित करके कर्म करने

वालेका सबसे बड़ा शत्रु क्रोध होता है."

माक्कम्—क्रोध करनेका तो आपका स्वभाव नहीं है. वह तो उस दुष्ट-बुद्धिके निंद्य कर्मोंसे पैदा हुआ एक विकार-मात्र था. लेकिन मैं आपका मनोभाव देखकर डर गई थी.

"तो, इसके लिए क्या किया जाय ?"

"सब मालूम होते ही बड़ी बहनने तलय्कल चन्तुको बुलाकर आवश्यक कार्रवाई करनेके लिए कह दिया था. आपको समाचार देनेके लिए आदमी भेजकर तलय्कल चन्तु और कुरिच्य मार्ग-रक्षाके लिए चले भी गये."

"चन्तु गया है तो कंपनीकी सेना पूरी-की-पूरी आ जाय तो भी तल-हटी पार करके गुप्त मार्गमें प्रवेश नहीं कर सकेगी. चन्तु गया है तो फिर मुझे क्यों बुलवाया ?"

माक्कम्का मुख उतर गया. उस विवर्णताको देखकर तम्पुरानको भी अपनी गलती महसूस हुई. समझानेकी दृष्टिसे उन्होंने कहा—"कण्णवत्तुसे कैतेरी होकर ही लौटनेका विचार मैंने कर रखा था."

विषादके साथ ही माक्कम्ने उत्तर दिया—जी हाँ ! इधर पधारने-के बाद माक्कम्के बारेमें क्या चिन्ता थी ! कितना असह्य दुःख सहना पड़ता है, आपको क्या मालूम ?

"यहाँ साथ लेकर आनेकी कठिनाई तो मैंने तुम्हें पहले ही समझा दी थी. वहाँ क्या इतना दुःख है ?"

इस बातपर माक्कम्के आँसुओंका बाँध फूट पड़ा.

तम्पुरान—तुम तो धीर वनिता हो. रोओ मत ! श्रीपोर्कली भग-वती सब ठीक कर देंगी. जब पाण्डव वनवासके लिए गये तब सुभद्रा घर पर ही तो रही थी ? लक्ष्मणके साथ उर्मिला तो नहीं गई थी ? इसलिए—

माक्कम्—उन सबके उण्णिच्चेची*-जैसी बहन नहीं थी.

---

* उण्णि दीदी. उण्णि—नाम, चेची—दीदी.

"उण्णि क्या करती है ?"

"क्या कहूँ ? कैसे निवेदन करूँ ? मुँह खोलती है तो व्यंग्यके अतिरिक्त कुछ निकलता ही नहीं. मेरा मुख देखते ही उसको क्रोध हो आता है. उसको सबसे बड़ा दुःख यह है कि यह दासी आपकी पत्नी है."

"यह सब चन्तुकी सलाह होगी. पहले तो ऐसा कभी होता नहीं था ! दुःख न करो. सबका परिहार हो जायगा."

ये बातें हो ही रही थीं कि बाहरसे खबर आई, तलय्कल चन्तु तथा दो-तीन कुरिच्य-प्रमुख आये हैं. तम्पुरान बाहर चले गये.

तम्पुरान—क्यों चन्तु, वह पकड़में आया ?

चन्तु—जी नहीं, देखनेको भी नहीं मिला. साथ आई हुई एक बड़ी टुकड़ीको रातमें ही खत्म कर दिया था. बाकीको लेकर प्रभात होनेसे पहले ही वह भाग गया.

तम्पुरान—अब उस मार्गको ही बन्द कर देना चाहिए.

चन्तु—जी हाँ, उसका प्रबंध कर लिया है. जंगलके बीचमें एक अधिक दुर्गम मार्ग सेवकने देख लिया है. वह कुछ अधिक घुमावका अवश्य है. यदि आज्ञा हो तो उसीको ठीक कर लिया जाय. अभी सुरंग-का द्वार पत्थरोंसे बन्द कर दिया है.

तम्पुरान—शाबास ! ठीक किया. अब बताओ, रातको ही उन सबको कैसे पा लिया ? सब विस्तारसे कहो.

चन्तु मितभाषी था. स्वपराक्रमका वर्णन करनेसे परे भी रहता था. थोड़ा-थोड़ा जो उसने कहा उसका सारांश यह है—

केट्टिलम्मासे आज्ञा पाकर तलय्कल चन्तु कुरिच्योंको एकत्र करके सुरंगके मुखपर चला गया और वहाँ उसने कुरिच्योंको फैलाकर खड़ा कर दिया. शत्रुकी गतिविधिका पता लगानेके लिए मार्गमें भी कुरिच्यों-को नियुक्त कर दिया था. शामके समय पप्यंवीट्टिल कम्पनीकी सेनाके साथ तलहटीके उस पार आया. उसका इरादा प्रातःकाल सुरंगमें प्रवेश करनेका था. कुरिच्योंकी समर-विधि जाननेवाले उस समर-चतुरने चारों

ओर जंगलको दिखवा लिया. वहाँ कहीं कुरिच्य नहीं हैं यह निश्चय कर लेनेके बाद ही उसने छावनी डालनेका आदेश दिया. इससे भी संतुष्ट न होकर उसने आदेश दिया कि आधे लोग रातको सोएँ और आधे जागकर पहरा दें. स्वयं भी वह जागकर पहरा देता रहा.

अंधकार ऐसा था कि अपना ही हाथ दिखलाई नहीं पड़ता था. फिर भी अग्नि-शिखाएँ देखकर दूरसे ही कुरिच्योंका ध्यान आकर्षित हो जायगा, इस भयसे उसने आग जलानेकी अनुमति नहीं दी. उसने सोच रखा था कि कुरिच्योंके नेता महाराजाके साथ मणत्तना गये हैं और महाराजा तथा तलय्कल चन्तुकी अनुपस्थितिमें कुरिच्य कुछ नहीं करेंगे.

अपने गुप्तचरोंसे उसकी योजनाका पता पाकर कुरिच्योंके नेताने रातको ही बाहर निकल पड़नेका निश्चय किया. दिनमें भी उस मार्ग-पर चलना दुष्कर था, फिर रातको तो कुरिच्योंके सिवा हिम्मत ही कौन करता ? यही उस मार्गकी सुरक्षाका मुख्य बल था. नेता ही अनु-चरोंको मार्ग दिखाता हुआ आगे चला. वे एक-दूसरेका सहारा लेकर, एक पत्थरसे दूसरे पत्थरपर पैर जमा-जमाकर समतल भूमिपर पहुँच गये. उसके बाद वैसा ही एक चढाव भी पार करना पड़ा. थोड़ा विश्राम करके चन्तुके नेतृत्वमें ही उन्होंने उसे भी पार कर लिया और पप्-यंवीट्टिलके पीछे पहुँच गये. तब रातका अन्तिम पहर हो रहा था. निवेशमें जागनेवाले अर्धनिद्रामें और सोनेवाले गाढ़ निद्रामें होंगे यह अनुमान करके उसी समय आक्रमण कर देनेका निश्चय किया गया.

इसके बादकी गड़बड़ीकी बात क्या कहें ? पप्यंवीट्टिल चन्तु और उसके थोड़े-से अनुयायी किसी प्रकार प्राण लेकर भाग गये. सेनानिवेशमें जो-कुछ मिला वह सब लेकर कुरिच्यर तम्पुरानकी सेवामें उपस्थित हो गये हैं.

तम्पुरानने सब सुनकर कहा—भगवतीकी कृपा ! एक बड़ी विपत्ति-से बच गये ! अब आगेका कार्य सोचना है. एडच्चेन कुंकनको बुलाओ.

कुंकन नायर नई सेनाको युद्धाभ्यास करा रहे थे. वे शीघ्र महाराजा-

के सामने उपस्थित हो गये. तम्पुरानने कहा—सब बातें सुन लीं कुंकन? आगे क्या करना चाहिए ?

कुंकन—जी ! अब बहुत सोच-विचार करके कदम रखना है. यह स्थान अब सुरक्षित नहीं रहा.

तम्पुरान—वही मैं भी सोच रहा हूँ. वेलेस्लीकी योजनाका पता मुझे चल गया है. वह हमारे साथ सीधा युद्ध नहीं करेगा. उसने हमें घेरकर, हमारे साथियोंको दूर करके, भोजन-सामग्रीका रास्ता रोककर जानवरों-के समान मारनेका निश्चय किया है.

कुंकन—यह संभव होगा ?

तम्पुरान—उनका शासन देशमें सुस्थिर हो जाय तो क्या कठिन है ? देश-भरमें छोटे-छोटे दुर्ग बनानेका उद्देश्य वेलेस्लीका है. दुर्गके पासके लोग हमें मदद करनेमें डरेंगे. इरुवनाट्टुके नम्पियारोंका उदाहरण नहीं देखा ?

कुंकन—सुना है, चुपलि नम्पियारके गिरफ्तार कर लिये जानेसे वे डरे हुए हैं.

तलय्कल चन्तु—कंपनीकी शक्ति देशके अन्दर ही हो सकती है. हम यहाँसे तो आक्रमण कर सकते हैं ?

तम्पुरान—हाँ, परन्तु हमारी भोजन-सामग्रीका आना रुक जाय तो हम यहाँ कितने दिन बने रह सकते हैं ? इसलिए अब बहुत सोच-विचार करके ही सब काम करना चाहिए. खैर, उस बातको अभी छोड़ो, मणत्तनासे चन्तुके साथ जो चार मैसूरी सिपाही भेजे थे वे कहाँ हैं ?

कुंकन—वे मेरे साथ हैं. अति समर्थ हैं. युद्ध-कार्योंका परिचय भी रखते हैं. उनमें चोक्करायर नामका व्यक्ति बहुत विशिष्ट है. कहते हैं कि वह मैसूरके राजाका सम्बन्धी है. दूसरे लोग उसके साथ बहुत सम्मान-का व्यवहार करते हैं.

तम्पुरान—उसका हम भी विशेष सम्मान करेंगे. उसकी सेवा-शुश्रूषा-

के लिए दो-चार अनुचर अलगसे देना. स्नान, आहार आदिके बाद मैं भी उससे मिलूँगा.

कुंकन—वह कुटक* भाषा भी जानता है. कल हम लोग बहुत देरतक बातचीत करते रहे थे. केरलके बारेमें भी कुछ-कुछ जानता है. आपके प्रति भक्ति और आदरसे बात कर रहा था.

तम्पुरान—मध्याह्नके बाद उसको मेरे पास ले आना.

सबको विदा करके तम्पुरान अरळात्तु नम्पिके साथ बहुत देरतक गुप्त बातें करते रहे. बादमें स्नानादिके लिए चले गये. पूजा आदिके उपरान्त जब लौटे तो दोनों पत्नियाँ दालानमें चटाई बिछाकर बैठी हुई थीं. उन्हें देखकर दोनों उठ खड़ी हुई.

बड़ी केट्टिटलम्माने कहा—माक्कम् दो दिनके बाद ही तो जायगी?

तम्पुरान—नहीं, आज ही जाना चाहिए. देरी करना उचित नहीं होगा.

"यह अच्छा न्याय है ? जब आँखोंसे दूर रहती है तब मल्लिका, जाति आदिसे संदेश भेजते हैं. एक बार देख लेनेकी इच्छासे आ गई तो तुरन्त लौट जानेका आदेश दे दिया !"

"यह क्या कह रही हो ?"

माक्कम्—जीजी, क्यों तंग करती हो ? मैं अभी ही चली जाऊँगी.

बड़ी केट्टिटलम्मा—हाँ, हाँ ! मैंने देख लिया ! ताल-पत्रमें श्लोक लिखकर रखे हैं ! बहन, एक बार सुना तो दो, व्यस्ततामें भूल गये होंगे !

तम्पुरान हँसकर कहने लगे—अब समझमें आया. लिखनेके बाद श्लोक कहीं दिखलाई ही नहीं पड़ा. बहुत खोजा, पर मिला ही नहीं.

बड़ी केट्टिटलम्मा—जिसके लिए लिखा उसके हाथमें पहुँच गया. अब क्यों खोज रहे हैं ? वह इतना कष्ट उठाकर यहाँ आई है, इतनी

* कन्नड

जल्दी वापस कर देना उचित नहीं है. फिर आपकी इच्छा !

तम्पुरान—माक्कम् यहाँ आकर मुझसे मिली है तो मैं भी कैतेरी जाकर उससे मिलूँगा. आजसे सातवें दिन में वहाँ पहुँच जाऊँगा.

माक्कम् प्रसन्न हो गई. कुञ्ञानि केट्टिलम्माके पास अब इस बारे-में कहनेको कुछ रहा ही नहीं. इसलिए यह कहकर वे बाहर चली गई कि साथके लोगों और पालकीवालोंको तैयार कराती हूँ. उनके जानेके बाद तम्पुराननें कहा—"माक्कम्, बुरा मत मानना. आज ही लौट जाना उचित है."

माक्कम्—इसका बुरा नहीं मानती, परन्तु आपने मुझे इतना गलत समझ लिया.

"मैंने तुमको गलत समझा ! यह क्या कहती हो ?"

"आपके इस प्रकार जंगलोंमें भटकते समय मैं देशमें पुष्प-हार आदि-से सज-धजकर, केट्टिलम्मा बनकर रहती हूँ, ऐसी शंका भी आपने की, इससे मेरा हृदय घायल हो गया है."

"गलती मेरी है. 'जाती ! जातानुकम्पाभव !' ठीक नहीं रहा. उसे फाड़ डालो. मैं दूसरा श्लोक लिखूँगा."

"नहीं, नहीं ! रहने दीजिए ! पत्र फाड़ डालनेसे श्लोक नष्ट हो जायगा ? आपका श्लोक तो सभी याद करके गाते रहेंगे."

इतने में बड़ी केट्टिलम्मा वापस आ गई. उन्होंने कहा—"मैं शुश्रूषा करती हुई साथ रहती हूँ, फिर भी दिल तो तुम्हारे ही पास रहता है. इसलिए तुमको दुःख नहीं होना चाहिए."

माक्कम्—यह सब तो जीजी, तुम्हारा दाक्षिण्य है.

शिविका-वाहक और अनुचर तैयार होकर आ गये. माक्कम् कम्मूके साथ रवाना हो गई.

माक्कम्को भेजनेके बाद तम्पुरान फिर से राज्य-कार्योंमें व्यस्त हो गये. वे कुंकनके साथ आये हुए चौक्करायरसे बहुत देरतक कन्नड़ भाषामें बातें करते रहे. टीपूकी मृत्युके बाद मैसूरके राजा बननेवाले कृष्णराय-

की बातें, मैसूरकी स्थिति, कन्नड़ साहित्य आदि विविध विषयोंपर उसके साथ बातचीत हुई. संभाषणसे तम्पुरानने जान लिया कि वह कुलीन, पण्डित और राज्य-कार्योंका असाधारण ज्ञान रखनेवाला है. तम्पुरानके बारेमें वह पहलेसे ही जानता था. केरलके राजा जब टीपूसे लड़ रहे थे तभी पषश्शि राजाका नाम मैसूरमें प्रसिद्ध हो चुका था. वेलेस्लीकी सेना जब टीपूका सामना कर रही थी तब उसकी मददके लिए कृष्णराय राजाने सेनाकी एक टुकड़ी सहायताके लिए भेजी थी. चौक्करायर उस सेनाका उपसेनापति था. उसकी दक्षता देखकर वेलेस्लीने उसे अपनी सेनाका नायक बनाया. परन्तु वेलेस्लीकी केरल-संबंधी युद्ध-नीति उसे बिलकुल पसंद नहीं थी. तम्पुरानके साथ बातचीत करनेपर उसका यह मत और भी दृढ़ हो गया.

उसने कहा—मराठोंके साथ कंपनीका युद्ध होनेवाला है. परन्तु उनके सामने कंपनीकी विजय सरल नहीं होगी.

तम्पुरानने कहा—मैंने भी सुना है कि उत्तरमें युद्ध होगा. मराठे बहुत प्रबल रहे हैं. अब उनकी स्थिति कैसी है ?

मराठा-साम्राज्यकी तात्कालिक अवस्था, वहाँके नेताओं के बीच आपसी वैर, इस सबका लाभ उठाकर उनको दबानेके लिए गवर्नर-जनरल-के प्रयत्नों आदिकी पूरी कहानी उसने महाराजाको सुनाई.

"तब तो कर्नल वेलेस्लीको यहाँसे वापस बुलाया जायगा?" महाराजा-ने प्रश्न किया.

"इसमें कोई संदेह नहीं. नहीं तो उनकी विजयका कोई उपाय ही नहीं है."

तम्पुरान चौक्करायरको विदा करके फिर विचारमग्न हो गये.

तेरहवाँ अध्याय

चोक्करायरके साथ बातचीत होनेके बाद तम्पुरानके व्यवहारमें कुछ अन्तर आ गया. युद्धके विषयमें कोई उत्साह नहीं रहा. तलच्कल चन्तु और उसके कुरिच्योंकी एक बड़ी टुकड़ी कहीं चली गई. एडच्चेन कुंकन नायर प्रतिदिन प्रभातमें तम्पुरानके दर्शनोंके लिए आ जाता था और बहुत देरतक बातें करता रहता था. परन्तु सैनिक अथवा युद्धकी तैयारी कहीं दिखलाई नहीं पड़ती थी. तम्पुरान कुंकनके साथ बातें करके स्नानादिके लिए चले जाते और शेष समय साहित्य-रचनामें व्यतीत करते थे. 'कृम्मीरवध'के दो-तीन पद लिखकर कुछ देर उन्हें केट्टिलम्मा-से गवाकर सुनते रहते, फिर शतरंज खेलनेमें मग्न हो जाते थे. अप-राह्नमें कुछ विश्राम करके फिर चोक्करायरके साथ कन्नड़ भाषामें बातें करने लगते थे. रातमें कथकलि हुआ करती थी. वह स्थान युद्धकी रंग-भूमिसे बदलकर मानो एक कला-केन्द्र बन गया था. इसके अन्दर रहस्य क्या है, किसीको मालूम नहीं था.

तम्पुरानने राज्य-कारबार बिलकुल भुला नहीं दिया इसका प्रत्यक्ष प्रमाण केवल इतना ही था कि वे प्रतिदिन प्रातःकाल कुंकन नायरके साथ गुप्त सम्भाषण करते थे और कण्णवत्तु नम्पियारके बारेमें उत्सुकता

व्यक्त कर दिया करते थे—"शंकरन् अबतक नहीं आया !" कण्णवत्तु नम्पियारको मंचेरी अत्तान कुरुक्कळसे मिलने गये दो सप्ताह हो चुके थे. उनके पाससे अबतक न कोई आदमी आया, न कोई पत्र ही. तम्पुरानके मनमें बार-बार शंका उठती थी कि कहीं वह किसी संकटमें तो नहीं पड़ गया ! परन्तु उन्होंने लेल्लूर एमन नायरके सिवा किसीके सामने यह शंका प्रकट नहीं की. एमन नायर एक प्रमुख सेनानायक और कण्णवत्तु नम्पियारके अभिन्न मित्र थे. उनकी भी चिन्ता बढ़ रही थी, क्योंकि किसी भी कामके लिए जानेपर नम्पियार समाचार देते रहनेमें चूकते नहीं थे.

तम्पुरानने गप-शप, शतरंज, और कथकलिमें मग्न रहनेवाले विलासी राजाके समान लगभग एक सप्ताह व्यतीत कर दिया. माक्कम्से मिलने जानेका जो वादा किया था उसको पूर्ण करनेका समय भी आ पहुँचा. परन्तु यह बात केवल बड़ी केट्टिलम्माको ज्ञात थी. प्रातःकाल जब शिविका मँगवाई गई तब लोगोंको मालूम हुआ कि वे कहीं जा रहे हैं. दोनों ओर केवल एक-एक अनुचरको ही लेकर वे रवाना हो गये. पहाड़से उतरकर कुंञाली मोय्तीनके निवास-स्थानपर पहुँचे. वहाँ पहलेसे ही उपस्थित प्रभुओंके साथ आवश्यक बातचीत करने लगे. उण्णिमूप्पन, कुंञिकोय आदि मुस्लिम नेता भी उनमें सम्मिलित थे. विचार-विमर्श सायंकालतक चलता रहा.

तम्पुरानके रवाना होनेके थोड़े ही समय बाद चोक्करायर भी सेना-निवेशसे बाहर निकले. उनके जानेकी बात एमन नायर और एडच्चेन कुंकनको ही विदित थी. पहाड़से उतरकर वे स्वदेशको नहीं वयनाट्टुको चले गये.

तम्पुरानके आनेका दिन उदित हुआ तो माक्कम् अत्यन्त प्रसन्न थी. उनसे बिदा लेकर वह उसी दिन संध्याको स्वगृह पहुँच गई थी. उण्णियम्माने अनेकानेक आक्षेपों और कटूक्तियोंसे बहनका स्वागत किया था. उसके सारे वाग्बाणोंका सार यह था कि "किसीके भी साथ इस प्रकार

चली जानेवाली स्त्रियोंको भ्रष्टा मानकर घरसे बाहर निकाल देना चाहिए." नौकर-चाकरों और दासियोंके सामने ही वह जोर-जोरसे बकने लगी—"जिसपर पहुँचे उसके ही कंधेपर हाथ डाल देनेवाली यह गणिका इस वंशमें कैसे पैदा हुई ! यह निर्लज्ज व्यवहार देखनेके पहले मैं मर जाती तो अच्छा होता." उसकी मदद करनेके लिए इक्कण्डन नायर भी पहुँच गया. उसने गम्भीर घोषणा कर दी—

"तुम लोगोंकी बातें तुम्हें ही मुबारक हों ! जो कहना न मानें उनसे कहनेसे कुछ मतलब ! कुछ भी हो, अब अगर तुम चाहती हो कि हम लोग यहाँ आते रहें तो पहले तुम्हें माक्कम्को घरसे बाहर निकाल-कर, श्राद्ध करके, पिण्ड-दान करना होगा. † नहीं तो यहाँ कोई पानी भी नहीं पियेगा."

उण्णियम्माने साथ दिया—"मामाजीने ठीक ही तो कहा. यह ज्येष्ठा कहाँ गई थी कौन जाने ? किसको खोजने गई थी ? कुछ भी हो, मैं अपनी रसोईमें तो फटकने नहीं दूँगी."

माक्कम्ने यह सब सुनी-अनसुनी कर दी. शिविकासे उतरते ही भग-वतीके मन्दिरमें जाकर उसने स्नान-आराधना आदि की और फिर वह अपने कमरेमें चली गई.

इक्कण्डन नायरको केवल आक्षेपोंसे संतोष नहीं हुआ. उसने उण्णि-यम्माको निश्चित उपदेश भी दिया कि माक्कम्को भ्रष्टा घोषित कर-के तत्काल घरसे निकाल देना चाहिए. उण्णियम्माको यह सत्परामर्श

---

† किसी स्त्रीके आचरणभ्रष्टा प्रमाणित होनेपर उसका परिवार उसे घरसे निकालकर "मरी हुई" मान लेता था. बादमें सब स्वजन-परिजनोंको आमन्त्रित करके उसका श्राद्ध आदि (मृत्यु के बाद की जानेवाली सब क्रियाएँ) किया जाता था. यदि कोई ऐसा न करे तो उसके पूरे परिवारको भ्रष्ट घोषित कर लिया जाता था. भ्रष्टोंके साथ चांडालों जैसा व्यवहार होता था.

स्वीकार था, किन्तु वह जानती थी कि अम्पुको यह सब मालूम हुआ तो घरसे निकाली जानेवाली माक्कम् नहीं होगी. वह अपना रोना रोती हुई बोली—"माक्कम् कुछ भी करे, दादा उसको रोकेंगे नहीं. और अब तो उसे तम्पुरानका भी बल है. मैं क्या कर सकती हूँ ?"

इक्कण्डन नायरने कहा—तम्पुरानका बल तो अब पूरा हो चुका. अम्पु भी फाँसीपर लटकेगा. इसलिए इस बारेमें चिंता करनेकी कोई बात नहीं.

"हाय ! दादाकी यह गति होगी ?"—उण्णियम्माके मुँहसे निकल पड़ा. इसी बीच, यह सोचकर कि मैं जरूरतसे ज्यादा बोल गया, इक्कण्डन वहाँसे चलता बना.

चार-पाँच दिन बीत जानेपर भी उण्णियम्माके क्रोध अथवा वाग्बाणोंकी तीक्ष्णता कम नहीं हुई. प्रतिदिन उसे उपदेश देनेके लिए इक्कण्डन भी हाजिर हुआ ही करता था. पप्पंवीट्टिलको बताकर कुछ करनेकी बात उन्होंने सोच रखी थी.

इतनी बातें सुननेपर भी माक्कम् न तो रुष्ट ही हुई और न उसने कोई अपना मनोभाव ही व्यक्त किया. इससे उन दोनोंके क्रोधमें बेहद वृद्धि हुई. यह जाननेके लिए कि माक्कम् कहाँ गई थी, उण्णियम्माने लाख प्रयत्न किये, परन्तु माक्कम्ने इससे अधिक कुछ नहीं कहा कि मुझे जरूरी कामसे जाना था.

तम्पुरानके आनेका वादा जिस दिनका था उस दिन अपराह्नमें एक अपरिचित मुसलमान कैतेरीमें आया और उसने केट्टिलम्मासे मिलना चाहा. माक्कम् निःशंक बाहर चली गई और संदेश सुनकर आ गई. वह दूत मोय्तीनके निवास-स्थानसे आया था और यह संदेश लाया था कि तम्पुरान रातको नौ-दस बजेतक कैतेरी पहुँचेंगे.

संध्या होनेपर केट्टिलम्मा बिलकुल बदल चुकी थी. उसने अपना कमरा, पलंगका परिधान-उपधान सभी सुसज्जित कर दिया और स्वयं स्नानादि करके, सुगंधित पुष्पोंकी माला तथा आभरण आदि पहनकर,

वासक-सज्जिका बनकर अपने प्रियतमकी बाट जोहने लगी.

काजल आँजे, तिलक लगाए, पुष्पादिसे सुसज्जित और अलंकृत माक्कम्को देखकर उण्णियम्माके हृदयमें द्वेषकी आग और भी भड़क उठी. उसने मान लिया कि उसकी बहन यह सब साज-सजावट किसी जारके लिए कर रही है. जबसे उसने बाहर खड़ी माक्कम्को दूतसे बातें करते देखा था तभीसे उसके हृदयमें तरह-तरहके विचार पैदा हो रहे थे. वह अनुमान करने लगी कि माक्कम् अभी-अभी अकेली घरसे निकलकर गई थी, अब यह इस कुटुम्बके लिए न जाने क्या-क्या कलंक मोल लेने-वाली है.

उसने उत्तरके घरमें* जाकर इक्कण्डन नायरकी पत्नीसे सब हाल कहा. नायर-पत्नीने उसे परामर्श दिया—"इस प्रकार किसी पुरुषके साथ उसे पकड़ा जा सके तो भ्रष्टा घोषित करके निकाल देनेमें कोई कठिनाई नहीं होगी, इसलिए पकड़नेका प्रयत्न करना चाहिए." उसी समय पप्पंवीट्टिल चन्तुको बुलानेके लिए भी आदमीको भेज दिया गया.

उण्णियम्मा वहाँसे लौटी तो बड़ी खुश दिखाई देती थी. उसने माक्कम्को भी न तो दुर्मुख दिखाया और न परुष वचन ही कहे. जल्दी खाना खाकर सिर-दर्दका बहाना करके सोने चली गई.

माक्कम् रातको खाना खाकर केरलवर्मा-कृत रामायण, जिसका वह प्रतिदिन पारायण करती थी, पढ़ने बैठ गई. आँखें ग्रन्थपर जमी हुई थीं. मुखसे मधुर वाक्य-सरिता प्रवाहित हो रही थी. परन्तु हृदय वहाँ कहीं नहीं था. अपने प्रियतमके आगमनकी प्रतीक्षामें वह शेष सब-कुछ भूली हुई थी. उनका कैसे स्वागत करूँ, क्या-क्या बातें करूँ, कैसे उनको प्रसन्न करूँ, आदि विचार-तरंगों और स्वप्नोंमें वह डूब-उतरा रही थी.

उण्णियम्माने भी कमरेमें जाकर दरवाजा बन्द कर लिया था. परन्तु सोनेका इरादा उसका था ही नहीं. माक्कम्के प्रति ईर्ष्या और द्वेषके

---

* देखो, पाद-टिप्पणी पृष्ठ ७६.

कारण उसे एक क्षणको भी शान्ति नहीं मिल रही थी. वह ध्यान लगाये पड़ी थी कि माक्कम्का द्वार खुलनेकी आवाज सुनाई पड़े.

बाहरके दालानमें विस्तर बिछाकर कम्मू सुख-निद्रामें लीन हो चुका था. थोड़ी रात बीतनेपर तम्पुरान एक सेवकके साथ कैतेरीके आँगनमें आ पहुँचे. माक्कम्का रामायण-पाठ बाहरसे ही उन्होंने सुन लिया था. पैरोंकी आहटसे ही उन्हें पहचानकर माक्कम्ने दरवाजा खोल दिया. चप्पल बाहर उतारकर तम्पुराननें कमरेमें प्रवेश किया.

बाहर लोगोंकी बातें और माक्कम्के दरवाजा खोलनेकी आवाज सुनकर उण्णियम्मा शीघ्रतासे उठ बैठी. दबे पैरों दरवाजा खोलकर नौकरको जगाया और इक्कण्डन नायरको संदेश भेजा कि जैसा अनुमान किया था वैसा ही हुआ है. जब नौकर दौत्य लेकर पहुँचा तब इक्कण्डन नायर थोड़ी ही देर पहले पहुँचे हुए चन्तु नायरके साथ शाक्तेय विधि† से सुरा-पान करके आनन्द-मग्न हो रहा था.

"तुम जाओ, हम आते हैं" कहकर उसने नौकरको विदा कर दिया और जो नई बोतल खोली थी उसको खाली करनेमें अपना ध्यान लगाया.

चन्तुको यह एक स्वर्ण अवसर प्रतीत हुआ. यदि माक्कम्को ऐसे अपराधमें सबके सामने पकड़ लिया और भ्रष्टा घोषित कर सका तो मेरा तीर जीवन-भरके वैरी अम्पुनायर और तम्पुरान दोनोंको एक साथ लगेगा, इसलिए देश-प्रमुखोंको भी साथ ले जानेका उसने निश्चय किया. अपने वंश-भरका अपमान सोचकर इक्कण्डन नायरने इसका विरोध किया. परन्तु कैतेरी-वंशको नीचा दिखानेके लिए उत्सुक इक्कण्डन नायरकी पत्नीने चन्तुका पूर्ण समर्थन किया. इसलिए वृद्धकी बात बहरे कानोंमें ही पड़ी. सात-आठ प्रमुख व्यक्तियोंको आदमी भेजकर बुलवाया गया और सब लोग मशाल आदिके साथ कैतेरी-भवनकी ओर रवाना हुए.

चन्तुसे किसीने पूछा—"सबको इकट्ठा करके क्यों जा रहे हो ?"

---

† (व्यंग्य) शक्ति-पूजाकी विधि-मद्य—पान.

"जरा ठहरो ! जो उत्सव देखने योग्य है, उसे सुनकर समाप्त क्यों कर देना चाहते हो ?"—चन्तुने उत्तर दिया.

मशालों और जन-समुदायको देखकर कम्मू उठ खड़ा हुआ. चन्तु और इक्कण्डन नायरको पहचानकर वह समझ गया कि उसकी स्वामिनी पर कोई संकट आनेवाला है. उसने तलवार हाथमें ले ली.

चन्तुने अपने साथके लोगोंको बाहर खड़ा करके उण्णियम्माके गृहमें प्रवेश किया और फिर बाहर आकर उसने सब लोगोंको बताया कि माक्कम् चरित्रहीना है, एक सप्ताह पूर्व वह किसीकी इजाजत लिये बिना घरसे कहीं चली गई थी. तम्पुरान जब पहाड़ोंपर हैं तब इस समय उसके पास कोई आदमी आया हुआ है. इस प्रकारका व्यवहार सारे देशके लिए अपमानजनक है. घरमें कोई पुरुप नहीं है और मैं स्वयं इस कुटुम्ब का सम्बन्धी हूँ, इसलिए इसकी मान-रक्षा करना मेरा कर्तव्य है. जब सब लोगोंने यह बात मान ली तब चन्तु दरवाजेपर पहुँचा और उसने माक्कम्से कपाट खोलनेके लिए कहा. जब वह बरामदेमें पहुँचा तो कम्मू तलवार लेकर आगे बढ़ा और उसने पूछा—"कहाँ जा रहे हो ?"

बरामदेमें लड़ना सम्भव न समझकर दोनों आँगनमें उतर आये. इसी बीच तम्पुरानके साथ आया हुआ नायर भी वहाँ पहुँच गया.

बाहर कोलाहल सुनकर तम्पुरान और माक्कम् जाग उठे. बात क्या है जाननेके लिए ध्यान देकर सुनने लगे. माक्कम्ने जब आवाजसे चन्तु और इक्कण्डन नायरको पहचाना तो उसने मान लिया कि ये दल बनाकर तम्पुरानको मारनेके लिए आये हैं. वह घबरा गई. सहायताके लिए कम्मू और एक अनुचरके सिवा कोई नहीं था. अब क्या होगा, सोचकर वह व्याकुल हो उठी. हाथमें आये तम्पुरानको जाने न देनेका वे शक्तिभर प्रयत्न करेंगे, इसमें शंका नहीं. घरमें आग लगा देनेमें भी संकोच नहीं करेंगे. वह हृदयसे प्रार्थना करने लगी—"श्री पोर्कली भगवती ! मेरे कारण आई इस विपत्तिमें रक्षा करो !"

महाराजाको कोई बेचैनी नहीं थी. उनको शंका नहीं थी कि ये लोग उन्हें पकड़नेके लिए आये हैं. किसी भी हालतमें, बंद रहना उन्होंने पसन्द नहीं किया. कुलदेवीका ध्यान करके हाथमें तलवार लिये वे बाहर निकल आये.

"क्या है रे, चन्तु ?" महाराजाने रूखे स्वरमें प्रश्न किया. उस सुपरिचित स्वरको सुनकर और उसकी आज्ञात्मक गुरुताको महसूस करके चन्तु सहसा "स्वामी" कहकर निश्चेष्ट खड़ा हो गया. उसकी तलवार हाथसे छूट गई और कम्मूने उसे दूर फेंक दिया.

"हाय ! ये तो तम्पुरान हैं !" कहकर उपस्थित प्रमुख हाथ जोड़कर विनयावनत होकर खड़े हो गये. इक्कण्डन नायर वहाँसे गायब हो गया. एक ओर देशवासियोंका भक्ति-भाव और दूसरी ओर शेरकी पूँछ पकड़े हुएके समान चन्तुका पसोपेश देखकर तम्पुरानने समझ लिया कि कोई कपट-जाल अवश्य है. चन्तुने चारों ओर देखकर कहीं भाग निकलनेका प्रयत्न किया. परन्तु किसी एक व्यक्तिने उसे यह कहकर पकड़ लिया कि इस धूर्तको मत छोड़ना, इसने हमें भी धोखा देनेका प्रयत्न किया है.

तम्पुरानने उपस्थित लोगोंसे पूछा—आप लोग मशाल आदि लेकर कैसे आये ?

एक प्रमुख व्यक्तिने नम्रताके साथ उत्तर दिया—"अन्नदाता ! इसने ही हमें धोखा दिया." इतना कहकर वह चुप हो गया.

तम्पुरानने आश्वासनमयी वाणी में कहा—"कहिए, निःसंकोच कहिए."

उसने कहा—"इसने हमें यह कहकर यहाँ बुलाया कि केट्टिलम्मा अन्नदाताको धोखा दे रही हैं ; इस प्रकार तम्पुरानके साथ विश्वासघात करना ठीक नहीं है. सत्य स्थिति जानकर स्वामीको बता देना आवश्यक है."

तम्पुरानने चन्तुकी ओर देखा. उसकी उस समयकी हालतका वर्णन कैसे किया जाय ? तम्पुरानको ही माक्कम्के कमरेसे निकलते देखकर

उसके आश्चर्यका ठिकाना नहीं था. उसने सोचा भी नहीं था कि वे इस प्रकार निर्भय और निश्शंक होकर सर्वत्र भ्रमण करते होंगे. माक्कम्को अपमानित करनेकी उसकी इच्छा तो निष्फल हो ही गई, अब उलटे तम्पुरानको ईश्वरके समान माननेवाले देशवासियोंके पंजेमें फँस गया ! प्राण-रक्षाका एक ही उपाय दिखलाई पड़ता था—तम्पुरानकी शरणमें जाना. क्षण-भरके लिए उसकी सारी उद्दण्डता और अहंकार समाप्त हो गया और वह काष्ठ-प्रतिमा-सा खड़ा रहा. परन्तु वह नीच होनेपर भी योद्धा था. अन्तमें जोरसे हँस पड़ा और बोला—"भागनेका मेरा कोई इरादा नहीं है. मृत्युका भय भी नहीं है. देखूँगा—कौन आज नहीं तो कल फाँसी पर चढ़ता है." ऐसा कहता हुआ वह सिर उठाकर खड़ा हो गया, मानो तम्पुरानसे ही मोर्चा लेना चाहता हो.

तम्पुराननें इन बातोंकी ओर ध्यान ही नहीं दिया. परन्तु तलवार गिर पड़नेपर भी और शत्रुओंसे घिरा होनेपर भी निस्संकोच और निर्भय खड़े उस राज-द्रोहीका औद्धत्य कम्मूसे सहन नहीं हुआ. उसने आगे बढ़-कर चन्तुका हाथ पकड़ लिया. किन्तु वह अभ्यासियोंमें श्रेष्ठ था, उसने एक ही हाथसे कम्मूको हटा दिया. वह दूर जाकर गिरा. परन्तु तम्पुरान-के सामनें ही उसने यह जो औद्धत्य दिखाया उससे तम्पुरानके क्रोधकी सीमा नहीं रही. यह उसने ताड़ लिया. आग बरसानेवाली उन आँखोंसे उसके हृदयमें भी भयका संचार हो गया.

तम्पुराननें कहा—नीच-रक्तसे मैं अपनी तलवार अशुद्ध नहीं करूँगा. स्वयं पालकर बढ़ाये हुए वृक्षको उसी हाथसे नहीं काटा जाता. लेकिन आगे यहाँ आनेकी जरूरत नहीं है. चले जाओ.

उण्णियम्मा खड़ी यह सब देख रही थी. वह बाहर निकल आई और बोली—"तो, मुझे भी यहाँ नहीं रहना है. माक्कम् और उसके लोग ही आरामसे रहें. भीख माँगनी पड़े तो भी अब यह घर मेरे कामका नहीं है."

इसका उत्तर भी तम्पुराननें ही दिया—"ऐसा है तो ऐसा ही सही.

इस घरकी और इसके निवासियोंकी रक्षा मैं यहाँके निवासियोंको सौंपता हूँ."

एकत्र जन-समुदायने प्रतिज्ञा की–"हम महाराजाकी आज्ञाका प्राण-पणसे पालन करेंगे !"

अब यहाँ खड़े रहनेसे कोई लाभ नहीं, यह सोचकर चन्तु और उण्णियम्मा इक्कण्डनके घर चले गये. जनताके चले जाने पर तम्पुरान भी माक्कम्से विदा लेकर रातको ही रवाना हो गये.

चौदहवाँ अध्याय

चन्द्रोत्तु नम्पियारके साथ तलश्शेरीसे आनेके बाद मानो उण्णिनंङा-को एक नया जीवन मिल गया. अम्पुनायरके लिए वह कोई भी कष्ट सहनेको तैयार थी. फिर भी म्लेच्छोंके हाथ पड़ जानेके कारण उसका भाग्य क्या होगा, यह सोचकर वह घबरा जाती थी. नम्पियार उसे वापस ले आए तो वह पहलेके कष्टको एक दुःस्वप्नके समान भूल गई.

नम्पियारने उससे वात्सल्यके साथ बहुत-कुछ पूछा. वे उसके बारेमें केवल इतना ही जानते थे कि मेरे एक कर्मचारीके घरमें कोई ऐसी बालिका रहती है, और अम्पु नायर उसे किसी मार्गमें अनाथ पाकर अपने साथ ले आये हैं. जब प्रश्न करनेपर कुछ समझमें आया तब उन्होंने उससे कहा—"तुमको म्लेच्छोंके हाथोंसे मैंने नहीं बचाया; चिरुतकुट्टीने अम्पु नायरके लिए ही सुपरवाइजरको बाध्य करके सब-कुछ करवाया है. अपनी आपसी मित्रताके कारण मैंने यह जिम्मेदारी ली, बस इतना ही काम मेरा है.

उण्णिनंङा चुप रही. नम्पियारने भी आगे कुछ नहीं कहा. चन्द्रोत्तु-भवनके द्वारपर पहुँचनेपर उन्होंने इतना और कहा—"सब समाचार देने-

के लिए मैं अम्पुके पास आदमी भेज रहा हूँ. तुम्हें इस घरमें आने-जाने-का सदा स्वातन्त्र्य है. इसे भी अपना ही घर समझना."

उन्होंने अपने घरमें भी सबको बता दिया कि वह बालिका मेरी रक्षामें है और उसे घरकी-जैसी मान लेना चाहिए.

उस दिनसे उण्णिनंङाको कोई कष्ट नहीं रहा. उसकी मामी भी उसके साथ सम्मानका व्यवहार करने लगी. मालिक ही जिसका आदर करते हों उसे वे लोग आदरणीय माननेको तैयार हो गये तो इसमें आश्चर्य क्या ?

मामाजीका वात्सल्य भी बढ़ गया. मालिककी बहनने स्वयं आदमी भेजकर उसे बुलाया और उपहारादि देकर उसके प्रति स्नेह प्रकट किया. यह देखकर ही सबने समझ लिया कि यह लड़की भविष्यमें कोई बड़ा स्थान प्राप्त करनेवाली है.

अम्पु नायर मेजर होम्ससे युद्धके बाद, वादेके अनुसार, पहाड़पर न जाकर गुप्त वेश धारण करके इधर-उधर घूमते रहे. इसी बीच उन्हें एक भयानक समाचार मिला. लोग कहते थे कि तम्पुरानके मुख्य सचिव कण्णवत्तु शंकरन नम्पियार कंपनीवालोंके हाथों पकड़े गये हैं. वे अत्तन कुरुक्कळसे मिलकर वापसीमें कालीकटके पास एक स्थानपर विश्राम कर रहे थे. गुप्तचरोंसे खबर पाकर सैनिकोंने उन्हें घेर लिया और गिरफ्तार कर लिया. इस समाचारकी यथार्थताका पता लगाना आवश्यक था, इसलिए अम्पु नायर वेश बदलकर कालीकट चले गये थे.

कण्णवत्तु नम्पियारके पकड़े जानेके समाचारसे वेलेस्लीको बहुत सन्तोष हुआ. उसको तम्पुरानके एक प्रमुख सहायकके पकड़े जानेकी प्रसन्नता उतनी नहीं थी जितनी कि इस बात की कि इससे मुझे अपनी निश्चित योजना काममें लानेका एक अवसर मिल गया है. उसने निश्चित कर रखा था कि तम्पुरानका कोई भी आदमी पकड़ा जाय तो उसे फाँसीपर चढ़ाकर उसकी सम्पत्तिपर अधिकार कर लिया जाय. उसका खयाल था कि इस एक संभावनासे ही स्वाभिमानी और भूमिको प्राणोंसे

अधिक माननेवाले नायर डर जायँगे. उसने पप्यंवीट्टिल चन्तु और अपने दुभापियेसे इस विषयमें परामर्श किया.

दुभापियेने कहा—प्रभुजनोंको फाँसीपर चढ़ाना इस देशकी प्रथाओं-के विरुद्ध है. मुझे भय है कि सारे नायर एक साथ मिलकर युद्धके लिए तैयार न हो जायँ.

वेलेस्ली—मेरे खयालसे वे दब जायँगे. इतने प्रमुख व्यक्तिको हम ऊहापोह किये बिना फाँसीपर चढ़ा देंगे तो लोग अवश्य ही डर जायँगे. फाँसी होनेके बाद ही दूसरोंको पता चलने दें. इस नायरकी क्या राय है, पूछो.

चन्तु—चुषली नम्पियारको बन्दी कर लेनेसे ही लोग डर गये हैं. अब कण्णवत्तु नम्पियारको फाँसी देकर उसकी सम्पत्ति कंपनीके सहायकोंमें बाँट दी जाय तो तम्पुरानका सहायक कोई नहीं रह जायगा.

कण्णवत्तु नम्पियारके साथ चन्तुको दीर्घकालसे स्पर्धा थी. कारण यह था कि महाप्रभु नम्पियार चन्तुका विशेप सम्मान नहीं करते थे. अब कण्णवत्तु कुटुम्बकी सारी सम्पत्ति और स्थान भी मिल जानेकी संभावना देखकर वह कपटी खुश हो उठा.

वेलेस्लीने चन्तुका भाव समझ लिया. उसने दुभाषियेके द्वारा कहलाया—"कण्णवत्तुकी सम्पत्ति कंपनीके सहायकोंमें बाँट देनेकी बात-पर फिर विचार होता रहेगा. अभी आवश्यक यह है कि एक छोटी-सी सैनिकोंकी टुकड़ी जाकर कण्णवत्तु-भवनकी सम्पत्तिपर अधिकार कर ले. सैनिक टुकड़ी आज ही रवाना हो जाये."

इस प्रकार आवश्यक आज्ञा देकर वेलेस्ली अपने बरामदेमें घूमता हुआ विचारमग्न हो गया. कलकत्ता से गवर्नर-जनरलका एक दफ्तरी पत्र और भाईके नाते एक निजी पत्र आज ही उसे मिला था. गवर्नर-जनरल-का पत्र उसकी युद्ध-नीतिकी प्रशंसा और अबतक किये गये कामके समर्थनसे परिपूर्ण था. परन्तु उसके निजी पत्रका स्वर कुछ भिन्न था. उसमें स्पष्ट कहा गया था कि इन चार महीनोंमें इतने छोटे शत्रु को भी न

जीत सकनेसे कलकत्ता, बम्बई और मद्रासके शत्रु तीव्र आलोचना कर रहे हैं. लन्दनसे आनेवाले पत्रोंके शब्द भी कठोर हो रहे हैं. इसलिए हम दोनोंकी मान-रक्षाके लिए एक विजय तत्काल ही प्राप्त होनी आवश्यक है. मराठा-साम्राज्यके साथ जो स्पर्धा चल रही है वह शीघ्र ही घोर युद्धमें परिणत हो सकती है. ऐसा हो तो उसका नेतृत्व कर्नल वेलेस्लीको देनेकी सिफारिश लंदनको की गई है. इसके विरुद्ध प्रयत्न करनेवाले लोग वहाँ पर्याप्त संख्यामें हैं. इसलिए पथ्रिश राजापर विजयका समाचार शीघ्र ही मिलना आवश्यक है, आदि.

गवर्नर-जनरल मार्क्विस वेलेस्लीने समझ रखा था कि ब्रिटिश साम्राज्यका भविष्य उसके ही परिवारपर निर्भर है. यह ऐतिहासिक सत्य है कि वह किसी भी प्रकार अपने भाई-बंधुओंको ऊँचे पदोंपर नियुक्त करनेमें संकोच नहीं करता था. उसने पहले ही निश्चय कर रखा था कि यदि मराठोंके साथ युद्ध होनेवाला हो तो मेरे भाईको ही नेतृत्व मिलना चाहिए. सिंधिया और होलकरके रुखसे उसने जान लिया था कि युद्ध अनिवार्य है और यदि ऐसा युद्ध शुरू हो गया तो भारत-साम्राज्यका भविष्य ही उसपर निर्भर करेगा. अबतक मराठोंके साथ किसी युद्धमें कंपनी जीत नहीं सकी थी. इस बार विजय प्राप्त करनेके लिए उसने आवश्यक उपाय कर रखे थे. पेशवाको होलकर और सिंधियासे अलग करके अपने पक्षमें कर लिया था. गायकवाड़को भी रिश्वत देकर और लोभ दिखाकर अपने पक्षमें किया जा चुका था. अब केवल सिंधिया और होलकर ही युद्धके लिए तैयार रह गये थे. गवर्नर-जनरल उनको भी आपसमें लड़ा देनेका गुप्त षड्यन्त्र रच रहा था.

अकेले सिंधियाके साथ ही युद्ध करना पड़े तो कम्पनीकी सेना ही जीतेगी इसका उसे निश्चय था. उस विजयका हेतुभूत अपने और अपने भाईको बताया जा सके तो भारतमें ब्रिटिश साम्राज्यके संस्थापक ही वे दोनों भाई माने जायँगे. उस स्वार्थ-मूर्तिकी विचार-धारा यही थी.

कर्नल वेलेस्लीकी इच्छा भी यही थी. परन्तु थोड़े ही दिनोंमें पथ्रिश

राजापर विजयकी रिपोर्ट देनेके बारेमें अग्रजकी आज्ञाका पालन संभव नहीं दिखलाई पड़ता था. इस समय लाज रखनेको कण्णवत्तु नम्पियार-की गिरफ्तारीका समाचार उसे मिल गया था. विद्रोही नेताओंमें एकके केन्द्र-स्थान कण्णवत्तु गाँवमें ही नम्पियारको फाँसी दी जाय तो इस बात-का एक अकाट्य प्रमाण मिल जायगा कि पष्शि राजाकी शक्ति लग-भग नष्ट कर दी गई है. इतना ही नहीं, तम्पुरानका एक हाथ तो टूट ही जायगा और देशवासियोंके हृदयमें भी अधिक भयका संचार होगा.

वेलेस्लीने ये सब योजनाएँ तलश्शेरीके अन्य लोगोंको मालूम नहीं होने दीं. दो दिन बाद जब नम्पियारको गिरफ्तार करके दिखावेके साथ तलश्शेरी लाया गया तभी बेबरतकको इसका पता चला. नम्पियारको सम्मानके साथ किन्तु कड़े पहरेमें एक रात मूसा मरय्कार नामक मुसल-मान नेताके घरमें ठहराया गया. दूसरे दिन शत्रु-सेनाके एक सेनापतिके योग्य आदर-सत्कारके साथ वेलेस्लीने उनका स्वागत किया. कर्नल अपनी पूरी वेश-भूषा और सजधजके साथ सब काम कर रहा था. दुभाषियेसे यह जानकर कि नम्पियारको भी अपने पदके अनुरूप वेश-भूषामें ही उससे मिलना चाहिए, वे भी पूरी शान-शौकतके साथ वहाँ पहुँचे.

अभ्यंग स्नान करके अंगराग और गुलाब-जल आदि लगाकर मृदु पटाम्बरका कंचुक पहने, दोनों हाथोंमें सुवर्ण-वीर-शृंखला ‡ पहने कमर-में तलवार बाँधे, पूर्ण प्रभुजनोचित आडम्बरके साथ आये हुए उस सम्मान्य अतिथिको अंगरक्षकोंमेंसे एकने आदरके साथ स्वीकार करके उचित स्थानपर बैठाया. बादमें कर्नल वेलेस्लीने भी अंगरक्षकोंके साथ

‡ किसीकी वीरतासे प्रसन्न होकर राजा उसे एक या दोनों हाथोंके लिए स्वर्ण-कंकण प्रदान करता था, जिसे अत्यन्त सम्मान-सूचक समझा जाता था. राजासे प्राप्त किये बिना ऐसी शृंखला पहननेका अधिकार किसीको नहीं होता था. जंजीरके समान बना होनेके कारण इसे शृंखला कहा जाता था.

उस स्थानमें प्रवेश किया. दोनों सेनापति उचित उपचार और अभिवादनके पश्चात् एक-दूसरेके सम्मुख आसनस्थ हुए.

कर्नलने संभाषण प्रारम्भ किया—"केरलवर्मा सकुशल तो हैं ?"

"जहाँतक मैं जानता हूँ, सकुशल हैं."

"मैं जानता हूँ कि वे बुद्धिमान, समर्थ और वीर हैं. परन्तु वे कंपनीके साथ विरोध क्यों कर रहे हैं ? ऐसा तो नहीं कि कम्पनीकी शक्तिको वे जानते नहीं ?"

"कम्पनीकी शक्तिसे वे भली-भाँति परिचित हैं. वे यह भी जानते हैं कि कम्पनीने बड़े-बड़े महाराजाओं और नवाबोंको जीतकर तीन-चौथाई भारतवर्षपर अधिकार कर लिया है. टीपूको जीतनेवाले आपकी चतुराईसे भी वे अपरिचित नहीं हैं."

"तो फिर, अविवेकीके समान एक असाध्य कार्यके लिए वे क्यों प्रयत्न कर रहे हैं ? उससे जनताको वृथा कष्ट ही तो होगा ?"

"हो सकता है. परन्तु देशका नाश उनकी गलतीसे नहीं हो रहा है."

"तो किसकी गलतीसे हो रहा है ? कम्पनीने टीपूको जीतकर यह राज्य स्वाधीन किया है. इसका सर्वाधिकार कम्पनीका है. यदि महाराजाके जैसे लोग उसकी सहायता करें तो देशका कितना हित हो सकता है."

"कम्पनीके साथ मिलकर रहना हमारे अन्नदाताको मंजूर है. परन्तु स्वतन्त्रता, स्वाभिमान, और स्वदेश आदि मूल्यवान वस्तुएँ खोकर जीनेकी इच्छा उन्हें नहीं है. न होगी ही."

कर्नलने अपना स्वर बदलकर कहा—"मालूम है इस सबका क्या परिणाम होगा ? आज नहीं तो कल, मैं केरलवर्माकी शक्ति निःशेष कर दूँगा. विरोधियोंके प्रति तनिक भी दया दिखानेका इरादा अब मेरा नहीं है. जो पकड़में आयँगे उनको फाँसीपर ही चढ़ाया जायगा. उनकी धन-सम्पत्ति जब्त कर ली जायगी. बाल-बच्चोंको रास्तोंपर निकलवा दूँगा. जंगलमें रहनेवालोंको खानेतकको न मिलेगा. सोच लीजिए."

"सोचनेको कुछ है ही नहीं. यह सब हमारे अन्नदाता जानते हैं. इतना, और इससे भी कुछ अधिक सहन करनेको तम्पुरान और उनके साथी तैयार हैं. वे सब-कुछ स्वीकार कर सकते हैं, परन्तु जीते जी केरलकी स्वतन्त्रता खोनेको तैयार नहीं हैं. इसलिए आपने जिनको पाया है उनको फाँसीपर चढ़ा दीजिए, उनकी सम्पत्ति जब्त कर लीजिए ! परन्तु हमारी आगेकी पीढ़ियाँ तो कम-से-कम मनुष्य ही बनी रहें— इसके लिए हम सब-कुछ सहनेको तैयार हैं."

यह वीरतापूर्ण भाषण सुनकर कर्नलने अपने शत्रुका हृदयसे सम्मान किया. उसने सोचा था कि यदि एक संधि ही इस प्रकारकी हो जाय कि महाराजाने हार मान ली तो वही हमारे लिए उत्तम वस्तु होगी. एक-दो मासमें खुदको केरलसे जाना होगा. उसके पूर्व महाराजाको जीतने या दबानेका कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा है. नम्पियारकेद्वारा कोई संधि हो सके तो विजय-भेरी बजाकर जा सकता हूँ. यदि यह सब असम्भव हो तभी नम्पियारको फाँसी देकर ऐसी रिपोर्ट देनेका विचार किया था कि विद्रोहियोंकी रीढ़ तोड़ दी गई है.

इतने वीर और शक्तिशाली व्यक्तिको फाँसी देनेमें कर्नलको भी संकोच हो रहा था. फिर भी अपने उत्कर्षके लिए यदि वह ऐसी भी कोई विजय न दिखला सके तो कठिन होगा. केवल इस विचारसे ही वह इस भीषण कार्यके लिए तैयार हो रहा था.

उपचारपूर्वक दोनों विदा हो गये. कण्णवत्तु नम्पियार जानते थे कि उन्हें कर्नलने अन्तिम उपचार दिखाकर ही भेजा है. परन्तु उनके मुखसे कोई विकार प्रकट नहीं हुआ. उन्होंने इतना पता लगाने तकका भी प्रयत्न नहीं किया कि वेलेस्ली क्या करनेवाला है. उन्होंने अनुमान किया था कि मेरे तलश्शेरी लाये जानेका समाचार महाराजा उसी शामको या दूसरे प्रभातको जान लेंगे. यह भी वे जानते थे कि पता चलनेपर वे कुछ भी करके उन्हें बचाये बिना नहीं रह सकते. यह शंका भी उन्हें नहीं थी कि वेलेस्ली इतनी जल्दी कुछ करेगा. चार-पाँच दिन कारा-

वासमें रहनेके बाद विचार करनेका ढोंग भी अवश्य करेगा और उसके बाद ही कोई कार्रवाई की जायगी. तलश्शेरीके शेष सब लोगोंका भी यही विश्वास था.

नम्पियारके लिए एक पूरा मकान खाली करके सब प्रकारकी सुख-सुविधाका प्रबंध कर दिया गया था. जब उनके मान और प्रतिष्ठाके अनुसार ही सब-कुछ किया गया और स्वयं वेलेस्लीने इतने उपचारके साथ उन्हें स्वीकार किया तो देशवासी और सिविल कर्मचारी भी कुछ निश्चिन्त-से हो गये थे. शामको तरह-तरहके फल आदि लेकर नम्पियारसे मिलने लोग आये तो उन्हें यह मालूम हो गया कि चिरुतक्कुट्टी भी सजग हो गई है. परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम पड़ा कि उन लोगोंको बाहर निकलते ही सैनिकोंने वन्दी बना लिया था.

अपने उद्देश्यका पता किसीको न चले इस विचारसे ही वेलेस्लीने यह सब कराया था. नम्पियार रात्रिका भोजन करके पान खाने बैठे ही थे कि कर्नलकी आज्ञासे दुभाषिया वहाँ पहुँचा. उसने कहा—"मालिक चिन्ता न करें. हम कण्णवत्तु ही जा रहे हैं. पर्याप्त संख्यामें अनुचर भी साथ हैं." ये शब्द कुछ शुभ-सूचक नहीं मालूम हुए. किन्तु वह वीर योद्धा एक शब्द भी कहे बिना दुभाषियेके साथ चला गया.

× × ×

दूसरे दिन सूर्योदय होनेपर कण्णवत्तुके निवासियोंका प्रभात-दर्शन एक पैशाचिक दृश्य था. कण्णवत्तु-भवनके सामनेके आँगनमें तीन फाँसियाँ लगी थीं—बीचमें बड़े नम्पियार और उनके इधर-उधर उनके दो भानजे टँगे हुए थे ! और आस-पास सर्वत्र सशस्त्र सैनिक पूर्ण जागरूकताके साथ पहरा दे रहे थे.

पन्द्रहवाँ अध्याय

कण्णवत्तु नम्पियारकी गिरफ्तारीका समाचार लेकर जब एक आदमी तम्पुरानके निवास-स्थानपर पहुँचा तब तम्पुरान कैतेरीके लिए रवाना हो चुके थे. उसे निश्चित आदेश था कि समाचार और किसीको न दिया जाय इसलिए वह उलझनमें पड़ गया. दूसरे दिन मध्यान्ह् में तम्पुरान वापस आये. परन्तु केट्टिलम्माने उन्हें बताया कि तलश्शेरीसे आवश्यक समाचार लेकर एक आदमी आया है. उसे बुलाकर बात करनेपर तम्पुरान एकदम स्तब्ध हो गये. कठिन विपत्तियोंमें भी धीर दिखाई देनेवाले प्रियतमको विषाद-मग्न देखकर केट्टिलम्माने भी समझ लिया कि विपत्ति कुछ साधारण नहीं है. उसके बार-बार पूछनेपर भी कि क्या हुआ, क्या विपत्ति आ गई, तम्पुरान 'किंकर्त्तव्यविमूढ़'-जैसे मूक ही रहे. कुछ देर बाद एक दीर्घ निश्वास छोड़कर, मानो कुछ निश्चय कर रहे हों, कुंकन नायर और तलक्कल चन्तुको बुलवाया. अपने दाहिने हाथ कण्णवत्तु नम्पियारको किसी भी प्रकार बचानेके लिए मानो वे बद्ध-कंकण हो गये. सोचनेकी बात इतनी ही थी किस प्रकार और क्या किया जाय. कुंकन नायरकी सलाह थी कि तलश्शेरी शहरपर सीधा आक्रमण किया जाय. चन्तुने कहा कि कुरिच्योंको भेजकर उनको निकाल लायेंगे.

तम्पुरान—इस सबसे काम नहीं चलेगा. तलश्शेरी दुर्गपर अधिकार करनेमें टीपू भी समर्थ नहीं हुआ. यह सोचना भी व्यर्थ है. इस अवसरपर बुद्धिसे काम लेना चाहिए, बलसे नहीं. अत्तान कुरुक्कळ अथवा उण्णिमूप्पनसे ही यह काम बनेगा.

कुंकन—ऐसा न कहें, तम्पुरान ! हमसे जो नहीं बन सकता वह उनसे कैसे बनेगा ?

तम्पुरान—सुनो, हम तो कंपनीवालोंसे लड़नेवाले शत्रु हैं. मुसलमान लोग, विशेषकर ये व्यापारी, उनके नजदीक हैं. उण्णिमूप्पन स्वयं किलेके अन्दर न जा सके तो भी कई अन्य व्यापारी जा सकते हैं. यह काम हमसे नहीं, उससे ही होगा. इसलिए तुरन्त उसीको बुलाओ.

उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि किसीने आकर समाचार दिया कि अम्पु नायर दर्शनोंके लिए आये हैं.

"क्या ? अम्पु ? जल्दी ले आओ"—तम्पुरानने आज्ञा दी. देशमें रहकर सभी आवश्यक कार्य करनेकी जोखिम अपने ऊपर वहन करनेवाला अम्पु सहसा आ गया तो कार्य भी उतना ही गंभीर होगा, यह किसीसे छिपा न रहा.

अम्पु नायर प्रणाम करके निश्चल खड़ा हो गया. उसका प्राणहीन, दयनीय और निस्तेज मुख देखकर सबका हृदय काँपने लगा. तम्पुरानने ही साहस बटोरकर प्रश्न किया—

"कुछ भी हो, अम्पु ! कहो, क्या बात है ? जाने बिना उपाय कैसे सोचें ?"

तम्पुरानकी आज्ञा सुननेके बाद भी अम्पुके मुँहसे बात नहीं निकलती थी. यह प्रत्यक्ष था कि वह कुछ बोलना चाहता है, लेकिन उसके लिए बोलना असंभव हो रहा है. बहुत कठिनाईसे उसने भरे हुए कंठसे कहा—"कण्णवत्तु नम्पियारको कंपनीवालोंने·········"और वह आगे न बोल सका.

"क्या कह रहे हो, अम्पु ?" तम्पुरानने पूछा. उनके स्वरमें अमर्ष और वेदना भरी हुई थी.

अम्पु—वे राक्षस हैं ! घातक हैं ! भयानक काम किया !

तम्पुरान—क्या ? हत्या कर डाली ?

तम्पुरान अपना उद्वेग नहीं छिपा सके.

अम्पु—जी···उनको···उनको···कण्णवत्तु-भवनके आँगन में ही··· फाँसी······ !

अम्पुकी आँखें आँसू और आग एक साथ बरसाने लगीं.

कुंकन—क्या ? कण्णवत्तु यजमानको फाँसी दे दी गई ! खुल्लम-खुल्ला ? कण्णवत्तु-भवनमें ? हमारे लोग—देशवासी—नायर लोग कहाँ गये थे ? कोई नहीं था वहाँ ?

अम्पुने कुंकनके अभिमुख होकर कहा—शायद मैं अपराधी हूँ. यजमानको कंपनीवालोंने पकड़ लिया यह मैंने सुना. उसी समय मैं तलश्शेरी पहुँचा. वहाँ पता चला कि वेलेस्लीने उनका अत्यन्त उपचार और सम्मानके साथ स्वागत किया है. वह जब उनसे मिला तो उसने उनके साथ एक कैदीके रूपमें नहीं, सम्मान्य अतिथिके रूपमें व्यवहार किया. इसपर भी कल रातको ही उन्हें वहाँसे निकलवा लानेका प्रबन्ध मैंने किया था. परन्तु कूटनीतिज्ञ कर्नलने रातको ही अत्यन्त गुप्तरूपसे उन्हें वहाँसे हटवा दिया और फिर यह घोर कृत्य किया गया. सब हो जानेके बाद ही मुझे पता चला. मैं स्वयं यह सब तुरंत बतानेके लिए यहाँ पहुँचा हूँ.

अम्पुकी बातें सुनकर तम्पुरान और उपस्थित नेताओंको विश्वास हो गया कि उसकी कोई गलती नहीं थी.

तम्पुरानने सान्त्वना देते हुए कहा—दुःखी मत हो, अम्पु, तुमसे कोई गलती नहीं हुई.

परन्तु अरळातु नम्पिको यह ठीक नहीं जँचा. उन्होंने पूछा—"नम्पियारको बचानेके लिए अम्पुने क्या उपाय किया था ?"

अम्पुने तम्पुरानकी ओर देखा, मानो पूछ रहा हो कि इस प्रश्नका

उत्तर दूँ या नहीं. तम्पुरान आँखें बंद करके योग-ध्यानस्थ-जैसे बैठे थे. विवश होकर अम्पुने उत्तर दिया—"कंपनीवालोंके एक प्रधान विश्वास-पात्रने वह कार्य अपने ऊपर ले लिया था. वे वहाँ सब-कुछ करनेकी शक्ति रखते हैं. इसलिए कोई कठिनाई हो ही नहीं सकती थी. लेकिन वेलेस्ली इतना कपट करेगा यह किसने सोचा था ?"

नम्पिको मंजूर नहीं हुआ. उन्होंने कहा—फिर भी नम्पियारके पास किसीको रखना ही चाहिए था.

इसका उत्तर देनेका अवसर भी अम्पुको नहीं मिला. महाराजा शीघ्रतासे उठकर किसीसे कुछ कहे बिना ही अन्दर चले गये.

कण्णवत्तु नम्पियार और उनके उत्तराधिकारियोंको फाँसी दी जाने-का समाचार जब फैला तो देश-भरमें हाहाकार मच गया. चुपलि नम्पि-यारके कारागृहमें रखे जानेसे ही जनता भयभीत हो रही थी. अब उच्च-पद, शक्ति, प्रताप आदिके साथ निर्बाध रूपमें शासन करनेवाले एक महाप्रबल प्रभुको इस प्रकार उनकी ही प्रजाके बीच, उनके ही भवनमें फाँसी दी गई. यह बात सबके लिए घबराहटका कारण बन गई. सभीने यही माना कि अब महाराजाके पंख टूट गये. उन्हें यह डर भी होने लगा कि यदि हमारे कामोंका पता भी कंपनीको चल जाय तो क्या होगा ? कर्नलने जिस उद्देश्यसे यह घोर कृत्य करवाया, वह सफल हो गया.

परन्तु, एक बात कंपनीवाले और तम्पुरानके पक्षके अरळात्तु नम्पि-जैसे लोग भी नहीं जानते थे. वह बात यह थी कि कंपनीके भयसे अथवा अपने स्वार्थोंके वशीभूत होकर बड़े-बड़े प्रभुजन भले ही दब जायँ, मगर साधारण जनताके हृदयमें तम्पुरानके लिए जो आदर और भक्ति है उसमें कभी कमी नहीं हो सकती.

उस दिन महाराजा न तो बाहर निकले और न अपने सचिवों, सेनापतियों आदिसे ही मिले. दूसरे दिन प्रभातमें ही उन्होंने अम्पुको बुलाकर आज्ञा दी कि वह तत्काल अपने स्थानको लौट जाये और यह ध्यानमें रखता हुआ कि कहीं कोई विद्रोह न फूट पड़े, देशमें ही रहे.

इतना ही नहीं, तलश्शेरीमें जो-कुछ होता है उसकी पूरी जानकारी रखे और समय-समयपर सूचनाएँ भेजता रहे. उनका निश्चित आदेश था कि मेरी आज्ञा मिले बिना किसीसे कोई युद्ध न किया जाय.

तम्पुरानकी अवसरके अनुकूल ऊँचे उठनेकी शक्तिसे परिचित अम्पु-को इन आज्ञाओंसे अत्यधिक आश्चर्य हुआ. परन्तु तम्पुरानने अधिक कहनेकी अनिच्छा प्रकट की तो वह आज्ञा लेकर चुपचाप बाहर निकल आया. उस विषयमें अधिक सोचनेपर वह इस निर्णयपर पहुँचा कि महाराजा कोई गम्भीर विचार कर रहे हैं और उसके उपरान्त जो निश्चय होगा वही आगेका कार्यक्रम बनेगा. उसे लगा कि घबरानेकी बात नहीं, महाराजा तैयारी कर रहे हैं, समय आनेपर सबको दिखाई दे जायगा.

कण्णवत्तु नम्पियारको फाँसी दे दी जाने और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जानेपर भी तम्पुरानका शान्त बना रहना सबको बुरा लग रहा था. अरळात्तु नम्पि आदि सेवक-प्रमुखों और कोट्टयंके नायर-सामन्तोंने इसे महाराजाके भारी तेजोभंगका सूचक माना. परन्तु महा-राजाने अपने दैनिक कार्यक्रममें भी कोई अन्तर नहीं आने दिया. अप-राह्नमें जब नम्पिके साथ शतरंज खेला करते थे तब प्रतिदिन ही नम्पि टोंकते थे—खेलमें असावधानी मालूम हो रही है. महाराजा कभी इसका उत्तर नहीं देते थे. रोज कथकलि देखनेका कार्यक्रम भी जारी रहा.

सीधे-सादे नम्पिको यह सब देखकर बड़ा दुःख हो रहा था. वे सोचा करते थे—और कभी-कभी कह भी दिया करते थे कि—बड़े लोगोंको किसीसे सच्चा स्नेह नहीं होता. देखो न, अपने लिए प्राण देनेवाले अभिन्न मित्रकी हत्या होनेपर भी महाराजाको कोई उद्विग्नता नहीं हुई! पहले-जैसे खेल-तमाशेमें मग्न हैं !

एक दिन शतरंज खेलते हुए. नम्पिने प्यादेसे वजीरको मार दिया. फिर उन्होंने कहा—"हाय! वज़ीर को प्यादे से काट दिया फिर भी देव

तो निश्चल ही हैं. इस खेलमें अब शायद उत्साह नहीं है !" महाराजा किसी घोर व्यथासे म्लान होकर चुपचाप वहाँसे उठ गये.

तम्पुरानके लोगोंके बीच और भी कुछ अफवाहें उड़ रही थीं. जबसे पषयंवीट्टिल चन्तुका विश्वास-घात प्रकट हुआ, तबसे कुछ प्रमुख व्यक्तियोंके दिलोंमें भी शंका-कुशंकाएँ उठने लगी थीं. चन्तु और अम्पु रिश्तेदार थे, इसलिए अम्पुपर भी लोग शंका करने लगे थे. तम्पुरान पहाड़पर हैं, परन्तु तीन महीने हो गये अम्पु देशमें ही रह रहे हैं ! लोग पूछने लगे, एसा क्यों ? कर वसूल करने और देख-भाल करनेके लिए तम्पुरानने स्वयं नियुक्त किया है, साधारण लोग इस बातको नहीं समझते थे. उन लोगोंने निश्चय कर लिया कि किसी दुर्विचारसे ही वह देशमें रह रहा है.

कण्णवत्तु नम्पियारको न बचानेके लिए भी लोग अम्पुको दोषी ठहराने लगे. यह भी कहा जाता था कि यदि अम्पु आवश्यक कार्रवाई करनेको तैयार होता तो देशवासी कम्पनीकी सेनाको मार भगाते. यह भी हो सकता था कि तलश्शेरीमें या कण्णवत्तु जानेके मार्गमें नम्पियारको छुड़ा लिया जाता. जनतामें यही खयाल फैला हुआ था कि कण्णवत्तु नम्पियारकी हत्या अम्पुकी लापरवाहीसे हुई.

लोग यह भी जानते थे कि नम्पियार और अम्पुके बीचमें अच्छा सम्बन्ध नहीं था. अम्पुका युवावस्थाका उत्साहाधिक्य महाराजाके पुराने सचिवों और सेनापतियोंमेंसे अनेकको पसन्द नहीं था. महाराजा यह जानते थे. यह भी एक कारण था जिससे उन्होंने अम्पुको देशमें रहकर कार्य सँभालनेकी आज्ञा दी थी.

अम्पुके बारेमें दुःशंकाएँ फैलीं तो कैतेरी-भवनके सारे जीवनसे ही वे जुड़ गईं. मावकम्से मिलनेके लिए जब महाराजा पधारे थे तबकी घटना अब पहाड़ बन चुकी थी. उसे यहाँतक बढ़ा दिया गया था कि कुरुम्ब्रनाट्टु राजाकी सेना और अम्पुने मिलकर महाराजाको घेर लिया

था और महाराजा अपने अद्भुत पराक्रमके कारण ही बच सके. लोग यह भी कहने लगे कि माक्कम् केट्टिलम्मा भी शत्रुके साथ मिलकर महाराजाको धोखा दे रही है. यदि ऐसा न होता तो रातको उन्हें घेर लेनेका प्रबन्ध न किया जा सकता.

महाराजाके सामने ही नम्पिने अम्पुकी उदासीनताकी बात कही. इससे अनुमान किया जा सकता है कि बात कितनी फैल चुकी थी. इस प्रकारकी बातें शुरू करनेवाला पड़ोसी इक्कण्डन नायर था. देशवासियों पर अम्पुके प्रभावको कम करनेका यह उत्तम उपाय था. इस प्रकार-की बातें फैलती देखकर अपने शत्रु-पक्षको एक साथ समाप्त करनेके मन-सूबेसे चन्तु नायर भी उन्हें खुल्लम-खुल्ला कहने लगा. जहाँ अवसर मिलता, वह कहता फिरता कि कण्णवत्तु नम्पियारको फाँसीपर लटकने देना महाराजाके लिए एक अमिट कलंककी बात है. अम्पु नायरकी छिपी मददसे ही कम्पनीवाले यह कर सके. नायर कहलाने वालोंके लिए अब सिर ऊँचा करके चलना ही कठिन हो गया है, आदि-आदि.

माक्कम्के बारेमें भी ये लोग बातें फैलाने लगे. उसके ऊपर चरित्र-दोषका आरोपण भी कुछ दिनोंसे हो रहा था. किसीकी आज्ञाके बिना वह तीन-चार दिनोंके लिए कहीं चली गई थी यह बात भी सबको मालूम हुई. तम्पुरानको बुलवाकर कम्पनीवालोंके सुपुर्द कर देनेके षड्-यन्त्रकी अफवाह तो दावानलके समान सारे देशमें फैल गई.

अम्पु नायर जहाँ जाते वहीं महसूस करते कि लोग उन्हें शंकाकी दृष्टिसे देखने लगे हैं. कोई सीधे कुछ नहीं कहता था, परन्तु जब वे किसीके पास पूर्ववत् राज्य-कार्यके सम्बन्धमें जाते तो या तो गृहपति घरमें न होता, या वह कार्यमें कोई अभिरुचि न दिखाता था. धन, जन या भोजन-सामग्रीके बारेमें कहते तो उत्तरमें कोई-न-कोई बहाना सुनने-को मिल जाता. इस प्रकार उनके लिए सारा वातावरण ही बदलता हुआ दिखलाई पड़ा.

अम्पु जब तलश्शेरीकी बातें जाननेके लिए चन्द्रोत्तु-भवन गये तब उन्हें सारी बातें मालूम हुई. चन्तुसे बचनेके लिए वहाँ जानेके बाद, कण्णवत्तु नम्पियारकी रक्षाका उपाय करनेके लिए एक बार और भी वे वहाँ गये थे, परन्तु उन दिनों जल्दीमे थे. अब इतनी जल्दी न होने-से कुछ आरामसे बातें होने लगीं. चन्द्रोत्तु नम्पियारने अम्पुका यथा-पूर्व प्रसन्नतासे स्वागत किया.

बहुत देरतक बातें होती रहीं. जब जानेके लिए निकले तब नम्पि-यारने ही उनसे कहा—वह युवती तुम्हारा नाम जप-जपकर ही दिन बिता रही है. उससे दो बातें करके ही जाना उचित होगा. यहीं अन्तःपुरमें होगी. चलो.

जबसे उण्णिनंङाको मालूम हुआ कि अम्पु नायर आये हैं तबसे ही वह अपने हृदय-वल्लभसे मिलनेके लिए उतावली हो रही थी. अन्य कार्यों-में व्यस्त रहनेके कारण अम्पु उण्णिनंङाको भूले हुए-से थे. अब चन्द्रोत्तु यजमानकी बात सुनकर अपने वक्षस्थलपर हारके समान थोड़ी देर पड़ी रही बालिकाकी स्मृति ताजा हो आई. उनकी प्राण-रक्षाके लिए उसने अपने प्राणों और मानको भी बाजीपर चढ़ाकर जो वीरता दिखाई थी उसका स्मरण करके वे पुलकित हो उठे.

छोटी अवस्थामें ही विधुर हुए अम्पु नायरको उसी समय महाराजा-के साथ देश छोड़ना पड़ा था और उन्होंने गृहस्थ-जीवनकी बात कभी सोची ही नहीं. परन्तु इस समय उन्हें मालूम हुआ कि उण्णिनंङाके प्रति उनके हृदयका भाव किस ओर झुक रहा है.

उन्होंने अन्तःपुरके दालानमें प्रवेश किया ही था कि उण्णिनंङाने एक मन्द मुस्कराहटके साथ, लज्जासे मुख नीचा करके उनका स्वागत किया. अम्पुने प्रति-मन्दहासके साथ कहा—"कैसी हो ? उस दिन तो तुमने मेरे प्राण ही बचा लिए. उसका धन्यवाद कैसे दूँ ?"

उण्णिनंङाने कहा—ये कैसी बातें कर रहे हैं ? मैं तो अनाथ होकर

आई थी. आपनेही मेरे प्राणों की रक्षा की. मैं ही सदाके लिए आपकी आभारी हूँ.

दोनों आगे बातें करनेमें असमर्थ रहे. उण्णिनंङा अपने हृदयमें तरंगें भरनेवाले भावोंको प्रकट करनेमें असमर्थ थी. उसका अनुराग उसके अन्तरमें दृढ़मूल हो गया था, किन्तु उसे व्यक्त करनेके लिए वह शब्द कहाँ पाती ? राज्य-शासन और युद्ध-भूमिमें ही जीवन बितानेवाले अम्पु नायरको तो पता ही नहीं था कि ऐसे अवसरोंपर क्या बोलना और क्या करना चाहिए. फलतः वे दोनों बहुत देरतक चुपचाप बैठे रहे. परन्तु वह मौन अनन्त वाग्मितासे भी अधिक प्रभावशाली और परस्पर भाव-विनिमयके लिए पर्याप्त था. अन्तमें अम्पुनायरने कहा—"किसी बातके लिए दुःखी मत होना. सब ठीक हो जायगा." ये शब्द उण्णिनंङाको प्रणय-प्रतिज्ञाके-जैसे प्रतीत हुए.

उसने केवल इतना ही उत्तर दिया—"श्रीपोर्कली भगवती सब भला करें !"

"शीघ्र ही आकर मिलूँगा," कहते हुए अम्पु नायर बाहर निकल आये.

अपनी बहनके और अपने संबंधमें जनताके विचार अम्पुको चन्द्रोत्तु नम्पियारसे मालूम हुए. इससे उनको बुरा तो जरूर लगा, परन्तु सबसे अधिक दुःखद उनके लिए यह विचार था कि इन बातोंसे महाराजा और देशको कितनी बड़ी क्षति हो सकती है. अरळात्तु नम्पिके संकेतोंका अर्थ भी अब उसकी समझमें स्पष्ट रूपसे आ गया. उन्हें केवल एक ही समाधान था कि स्वयं महाराजाने इन बातोंपर विश्वास नहीं किया है.

कुछ लोगोंने इस प्रकारकी बातें करके महाराजाके मनमें भी अम्पु और माक्कम्के प्रति अविश्वास उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया. अरळात्तु नम्पिने बड़ी केट्टिलम्मासे भी इस प्रकारकी बातें कीं, परन्तु उस मनस्विनीने दृढ़ स्वरमें उत्तर दिया—"चुप रहिए. आपको कुछ नहीं मालूम. माक्कम् कभी महाराजाको धोखा नहीं दे सकती."

इस रास्तेपर लाभ न देखकर नम्पिने महाराजसे सीधे ही बातें कीं. उन्होंने जब कोई उत्तर नहीं दिया तो सारी बातें उन्हें विस्तारसे सुनाईं. सब सुननेके बाद तंपुराननें खेदके साथ कहा—

"नम्पि, आप बड़े सरल हैं. शत्रु हमें नष्ट करनेके लिए कैसे-कैसे उपाय कर रहे हैं, आप नहीं जान सकते. संधि-विग्रह राजनीतिका मुख्य अवलंब है."

नम्पिको इस उत्तरसे संतोष मानना ही पड़ा.

सोहलवाँ अध्याय

कण्णवत्तु नम्पियारकी हत्यापर भी तम्पुरान उदासीन ही रहे. इससे कर्नल वेलेस्लीको भी आश्चर्य हुआ. लगभग एक मास व्यतीत हो गया, फिर भी देश शान्त था. विद्रोहका नाम-निशान भी कहीं नहीं था. समाचार आया करते थे कि वयनाट्टुमें इधर-उधर कुछ अव्यवस्था है, परन्तु मणत्तना, मानंचेरी आदि स्थानोंमें कोई हलचल नहीं थी. कर्नलको यह भी पता चला कि तम्पुरान शतरंज और कथकलि आदिमें मग्न होकर समय बिता रहे हैं.

इस अस्वाभाविक शान्तिसे पहले-पहल नय-निपुण कर्नल वेलेस्लीको कुछ शंकाएँ हुईं. परन्तु कण्णवत्तु-भवनकी भीषण घटनाके बाद एक मासतक महाराजाको चुप ही देखकर उसको विश्वास हो गया कि महाराजा भी डर गये हैं और अब कहीं विद्रोह नहीं हो सकता. उसने सबसे कह दिया कि दो सप्ताहके अन्दर ही मैं यहाँ से रवाना हो जाऊँगा.

उसने गवर्नर-जनरलको भी इसकी सूचना दे दी. प्रति सप्ताहके पत्रोंमें वह अपनी योजनाका राग अलापा करता था. अब उसने जो देखा कि महाराजा प्रतिकारके लिए तैयार नहीं हो रहे हैं तो उसने फिरसे

इस आशयका पत्र लिखा—"कैरलमें इधर-उधर मुख्य स्थानोंको चुनकर दुर्ग बना लेंगे और उनमें अपनी सेना रख देंगे. नायरोंसे आयुध रखवा लेंगे और घोषणा करके सबको मना कर देंगे कि कोई वनवासी तम्पुरानको भोजन-सामग्री न दे. ऐसा करनेके बाद कैरलमें शान्ति-भंगकी दिशामें एक कुत्ता भी न भौंकेगा." यह भी लिख दिया था कि रवाना होनेके पूर्व सैनिक-नियमोंके अनुसार यह सब करवा लिया जायगा.

इस पत्रके बाद वह वापस बुलाये जानेकी प्रतीक्षा अधीरताके साथ तलश्शेरीमें करता रहा.

देशमें इधर-उधर बनाये जानेवाले दुर्ग पूर्ण होने लगे. कालीकटसे उत्तरकी ओरके मुख्य स्थानोंमें ऐसे दुर्ग खड़े हो चुके थे. वहाँ जो सेना और शस्त्रास्त्र रखे गये थे उनका उद्देश्य महाराजाको रोकना नहीं, स्थानीय प्रभुजनोंको डराकर महाराजासे दूर रखना था.

इसके पश्चात् वेलेस्लीने एक घोषणा करवाई कि जो नायर छह महीनेके अन्दर अपनी बन्दूकें, तलवारें आदि सब प्रकारके आयुध कंपनी-के सुपुर्द न कर देगा उसे कठोर दण्ड दिया जायगा. उसे विश्वास था कि इसमें पूर्ण सफलता मिलेगी. साथ-ही-साथ उसने यह आज्ञा भी निकाल दी कि महाराजा और उनके लोगोंको किसी प्रकारकी भोजन-सामग्री न भेजी जाय.

उसने अपने बड़े भाईको लिख दिया कि मैंने न केवल महाराजाको जीत ही लिया है, वरन् केरलमें सदाके लिए शान्ति स्थापित कर दी है. वह जानता था कि अब उसके प्रधान सेनापति बनाये जानेमें विलम्ब नहीं होगा. मराठोंके साथ युद्धकी तैयारी पूर्ण हो चुकी थी, इसलिए जब यह पत्र मिला तो गवर्नर-जनरलने तुरन्त अपने भाईको भारतकी ब्रिटिश सेनाका सेनापति नियुक्त कर दिया और इस नियुक्तिकी सूचना उसे दे दी गई.

कलकत्तेसे तलश्शेरी पत्र पहुँचनेमें दो सप्ताह लगा करते थे. कर्नल

वेलेस्ली अपनी तैयारियाँ पूर्ण करके यात्राके दिनकी उत्सुकताके साथ प्रतीक्षा करने लगा.

तलश्शेरीमें तम्पुरानके सहायकोंको दबानेका जो प्रयत्न किया जा रहा था वह लगभग सफल होता दिखाई दे रहा था. खोज करनेसे यह तो नहीं जाना जा सका कि सहायकोंके संगठनका नेता कौन है, परन्तु इतना मालूम हुआ कि सारा काम बेबरकी प्रेयसी चिरुतक्कुट्टीकेद्वारा किया जा रहा है. इसके कर्नलको बहुत परेशानी हुई. यदि उसे गिर-फ्तार कर लिया जाय तो तलश्शेरी छोड़नेके पूर्व उसका निर्णय करना संभव न होगा और चले जानेके बाद बेबर किसी-न-किसी प्रकार उसको छुड़ा ही लेगा. नागरिक अधिकारी उसको दण्ड देंगे ही नहीं. इस सब उलझनमें कर्नलने अपने दुभाषियेको बुलाकर परामर्श किया. उसने कहा—"केरलवर्माके जो सहायक तलश्शेरीमें ही हैं उनको समाप्त किये बिना यदि हम चले गये तो वे तत्काल ही फिर सिर ऊँचा उठा लेंगे. हमारे लिए यह लज्जाकी बात होगी. तुम क्या कहते हो ?"

दुभाषिये सिकुवेराने उत्तर दिया—"यह ठीक है, परन्तु हमारे पास जितना समय रह गया है उसमें क्या किया जा सकता है ?"

"किस-किसके विरुद्ध पूर्ण और अकाट्य प्रमाण मिल चुका है ? जिनके बारेमें मिला है, उनके विरुद्ध बेबरकी अनुमतिके बिना हम नियमा-नुसार कार्रवाई भी तो नहीं कर सकते ?"

"सुपरवाइजरके दुभाषिये लुई पेरेराके विरुद्ध प्रमाण मिला है. तम्पु-रानके मुख्य सहायक उण्णिमूप्पनको उसने एक पत्र लिखा था. वह हाथ लग गया है. इसका भी प्रमाण मिला है कि उसने तम्पुरानके लिए मय्यषीसे बन्दूकें मँगवा दी हैं."

"वह सहायता तो अब हमने बन्द कर दी है. केरल वर्मा अपनी बन्दूकें लिये बैठे रहें. बारूद और गोलियाँ अब उन्हें कहाँ से मिलेंगी ?"

"कुछ भी हो पेरेराको तुरन्त गिरफ्तार करने के लिए आवश्यक प्रमाण हमारे पास मौजूद हैं. शत्रुकी सहायता करनेके अपराधमें सैनिक-

नियमोंके अनुसार दण्ड भी दिया जा सकता है."

"पेरेरा ही संगठनका नेता है ?"

"नहीं. अबतक जो प्रमाण मिला है उससे यह मालूम होता है कि सूत्र तम्पुरानके ही किसी व्यक्तिके हाथमें है. वह चिरुतक्कुट्टीकेद्वारा सब काम करा लेता है. परन्तु चिरुतक्कुट्टीको इस संघके साथ संबद्ध करनेका कोई प्रमाण अबतक नहीं मिला. इतना अवश्य है कि एक दिन अम्पु नायरको उसके घरसे निकलता हुआ देखा गया था."

"और कोई प्रमाण नहीं है ? मुझे भी लगता यही है कि सारा काम उसी स्त्रीके द्वारा होता है. पेरेरा केवल आज्ञापालक है. परन्तु स्वयं उसे आज्ञा देनेवाला कौन है, इसकी जानकारी और प्रमाण प्राप्त करना आवश्यक है. पेरेराको पकड़ा जाय तो क्या वह खुद सब-कुछ स्वीकार नहीं करेगा ?"

"उससे कहलानेका उपाय हो जायगा. परन्तु वह सुपरवाइजरका दुभाषिया है. उसे सैनिक कैसे गिरफ्तार कर सकते हैं ? यदि उसे गिरफ्तार किया गया तो बम्बई-सरकार ऊधम मचा देगी. कलकत्तेसे बंबई कितना निकट है."

सिकुवेराके संकेतका अर्थ कर्नल वेलेस्लीने समझ लिया. परन्तु उसने यह भी निश्चय कर लिया कि मैं एक क्षुद्र औरत और एक मामूली नौकरको अपनी योजनाएँ विफल करनेका अवसर नहीं दूँगा. कुछ सोचकर उसने कहा—"नियमके विरुद्ध कुछ करना मुझे स्वीकार नहीं है. तो फिर क्या इतने बड़े कार्यको सिद्ध करनेका कोई दूसरा उपाय है ही नहीं ?"

सिकुवेराने कर्नलका विचार समझ लिया. उसने कहा—"कर्नलकी अनुमति हो तो—"

कर्नलने उसे वाक्य पूरा करने नहीं दिया. बीचमें ही कहा—"किसी भी प्रकार चिरुतक्कुट्टीके विरुद्ध पूरा प्रमाण मिल जाना चाहिए. यही आवश्यक है."

उस दिन सायंकाल खुदको तलश्शेरीका उप-सम्राट् माननेवाला लुई पेरेरा अपने घरसे एकाएक गायब हो गया.

तलश्शेरीके नागरिकोंमें बड़ी हलचल मची. प्रत्येक व्यक्तिने अपने मनोभावके अनुसार इस घटनाका अर्थ लगाया. अधिकतर लोगोंने यही कहा कि कण्णवत्तु नम्पियारकी फाँसीकी प्रतिक्रियामें महाराजाके अनुचरोंने ही यह काम किया है. सुपरवाइजरकी छाया माने जानेवाले पेरेराको पकड़नेका साहस और किसे हो सकता था ? यह समाचार फैलानेवाला था सिकुवेरा. वह खुल्लम-खुल्ला कहा करता था कि "पषश्शिके लोग यहाँ आकर भी अनीति करने लगे."

तम्पुरानके कुछ मित्रों और चिरुतक्कुट्टीने वस्तुस्थितिको बहुत-कुछ समझ लिया. कण्णवत्तु नम्पियारके लिए फल लेकर जानेवाला जब वापस नहीं आया तभी चिरुतक्कुट्टीने समझ लिया था कि यह आपत्तिकी सूचना है. उसने बहुत पहले ही समझ लिया था कि कर्नल और सिकुवेरा उसपर शंका कर रहे हैं. वह जानती थी कि वे उसके बारेमें गुप्त रूपसे जाँच-पड़ताल कर रहे हैं. सब सोचकर उसने अनुमान कर लिया कि कर्नलकी आज्ञासे ही पेरेराको गायब किया गया है. इस कार्रवाईके उद्देश्यके बारेमें भी उसे कोई शंका नहीं थी. पेरेरा व्यापार-कार्योंमें अति चतुर अवश्य था, परन्तु शासन-कार्योंमें जो-कुछ करता था वह सब चिरुतक्कुट्टीके कथनानुसार होता था. और यह भी सब जानते थे कि कर्नलको व्यापार-कार्योंमें कोई अभिरुचि नहीं है. तो फिर पेरेराकी गिरफ्तारीका कारण शासन-सम्बन्धी है और उसका लक्ष्य मैं स्वयं हूँ, यह भी उस बुद्धिमतीने जान लिया.

एक महीनेसे अधिकसे तम्पुरानको चुप देखकर उसने अनुमान किया था कि किसी विशेष विचारसे ही वे ऐसा कर रहे हैं. परन्तु कण्णवत्तुकी हत्याकी कोई प्रतिक्रिया न देखकर उसने समझा कि विद्रोहियोंकी शक्ति अवश्य ही कम हो गई होगी. बेबर भी कहने लगा कि पषश्शि, जो अबतक व्याघ्र था, अब लोमड़ी बन गया है.

अम्पु नायरके पाससे भी आजकल कोई सन्देश नहीं आता था. चिरुतक्कुट्टीने इसे भी महाराजाकी बढ़ती हुई अशक्तिका चिह्न माना. सब मिलकर, लक्षण कुछ शुभ नहीं दिखलाई पड़े. अतएव वह सोचने लगी कि यहाँसे थोड़ा हटकर रहना ठीक होगा.

परन्तु दो सप्ताह बाद ही कर्नल कलकत्ता चला जायगा यह बात उसे आश्वासनमय मालूम हुई. वह जानती थी कि वेलेस्लीके चले जाने-पर मेरे लिए भयका कोई कारण नहीं रहेगा. तम्पुरान और उनके लोग दबेंगे नहीं यह भी वह जानती थी. अम्पु नायरकी गति-विधिका कोई पता न होनेके कारण उसने एक विश्वास-पात्रको चन्द्रोत्तु नम्पियारके पास समाचार लेनेके लिए भेज दिया.

पेरेरा गुप्त रूपसे कर्नलके बँगलेमें ही ले जाया गया. हाथोंमें हथ-कड़ी और पैरोंमें बेड़ी डालकर उसे एक कमरेमें बन्द कर दिया गया. उस कमरेमें कर्नल, सिकुवेरा और एक-दो विश्वस्त नौकर ही प्रवेश कर सकते थे. एक दिन पूरी तरह भूखा रखनेके बाद कर्नल उससे प्रश्न करने लगा. पहले-पहल क्रोधमें होकर उसने जो-कुछ कहा उसका सार यह था—

"तम्पुरानके प्रमुख सलाहकारोंमेंसे अनेक मेरे अधीन हो गये हैं. उनसे तुम्हारे विश्वास-घातकी सब बातें मालूम हो चुकी हैं. उण्णिमूप्पनको जो पत्र तुमने लिखा था वह हमारे हाथ लग गया है. इस सबका परि-णाम फाँसी होगा. तुम्हारी सब सम्पत्ति जब्त करनेका आदेश मैंने दे दिया है. केवल यहाँ नहीं, कोच्चि, बम्बई आदिमें भी जो-कुछ तुम्हारा है वह सब कम्पनीके अधिकारमें आ जायगा. और राज-द्रोहका दण्ड तो फाँसी है ही."

कर्नलका स्वभाव जाननेवाले पेरेराने क्षण-भरके लिए भी इसको धमकी-मात्र नहीं समझा. वह जानता था कि जिसने देशके अति प्रमुख व्यक्तियोंमें भी प्रमुख कण्णवत्तु नम्पियारको फाँसी देनेमें आगा-पीछा नहीं किया वह मुझ-जैसे छोटे व्यक्तिको लटका देनेमें निश्चय ही कोई

संकोच नहीं करेगा. अपने आन्तरिक नेत्रोंसे वह उस दृश्यको स्पष्ट देखने लगा जिसका वर्णन कर्नलने किया. जीवनमें केवल धनको इष्टदेव माननेवाले पेरेराको इस खयालसे भी बहुत दुःख हुआ कि उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली जायगी.

पेरेराकी मुख-मुद्रासे उसकी मनोदशाको ताड़ लेनेवाला सिकुवेरा पुर्तगीज भाषामें उसे सान्त्वना देने लगा. उसने कहा—"सब-कुछ मंजूर करके अपने साथियों और सलाहकारोंके नाम कर्नलको बता दोगे तो प्राण-रक्षा हो जायगी. पेरेराने स्वीकार कर लिया और कर्नलसे निवेदन किया—"स्वामी, इस क्षुद्र जीवने अपनी वुद्धि से कुछ नहीं किया. सब शैतानकी प्रेरणा से हो गया. मैं तो कम्पनीका दासानुदास हूँ. आप कृपा करके मुझे बचाइए. मैं कम्पनीका नौकर बनकर उसके अन्नसे पलनेवाला हूँ. जो गलती हुई वह दूसरोंके कहनेमें आकर कर गया."

कर्नलने घृणाके भावमें कहा—"तेरी प्रार्थनापर हम विचार करेंगे. अपनी सब कार्रवाइयोंका ब्यौरा हमें लिखकर दे. उसपर हम विचार करेंगे और फिर निर्णय करेंगे कि तुझे क्या दण्ड दिया जाय."

शेष कार्य सिकुवेराको सौंपकर कर्नल वहाँसे चला गया.

लुई पेरेराने अपनी गलतियाँ कम बताते हुए, सारा अपराध चिरुतक्कुट्टीके सिर मढ़कर लिखित बयान दे दिया. उसकी बातोंका संक्षेप यह था कि मैं एक अत्यन्त चतुर स्त्रीके हाथोंमें पड़ गया और उसकी आज्ञा से ही सब-कुछ करता रहा. उसने यह भी बताया कि मूसा मरक्कारकेद्वारा ही तम्पुरानको भोजन-सामग्री और बन्दूकें आदि मिलती हैं.

सिकुवेराने कहा—तुम्हारा कहना सच हो सकता है, परन्तु यह सब कर्नलको स्वीकार होगा या नहीं, मैं नहीं जानता. कर्नल मूसाको भली भाँति जानते हैं. और चिरुतक्कुट्टीको तो लोग तुम्हारे ही अधीन बताते हैं.

पेरेराने उत्तर दिया—यह तो सच है कि चिरुतक्कुट्टीको उस

स्थानतक पहुँचानेवाला मैं ही हूँ. परन्तु सुपरवाइजरके अधीन होनेके बादसे हमारे परस्पर सम्बन्ध बदल गये. वह कृतघ्न अब मुझे एक आश्रित-मात्र समझती है.

"तो उसको इन कार्योंमें सलाह कौन देता है ? यदि कहो कि वह अपनी बुद्धिसे सोचकर ही यह सब करती है तो कौन मानेगा ?"

मेरा विश्वास है कि सूत्रधार मूसा है. और एक बात भी है. चिरुतक्कुट्टीसे मेरा परिचय होनेके पहले अम्पु नायरके साथ उसकी मैत्री थी. सुपरवाइजरके सामने इतनी चतुराई दिखानेवाली वह औरत अम्पुके सामने भीगी बिल्ली बन जाती है. वह जो-कुछ भी कहे, सब-कुछ मानने-के लिए वह तैयार रहती है. यह सब मैंने थोड़े ही दिन पहले जाना था. एक बार चिरुतक्कुट्टीने मुझसे पचास हजार पएम्*की रकम माँगी थी. बहुत प्रयत्न करनेपर भी मैं चालीस हजार ही एकत्र कर पाया, तो उसने अपने गहने गिरवी रखकर वह रकम पूरी करके इसी तलश्शेरी नगरमें अम्पु नायरके हाथोंमें सौंपी. मैंने अपनी आँखोंसे देखा था."

"इसका प्रमाण ?"

"मेरी आँखें. कर्नलके आनेसे एक-दो सप्ताह बाद ही यह घटना हुई थी. तब युद्ध दुबारा आरम्भ नहीं हुआ था."

"इनका सम्बन्ध कैसा है, बिलकुल नहीं जानते ? कितनी भी मित्रता हो, इस प्रकार हाथ खोलकर पैसा देनेका तो कोई और कारण होना चाहिए ?"

मैंने इस बारेमें जाननेका बहुत प्रयत्न किया परन्तु कुछ समझमें नहीं आया. सीधे पूछता था तो उत्तर ही नहीं मिलता था. एक बार केवल इतना कहा था कि "वह मेरे लिए प्राणोंसे भी बढ़कर है."

"उसकी पूर्वकथाका कुछ परिचय है ?"

---

* ढाई आनेकी बराबरीका पुराना केरलीय सिक्का.

"कई लोग कई बातें कहते हैं. उसके कोई बन्धु-बान्धव अथवा परिवार नहीं है. किसी बड़े घरकी स्त्री है. टीपूके सैनिक उसे गुलाम बनाकर ले गये थे. बादमें उनसे तो बच गई, परन्तु बन्धुजनोंने भ्रष्टा मानकर स्वीकार नहीं किया, इसलिए अनाथ हो गई."

"तब तुम्हारे लोगोंने उसे पाया. हो सकता है. अम्पु नायरका परिचय इसके पहलेका होगा. कुछ भी हो, वह सामान्य स्त्री नहीं है."

जानने योग्य सब-कुछ जान लिया, यह जानकर सिकुवेरा लौट गया. उसने यह भी समझ लिया कि पूर्ण जानकारी प्राप्त करनेके लिए और कोई उपाय खोजना होगा.

सत्रहवाँ अध्याय

अपने भवनसे स्वयं ही निकली हुई उण्णियम्माने पड़ौसके इक्कण्डन नायरके घरको अपना निवास-स्थान बना लिया था. इक्कण्डन नायरको यह निर्णय पूर्णतया स्वीकार था, क्योंकि उसके रहनेसे कैतेरीकी सम्पत्ति कंपनीके हाथ लग जानेपर अपने हाथमें लेना संभव दीखता था. उस दीर्घसूत्रीने यह भी जान लिया कि अम्पु अब वापस नहीं आ सकेगा और माक्कम्को भ्रष्टा घोषित करके निकाल देनेपर उण्णियम्मा अकेली कैतेरीकी सारी सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी बन जायगी. उस समय उस सम्पत्तिपर अपना एकाधिपत्य स्थापित करनेका मनोराज्य बना करके ही उसने सम्मति दी—"उण्णियम्मा हमारे ही साथ रहेगी."

चन्तु नायरको भी यह नई बस्ती पसन्द आ गई. इसका कारण केवल इक्कण्डन नायरकी नई-नई विलायती मदिरा ही नहीं थी, उसकी नई, युवा, सुन्दर पत्नी चिन्नम्माळु भी थी. इक्कण्डन नायर साठ वर्ष पार कर चुका था, परन्तु फिर भी अपनेको बूढ़ा नहीं मानता था. परन्तु उसकी पत्नी उसके बारेमें भिन्न मत रखती थी. उसको दुःख था कि सौन्दर्य, रसिकता, विलासिता आदि युवकोचित गुणोंकी खान होनेपर भी उसे इस वृद्धकी

पत्नी बनना पड़ा. इसलिए ऐसी गृहस्वामिनीको भी पतिकी मदिराके स्वादने उन्मत्त बनाना आरम्भ कर दिया.

चन्तु और चिन्नम्माळुकी मित्रता बढ़ने लगी. जब इक्कण्डन नायर चन्तुसे कंपनी और कुरुम्बूनाट्टु राजाके गुण-गान किया करता था तब चिन्नम्माळु भी पान आदि देनेके बहाने उनके बीच आ जाया करती थी. बादमें जब चन्तु पूर्णतया कुरुम्बूनाट्टु और कंपनीके पक्षमें हो गया तो उनसे प्राप्त उपहारादिसे चिन्नम्माळुका सन्दूक भरने लगा.

उण्णियम्माको अपने घरमें शरण देकर इक्कण्डन नायर चन्तुके साथ तलश्शेरी चला गया. उसे निश्चय हो गया था कि उसकी मनोकामना पूर्ण होनेका समय निकट आ गया है. कण्णवत्तु नम्पियारकी कहानी सिकुवेरासे ही इन दोनोंको मालूम हुई थी. इक्कण्डनने कहा—"अबकी फाँसीपर लटकनेवाला वह केरलवर्मा ही होगा." उसने कर्नलसे पहले ही संकेत कर रखा था कि मैंने जो सहायता पहुँचाई है उसके बदलेमें कण्णवत्तु-भवनकी जमीन-जायदाद मुझे ही मिल जानी चाहिए. वही बात सूचनाके रूपमें उसने सिकुवेरासे भी कही. उसके उत्तरमें सिकुवेराने कहा—"विद्रोहियोंको नष्ट होने दो. सहायकोंको कंपनी कभी भूलती नहीं."

सिकुवेराको चन्तु नायरसे और भी काम साधना था. चिरुतक्कुट्टीकी पूर्वकथा सात दिनके अन्दर ही मालूम करनेकी सुग्रीवाज्ञा लेकर चन्तु तलश्शेरीसे आया. इक्कण्डन नायरको भी कुछ और काम मिला—वह इस प्रकारकी अफवाह उड़ानेका था कि महाराजाने कंपनीकी अधीनता स्वीकर कर ली है और कंपनीको आवेदन भेजा है कि उन्हें पेंशन देकर श्रीरंगपट्टनमें रख दिया जाय. कर्नल इस प्रकारकी अफवाहसे दो प्रयोजन साधना चाहता था. एक तो यह कि इसपर विश्वास करनेवाले प्रभुजन तत्काल कंपनीके पक्षमें हो जायँगे, क्योंकि तम्पुरानकी इतने दिनोंकी उदासीनताने पहले ही उन्हें भयभीत कर रखा है. दूसरा प्रयोजन पूर्णतः स्वार्थमूलक था. वह गवर्नर-जनरलको लिख चुका था कि विद्रोहका

अन्त हो गया है. परन्तु उसे यह नहीं मालूम था कि वेबर बंबई-सरकार-को क्या लिखता रहता है. उसका विश्वास था कि जब वेबर यह अफ-वाह सुनेगा तो वह बंबई-सरकारको लिखे बिना नहीं रहेगा और इससे मेरी बातका समर्थन हो जायगा.

सिकुवेराकी बातसे इक्कण्डन नायर फूल उठा. उसको निश्चय हो गया कि महाराजा अब रहा ही नहीं. वह हवाई किले बनाने लगा कि अब देश-भरमें इक्कण्डन नायरकी उपेक्षा करनेवाला कौन होगा ?

सिकुवेराके पाससे दो रास्तोंसे चले इक्कण्डन नायर और चन्तुनायर तीसरे दिन कैतेरीमें मिलनेका वादा करके रवाना हुए थे.

तम्पुरानके जानेके बादसे माक्कम् केट्टिलम्मा पहलेसे अधिक प्रसन्न दीखती थी. अब वह विरह-वेश छोड़कर सौभाग्यवती नायिकाके समान रहती थी. तम्पुरान जब उसे अकेली छोड़कर पहाड़पर गये थे तबसे उसके मनमें यह शंका घर कर रही थी कि मैं परित्यक्ता हूँ. उसके हृदय-को इस प्रकारकी भावनाएँ सदैव व्याकुल रखती थीं कि "अब उनसे कब भेंट होगी ? भेंट होगी भी या नहीं ?" पुरळी पहाड़से लौटने-के बादसे ऐसी शंकाएँ निर्मूल हो गई थीं. "जाती ! जातानुकम्पा भव !" आदि तम्पुरानके लिखे हुए पद्य उसे बराबर सान्त्वना देते थे. इस बातसे भी उसे संतोष हुआ कि तम्पुरान समस्त विपत्तियोंको वहन करके रातों-रात उससे मिलनेके लिए कैतेरी पधारे थे. वह दृढ़ताके साथ सोचने लगी कि अब मुझे कौन परित्यक्ता कह सकता है ?

उण्णियम्मा घर छोड़कर चली गई, इससे माक्कम्को दुःख हुआ. किन्तु यह जानकर उसे कुछ समाधान हुआ कि वह पासके ही घरमें रहती है. उस भारी घरमें चौदह वर्षकी नीलुक्कुट्टी ही उसकी एक-मात्र सखी-सहेली थी. उसे आयुध-विद्यामें बड़ा उत्साह था. परन्तु माक्कम्को कभी-कभी लगता था कि कौमार्य व्यतीत कर चुकनेवाली नीलुक्कुट्टी-को पुरुषोचित कामोंमें प्रोत्साहित करना उचित नहीं है. परन्तु उसके

आग्रह और कम्मूके चरित्रपर पूरे विश्वासके कारण उसने अभ्यास पूर्ण करनेकी अनुमति दे दी.

अब माक्कम्को यह चिन्ता भी सताने लगी कि यह मातृहीन बालिका विवाहोचित आयुको पार कर रही है. अम्पु नायरका कहीं पता नहीं था. इधर कम्मूके आनेके दिनसे माक्कम्के मनमें यह चिन्ता भी होने लगी कि वयप्राप्त इस युग्मका पारस्परिक परिचय और निरन्तर सामीप्य अनुराग-का हेतु बने बिना नहीं रह सकता. वही हुआ भी. माक्कम्ने प्रत्यक्ष हाव-भावोंसे सत्यावस्था जान ली. परन्तु अम्पु नायरके आनेके पहले कुछ भी करना उचित न मानकर वह उनके आनेकी बाट जोहने लगी

माक्कम्के बारेमें देश-भरमें जो अपवाद फैला था वह अब यहाँ भी पहुँच गया. उण्णियम्मा स्वयं ये बातें सबसे कहा करती थी. एक दिन नदीमें स्नान करते समय स्त्रियाँ आपसमें बातें कर रही थीं, जो नीलु-क्कुट्टीने भी सुनीं. उन सबका कथन था कि माक्कम् तम्पुरानके साथ विश्वास-घात कर रही है और कंपनीवालोंसे धन लेकर उसने उन्हें पकड़-वानेका प्रयत्न भी किया था, परन्तु श्रीपोर्कली भगवतीने प्रत्यक्ष होकर तम्पुरानकी रक्षा कर ली. उण्णियम्मा भी यही कहती थी—"देखो तो उसकी सजधज ! इस सबके लिए पैसा कहाँसे आता है ? अब समझमें आया ! बेचारे महाराजा यह सब क्या जानें ? ऐसी राक्षसियोंसे ही तो वंशकानाश होता है !"

नीलुक्कुट्टीने लौटकर रोते हुए यह सब बात कम्मूसे कही. कम्मूने उत्तर दिया—"यह सब चन्तुका कृत्य है. हाथमें आ जाय तो सब दिखा दूँगा." नीलुक्कुट्टीको इससे शान्ति नहीं मिली. उसने केट्टिलम्मासे कहनेका विचार किया. परन्तु पूरी बात स्पष्ट रूपसे उससे कहनेका साहस उनको न हुआ.

केट्टिलम्मा नीलुक्कुट्टीकी बातोंसे समझ गई कि देशके लोग अम्पु-नायर और उसपर बहुत दोषारोपण करते हैं. जब उसने पहली बार यह सुना था कि भाई-बहन मिलकर तम्पुरानको धोखा दे रहे हैं तो वह

हँस पड़ी थी. परन्तु जब उसने समझा कि इस प्रकारकी अफवाहोंपर देशवासियोंके विश्वास कर लेने का कितना भीषण परिणाम होगा तो उसके क्रोध और दुःखकी सीमा नहीं रही.

कितना भी प्रयत्न करनेपर पय्यंवीट्टिल चन्तु नायरको चिरु-तक्कुट्टीकी पूर्वकथा जानने में सफलता नहीं मिली. उसके किन्हीं बन्धु-मित्रोंका पता भी नहीं चला. कहीं-कहीं यह सुननेको मिला कि लुई पेरेराद्वारा किसीसे खरीदी हुई गुलाम लड़की है. अन्तमें उसने मान लिया कि टीपूके आक्रमण-कालमें घर-बार छोड़कर इधर-उधर भागे हुए लोगोंका पता लगाना संभव नहीं है.

जैसा इक्कण्डन नायरसे वादा किया था, चन्तु नायर तीसरे दिन उसके घर आ पहुँचा. इक्कण्डन घरमें नहीं था, फिर भी गृह-लक्ष्मीने उसका स्वागत किया और बताया कि शामको पूजाके समयतक आजायेंगे. फिर उसने कहा—"कोई बात सुनी? आजकल यहाँ उसके सिवा चर्चाका विषय दूसरा है ही नहीं."

चन्तुने पूछा—ऐसी कौन-सी बड़ी बात हो गई ?

"वह शैतानकी बच्ची माक्कम् तम्पुरानको छोड़कर कंपनीवालोंके साथ हो गई ! बड़ी खराब है वह औरत !"

चन्तुने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा—क्या, ऐसी बात है ?

"हाँ ! हाँ ! बिलकुल सच है. सुना है कण्णवत्तु नम्पियारको भी तम्पुरानने ही मरवा डाला है. जहाँ जाओ वहाँ यही बात सुननेको मिलती है. अब उसका घमंड जरा कम होगा."

"माक्कम् ! उसका क्या ? रास्तेपर रखा हुआ तबला ! आने-जानेवालोंके लिए अपनी निपुणता दिखानेका एक साधन !"

"ओहो ! यहाँ बैठकर ये बातें करनेके सिवाय कुछ कर भी सकते हो ? उसके पास जाकर तो भीगी बिल्ली बन जाते हो ! उसका बड़प्पन आखिर है क्या ?"

चन्तुको लगा कि यह बात मेरे पौरुषको एक चुनौती है. उसको

स्मरण हो आया कि इतने दिन कैतेरीमें रहनेपर भी माक्कम्ने अपने साथ कभी मसखरी करनेका अवसर भी उसे नहीं दिया. उसनें कहा—"उसका यह बड़प्पन तो मैंने ही बनाया है."

यह थोड़ा-बहुत सच भी था. चन्तु नायरके उण्णियम्माके साथ विवाह करनेके बाद, उसके ही प्रयत्नसे, तम्पुरानने माक्कम्के साथ विवाह किया था. अब वह सोचने लगा—"उसका प्रताप और बड़प्पन! हम सब तुच्छ हैं ! दिखा दूँगा."

चिन्नम्माळुने आगमें घी डाला—"क्यों ? क्या माक्कम्की याद कर रहें हैं ? वह सब बेकार है. वह तो तम्पुरानकी केट्टिलम्मा है."

"आहा ! मैं भी जानता हूँ इन केट्टिलम्माओंको ! यदि मैं मर्द हूँ तो.........

"रहने भी दीजिए ! अच्छा, उनके आनेमें तो देरी होगी, कुछ लेंगे ?"

"दोगी तो क्यों नहीं लूँगा ? तुम भी शामिल हो जाओ !"

चिन्नम्माळुका स्वागत-सत्कार स्वीकार करनेके बाद ही चन्तु अन्तः-पुरमें जाकर उण्णियम्मासे मिला. उसने इस प्रकारकी अनेक बातें पत्नी-को बताई कि अब तम्पुरान चन्द दिनोंके ही मेहमान हैं, कम्पनीवाले बहुत जमीन-जायदाद हमें देनेवाले हैं. परन्तु, उण्णियम्मा चिढ़ी हुई थी कि चन्तु उससे मिलनेके पहले चिन्नम्माळुके पास रहकर आया है. इस-लिए अनेक कटूक्तियाँ सुनाकर उसने चन्तुको बाहर चला जानेके लिए विवश कर दिया. वह चिन्नम्माळुके पास लौट गया.

चिन्नम्माळुने माक्कम्के बारेमें उसके हृदयमें जो आग सुलगा दी थी वह मद्य-लहरीके कारण और भी तीव्र होने लगी. अंधेरा होते ही इक्कण्डन नायर नई बातें एकत्रित करके आया. परन्तु चन्तुको किसी बातमें विशेष उत्साह नहीं था. उसका रुख देखकर इक्कण्डन नायर भी जल्दी सोने चला गया. उण्णियम्माका कोप प्रज्ज्वलित कर देनेके कारण चन्तु-ने भी अपना बिस्तर बाहर ही लगवा लिया.

जब सब लोग गाढ़ निद्रामें लीन हो गये तब चन्तु कमरमें तलवार बाँधकर और मशाल लेकर घरसे निकला. कैतेरी-भवन उसकी यात्राका लक्ष्य था. वह भवन निस्तब्ध था. माक्कम् और नीलुक्कुट्टी भोजनसे निवृत्त होकर शयन-गृहमें प्रविष्ट हो चुकी थीं. कम्मू दालानमें पड़ा निद्रादेवीकी गोदमें जा चुका था. ऊँची दीवारको एक छलाँगसे पार कर लेना चन्तु-जैसे अभ्यासीके लिए कठिन नहीं था. उसने माना कि अब काम सरल है. कम्मूको एक वारसे खत्म किया जा सकता है और यदि माक्कम्ने खुशीसे दरवाजा न खोला तो उसे लात मारकर तोड़ा जा सकता है.

दीवार फाँदकर उसने चारों ओर देखा. कहीं कोई हलचल नहीं थी. दबे पैरों वह कम्मूके पास पहुँचा. उसे एक ही प्रहार से खत्म कर देनेके उद्देश्यसे उसने तलवार उठाई ही थी कि पास एक तीर आकर गिरा.

वह नहीं जानता था कि कैतेरी-भवनकी रक्षाके लिए तम्पुराननें कुरिच्योंको नियुक्त कर रखा है. अस्त्र देखते ही कुरिच्योंको समीप समझकर वह घबरा गया. उसने देखा कि अब मेरा उद्देश्य तो सफल हो ही नहीं सकता, साथ ही प्राण-रक्षाकी भी शंका है. कुरिच्योंसे बचनेका एक मात्र उपाय अन्धकार ही है समझकर उसने हाथकी मशाल घरके ऊपर फेंक दी और स्वयं भाग खड़ा हुआ. नारियलके पत्तोंसे छाया हुआ घर तुरन्त जलने लगा.

अन्दर सोई हुई माक्कम् या बाहर सोये हुए कम्मूने अग्नि-कांडको बहुत देरतक जाना ही नहीं. जलकर गिरनेवाली लकड़ियोंकी आवाजसे कम्मू जागा तो उसने देखा कि घरका एक भाग बिलकुल जल चुका है. आगकी गर्मी और धुएँ के कारण माक्कम् और नीलुक्कुट्टी भी जाग गईं.

आगको देखकर जन-समुदाय एकत्र हो गया, परन्तु किसीने उसे बुझानेका प्रयत्न नहीं किया. सभीके मुखपर यह भाव अंकित था कि "अन्नदाताको धोखा देनेका फल यही है !" दयासे प्रेरित होकर किसीने

आग बुझानेका प्रयत्न किया तो दूसरोंने यह कहकर उसे रोक दिया कि "तम्पुरान नाराज होंगे."

कम्मूने सबसे पहले कमरेमें सोई हुई माक्कम् और नीलुक्कुट्टीको बचानेका प्रयत्न किया. परन्तु चारों ओर आग फैल चुकी थी, और यह रक्षा-कार्य असम्भव हुआ जा रहा था. दरवाजा खोलकर माक्कम् बाहर निकलने लगी तो धुएँके कारण बेहोश होकर गिर पड़ी. यह देखकर नीलुक्कुट्टीने चिल्लाना शुरू किया. आवाजसे विह्वल होकर कम्मू सब-कुछ भूलकर अन्दर घुस गया, किसी भी प्रकार बेहोश पड़ी माक्कम्को उठाकर वह वायु वेगसे बाहर निकल आया. अभ्यास-सिद्ध देहलाघवके कारण नीलुक्कुट्टी भी साथ साथ-बाहर आ गई.

ग्रामवासियोंकी सहायताकी कोई आशा न देखकर कम्मूने इधर-उधरसे दौड़कर आये हुए कुरिच्योंकी सहायतासे आग बुझानेका प्रयत्न किया. रात्रिके अन्तिम प्रहरमें आग काबूमें आ गई. उसके बाद वह सोचने लगा कि नीलू और माक्कम्को कहाँ ले जाया जाय ?

अठारहवाँ अध्याय

आली मूसा मरय्कार उस समय केरलके व्यापारियोंमें प्रमुख था. कुळच्चल* से लेकर मंगलापुरम्† तकके बंदरगाहोंसे तरह-तरहका व्यापार करके धनिक बने हुए दूसरे बहुत-से गुजराती, कोंकणी और मुसलमान व्यापारी मौजूद थे, परन्तु उन सबका नेतृत्व मूसा ही करता था. बंबई, मद्रास, कलकत्ता आदि स्थानोंमें उसके गोदाम, आढ़त, दलाल और प्रबंधक आदि थे. इसके अलावा उसके जहाज अरब, मिस्र आदि देशोंमें भी व्यापारके लिए जाया करते थे. अंग्रेज कंपनियोंके साथके व्यापार-का एक बड़ा भाग मूसाके हाथमें था. डचों, फ्रांसीसियों और मराठोंके साथ भी उसका अच्छा सम्बन्ध था. इन सब बातोंको देखकर यह कहना सत्य ही होगा कि वह दक्षिण भारतकी व्यापार-शक्ति और सम्पत्प्रताप का मूर्त रूप था.

उसके जहाज ईस्ट इंडिया कंपनीकी छत्र-छायामें सातों समुद्रोंमें स्वच्छन्द विहार किया करते थे. अधिकार-पत्रोंके आधारपर दक्षिणापथ-

---

* एक बन्दर-स्थानका नाम.

† मंगलौर.

की राजधानियोंमें उसके व्यापार-केन्द्र उन्नति कर रहे थे. कंपनीके लिए आवश्यक साधन एकत्रित करनेमें उसकी सावधानी, उसके हिताहितके प्रति उसकी जागरूकता आदिसे कंपनीवाले भी उससे प्रसन्न थे.

उसका व्यापार स्थानोंकी दृष्टिसे ही नहीं, मालकी दृष्टिसे भी सर्वव्यापी था. जिसमें लाभ हो उस व्यापारको करनेमें वह कभी आगापीछा नहीं करता था. चावलके व्यापारसे लेकर गुलामोंके व्यापारतक सबमें उसका समान हिस्सा था.

तलश्शेरीकी सब मुख्य सड़कों, बाजारों और राज-मार्गके पार्श्वोंपर जो-जो व्यापार-गृह और इमारतें थीं, सबका मालिक मूसा ही था. राज-मार्गसे कुछ हटकर एक महाप्रासाद उसका निवास-स्थान था. उसका भवन केरलीय प्रभुजनोंके भवनों-जैसा नहीं था, बल्कि मद्रास, अर्काट, श्रीरंगपट्टन आदिके मुसलमान धनिकोंके भवनोंकी शिल्प-कलाका नमूना था. शिल्प-वैचित्र्य और साज-सज्जामें वह केरलके राजा-महाराजाओंके प्रासादोंको भी चुनौती देनेवाला था. प्रवेश-द्वार पार करते ही एक सुन्दर वाटिका पड़ती थी. स्थान-स्थानसे लाकर लगाये गए वृक्षों, पुष्प-मंजरियोंसे परिपूर्ण लता-कुंजों, पुष्पयुक्त गुलाबके पौधों और सुन्दर उद्यान-मार्गों आदिसे सुशोभित वह वाटिका मूसाके वैभव और उसकी रसिकताका प्रत्यक्ष प्रमाण थी.

उस वाटिकाके बीचमें सुशोभित सुन्दर प्रासाद इस सुख-लोलुप लक्ष्मी-पुत्रके योग्य ही था. फारसके बेशकीमती कालीनों, यूरोपसे मँगाये गए झाड़-फानूसों और विभिन्न देशोंसे प्राप्त साज-सामानसे वह प्रासाद सुसज्जित था. सामने एक विशाल अतिथिशाला और उसके साथ पाश्चात्य तरीकेसे सज्जित दीवानखाना था. कुछ पीछेकी ओर उसका अन्तःपुर था. कहा जाता था कि उसमें अगणित अप्सराओंको लाकर रखा गया है. लोगोंका अनुमान था कि हैदरके आक्रमणके समय अनेक प्रभुगृहोंसे लापता हुई कुल-कन्याएँ इसी प्रासादकी शोभा बढ़ा रही थीं.

वेलेस्लीके तलश्शेरीमें आनेपर उसके सत्कारके लिए मूसाने एक भारी समारोह किया था. उसमें केरलमें निवास करनेवाले सभी पाश्चात्य प्रभुजन उपस्थित थे. विभव-समृद्ध भोजन-पानीय, संगीत, नृत्य और आतिशबाजी आदिका राजोचित प्रबंध किया गया था.

कर्नल वेलेस्ली-जैसे बड़े अधिकारीको भी अपने घरमें बुलाकर सत्कार करनेके लिए पर्याप्त सम्पत्ति और प्रभाव रखनेवाले मूसाके प्रति तलश्शेरीमें किसीको शंका नहीं हो सकती थी. किसीको यह शंका भी नहीं थी कि अम्पु नायरको तलश्शेरीमें आने-जानेकी सुविधा भी मूसासे ही मिली थी. नगरके बाहर मूसाका एक मकान था. कम्पनीवालोंको शंका थी कि उसका उपयोग गुलामोंको खरीदने-बेचने तथा तस्कर-व्यापारके लिए किया जाता है. परन्तु इतने तुच्छ कार्यके लिए अधिकारी मूसाको विरोधी बनाना नहीं चाहते थे. वहाँ दिनमें तो बिलकुल शान्ति, किन्तु रात्रिमें बेहद चहल-पहल रहती थी. मूसाके सशस्त्र पहरेदारोंसे सुरक्षित उस मकानके अहातेमें प्रवेश करनेका साहस, विशेषकर रातमें, किसीको नहीं होता था. उस स्थानमें तलश्शेरी दुर्गमें होकर मूसाके निवास-स्थानपर जानेवालोंको रोका न जाय, ऐसी आज्ञा सुपरवाइजरने दे रखी थी और अम्पु नायर मूसाके एक मुंशीके रूपमें ही तलश्शेरी आया-जाया करते थे.

जनताकी मान्यता थी कि मूसा और चिरुतक्कुट्टीके बीच कोई सम्बन्ध है. इसीलिए मूसाके गुलाम-व्यापारको, जानकारी होते हुए भी, कंपनीवाले रोकते नहीं थे. लुई पेरेरा मूसाका घनिष्ठ मित्र था. यह भी सर्व-विदित था कि मलयाली और मुसलमान त्योहारोंपर मूसाके घरसे बहुत-सा सामान चिरुतक्कुट्टीके घर जाया करता है.

देशके प्रभु-जन जब कभी तलश्शेरी आते तो उनका आदर-सत्कार करनेमें मूसा कभी कोई कमी नहीं करता था. चन्द्रोत्तु नम्पियार प्रति-सप्ताह तलश्शेरी आते थे और मूसासे मिले बिना नहीं लौटते थे. दोनों

ही कंपनीवालोंके मित्र थे. इसलिए उनकी इस मुलाकातमें किसीको कोई विशेषता मालूम नहीं होती थी.

जब कण्णावत्तु नम्पियार तलश्शेरीमें लाये गये थे तब मूसा रमजानके रोजे रख रहा था और अपने घरमें ही रहता था. जब सुना कि नम्पियार हिरासतमें हैं तो उसे व्याकुलता हुई, किन्तु जब उन्हें रखनेके लिए उसके ही मकानकी माँग की गई तो उसे बड़ा आश्वासन मिला कि तत्काल कोई विपत्ति आनेवाली नहीं है. शामको जब समाचार मिला कि किसी प्रकार उन्हें बचा लेना चाहिए तब उसने यही सोचा था कि अभी समय है. उसने आज्ञा दे दी कि दूसरे दिन सुबह ही यह कर्तव्य पूर्ण किया जाय.

परन्तु दूसरे दिन सुबह जब वह नित्य-कर्मसे निवृत्त होकर अपने बागमें टहल रहा था तब उसे एक विश्वास-पात्र कर्मचारीसे नम्पियारकी हत्याका समाचार मिला. कर्नलकी दूरदर्शिता और चतुराईसे वह आश्चर्य-चकित हो गया. इसको उसने अपनी पराजय माना. उसको विश्वास था कि नम्पियारको बचानेके लिए उसने जो प्रबंध कर रखा है उसका अनुमान भी वेलेस्ली नहीं कर सकेगा. परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि चिरुतक्कुट्टीने फल आदि लेकर जिन आदमियोंको भेजा था वे गिरफ्तार कर लिये गए और दूसरे दिन लुई पेरेरा भी गायब कर दिया गया तो वह घबरा गया. उसे यह भी पता नहीं चल सका कि पेरेराका हुआ क्या ?

कर्नल वेलेस्लीके सामर्थ्य और अधिकारियोंपर उसके प्रभावसे परिचित मूसा मरक्कार उसके साथ मित्रता रखनेका निरंतर प्रयत्न करता रहा. वह अच्छी तरह जानता था कि यदि उसे मेरे षड्यंत्रोंका पता चल गया तो वह मेरा नाश किये बिना न रहेगा. इसलिए उसके आनेके बादसे मूसाने अपने कार्योंको अत्यन्त गुप्त रूप दे दिया था. उसे निश्चय मालूम था कि मेरे विरुद्ध कोई प्रमाण पेरेराके पास नहीं है.

और, जबतक निश्चित प्रमाण नहीं है तबतक वेलेस्ली मेरे-जैसे प्रबल व्यक्तिके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करेगा.

पेरेराने मूसाका नाम बताया तो वेलेस्लीको भरोसा नहीं हुआ. उसके द्वारा कंपनीको जो सहायता मिलती थी और कंपनीके द्वारा उसका जो व्यापार चलता था उस सबको सोचकर वेलेस्लीने उसके विरुद्ध शंका करनेकी भी गुंजाइश नहीं देखी. इसलिए उसने मान लिया कि पेरेराने अपनी और चिरुतक्कुट्टीकी रक्षाके लिए यह कहानी गढ़ी है. पेरेराकी बातोंके सिवा कोई प्रमाण भी नहीं था.

फिर भी उसने मूसासे पूछनेका निश्चय किया और उसे बुलानेके लिए आदमी भेजा. मूसाने उत्तर भेज दिया कि मैं रोजेके कारण किसीसे मिलने नहीं जाता. किन्तु यदि कर्नल साहबको अनिवार्य रूपसे आवश्यक मालूम होता हो तो संध्याके बाद रोजा खोलनेपर उपस्थित होऊँगा.

मूसा प्रभु-जनोंके साथ समानताका व्यवहार करनेका अभ्यस्त तो था ही, साथ ही निर्भय भी था. संध्याके बाद मुसलमान प्रभुका वेष धारण करके चार-पाँच नौकरोंके साथ वेलेस्लीके बंगलेपर पहुँचा. वेलेस्लीके अंगरक्षकने उसका आदरपूर्वक स्वागत किया. कर्नल स्वयं भी प्रसन्नताके साथ मिला. परस्पर उचित आचारोपचारके बाद वेलेस्लीने कहा—"मैं जानता हूँ कि आप कंपनीके मित्र हैं और सदा उसे सहायता करनेको तत्पर रहते हैं. इसीलिए एक आवश्यक कार्यके हेतु आपको आमंत्रित किया है."

"अल्लाहके रहमसे और आपकी मिहरबानीसे हमारे-जैसे नाचीज लोगोंकी जिन्दगी सुखसे कटती है. मेरे कहे बिना ही आप जानते हैं कि मैं हमेशा कंपनीके लिए कुछ भी करनेको तैयार हूँ."

"हाँ, तो सुनिए—हमारे सब प्रयत्न करनेपर भी मलाबारकी स्थिति शान्त नहीं हो रही है. इसका मूल कारण केरलवर्मा है. परन्तु

यह तो सच है कि आवश्यक सहायता न मिले तो वह कुछ नहीं कर सकता. मुझे पता चला है कि उस विद्रोहीको मदद करनेवाले कुछ लोग तलश्शेरीमें ही हैं."

"तो उनको जड़-मूलसे नाश कर देनेमें देरी क्या है? वे हैं कौन?"

"यह मुझे भी निश्चित नहीं मालूम. जिस समय मालूम होगा उस समय वे फाँसीपर ही लटकेंगे, फिर कोई भी क्यों न हों."

इशारा स्पष्ट था. मूसाने उत्तर दिया—"जरूर ! इसमें शक क्या है ? उनको खोज निकालनेमें सब प्रकारकी सहायता मैं करूँगा. उन्होंने कैसे मदद की, आप जानते हैं ?

"एक बात मैं कहूँ—मैंने कहा था न कि केरलवर्माको कोई भोजन-सामग्री न भेजे, और जो भेजेगा उसे मृत्यु-दण्ड दिया जायगा ? इसके बाद भी एक हजार बोरे चावल उसके अड्डे पर पहुँचा है. हमें पता लगाना है कि यह कैसे हो सका."

मूसाने आश्चर्यके साथ उद्गार व्यक्त किया—"हजार बोरे चावल ! इतना चावल तो मेरे बिना जाने इस देशके अन्दर आ ही नहीं सकता ! चावल आजकल जगह-जगह बिकता है. किसी दलालने अलग-अलग जगहोंसे खरीदकर तो नहीं बेच दिया ? इस बातकी विश्वस-नीयतापर भी मूसाके प्रत्येक शब्दसे संदेह टपक रहा था.

वेलेस्लीने कहा—यदि किसीने इतना जाननेपर भी कि यह केरल-वर्माके लिए है उस चावलको बेचा हो तो उसे कठोर दण्ड दिया जायगा.

मूसा—ऐसा ही करना चाहिए. मैं भी पता लगाऊँगा कि इतने साहसके साथ काम करनेवाला कौन है. यह मेरे भी सम्मानका प्रश्न है.

इतने निश्चित रूपसे बातें करते देखकर कर्नलके मनमें भी संकोच होने लगा. उसको भी विश्वास हो गया कि यह सब कैसे हो रहा है. शंका केवल इस बातकी थी कि जिसने भी किया उसने केरलवर्माकी

मदद करनेके इरादेसे किया या केवल खरीदकर भेज दिया.

कर्नलके पाससे लौटनेपर मूसाने अपनी संपत्ति—नकदी आदि—जहाजद्वारा आलप्पुषा* भेज दी. उसका एक जहाज सामान लेकर रवाना होने ही वाला था, वही इस काम आ गया. एक दूसरा जहाज भी बन्दरगाहमें तैयार रखा गया.

* एलेप्पी.

उन्नीसवाँ अध्याय

तम्पुरानकी उदासीनता पूर्ण रूपसे नहीं हटी. फिर भी उनके सेना-निवेशमें कुछ हलचल सबको दिखलाई पड़ रही थी. अरळात्तु नम्पिको भी वह दिखलाई दी. उन्होंने देखा कि यद्यपि महाराजा कथकलि, शतरंज और काव्य-रचनामें निमग्न हैं फिर भी उस सेना-निवेशमें लोगोंका आवागमन बढ़ गया है. एडच्चेन कुंकन नायरके साथकी बातचीत भी प्रतिदिन अधिक लम्बी होती जा रही थी. नम्पि जानता था कि कुंकन नायरके अधीन एक नायर-दल गुप्त रूपसे शस्त्रास्त्रकी शिक्षा ग्रहण कर रहा है. परन्तु यह उसे हाल में ही ज्ञात हुआ कि उस दलको पाश्चात्य ढंगकी कवायद आदि सिखलाई जा रही है. उसका निरीक्षण करनेके लिए महाराजा स्वयं भी जाया करते थे. अब उसे भी विश्वास हो गया कि तम्पुरान कुछ करनेवाले हैं.

तलयक्कल चन्तु एक सप्ताहसे वहाँ नहीं था. दोनों छोटे राजकुमार भी कहीं गये हुए थे. वेल्लूर एमन नायर और कुंकन नायर ही नम्पिके साथ महाराजाकी सेवामें रह गये थे.

पहाड़पर यह समाचार पहुँच चुका था कि कर्नल वेलेस्ली धनुष

मास* की १६ तारीखको तलश्शेरीसे रवाना होनेवाला है. मराठोंके साथ जो युद्ध होनेवाला है उसमें कर्नल वेलेस्लीको प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया गया है और इसका फरमान दो दिन पूर्व ही तलश्शेरी-में पहुँचा है. चन्द्रोत्तुके पाससे आया हुआ संदेशवाहक यह समाचार महाराजाको दे गया था.

धनुष मासकी दूसरी तारीखको तलयक्कल चन्तुके साथ चोक्करायर सेना-निवेशमें आया. जाते समय और लौटते समयके उसके भावोंमें बहुत अन्तर था. पदके अनुसार वेश-भूषा और अनुचरों आदिके साथ आये हुए उस सैनिक का महाराजाने स्नेहके साथ आलिंगन किया और उसका उचित स्वागत करके उसे अपने अर्धासनपर बैठाया. सेवकोंने आकर जो उपहार सामने रखे उन सबको एक बार देखकर महाराजाने कहा—"मैं यह नहीं पूछता कि आप किस कामके लिए गये थे और सब कैसा रहा. सुविधासे मुझे बताइएगा कि प्रबंध क्या-क्या है."

चोक्करायरने महाराजाका इंगित समझ लिया कि सबके सामने बातें नहीं होनी चाहिएँ. अतएव उसने संकेतकी भाषामें उत्तर दिया—"जैसा सोचा था पूरी तरह वैसा ही तो सब नहीं हो सका, फिर भी इतना प्रबन्ध हो गया है कि कोई असुविधा नहीं होगी."

चोक्करायरकी बातें सुननेकी उत्सुकता होनेपर भी तम्पुरानने उपयुक्त समयकी प्रतीक्षा करना ही उचित समझा. उन्होंने साधारण बातें

* अगहन. केरलमें महीनोंकी गणना सूर्यके संक्रमणके अनुसार की जाती है. सूर्य जिस राशिमें होता है उसके ही नामसे वह मास पुकारा जाता है. इस प्रकार महीनोंके नाम ये हैं—१. चिङ्ङम् (सिंहम्), चिङ्ङ-मासम् (सिंहमासम्)—श्रावण. २. कन्निमासम्, (कन्यामासम्) ३. तुलामासम्, ४. वृश्चिकमासम्, ५. धनुमासम्, ६. मकरमासम्, ७. कुम्भमासम्, ८. मीनमासम्, ९. मेड़मासम् (मेषमासम्) १०. इडव-मासम् (ऋषभमासम्) ११. मिथुनमासम्, १२. कर्कटकमासम्.

शुरू करते हुए कहा—"सुना है, कर्नल पन्द्रह दिनोंके अन्दर कलकत्ता चला जायगा. आपके कहे अनुसार ही सब होता दीखता है."

चोक्करायरने उत्तर दिया—वेलेस्लीको सेनानायक नियुक्त किया गया है सो तो मैंने सुना था, परन्तु तत्काल ही प्रयाण करनेकी बात नहीं मालूम हुई थी.

"वेलेस्लीके जानेके बाद तो आप हमारे साथ रह नहीं सकते? मैं भी प्रबन्ध कर सकता हूँ कि आपके पद-मान-आदर आदिमें कोई कमी न हो."

"आप-जैसे महानुभावकी सेवा करनेका अवसर मिला इसे मैं अपना अहोभाग्य मानता हूँ. वेलेस्लीके चले जानेके बाद यहीं ठहरनेका विचार मैंने कर रखा था, परन्तु दुर्भाग्यसे वह संभव नहीं है."

"सो क्यों ?"

"राजमाता और अन्य बन्धु-बान्धवोंका आग्रह है कि मुझे मैसूरमें ही रहना चाहिए. वहाँ भी महा संकट आ पड़ा है. कंपनीवालोंने राजाधिकार-को एकदम समाप्त कर रखा है. प्रधानमन्त्री पूर्णतया उनका सहायक बन गया है. महाराजा अथवा लोकनेताओंको कोई अधिकार नहीं है. राजवंश-की सहायता करनेका उनका साहस नहीं होता. इसलिए तत्काल वापस पहुँच जानेका वादा करनेपर ही राजमाताने यहाँ आनेकी अनुमति दी है."

"अपका कहना ठीक है. निश्चय ही आपका प्रथम कर्तव्य अपने देश-के प्रति है. अपने स्वामी और मातृभूमिको भूल जानेवाला और कहाँ टिक सकता है ? परन्तु मेरे लिए एक काम करके ही जाना होगा."

"क्या ? आदेश कीजिए."

"ठहरकर कहूँगा."

महाराजाने शान्त संकेतसे सबको वहाँसे हटा दिया. फिर पूछा—"कहो मित्र ! क्या-क्या कर सके ?"

"पहले अनिष्ट समाचार दे दूँ. पूर्णय्या* हमारे विरुद्ध है. वह कंपनी-

---

* मैसूरका तत्कालीन प्रधानमंत्री.

का सेवक बना हुआ है. इसलिए उससे सहायता नहीं मिल सकती. मंत्रि-परिषद् भी उसके अधीन है, इसलिए उससे भी हमें कोई लाभ नहीं. राजमाता पूर्णतया हमारे साथ हैं, किन्तु उनमें कुछ करनेकी शक्ति नहीं है."

महाराजा ध्यानसे सुन रहे थे. उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया. चौक्करायरने आगे कहा—"अपनी ओरसे मैंने कुछ प्रबन्ध किया है. भोजन-सामग्री और युद्ध-सामग्री समय-समयपर वयनाट्टुमें पहुँचाई जाती रहेगी. उसके सम्बन्धमें आवश्यक लिखा-पढ़ीके कागजात ये हैं. उसकी जिम्मेदारी गौण्ड† सेठोंने ले ली है. जो-कुछ चाहिए, मेरी जमानतपर वे वयनाट्टु सीमातक पहुँचाते रहेंगे. वहाँ आप उसे ले लीजिए. इस सबको ठीक तरहसे करवाते रहनेके लिए भी मेरा वहाँ रहना आवश्यक है."

"श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपा ! अब कंपनीवाले जो चाहें सो कर लें. हमने वयनाट्टुमें प्रवेश कर लिया तो फिर कोई क्या कर सकता है? मेरे मित्र ! आजसे तुम मेरे मित्र नहीं, केरलवर्माके सगे भाई हो ! तुम्हारी यह सहायता मैं कभी भूल नहीं सकता."

"दु:ख यह है कि मैं इससे अधिक आपके लिए कुछ भी नहीं कर पाया."

"इससे अधिक मुझे चाहिए क्या ? कलके लिए भोजन कहाँसे आयगा, इस अनन्त चिन्तासे तुमने मुझे मुक्त कर दिया. और अधिक नहीं कर सके तो क्या यह कुछ कम है ?"

"यदि इतनेसे आप सन्तुष्ट हैं तो मुझे वापस जाने दीजिए. गौण्ड व्यापारी प्रतिज्ञा भंग न करें इसकी व्यवस्था मैं कर लूँगा."

"जाने दूँगा, परन्तु तुरन्त नहीं. दो सप्ताह बाद. संक्षेपमें सब-कुछ बताऊँगा. अगले सप्ताह कोट्टयं जाकर वहाँ अपने राजमहलमें कुछ दिन

---

† व्यापार करनेवाली एक तमिल जाति.

रहनेका विचार कर रहा हूँ. यदि वहाँ तुम भी मेरे साथ हो तो कितना आनन्द होगा !"

चोक्करायर आश्चर्यसे आँखें फाड़कर महाराजाकी ओर देखने लगा. कोट्टयं नगरी गोरी सेनाकी छावनी बन गई है. वहाँ कंपनीका एक किला भी है. यह महाराजा और चोक्करायर दोनों जानते थे. इतनी शान्तिसे आतिथ्य स्वीकार करनेके लिए जहाँ आमंत्रित किया है वह शत्रु-सेनाका शिविर है. अचानक ही चोक्करायरके मुँहसे निकल गया— "क्या ? कोट्टयंमें ? वहाँ ·····!"

महाराजाने कहा—"हाँ ! कोट्टयंमें ही ! कुछ दिन भी वहाँ रहे बिना हम वयनाट्टु चले जायँ तो यही माना जायगा कि शत्रुओंसे डरकर जंगलमें छिप गए. जनता भी यही मानेगी कि वेलेस्ली हमको हराकर चला गया. इसलिए कम-से-कम एक महीना वहाँ रहकर अपनी प्रजाको प्रसन्न करनेका हमारा इरादा है."

चोक्करायर तब भी नहीं समझा. कम्पनीके दुर्गको क्या यों ही अपने अधीन किया जा सकता है ? यह कैसे होगा ? उसकी शंकाएँ उसके मुखपर प्रकट हुई. महाराजाने कहना जारी रखा—"मित्रवर ! तुम्हारी विचार-सरणी मैं समझ रहा हूँ. मैं भी जानता हूँ कि कोट्टयंपर अधिकार करना इतना सरल नहीं है. परन्तु तुम्हारी सहायता हो तो उसमें कोई कठिनाई या बाधा नहीं होगी."

इसके बाद महाराजा और चोक्करायर बहुत देरतक बातें करते रहे. तम्पुरानने अपनी सारी योजना उसे समझा दी और उसके विस्मयकी सीमा नहीं रही. आदरके साथ वह इतना ही कह सका—"निःसन्देह, आपकी आज्ञाओंका पूरा-पूरा पालन हो जायगा. मैं स्वयं इसकी जिम्मेदारी लेता हूँ. इन विचारोंको और कौन-कौन जानता है ?"

"केवल एडच्चेन कुंकन नायर. मेरे भानजे भी अबतक नहीं जानते. प्रस्थान करनेके दिन पूर्ण योजना उनको बतानेका निश्चय किया है."

इस गुप्त सम्भाषणके बाद तम्पुरान बाहर निकल आए. उन्होंने वेल्लूर एमन नायर और अरळात्तु नम्पि आदि चार-पाँच प्रमुख व्यक्तियों-को बुलाकर कहा—"मैं जो-कुछ कह रहा हूँ. वह अति गोपनीय है. आप जानते हैं मैंने 'वृश्चिक व्रत'* लिया है. यह व्रत श्रीपोर्कली भगवतीको विशेष प्रिय है. यह जिस दिन समाप्त होगा उस दिन मैंने कोट्टयंमें ही रहनेका निश्चय किया है. आप सब लोग देशमें चले जायें और सब सामन्तों तथा प्रभुओंको उस दिनके उत्सवमें सम्मिलित होनेका निमन्त्रण दे दें. उनके आदर-सत्कारके लिए उचित प्रबन्ध भी करें."

तम्पुरानकी आज्ञा सुनकर वे सब एक-दूसरेकी ओर देखने लगे. अन्तमें महाराजाने ही पूछा—"क्यों एमन नायर, बोलते क्यों नहीं ?"

एमन नायर—अन्नदाताकी आज्ञा शिरोधार्य है. इसके बाद निवेदन करनेको रह ही क्या जाता है ? इतना ही जानना चाहता हूँ कि रवाना कब हो जाऊँ.

महाराजाने मुसकराकर कहा—नम्पिको क्या शंका हो रही है ?

नम्पि—तम्पुरानने निश्चय किया तो शंका किस बात की ? फिर-भी इतनी शंका तो मनमें उठती ही है कि क्या यह साहस नहीं है ? गोरी सेनाकी छावनी है. सोचकर कदम उठाना है. परन्तु श्रीपोर्कली भगवतीका काम है तो शंका नहीं करनी चाहिए. और फिर, यहाँ बैठे-बैठे मन भी तो ऊब गया है !

तम्पुरानने हँसकर कहा—नम्पिको प्रसन्न करना कठिन है. कुछ न करूँ तो उठनेकी शक्ति नहीं, उदासीन रहते हैं आदि सुनायेंगे. कुछ करने लगूँ तो दुस्साहस कर रहा हूँ, कहकर आक्षेप करेंगे. यहाँ तो अब कठिनाई होने लगी है. रसोईके अधिकारियोंका कहना है कि कम्पनी-वालोंने अनाजका आना रोक दिया तो अब कोठारमें कमी पड़ रही है.

---

* वृश्चिक (कार्तिक) मासकी पहली तारीखसे ४१ दिनका व्रत, जो कात्यायनीदेवीके प्रीत्यर्थ किया जाता है.

साथके लोगोंको खाना भी न दे सकूँ तो कैसे काम चलेगा ? कोट्टयंमें होंगे तो यह कष्ट नहीं होगा. इसलिए वहीं रहनेका विचार किया है.

भोजन-सामग्री कम होने लगी है यह सभी जानते थे. देशमें नियुक्त प्रबन्धकर्त्ता कितना ही प्रयत्न करनेपर भी चावल, धान या अन्य वस्तुएँ एकत्र करनेमें समर्थ नहीं हो रहे थे. उण्णिमूप्पन कम्पनीवालोंके किसी दलपर डाका डालकर जो सामान ले आये थे उसीसे काम चल रहा था. कुछ भी हो, सबको लगा, महाराजाका यह कथन कि भोजन-सामग्री न मिलनेका संकट मिटानेके लिए कोट्टयं ही चले जायेंगे, भोजन-प्रिय नम्पिके लिए उचित उत्तर है.

तम्पुराननें आगे कहा—किसीको शंकाका अवकाश नहीं है. मण्डलावसान*के समयमें देवी-दर्शनके लिए कोट्टयं राज-मन्दिरमें पहुँच जाऊँगा. किन्तु अभी यह किसीसे कहना मत. मेरी इच्छा है कि कोट्टयं राज्यके सभी प्रमुख व्यक्ति उस दिन वहाँ उपस्थित रहें. आपमेंसे कौन कहाँ जाय, इसका निर्णय आप लोग ही कर लें.

इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि कैतेरीमें पहरेके लिए नियुक्त एक कुरिच्य-सैनिक वहाँ उपस्थित हुआ. वह क्या संदेश लाया है सो जाननेके लिए एमन नायरको बाहर भेजा गया. कुरिच्यने उन्हें कैतेरी-भवनकी अग्निका समाचार सुनाते हुए बताया कि शरीरमें इधर-उधर जली हुई केट्टिटलम्माको कम्मू तथा कुरिच्योंने रातको एक तेलीके घरमें रखा था; प्रभात होते ही वे किसी दूसरे स्थानको रवाना हो गये.

एमन नायरने तम्पुरानको समाचार दे दिया.

यह भीषण समाचार पानेपर भी महाराजाके मुखपर कोई विकार प्रकट नहीं हुआ. "तो अब चलिए, कोट्टयंमें मिलेंगे"—कहकर उन्होंने सबको उपचारपूर्वक विदा किया. उसके बाद तलय्कल चन्तुको बुलाया.

---

* इकतालीस दिनोंका एक मण्डल होता है. अतः ऐसे व्रतको मण्डल-व्रत कहा जाता है. मण्डल-व्रतका अन्त—मण्डलावसान.

श्रीरामचन्द्रके सामने हनुमानके समान हाथ जोड़कर खड़े हुए उस स्वामि-भक्तको देखकर महाराजाने कहा—"कुरिच्य जो समाचार लाया है वह सुना ?"

"जी हाँ !"

"मैं अभी रवाना हो रहा हूँ. क्या होगा, कह नहीं सकता. कुछ भी हो, हमने जो निश्चय कर रखा है उसमें कोई अन्तर न हो पाये. उसकी जिम्मेदारी तुम्हारी, कुंकनकी और चौक्करायरकी है. अब मैं वापस इधर आकर सब-कुछ नहीं कर पाऊँगा. अब नेड्डुपरंपिल† राजमहलमें मिलेंगे."

"जी हाँ !" चन्तुने साहस बटोरकर कहा और फिर पूछा—"बिना जाने तम्पुरान कहाँ जायेंगे ? ऐसी हालत में रवाना होना ठीक है ?"

एक हल्की-सी मुस्कराहट महाराजाके होठोंपर खेल गई. उन्होंने उत्तर दिया—"उसको कहाँ ले गये—कैतेरीके कुरिच्य तो जानते होंगे ? देखा जायगा."

महाराजाने चोक्करायर और कुंकनको सारा कार्यक्रम समझा दिया. बादमें बड़ी केट्टिलम्मासे मिलकर बिदा लेनेके पहले कुंकन नायरको अलग बुलाकर कहा—"कोट्टयंमें प्रवेश करते समय यदि कुआनी साथ न हुई तो उनको बहुत दुःख होगा. सब बातें बताकर कल ही उन्हें आवश्यक रक्षा-प्रबन्धके साथ गुप्त मार्गसे वहाँ भेज देना. तुम लोगोंका उन्हें अपने साथ रखना ठीक नहीं होगा."

माक्कम्के ऊपर आई हुई बिपत्तिकी बात सुनकर बड़ी केट्टिलम्मा-को अत्यधिक व्यथा हुई. जब तम्पुराननें कहा—"मैंने स्वयं देशमें भ्रमण-के लिए जानेका विचार किया है, कुछ दिन लगेंगे, तुम मण्डलावसानमें कोट्टयं जाकर श्रीपोर्कली भगवतीकी आराधना कर आना, आवश्यक प्रबन्ध कर दिया है"—तो उनको सान्त्वना मिली.

---

† कोट्टयसे लगभग चार मीलकी दूरीपर पुराना राजमहल, जिसमें ठहरकर कोट्टयंपर आक्रमण किया गया था.

केट्टिटलम्माने कहा—"बहनको ज्यादा कुछ नहीं हुआ यही ईश्वर-की कृपा है. आपसे मिलकर वह बिलकुल स्वस्थ हो जायगी. उसको बहुत सँभालना.

फिर उन्होंने रेशमके कपड़ेमें लपेटा हुआ एक ताल-पत्रका टुकड़ा पतिके हाथोंमें सौंपते हुए कहा—"मेरी ओरसे यह उसको दे देना. यह एक रक्षा-कवच है. इसके प्रभावसे वह किसी भी रोगसे मुक्त हो सकती है. उसके हाथमें ही देना."

महाराज उस कवचको लेकर पत्नीको खोजनेके लिए निकल पड़े.

बीसवाँ अध्याय

जैसा कि कुरच्चियने तम्पुरानको बताया था, कम्मूने वहाँ आये हुए पहरेदारोंकी मददसे तत्काल माक्कम् और नीलुक्कुट्टीको निकट ही एक तेलीके घरमें पहुँचा दिया था. देशवासियोंका विरोध देखकर उसने निश्चय कर लिया था कि प्रभात होनेके पहले ही उन्हें उस प्रदेशसे कहीं दूर चले जाना चाहिए. परन्तु जायँ कहाँ ? तम्पुरानके पास पहुँचना संभव नहीं था. और किसी स्थानमें ले जायँ तो स्वाभिमानी अम्पु नायर क्या कहेंगे ? इतना ही नहीं, जहाँ-कहीं जायँ विरोधी दलके हाथोंमें न पड़ें, यह भी ख्याल रखना था. उसने अनुमान किया था कि यह कार्य करनेवाला कोई प्रबल व्यक्ति होना चाहिए. जब उसने तम्पुरानकी प्राणप्रियापर ही आक्रमण करनेका प्रयत्न किया तो वह और कुछ भी करनेसे नहीं चूकेगा. सब सोचनेके बाद उसने निश्चय किया कि अपनी स्वामिनी और नीलुक्कुट्टीको चन्द्रोत्तु नम्पियारके यहाँ पहुँचा देना ही उचित होगा.

पहरेदारोंके नायक कुरिच्यको भी यह ठीक लगा. कहींसे वह एक पालकी ले आया और प्रभात होनेके पहले ही उसे कुरच्चियोंसे उठवाकर उन्होंने उस प्रदेशको छोड़ दिया.

मध्याह्नमें वे पानूर पहुँच गए. शिविकाको खेतकी सीमापर छोड़-कर कम्मू अन्दर गया और उसने मालिकसे सब बातें बताईं. मध्याह्न-भोजनके बाद आराम करते हुए गृहपतिको उठाना नौकरोंको अच्छा नहीं लगा, परन्तु जब एकके कानमें यह कहा गया कि कैतेरीसे आये हैं तो सब बाधाएँ विलीन हो गईं और चन्द्रोत्तु नम्पियार स्वयं नीचे आ गए.

नौकरोंके हट जानेपर कम्मूने सारी बातें नम्पियारको बताईं. नम्पि-यारने कहा—"यह तो पषयंवीट्टिल चन्तुका ही काम होगा. देशवासियों-ने मदद क्यों नहीं की, यह भी मैं जानता हूँ. अच्छा, पालकी शीघ्र अन्दर लिवा लाओ, मैं सब प्रबन्ध किये देता हूँ."

जब कम्मूने बताया कि पालकी कुरिच्योंके हाथमें है तो उनसे लेकर अन्दर लानेके लिए नम्पियारने अपने नौकरोंको भेज दिया. बादमें उन्होंने अन्तःपुरमें जाकर अपनी पत्नीको सब हाल बताया और अन्दरके एक कमरेमें केट्टिलम्माके रहनेकी व्यवस्था करने तथा उण्णिनंङाको उनकी सेवाका भार देनेकी आज्ञा देकर वे बाहर निकल आए. नौकरोंको आदेश दे दिया गया कि वे अतिथियोंका परिचय किसीको न दें. पतिव्रता गृहिणी अपने पतिकी आज्ञाका अक्षरशः पालन करनेके लिए कटिबद्ध हो गई.

केट्टिलम्माको शिविकासे पलंगपर उतार लिया गया. शरीर बहुत जला हुआ तो नहीं था, फिर भी थकान बहुत थी और ज्वर भी था. उनको आराम देनेके लिए विशेष प्रबन्ध किया गया. केट्टिलम्माके साथ एक लड़कीको भी उतरते देखकर नम्पियारने उनके बारेमें पूछा और कम्मूने बता दिया कि अम्पु यजमानकी भानजी है.

"और तुम ?" नम्पियारने पूछा.

"मैं···मैं···ये मेरी दीदी हैं"—कहते हुए कम्मूने अन्तःपुरके दालान-में खड़ी हुई उण्णिनंङाकी ओर संकेत किया.

चद्रोत्तु नम्पियारको आयुर्वेदका सामान्य ज्ञान था. उन्होंने जान लिया कि जलनेसे केट्टिलम्माको शारीरिक कष्टकी अपेक्षा मानसिक

कष्ट अधिक हुआ है. अतः विश्रामकी अधिक आवश्यकता है. यदि आवश्यक हो तो दूसरे दिन वैद्यको बुलानेका उन्होंने निश्चय किया. अतिथियोंकी सेवामें उण्णिनंङा और अपनी पत्नीको छोड़कर वे बाहर निकल आये और उन्होंने सबसे पहले अम्पुनायरको समाचार देनेके लिए एक आदमी भेज दिया.

उण्णिनंङाको अपने भाईसे इस प्रकार अचानक भेंट हो जानेसे जो प्रसन्नता हुई उसकी अपेक्षा कई गुनी प्रसन्नता इस ख्यालसे हुई कि उसे केट्टिलम्माकी सेवा करनेका अवसर मिला. महाराजाकी प्राणवल्लभाका दर्शन मिलना ही वह अपना सौभाग्य मानती थी, फिर केट्टिलम्मा तो उसके प्रियतम अम्पु नायरकी आदरणीया बहन भी थी; अतएव उसके आनन्दका कोई ठिकाना ही न रहा. पलंगके पाससे क्षण-भरके लिए भी हटना उसे स्वीकार नहीं था. सोई हुई केट्टिलम्माके पैर दाबती हुई, आहार-निद्रादिकी कोई परवाह न करके, वह दिन-रात वहीं बैठी रही.

जब उण्णिनंङाको मालूम हुआ कि नीलुक्कुट्टी अम्पु नायरकी भानजी है तो उसे लगा कि इससे अधिक भाग्य और कुछ हो ही नहीं सकता था. ईश्वरकी कृपासे नीलुक्कुट्टीको आगसे कोई कष्ट नहीं हुआ था. माँके समान प्रिय माक्कम्‌के पास बैठकर नीलुक्कुट्टी और उण्णिनंङा एक-दूसरेको ढाढ़स बँधाती और सान्त्वना देती रहीं.

दोनोंके बीच अधिकतर बातचीत कम्मूके बारेमें हुई. तम्पुरानके कैनेरीमें पधारनेपर पषयंवीट्टिल चन्तु नायरसे कम्मू कैसे लड़ा और तम्पुराननें उसे कैसे आशीर्वाद दिया, यह सब नीलुक्कुट्टीने उण्णिनंङा-को बताया. उसके संकोचपूर्ण सम्भाषणसे उण्णिनंङाने समझ लिया कि कम्मूपर उसका अनुराग कितना दृढ़मूल है.

× × ×

केट्टिलम्माके चन्द्रोत्तु-भवन पहुँचनेके दूसरे दिन अपराह्नमें उस-प्रदेशका एक प्रख्यात कथकलि-संघ वहाँ आ पहुँचा. चन्द्रोत्तु-प्रभुको कथ-कलिमें विशेष रुचि नहीं थी, फिर भी उन दिनोंके प्रभुजनोंके नियमोंके

अनुसार उन्होंने उस संघको एक दिन खेल दिखानेकी अनुमति दे दी. जब केळिक्कोट्टु* आरम्भ हुआ तो उन्होंने संघके आचार्यको बुलाकर पूछा—"कौन-सी कथा दिखानेवाले हो ?"

संघके आचार्यने उत्तर दिया—"तिरुअनन्तपुरम् (त्रिवेन्द्रम्) के वारियर† नामक कविने 'नल-चरितं' को चार भागोंमें चार दिनके अभिनयके लिए तैयार किया है. हमने तीसरे दिनकी कथाका विचार किया है. हमारे संघमें 'काले नल'‡ का वेश लेनेके लिए एक अति कुशल व्यक्ति है. उसे देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे."

नम्पियारने कहा—हाँ, ठीक है. परन्तु मैं बहुत देरतक नहीं जाग सकूँगा.

"बहुत जागनेकी आवश्यकता नहीं. दो पद$ देख लेना पर्याप्त होगा. अभिनयकी विशेषता अपने-आप देख लीजिएगा."

रात्रिके भोजनके बाद दीप* लगाया गया और अभिनय शुरू हुआ. नम्पियार भी आकर यथास्थान बैठ गए.

नलका प्रवेश हुआ. प्रथम पदका अभिनय आरंभ हो गया. पदमें साहित्य-सौंदर्य भरपूर था. परन्तु अभिनयमें आचार्यकी प्रशंसाके योग्य

---

* देखो, पाद-टिप्पणी २, पृष्ठ ७४.

† उण्णाई वारियर नामक महाकवि, जिन्होंने कथकलिके लिए चार खंडोंमें नल-चरित आट्टकथाकी रचना की है.

‡ कार्कोटक नागके दंशनसे काले बने हुए राजा नल.

$ कथकलि की कथा (आट्टकथा) में दो भाग होते हैं—१ पद, २ श्लोक. पद वह भाग है जिसका गायन तथा अभिनय किया जाता है. श्लोक द्वारा शेष कथाका मौखिक वर्णन किया जाता है.

* कथकलिके मंचको प्रकाशित करनेके लिए एक बहुत बड़े दीप का उपयोग किया जाता है. दीप इतना बड़ा होता है कि उससे ही पर्याप्त प्रकाश फैल जाता है. उसे लगानेका अर्थ है—कथकलिका आरंभ.

कोई विशेषता नहीं दिखाई दी. नटका वेश और भाव अच्छा था. परन्तु, जहाँ इस अंशका अभिनय किया जा रहा था कि 'नगर-वाससे कानन-वास अच्छा है' वह बहुत ही अच्छा रहा. नम्पियारने भी पास बैठे हुए एक तम्पूतिरि मित्रसे उसकी प्रशंसा की.

कथा आगे बढ़ी. कार्कोटक नागके विषसे काले बने राजा नल रंग-भूमिपर आये. तब नटकी भाव-भंगी पूर्णतया बदली हुई थी. अभिनय किया गया—

काद्रवेयकुलतिलक ! निन्
कालतळिरे कूप्पुन्नेन्
आर्द्रभावं निन् मनक्काम्पिल
आवोळं वेण मेन्निल !

(हे कद्रु-पुत्रोंके वंश में श्रेष्ठ ! तुम्हारे चरणोंमें प्रणाम करता हूँ. तुम्हारे हृदयमें मेरे प्रति आर्द्रभाव हो जाय यही मेरी प्रार्थना है !)

नम्पूतिरि सिर हिला-हिलाकर प्रशंसा करने लगा, "भाव, अभिनय, नृत्य—सब एक समान उत्तम ! इससे अच्छा हो ही नहीं सकता !" नम्पियारको भी महसूस होने लगा कि इसके बारेमें आचार्यने जो कुछ कहा था वह ठीक ही है. दोनों उसके अभिनयपर मुग्ध हो गए.

कहानी आगे बढ़ी. कार्कोटकका वरदान पाकर राजा नल ऋतुपर्ण-की राजधानीमें पहुँचे और बाहुक नामसे राजाके सारथी बनकर रहने लगे. रातको जागकर वे दमयन्तीकी स्मृतिमें तड़पने लगे. पीछेसे गीत सुनाई दिया—

विजने, बत ! महति विपिने, नी—
उणर्निन्दु वदने !
वीणेन्तु चैवू कदने ?

(अति भयानक विजन विपिनमें हे चन्द्रमुखी प्रियतमे ! तुम जागती हुई, दुःख-सागरमें डूबी क्या कर रही होगी ?)

नलका वेदनापूर्ण स्वर, रंगभूमिमें प्रतिध्वनित होने लगा. बाहुकका अभिनय करनेवालेका सामर्थ्य अब सबने देखा.

अवने चेन्नायो ?
बन्धु भवने चेन्नायो भीरु ?
एन्नु काणमल् इन्दुसाम्यरुचिमुखम्
एन्नु पूणमन् इन्द्रकाम्य मुटलहं ?

(क्या तुम किसी आश्रममें पहुँच गई हो ? या हे भीरु, तुम किसी बन्धुके भवनमें पहुँची हो ? चन्द्रके समान तुम्हारा सुन्दर मुख अब मैं कब देख पाऊँगा ?)

इस स्थलपर अभिनयकी तन्मयता कुछ निराली ही हो गई. निषध-राजके बन्धुजन बहुत हैं, विदर्भराजके भी कम नहीं हैं. उनमेंसे किसके पास तुमने आश्रय लिया है ? किसी योग्य और प्रमुख प्रभुके पास ही तुम पहुँची होगी. यही नटके अभिनयका अर्थ था. *

नम्पियारके मनमें एकाएक एक विचार उठा. वे संभ्रमके साथ चारों ओर देखने लगे. एक बार ध्यानसे नटकी ओर देखा. उनसे वहाँ बैठा नहीं गया. शीघ्रतासे उठकर उन्होंने नम्मूतिरिसे कहा—"आप पूरा देखिए. मुझे कुछ अस्वस्थता मालूम हो रही है. मैं जाकर विश्राम करना चाहता हूँ."

नम्पियार भवनके ऊपरके खंडमें पहुँच गए और उन्होंने आचार्यको संदेशा भेजा कि बाहुकका अभिनय करनेवाले व्यक्तिको तुरन्त उनके पास भेज दें ! दृश्य समाप्त होते ही नट आचार्यके साथ नम्पियारके पास पहुँचा.

---

* कथकलिके पदसे जो सीधा अर्थ निकलता है केवल उतनेका ही अभिनय नट नहीं करता. वह अपने मनोधर्मके अनुसार अभिनय द्वारा शब्दोंकी विस्तृत व्याख्या भी करता है, जिससे अभिनयकी व्यापकता बहुत बढ़ जाती है.

पद-ध्वनिसे ही नम्पियार उठ खड़े हुए. अभिनेताको देखकर उन्होंने झुककर प्रणाम किया और अति विनयके साथ कहा—"बिना समाचार दिये इस प्रकार पधारे हैं." नेत्रोंके संकेतसे आशान † को बाहर भेजकर तम्पुराननें हँसकर कहा—"सब ठीक है. यह बताइए कि माक्कम् कैसी है ?"

"श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे उन्हें विशेष कष्ट नहीं है. शरीर जहाँ-तहाँ जल गया है. रोज दवा लगाई जाती है, ज्वर था सो वह भी आज कम है."

"कहाँ है ?"

"अन्तःपुरमें "

"तो अभी मिलना चाहता हूँ."

"जी ? यह वेश······ !"

"नम्पियारका कहना ठीक है."

नम्पियारने अन्दरके कमरेकी ओर संकेत करके कहा—"वहाँ हाथ-मुँह धोने और वस्त्र बदलनेका प्रबन्ध है."

नम्पियारने जिस विवेकसे काम लिया उसका महाराजाने हृदयसे अभिनन्दन किया. थोड़ी देरमें अन्तर्गृहसे निकले तो 'बाहुक' नहीं, कार्कोटक नागकी विष-बाधासे मुक्त साक्षात् नैषधके समान तेजस्वी महाराज केरलवर्मा थे !

नम्पियार मार्ग दिखाते हुए आगे और महाराज पीछे-पीछे चलते हुए अन्तःपुरके द्वारतक पहुँचे. वहाँ नम्पियार यह कहकर रुक गए कि "केट्टिलम्मा अन्दर हैं, मैं यहीं राह देखूँगा." महाराजाने अन्तर्गृहमें प्रवेश किया.

एक बत्तीके दीपकके मन्द प्रकाशमें महाराजाने देखा कि माक्कम् केट्टिलम्मा पलंगपर सो रही है. पास ही एक युवती बैठी उसपर पंखा

† आचार्य.

झल रही है. अपरिचित पुरुषका प्रवेश देखकर सीधे देखे बिना ही उसने कहा—"बाहर चले जाइए. यहाँ केट्टिलम्मा सो रही हैं."

"धीरे बोलो, जाग जायगी. डरो मत. मुझे एक बार देखना ही है." तम्पुरानने कहा.

उण्णिनंङाने पास ही सोई हुई नीलुक्कुट्टिको जगा दिया. आँखें खोलते ही नीलुककुट्टीने देखा सामने स्वयं तम्पुरान खड़े हैं. शीघ्रता-पूर्वक उठकर उसने झुककर प्रणाम किया. इससे उण्णिनंङाने भी अनुमान कर लिया कि ये महानुभाव कौन हो सकते हैं. दोनों ही पलंगसे कुछ दूर जाकर खड़ी हो गई.

महाराजा पलंगके एक कोनेपर बैठकर अपनी प्रियाके शरीरपर हाथ फेरने लगे. ज्वर और पीड़ाके कारण अर्ध-निद्रित माक्कम् एकदम जागी नहीं. परन्तु उसके मुखपर स्पर्शकी सुखानुभूति स्पष्ट दिखाई पड़ी. महाराजाका चेहरा वात्सल्य, आर्द्रता, अनुकम्पा, प्रेम आदिका रंगमंच-सा बन गया. उस सुखानुभवके कारण माक्कम् जागरण और सुषुप्तिकी मध्य दशामें पहुँच गई और कुछ बड़बड़ाने लगी. स्वप्नमें बोलती हुई समझकर महाराजा ध्यानसे सुनने लगे—"निकट न हों तो क्या, हृदय में तो हूँ—कभी तो याद आती ही होगी !—मेरे लिए यही काफी है—दूसरे लोग कुछ भी कहें—आपके हृदयमें—हाय ! मरनेके पहले एक बार देख पाती !—"

महाराजाने उसकी मानसिक अवस्था समझ ली. उन्होंने अपने-आप ही उत्तर दिया—"मेरी प्यारी माक्कम् ! तुम सुचरिता हो ! तुम्हारे बारेमें कौन क्या कहेगा ? उत्तर देनेवाला मैं नहीं बैठा हूँ ? ठीक है, मैं कहीं भी रहूँ, मेरे हृदयमें तुम सदा विराजमान रहोगी."

माक्कम्की आँखें खुलने लगीं. फिर भी उसे सब स्वप्न-सा ही मालूम हो रहा था. परन्तु जब पूर्णतः जाग गई तो 'स्वामी' कहकर उठने लगी. महाराजा ने प्यारके साथ उसे लिटा दिया और कहा—"उठो मत, थक

जाओगी." तब माक्कम्की समझमें आया कि वह स्वप्न नहीं, जाग्रतावस्था थी. लज्जित होकर मुख छिपानेका प्रयत्न करते हुए उसने कहा—"इस अभागिनीको देखनेके लिए इतने कष्ट उठाकर आप पधारे हैं. मेरे कारण मेरे स्वजनोंको कितना कष्ट होता है ! श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे एक बार देखनेको तो मिला !"

"मेरी माक्कम्को कुछ कष्ट हो जाय तो क्या मैं वहाँ नहीं पहुँचूँगा! दुखी न हो ! तीन-चार दिनमें तुम बिलकुल ठीक हो जाओगी. फिर हम सदा साथ ही रहेंगे. एक दिनके लिए भी अब तुमको नहीं छोड़ूँगा." महाराजाने उत्तर दिया.

माक्कम्ने कोई उत्तर नहीं दिया. तम्पुराननें फिर कहा—"जरा-सी स्वस्थ हो जाओ. तुरन्त ही कोट्टयं ले जानेका प्रबन्ध कर लिया है."

"तो अब वापस राज्यमें पधारनेवाले हैं ? लोग मालूम नहीं क्या-क्या कहते हैं. मुझे तो बिलकुल विश्वास नहीं हुआ कि इतना कष्ट सहन करनेके बाद इन म्लेच्छोंकी अधीनता स्वीकार करेंगे"—माक्कम्ने कहा.

"यह किसने कहा ? तुम्हें दुःख नहीं होना चाहिए. कंपनीके अधीन होकर केरलवर्मा कभी नहीं रहेगा."

"तो फिर मुझे कोई दुःख नहीं. घर जल जानेका भी मुझे कुछ बुरा नहीं लगता. एक घर गया तो क्या हो गया ? उससे भी बड़ा घर बना देनेवाले मेरे पास ही हैं. मुझे किस बातका दुःख ?"

"तुम्हारी बातोंसे मेरी भी हिम्मत बँधती है. तुम जल्दी अच्छी हो जाओ, बस इतना ही चाहिए. जब सुना कि दुष्टोंने कैतेरी-भवनमें आग लगा दी तो मेरे हृदयपर वज्र-सा गिर पड़ा था—'मेरी माक्कम् !' बस यही एक आह हृदयसे निकली थी. जबतक आकर देखा नहीं तबतक शान्ति नहीं थी. अच्छा, अब तुम सो जाओ. "

"तो क्या अभी जा रहे हैं ?"

"हाँ, एक बात रह गई. कुञ्ञानिने तुम्हारे लिए एक रक्षा-कवच लिखवाकर भेजा है, सँभालकर तुम्हारे हाथोंमें ही देनेको कहा है. कहती थी कि इसको तकियेके नीचे रखकर सोओगी तो जल्दी अच्छी हो जाओगी."

"मेरे ऊपर जीजीका दाक्षिण्य और वात्सल्य आपसे भी बढ़कर है. कहाँ है वह कवच ? किससे लिखवाया है ?"

तम्पुरानने वह छोटा-सा ताल-पत्र कपड़ेमें लिपटा हुआ ही माक्कम्‌को दे दिया. हाथमें लेते ही माक्कम्‌को याद हो आई. शरीरका दर्द, थकान आदि सब भूलकर सलज्ज भावसे बोली—"इस कवचको लिखने-वाले मन्त्रवादी अति चतुर और प्रयोग-समर्थ हैं. जीजीने ठीक ही कहा है. यह रक्षा हाथमें पहुँचते ही मेरा सभी दुःख-दर्द मिट जायगा. फिर, तकियेके नीचे रखकर सोऊँ तब तो कहना ही क्या है ?"

"अच्छा, वह मंत्र कैसा है ?" तम्पुरानने पूछा.

"मैं पढ़कर सुनाऊँ ?"

"हँसी कर रही हो. इस मन्द प्रकाशमें कैसे पढ़ोगी ?

"उसे पढ़नेकी आवश्यकता नहीं, मुझे याद है. सुनाऊँ ?"— **'जाती ! जातानुकम्पा भव !**"—माक्कम् धीरे-धीरे गुनगुनाने लगी.

तम्पुरान—"बस ! बस ! यही कुञ्ञानिने भेजा है ? तो अवश्य ही इससे अच्छी हो जाओगी. मेरा तो एक बार देख जानेका ही इरादा था."

तम्पुरानने खड़े होते-होते कहा—"नीलुक्कुट्टी, अच्छी तरह सँभालना, भला ?"

नीलुक्कुट्टी उण्णिनंङाके साथ आगे आ गई. उसने कहा—"तम्पुरान, सेवा करनेवाली तो यह नंङ-चेच्ची* है. एक क्षण भी पाससे हटती नहीं. दिन-रात यहीं रहती है."

---

* नंङ-दीदी. चेची—दीदी.

माक्कम्ने हाथ बढ़ाकर उण्णिनंङाको अपने पास बुलाया और महाराजसे कहा—"यह तो मेरी छोटी बहन ही है. कैतेरीमें उस दिन जिसे देखा था उस कम्मूकी बहन है."

उण्णिनंङा भक्ति-भावसे सिर नीचा किये खड़ी थी.

तम्पुरान—"ओहो ! मैं जानता हूँ. अम्पुकी रक्षा और तलश्शेरीकी सारी बातें मैंने सुनी हैं. मैं सदाके लिए तुम्हारा आभारी हूँ. अब तो कुछ पूछनेको शेष रहा ही नहीं.

माक्कम्—"यह क्या ? इसने दादाको भी बचाया ? वह कैसे ?"

तम्पुरान—अच्छी होनेपर इसीसे सुनना. कोट्टयं आओ तब इसे भी साथ लेती आना. उस समय मालूम होगा कि केरलवर्माके हृदयमें अपना उपकार करनेवालोंके लिए क्या स्थान है.

× × ×

आँगनमें कथकलि खूब जोरोंसे चल रही थी. अन्तःपुरसे बाहर निकलते ही सेवकोंसे अनुगत होकर तम्पुराननें नम्पियारके कमरेमें प्रवेश किया. वहाँ अम्पु और नम्पियार तम्पुरानकी राह देख रहे थे.

"अम्पु, कब आया ?" महाराजाने पूछा.

"अभी-अभी पहुँचा हूँ. यजमाननें* एक आदमी भेजा था. कोई विशेष बात तो नहीं होगी ?" अम्पु नायरनें प्रश्न किया.

महाराजाने समझ लिया कि आखिरी वाक्यका संबंध माक्कम्से है. अतएव उन्होंने उत्तर दिया—"कोई बात नहीं. थोड़ा-सा ज्वर है. दो-तीन दिनमें ठीक हो जायगी. अभी तुम कहाँसे आ रहे हो ?"

"तलश्शेरीसे."

"वहाँका कोई विशेष समाचार ? कर्नलके जानेका समाचार तो ठीक

---

* श्रीमान्.

है न ? कोई परिवर्तन तो नहीं है ?"

"नहीं, तैयारियाँ जोरोंसे हो रही हैं. देशमें इधर-उधर रखी गई सेनाओंके सब नायकोंको आमंत्रित किया गया है. इसमें कर्नलका उद्देश्य यह मालूम होता है कि जानेके पहले सबको समझा दिया जाय कि शासन किस प्रकार करना उचित होगा.

तम्पुरान—इसके लिए दिन कौन-सा निश्चित किया है ?

"बारह तारीख. सब गोरे सैनिक-कर्मचारियोंको ग्यारह तारीखको ही तलश्शेरी पहुँचनेकी आज्ञा दी गई है."

"हाँ, कर्नलका प्रबन्ध अच्छा है. क्यों नम्पियार ?"

नम्पियार—कर्नलके विदाई-समारोहका निमंत्रण यहाँ भी आया है.

तम्पुरान—अच्छा है. तो मुझे क्यों नहीं आमंत्रित किया ? इसके बारेमें गर्वनर-जनरलको लिखना ही होगा.

अम्पु—एक और समाचार है, तलश्शेरीमें कई लोगोंको गिरफ्तार कर लिया गया है. जिन-जिनके ऊपर हमारे सहायक होनेकी शंका होती है, सभीको कारागृहमें डाला जा रहा है. चिरुतक्कुट्टीके बारेमें भी पूछ-ताछ हो रही है. सुना है, जानेके पूर्व उसे फाँसीपर चढ़ा देनेकी कर्नलने शपथ ली है.

तम्पुरान—क्या ? स्त्रियोंको फाँसी ? यह तो कहीं सुना भी नहीं !

नम्पियार—चिरुतक्कुट्टीको फाँसी मिले तो बहुत बुरा होगा. उसने हमें बहुत सहायता दी है. उण्णिनंङाके लिए······

तम्पुरान—वह मैं सँभाल लूँगा. अब मुझे जाना है. नम्पियारसे मुझे एक बात कहनी है.

नम्पियार—नम्पियार आज्ञा सुननेके लिए सदा तैयार है.

तम्पुरान—अम्पु, तुम भी सुन लो. मैंने इकतालीसवें दिन* के दर्शन-

---

* मण्डल-व्रतकी समाप्तिके दिन.

के लिए कोट्टयं पहुँचनेका निश्चय कर लिया है. मैं चाहता हूँ, देशके सभी प्रमुख नेता उस समय वहाँ उपस्थित रहें. नम्पियारको भी अवश्य ही आना चाहिए. इस वर्ष सदासे अधिक धूम-धामके साथ व्रतकी समाप्ति करना चाहता हूँ.

"जो आज्ञा"—इतना ही उन दोनोंके मुखसे निकला.

इक्कीसवाँ अध्याय

तलश्शेरीमें कर्नलको यथोचित विदाई देनेकी सब तैयारियाँ हो रही थीं. वेलेस्लीका जाना सैनिक-अधिकारियोंको खल रहा था, किन्तु नागरिक अधिकारी मन-ही-मन प्रसन्न हो रहे थे. सुपरवाइजरने अपनी प्रसन्नता छिपानेका भी प्रयत्न नहीं किया. बेबरको मालूम था कि वेलेस्ली, जैसा हाकिम जबतक तलश्शेरीमें है तबतक उसे स्वयं दिवा-दीप ही बना रहना पड़ेगा. यही उसकी ईर्ष्या और स्पर्धाका मुख्य कारण था.

कर्नलके वापस बुलवाये जानेके लिए वह सब प्रकारके प्रयत्न बम्बई-सरकारके द्वारा कर ही रहा था. अब उसका जाना तय हो गया तो बेबरने समझा कि उसे संतुष्ट करके भेजना मेरे लिए भी अच्छा है. इसलिए वह सब तैयारियाँ करने लगा.

बेबरने अनुमान कर लिया था कि पेरेराका विलीन होना कर्नलकी ही किसी कार्रवाईका परिणाम है. चिन्तासे भरी हुई चिरुतक्कुट्टी भी उसे प्रेरित किया करती थी. सबके उत्तरमें बेबर कहा करता था—"अभी ठहर जाओ. निश्चिन्त हो जाओ. यह तो दो-चार दिनोंमें चला जायगा. बादमें सब देख लेंगे."

उसने अपने गुप्तचरोंसे यह जान लिया था कि कर्नल सिकुवेराके

द्वारा चिरुतक्कुट्टीके विरुद्ध कुछ षड्यन्त्र रचवा रहा है. उसका अनुमान था कि किसी प्रकारके झूठे प्रमाण एकत्रित करके वेलेस्ली उन दोनोंको नष्ट कर देनेका प्रयत्न कर रहा है.

उधर सिकुवेराकी जाँच-पड़ताल कुछ पूर्ण हुई. उसको इस बातका प्रमाण मिल गया कि चिरुतक्कुट्टी पेरेराकेद्वारा सब समाचार जान लेती थी और उन्हें किसी गुप्त जरियेसे तम्पुरानके पास पहुँचा देती थी. केरलवर्माके प्रबन्धकोंमेंसे एक कभी-कभी तलश्शेरी आकर उससे मिल जाया करता था. यह बात चिरुतक्कुट्टीके नौकरोंमेंसे एकने स्वीकार कर ली. चन्तु नायरने शपथ ली कि उसने चिरुतक्कुट्टीके हाथमें केरलवर्माकी एक अँगूठी देखी है.

सिकुवेराने चिरुतक्कुट्टीके बारेमें ही नहीं, मूसाके बारेमें भी जाँच की थी. परन्तु उस दिशामें उसे सफलता नहीं मिली. मूसा और चिरुतक्कुट्टीके बीच कुछ व्यापार-सम्बन्धी मेल-जोल है इससे अधिक कुछ प्रकट नहीं हुआ. पर्याप्त प्रमाण मिल जानेके बाद ही सिकुवेराने कर्नलको सूचना दी. चिरुतक्कुट्टी महाराजाको समाचार कैसे देती थी इसका प्रमाण न मिलनेसे कुछ कमी रह गई. उसके लोग बहुत कम तलश्शेरीके बाहर जाते थे. परन्तु इस कमीकी कर्नलने परवाह नहीं की. उसने आदेश दे दिया कि अब देरी करनेकी जरूरत नहीं है, उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जाय.

सिकुवेराने कहा—इसमें कुछ कठिनाई है. जबसे उसे मालूम हुआ है कि हम जाँच-पड़ताल कर रहे हैं तबसे वह सुपरवाइजरके बँगलेमें ही रहने लगी है. बेबर कहेंगे कि वहाँ जाकर गिरफ्तारी करनेका अधिकार सैनिकों को नहीं है. इतना ही नहीं, मूसाको लिये बिना मामला पूरा नहीं होगा.

कर्नल—हाँ, यह ठीक है. तब तो मामला बहुत कठिन हो जायगा. मूसाके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है. वह हमारी मदद भी करता है. पूर्ण प्रमाण मिले बिना उससे भिड़ना ठीक नहीं होगा.

सिकुवेरा—पेरेराके साथ जैसा किया गया उसी प्रकार गुप्त रूपसे बल-प्रयोग करके चिरुतक्कुट्टीको सुपरवाइजरके पाससे अलग कर लेना चाहिए.

कर्नल—सुपरवाइजरके बँगलेमें बल-प्रयोग ? यह नहीं हो सकता. चलो, मैं स्वयं ही बेबरसे मिलूँगा. तुम जाकर उससे कहो कि मैं मिलना चाहता हूँ. यहाँतक आनेकी कृपा करें.

थोड़े समयमें सुपरवाइजर वेलेस्लीके बँगलेमें आ गया. परस्पर अभिवादनके बाद कर्नलने कहा—"मिस्टर बेबर, सब समाचार अच्छे तो हैं ? जानेके पहले यह रिपोर्ट दे सकनेसे कि पष्शिका विद्रोह शान्त हो गया, मुझे प्रसन्नता है."

बेबर—आप एक ऊँचे पदपर नियुक्त होकर जा रहे हैं, इससे यहाँ सबको प्रसन्नता है. मराठोंके विरुद्ध हमारी सेनाके प्रधान सेनापति हम सभीके परिचित हैं यह बात मेरे-जैसे तुच्छ लोगोंके लिए भी सम्मान की है. परन्तु इसपर मुझे कोई विश्वास नहीं होता कि यहाँ सब शान्त हो गया."

कर्नल—क्यों ? आप ऐसा क्यों कहते हैं ? देशके सभी प्रमुख व्यक्तियोंने प्रतिज्ञा कर ली है कि वे किसी प्रकार पष्शिको न तो सहायता देंगे और न उनके साथ ही रहेंगे. आजकल पहाड़ोंकी ओर कोई भोजन-सामग्री जाती भी नहीं. इस एक महीनेमें सिद्ध हो चुका है कि पष्शिमें अब हिलनेकी भी शक्ति नहीं रही. मुझे तो विद्रोहका अब कोई लक्षण दिखलाई नहीं पड़ता.

बेबर—मुझे जो समाचार मिला है वह इसका समर्थन नहीं करता. पष्शि बिलकुल हिलता नहीं, यह बात सच है. परन्तु उसका वास्तविक उद्देश्य शायद कर्नलको नहीं मालूम. परन्तु यह मैं कैसे मानूँ कि इतने गुप्तचरों और सैनिकोंके होते हुए कर्नलसे ये बातें छिपी हुई हैं ?

अन्तिम शब्दोंमें निन्दाका कुछ स्फुरण कर्नलको प्रतीत हुआ. उभरनेवाले क्रोधको दबाते हुए उसने कहा—"आपने क्या सुना है ? यदि

कोई बात राज्यकी शान्तिके लिए बाधक हो तो मुझे तुरन्त बताइए.

बेवरने हँसते हुए कहा—संक्षेपमें कहता हूँ. इस एक महीने-भर पष़्शिश उदासीन नहीं रहा. उसने पूरा वयनाट्टु-प्रदेश अपने अधीन कर लिया है. वहाँ स्थायी रूपसे रहकर शासन करनेका सब प्रबन्ध पूरा हो गया है. कोयंबतूर और मैसूर आदि स्थानोंसे भोजन-सामग्री प्राप्त करने-का प्रबन्ध भी पूर्ण हो गया है. वह वयनाट्टुमें स्थिर हो गया तो इन सब स्थानोंपर आक्रमण करनेमें क्या कठिनाई रह जायगी ?

कर्नल क्षण-भरके लिए स्तब्ध हो गया. उसने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि पष़्शिश राजा इतना बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करेंगे. वह जानता था कि वयनाट्टुके पहाड़ोंमें युद्ध करना तो दूर, कम्पनीके सैनिक वहाँ प्रवेश भी नहीं कर सकेंगे. वह यह भी जानता था कि वह बन-प्रदेश अकेरलीय लोगोंके लिए यम-लोकका राज-मार्ग है. वहाँसे तम्पुरानको कोई मदद न मिल सके, इसीलिए एमन नायरको पकड़कर देश-निकाला दिया था.

कर्नलने कहा—आप लोग कुछ भी सुनकर कुछ भी कहते रहते हैं. पष़्शिश वयनाट्टुमें प्रवेश करके स्वयं मृत्युका वरण कर रहा है. इतना ही पर्याप्त है कि उसे वहाँ भोजन-सामग्री और आयुध न मिल सकें.

बेबर—ऐसा आप ही मानिए. मेरी जानकारी तो कुछ और ही बात कहती है. पष़्शिशने केवल भोजन-सामग्रीका ही नहीं, अन्य सहायताका भी प्रबन्ध कर लिया है. वहाँ जाकर निवास करते ही वह हमारे ऊपर आक्रमण करनेमें देरी नहीं करेगा.

कर्नल—कुछ भी हो, जबतक मैं यहाँ हूँ तबतक पष़्शिश कुछ नहीं करेगा. मेरे जानेके बाद तो आगे आनेवाले व्यक्तिकी जिम्मेदारी होगी.

वेबरने हास्य भावसे ही उत्तर दिया—ओहो ! अब आपका इरादा समझमें आ गया ! आप तो इतना ही चाहते हैं कि किसी प्रकार यह बताकर कि विजय प्राप्त कर ली, जय-भेरी बजाते हुए, ऊँचा स्थान और

मान पाकर यहाँसे चले जायँ. मैंने भी यही अनुमान किया था. अब तो आपने स्वयं स्वीकार कर लिया.

कर्नलको भी लगा कि गलत बात कह गया. फिर भी बेबरके परिहाससे उसे असह्य क्रोध आ रहा था. उसने दर्पके साथ कहा—"ये बेहूदा बातें बन्द करो. इतना घमण्ड मत दिखाओ. अधिक बोले तो जानते हो क्या परिणाम होगा ? समझकर बोलो कि किससे बातें कर रहे हो !"

बेबरने समझ लिया कि बात मर्म-स्थलतक पहुँच गई है. उसने फिर कहा—"जानता हूँ किससे बात कर रहा हूँ. आदरणीय गवर्नर-जनरलके सहोदरसे. वही रिश्ता सोच करके तो इतना अकड़ते हो ?"

आजतक वेलेस्लीके मुँहपर किसीने इस प्रकारकी बातें नहीं कही थीं. कुलीन, तेजस्वी और अपने महान् भविष्यमें विश्वास रखनेवाले उस महत्त्वाकांक्षीको यह आक्षेप गालपर चपत-जैसा लगा. परन्तु तुच्छ व्यक्तिके साथ वाद-विवाद करना अपने स्तरके लिए अनुचित समझकर उसने शान्त स्वरमें कहा—"सुपरवाइजर, तुम बदतमीजीके साथ बातें करते हो. हम उसका उत्तर नहीं देंगे. हम बात कर रहे थे पष्शिश राजाके बारेमें. जैसा तुम कह रहे थे वही यदि सच है तो उसका कारण तलश्शेरीमें ही रहनेवाले कुछ राजद्रोही हैं. मेरा विश्वास तो यह है कि तुम्हारा उस संगठन से कोई सम्बन्ध नहीं है. पर तुम्हारे बहुत नजदीकके कुछ लोग पष्शिश और उसके लोगोंको मदद पहुँचाते हैं इसका प्रमाण मुझे मिल चुका है. वास्तवमें उसी विषयमें सलाह लेनेके लिए तुमको कष्ट दिया है."

बेबर—यह कहनेका क्या अर्थ ? पष्शिशकी मदद करनेवाले मेरे नजदीक हैं ? मैं इसको एक निकृष्ट षड्यंत्र मानता हूँ. आपके प्रमाणों के अनुसार वे कौन व्यक्ति हैं ?

कर्नल—क्रोधको रोकिए. प्रमाण देखेंगे तो आपको भी मालूम हो जायगा कि घृणित और निकृष्ट वृत्ति किसकी है. पष्शिशको यहाँसे समाचार देनेवाले हैं—लुई पेरेरा और आपकी वह प्रेयसी—क्या है उस शैतान औरतका नाम ?

बेबर अति क्रुद्ध होकर खड़ा हो गया. "आपके-जैसे लोगोंको झूठे प्रमाण बना लेनेमें क्या कठिनाई हो सकती है ? पषश्शिको जीत लिया इसके झूठे प्रमाण बनाकर गवर्नर-जनरलके पास भेज देनेवाले के लिए क्या असाध्य है ? इस सबका लक्ष्य मैं जानता हूँ. मुझे गवर्नर-जनरलकी दृष्टिमें विद्रोही सिद्ध करना चाहते हैं न आप ? मैं भी आपका सब कच्चा-चिट्ठा बंबई-सरकारको लिख चुका हूँ. अब और बातें बनाकर मुझे तंग करनेसे कोई लाभ नहीं है."

कर्नलने यह नहीं सोचा था कि बेबरका व्यवहार इस प्रकारका होगा. उसे कोई उत्तर न सूझा और वह उलझनमें पड़ गया. आखिर उसने कहा—"मित्रवर ! आपको तंग करने या आपके ऊपर दोषारोपण करनेके लिए मैंने यह सब नहीं किया. मैं जानता हूँ कि आप विद्रोहियों-का साथ कदापि नहीं दे सकते. इसीलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप पेरेरा और उस स्त्रीको कारागारमें रखकर विचार शुरू कीजिए."

बेबर—मेरे दुभाषिये को बलात् पकड़कर लाया गया है. आपने स्वयं यह स्वीकार किया है. नागरिक कर्मचारियोंको इस प्रकार गिरफ्तार करनेका आपको क्या अधिकार है ?

कर्नल—कोई अधिकार नहीं. परन्तु उसने स्वयं लिखकर और हस्ता-क्षर करके जो यह कागज दिया है, उसे देखिए. उसके बाद कहिए कि मैंने क्या अन्याय किया है. मुझे कोई आग्रह नहीं कि कार्रवाई मैं ही करूँ. आपको वह स्वीकार नहीं होगा. हमारे बीच इतना मनोमालिन्य है तब इसका निर्णय अन्य निष्पक्ष लोगोंको करना चाहिए.

बेबर—जो सैनिक नहीं हैं उन सबपर मेरा पूर्ण अधिकार है. और किसीको विचार करनेका अधिकार भी नहीं है. यदि कोई अपनी सीमा-के बाहर जाय तो उसे भी दण्ड भोगना होगा.

कर्नल—यदि ऐसा हो तो मेरे पासके प्रमाण देखकर अन्य तटस्थ लोग निर्णय करें कि इन्हें बन्दी बनाना चाहिए अथवा नहीं.

बेबर—मुझे कोई आपत्ति नहीं है. परन्तु उस योग्य यहाँ है कौन ?

कर्नल—-एक सहायक सुपरवाइजर हो तो आपको मंजूर है ? दूसरा परसों यहाँ आनेवाले सैनिक-अधिकारियोंमेंसे एक हो सकता है.

बेबर—मुझे स्वीकार है. यदि आपके पासके प्रमाण ठीक हैं तो मैं उचित कार्रवाई करूँगा.

बेबर अपने बँगलेमें वापस आया. उसका विश्वास था कि चिरुतक्कुट्टी ऐसे कामोंमें हस्तक्षेप नहीं करेगी. चार वर्षोंसे अधिकके परिचयसे बेबरको मालूम था कि वह उसपर न्योछावर है. वह भी उससे वैसा ही प्रेम करता था. जो हुआ उसके बारेमें उसे कुछ बताना कर्नलके प्रति विश्वास-घात होगा यह समझकर उसने उनसे कुछ नहीं कहा.

चिरुतक्कुट्टीके ऊपर कर्नल अपराधका आरोप करनेवाला है यह बात सारी तलश्शेरीमें फैल गई थी. अपने नौकरोंद्वारा चिरुतक्कुट्टीको भी यह मालूम हो गया. वह इतना जानती थी कि कर्नल और बेबर में वैर है; इसलिए यदि कर्नलके विरुद्ध उसने कुछ किया है तो वह उसके प्राणप्रियके लिए हितकर होगा. और बीच-बीचमें वह यह भी सोचा करती थी कि महाराजा तो मेरे भी अन्नदाता हैं. उनका आदेश मानना मेरा भी कर्तव्य है. महाराजाको दबानेके लिए ही कर्नल आया था. इसी बात से वह उसे विरोधी मानती थी. बेबरके साथ उसकी स्पर्धाने इस वैरको बढ़ा दिया. इन सब कारणोंसे उसको कभी यह लगा ही नहीं कि उसने कोई अपराध किया है.

परन्तु दो-तीन दिन पूर्व छद्म वेशमें आये अम्पु नायरसे मिलकर उसकी यह शान्ति भंग हो गई. उन्होंने उसे बहुत-कुछ वस्तुस्थिति समझा दी. कर्नल जो जाँच कर रहा है वह सिद्ध हो गई तो राज-द्रोहके अपराधमें उसे दण्ड दिया जायगा. इसलिए अम्पु नायरने उससे तलश्शेरी छोड़कर उनके साथ जानेका आग्रह किया. उसने बेबरको छोड़कर स्व-रक्षाके लिए जानेसे साफ इन्कार कर दिया. उसका कहना था कि अब-तक जिसने आश्रय दिया उसे छोड़कर जाना उचित नहीं है. अम्पु नायर-ने बताया कि यदि वह तलश्शेरीमें ही रही तो बेबरपर भी विपत्ति

आ सकती है. परन्तु ईश्वर और महाराजाके बाद बेबरको ही सबसे बड़ा माननेवाली चिरुतक्कुट्टीको यह मजाक मालूम हुआ. उसे यह भी पता चला कि मूसा किसीको बताये बिना अपने जहाजद्वारा तलश्शेरी छोड़कर चला गया है.

अम्पु नायरके जानेके बाद उसे यह शंका होने लगी कि मेरे कारण कहीं सचमुच बेबरपर कोई विपत्ति न आ जाय. सुपरवाइजरसे उसने कई बार सुना था कि कर्नल गवर्नर-जनरलका भाई है, विलायतमें भी उसका बड़ा स्थान और ऊँची पदवी है और इन कारणोंसे वह बहुत शक्तिशाली है. यदि ऐसी बात है तो वह मेरे प्रियतमको नष्ट कर सकता है, यह शंका उसके मनमें जड़ पकड़ने लगी. चिन्तासे उसकी नींद और भूख भी जाती रही. अतिस्नेह आपत्तिकी शंकाका कारण है. उन शंकाओंको वह हटा नहीं सकी. उसे लगने लगा कि यदि मेरे कारण मेरे प्राणोंसे भी प्रिय बेबरको कोई हानि पहुँचे तो मेरे जीवनसे क्या लाभ ?

बेबर भी समझ गया कि चिरुतक्कुट्टी बहुत व्याकुल है. अत्यधिक दुःखके साथ उसने एक-दो बार बेबरसे कहा भी—'मेरे इस विफल जीवनसे क्या लाभ ? मेरे कारण आप भी विपत्तिमें फँस रहे हैं. मैं कहीं चली जाऊँ."

बेबरने सान्त्वना दी—उन शैतानोंको कुछ भी कहने दो. मैं जानता हूँ तुमने कोई अपराध नहीं किया. वेलेस्लीकी इच्छा है कि किसी प्रकार मुझे नष्ट करके जाय. इसीके लिए वह सब-कुछ कर रहा है. मगर अब तो वह जा ही रहा है.

चिरुतक्कुट्टी—वह आपके ऊपर कोई विपत्ति ला सकता है ? सुपरवाइजर तो आप हैं ?

बेबर—तुम क्या जानो ! उसने निश्चय किया तो मुझे समाप्त ही कर सकता है. हाँ, हमें भी मदद करनेवाले तो हैं ही. बंबई-सरकार हमारे पक्षमें है. मेरी बात मान भी लेगी. परन्तु गवर्नर-जनरल यदि कोई निर्णय करे तो उसके ऊपर कोई अधिकारी नहीं है.

चिरुतक्कुट्टी—अच्छा ! इतना बड़ा आदमी है वह ! सुपरवाइजर-को भी वह दण्ड दे सकता है !

चिरुतक्कुट्टीकी अज्ञतापर बेबर मुसकरा दिया. वह जानता था कि चिरुतक्कुट्टीके खयालसे वही कंपनीका अधीश्वर है. उसने समझाया, "गवर्नर-जनरलको सब अधिकार हैं. उसका पद बड़े-बड़े राजा-महा-राजाओंसे भी बड़ा है."

चिरुतक्कुट्टीके मुखपर भय प्रकट हुआ. गद्गद् कण्ठ होकर उसने कहा—"मैं···नहीं जानती···थी···कर्नल···!"

और वह मूर्छित होकर गिर पड़ी.

बाईसवाँ अध्याय

कोट्टयं नगरमें असाधारण हलचल दिखाई दे रही थी. वहाँ तैनात कम्पनीकी सेनाके नायक कप्तान स्मिथको भी यह अन्तर दिखलाई पड़ा. सभी घर विशेष रूपसे सजाये जा रहे थे. विविध स्थानोंसे अपार जनता शहरमें और बाहर एकत्रित हो रही थी. स्थानीय प्रभु-गृहोंमें तोरण तथा केले आदिके वृक्षोंका बाँधा जाना और सफेद रेतका बिछाया जाना देखकर कप्तान स्मिथने प्रमुख नायरोंको बुलाकर इसका कारण पूछा. नायरोंने उत्तर दिया कि देवीके मन्दिरमें वृश्चिक-व्रतकी समाप्ति मनाई जानेवाली है. यह हमारा वार्षिक त्योहार है और प्रति वर्ष धूम-धामसे मनाया जाता है. इस वर्ष भी हम उसे उसी प्रकार मनानेवाले हैं. कप्तानने अपने पार्श्ववर्ती कुरुम्ब्रनाट्टु राजाके प्रबन्धकोंसे पूछा तो उन्होंने भी इस बातका समर्थन किया. जब उन्होंने यह भी कहा कि यदि स्वास्थ्य अच्छा होता तो कुरुम्ब्रनाट्टु महाराज भी इसमें सम्मिलित होते तो कप्तानने मान लिया कि हमें इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करना है.

साथ ही, वेलेस्लीकी आज्ञाके अनुसार वह उसी दिन अपराह्नमें तलश्शेरीके लिए रवाना होनेवाला था. वेलेस्लीके केरल छोड़नेके पूर्व

स्मिथ उससे मिलना चाहता था. उसे यह भी समाचार मिला था कि सेनापति सब सैनिक-अधिकारियोंके साथ सलाह-मशविरा करके उन्हें कुछ निर्देश भी देनेवाला है. स्मिथके नीचे सौन्दरराज नायडू नामका एक उप-सेनापति था. उसे बुलाकर कोट्टयंकी रक्षाका आवश्यक प्रबंध करके स्मिथ जानेकी तैयारीमें लग गया.

जब सब तैयारियाँ लगभग पूर्ण हो चुकी थीं उस समय एक सैनिकने आकर निवेदन किया कि तलश्शेरीसे एक सैनिक टुकड़ी आ रही है और यहाँसे लगभग चार मीलपर पहुँच चुकी है.

"कम्पनीकी सेना ? इधर आ रही है या कूत्तुपरंपु जा रही है ? इधर सेना भेजनेकी तो कोई बात नहीं थी ?" स्मिथने पूछा.

सैनिकने उत्तर दिया—"सुना जाता है, सेना कम्पनीकी ही है. देशके किसी व्यक्तिको पास फटकने भी नहीं दिया जाता. चरका कहना है कि शायद महाराजासे युद्ध करनेके लिए किसी दूसरी जगह जा रही है."

कप्तान स्मिथने सूबेदार नायडूको बुलाकर आज्ञा दी कि कंपनीकी सेनाको, जो और कहीं जानेके लिए आ रही है, आवश्यक सहायता दी जाय. यदि वह कोट्टयं ही आ रही हो तो उसके नेताके साथ सौहार्दका बरताव किया जाय. परन्तु मेरे आनेतक उसकी अधीनता स्वीकार करना टाला जाय. निश्चित समयपर स्मिथ तलश्शेरीके लिए रवाना हो गया.

सूबेदार चतुर और नीति-निपुण था. उसने निश्चय किया कि दो व्यक्तियोंको भेजकर उस सेनाके नेतासे पता लगा लिया जाय कि सेना कहाँ जा रही है और दुर्गसे उसे किसी सहायताकी आवश्यकता है अथवा नहीं.

सेनाने शहरसे चार मील दूर पुराने राजमहलमें डेरा डाला था. वर्दी पहने और बन्दूक लिये सिपाही लोग चारों ओर पहरा दे रहे थे. इसलिए देशवासियोंमेंसे किसीको पास जानेकी हिम्मत नहीं होती थी.

जब देख लिया कि सेनाने पुराने राजमहलमें डेरा डाल लिया तो वे दल बनाकर कोट्टयंकी ओर चल पड़े.

संध्या होनेपर नायडूके सन्देशवाहक सेनानिवेशमें पहुँचे. सैनिक वेश देखकर पहरेदारोंने उन्हें रोका. जब उन्होंने अपना परिचय देकर आने-का उद्देश्य बताया तो एक पहरेदारने जाकर नायकको खबर दी और थोड़ी देरमें दोनों सन्देशवाहकोंको अन्दर जानेकी अनुमति दे दी गई. लगभग दो सौ सैनिक कर्नाटकी सेनाके गणवेशमें आँगनमें खड़े हुए थे. नेताके स्थानपर सूबेदार चोक्करायर विराजमान थे. उन्होंने कुशल-प्रश्न किया—"हमारे मित्र सौन्दरराज नायडूका सन्देश लेकर आये हो तुम लोग ? नायडू अच्छे तो हैं ?"

"जी हाँ ! सूबेदार साहब अच्छे हैं. उन्होंने पुछवाया है कि आपको किसी मददकी आवश्यकता तो नहीं है ?"

"तत्काल तो कोई आवश्यकता नहीं है. प्रातःकाल मैं स्वयं जाकर उनसे मिल आनेका विचार कर रहा हूँ."

दूतोंमेंसे एकने पूछा—"तो यह सेना कोट्टयं दुर्गमें नहीं जा रही है ?"

चोक्करायर—हमारा लक्ष्य फिलहाल गुप्त है. नायडूसे मिलनेपर मैं ही उनको बताऊँगा. कप्तान साहब तो रवाना हो गए होंगे ?

दूत—वे तो अपराह्णमें ही तलश्शेरीके लिए रवाना हो गए थे.

चोक्करायर—अच्छा, तुम लोग जरा बैठो. मैं अभी आया.

दूतोंको इस प्रकार बैठाकर चोक्करायरने अन्दर जाकर महाराजासे निवेदन किया कि स्मिथ जा चुका है और कोट्टयंकी सेनाको अबतक हमारे बारेमें कोई शंका नहीं हुई है. इसलिए आप अभी निकल पड़ें. रात अधिक होनेके पहले ही कोट्टयं पहुँच जाना सुविधाजनक होगा." महाराजाको चोक्करायरकी सलाह ठीक जँची और उन्होंने उसे स्वी-कार कर लिया.

चोक्करायर लौटकर दूतोंके पास आये और उन्होंने उनसे कहा—

"तुम लोगोंसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई. श्रीरंगपट्टनमें मैंने और नायडूने कन्धे-से-कन्धा मिलाकर युद्ध किया था. उसके पाससे आये हुए तुम लोगोंको ऐसे कैसे जाने दूँ ? रातको यहीं भोजन करके प्रभातमें मेरे साथ ही जाना."

दूत—आपके इस आदरके लिए हम आभारी हैं, परन्तु हमें आज ही, बल्कि अभी, लौटनेकी आज्ञा मिली है.

चोक्करायर—यदि उन्हें मालूम होता कि इस सेनाका नायक मैं हूँ तो कभी ऐसी आज्ञा न देते. कुछ भी हो, भोजन किये बिना तो हम आपको जाने नहीं दे सकते. समय भी अधिक हो रहा है.

उन्होंने भोजनोपरान्त जाना स्वीकार कर लिया और वहाँ बहुत देर-तक बातें होती रहीं.

इस बीच वहाँकी सारी सेना कोट्टयंके लिए रवाना हो गई. केवल सूबेदारके दरवाजेपर पहरा देनेवाले रह गए. दूतोंको इसका पता नहीं चला.

दूतोंको भेजनेके बाद सौंदरराज नायडू सब जगह देख-भाल करके और यह निश्चय करके कि सब ठीक है, अपने स्थानपर आ गया. रात्रि-भोजनका समय हुआ तब देवीके मन्दिरसे बाजों और भजनोंकी आवाज सुनाई दे रही थी. उसकी भी इच्छा होने लगी कि जाकर उत्सव देख आयँ. वह स्वयं देवी-भक्त था. परन्तु साहबकी अनुपस्थितिमें दुर्गको छोड़कर जाना उचित न समझकर उसने अपनी इच्छाको रोक लिया. संदेशवाहकोंके आनेमें विलम्ब देखकर वह कुछ चिन्तित भी हो उठा. इसी बीच एक सैनिकने आकर निवेदन किया कि पषयंवीट्टिल चन्तु सूबेदारसे मिलना चाहते हैं.

सूबेदारको मालूम था कि चन्तु नायर कंपनीका विश्वास-पात्र है, उसे कर्नलके पास जानेकी स्वतन्त्रता प्राप्त है और वह कप्तान स्मिथसे भी मिलने आया करता है इसलिए उसे तुरन्त बुला लानेकी आज्ञा दे दी.

चन्तु नायरने आकर निवेदन किया—तम्पुरान यहाँ कहीं पास ही

हैं. तीन दिन पहले चन्द्रोत्तुमें थे. वापस पहाड़पर नहीं गये. पचास सैनिकोंको मेरे साथ भेज दें तो उनके वापस जानेका मार्ग मैं रोक लूँगा.

सूबेदारकी समझमें नहीं आया कि क्या करना चाहिए. अपने अधीन छोटी-सी सेनासे पचास लोगोंको अलग कर देनेकी हिम्मत उसे नहीं हुई. उसने कहा—"कप्तान साहब यहाँ नहीं हैं. ऐसी हालतमें सेनाको कहीं भेजनेका अधिकार किसीको नहीं है. और यदि तम्पुरान यहाँ ही आक्रमण करें तो ?"

"तम्पुरानके साथ कोई नहीं है. इसलिए डरनेकी आवश्यकता नहीं कि वे यहाँ आक्रमण करेंगे. ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा. आप सेना भेजें तो लाभ मैं दिखा दूँगा."

नायडूने कुछ सोचनेके बाद कहा—"अच्छा, तो एक काम करें. कंपनीकी एक टुकड़ी यहाँसे चार मील दूर डेरा डाले पड़ी है. वह कहाँ जा रही है, पता नहीं. इधर ही आ रही है. तो जितने चाहिए उतने सैनिक उनसे ले लेंगे."

चन्तु नायरको यह सुनकर आश्चर्य हुआ. उसने पूछा—"क्या ? कंपनीकी सेना ? वहाँसे ऐसी कोई आज्ञा नहीं निकली. कल ही तो मैं कर्नलसे मिला था."

बाहर बन्दूककी आवाज सुनाई दी. चन्तु ताड़ गया कि यह तम्पुरान-की कार्रवाई है. उसने घबराकर कहा—"सूबेदार, संकट आ गया. मुझे किसी प्रकार बाहर निकाल दीजिए."

सूबेदारने चन्तु नायरकी बात सुनी ही नहीं. बन्दूककी आवाज सुनते ही वह सैनिक बाहरकी ओर दौड़ पड़ा और कुशलताके साथ अपनी सेना-को पंक्ति बनाने और युद्धके लिए तैयार हो जानेकी आज्ञा देने लगा. आवाज और कोलाहलसे स्पष्ट था कि आक्रमणकारी निकट आ रहे हैं.

गोपुरद्वार* पर पहरा देनेवाले गोली खाकर गिर पड़े. सूबेदारके

---

* दुर्गका मुख्य बाहरी द्वार.

राजमहलसे निकलनेके पहले ही महाराजा सेना समेत अन्दर प्रवेश कर चुके थे. सेनाका एक बड़ा भाग कप्तान स्मिथकी अनुपस्थितिका लाभ उठाकर मन्दिरमें उत्सव देखने चला गया था. जो बाकी थे उनका खयाल था कि कर्नाटककी सेना आक्रमण कर रही है, क्योंकि उसकी वेशभूषा-युद्ध-रीति आदि कुछ भी नायर-सेनाके समान नहीं थी. बन्दूकों-की आवाजोंके बीचसे जो आज्ञाएँ सुनाई पड़ती थीं वे भी कंपनीकी सेना-की थीं. दुर्गवासी सेनाकी समझमें नहीं आया कि कंपनीवाले क्यों उस-पर इस प्रकार आक्रमण कर रहे हैं! सूबेदारने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह सेनाको एकत्रित करने और महाराजाका सामना करनेमें समर्थ नहीं हुआ. अन्तमें उसे एक गोली लगी और बादमें दुर्ग तथा सेनापर अधि-कार कर लेनेमें कोई विलम्ब नहीं हुआ. कंपनीके बहुत-से लोग मर चुके थे. शेषने हार मानकर शस्त्र डाल दिये.

बन्दूककी पहली आवाजसे ही चन्तुको परिस्थितिका थोड़ा-बहुत ज्ञान हो गया था. प्राण बचानेकी चिन्तासे वह विह्वल हो उठा. तम्पुरानकी नीति-निपुणता और उनके समर-चातुर्यसे वह भली भाँति परिचित था. वह जानता था कि यदि महाराजा सामनेसे आक्रमण कर रहे हैं तो कुरिच्य सेना पीछे तैयार खड़ी होगी. उसके हाथसे बच जाना कठिन ही है. सूबेदारके साथ युद्ध-भूमिपर जायँ तो भी कहानी वही होगी. राज-मन्दिर-में कहीं छिपकर बैठ जाना भी सुरक्षित नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि तम्पुरान पुण्याहके लिए तत्काल राज-मन्दिरके कोने-कोनेको साफ करायँगे. और पकड़े जानेपर फाँसीके सिवा कोई अन्य आशा करना वृथा होगा.

उसको मालूम था कि राज-मन्दिरसे वन-प्रदेशको जानेके लिए कहीं सुरंग बनी हुई है. परन्तु अंधेरेमें उसे खोज निकालना संभव नहीं था. महाराजाको पिंजरबद्ध सिंह बनानेकी महत्त्वाकांक्षा रखने वाला चन्तु स्वयं व्याघ्रद्वारा खदेड़ा हुआ जम्बूक बन गया. इस परिस्थितिमें वहाँ रहना ठीक न समझकर वह किसी प्रकार अंधेरेमें ही गिरता-पड़ता दीवार-

के पास पहुँच गया. दुर्गके अन्दर उस समय भी बन्दूकोंकी आवाज हो रही थी, किन्तु उसका जोर कम होने और अन्य लक्षणोंसे उसने अनुमान कर लिया कि अब युद्ध समाप्तिपर आ गया है. ऊँचा गोपुर उसके-जैसे अभ्यासीके लिए कोई बड़ा बाधक नहीं था. पासके एक वृक्षपर चढ़कर वह दीवारपर कूद गया. उसे स्मरण हुआ कि दीवारके नीचे एक गहरी खाई है. प्राणोंके भयसे वह लक्ष्य बाँधकर खाई के उस पार कूदा और सफल भी हो गया. परन्तु कूदनेका शब्द आक्रमणकारियोंमें-से किसीने सुना और शब्दका संधानकर गोली दाग दी. चन्तुको गोली नहीं लगी, परन्तु पीछा करनेवालोंके भयसे वह भागने लगा.

भगवतीके मन्दिरसे तालप्पोली*का वाद्य उसे सुनाई पड़ रहा था. किसी प्रकार उस जन-समूहमें विलीन हो जानेके लिए वह व्याकुलतासे भागने लगा.

देवीकी श्रीसन्निधिमें बहुत धूमधामके साथ तालप्पोली हो रही थी. दुर्गके अन्दरके घोर युद्धका पता यहाँ मानो किसीको था ही नहीं. शुभ्र वेश-भूषासे अलंकृत कुलीन कुमारियाँ हाथोंमे पूजाके थाल लिये प्रदक्षिणा कर रही थीं. मन्दिरके आँगनमें देवी रूप चित्रित करके वाद्य-घोषके साथ देवी-स्तोत्रका गान करती हुई जनता भक्ति-विभोर हुई खड़ी थी.

मन्दिरके बाहर, गोपुरके समीप, जो जन-समूह खड़ा था उसीमें जाकर चन्तु नायरने प्रवेश किया. परन्तु उसी समय एक जोरकी आवाज

---

* मन्दिरके उत्सवका एक अंग होता है—देवीकी सवारी निकलना. देवीकी मूर्तिको मंदिरसे निकालकर और सजाकर अहातेमें प्रतिष्ठित किया जाता है और उसके समक्ष पुरुष शस्त्राभ्यासका प्रदर्शन करते हैं. बादमें स्त्रियाँ शृङ्गार करके और मंगल-थाल हाथमें लेकर देवी-के सामनेसे निकलती हैं. देवीकी सवारी बाजे-गाजेके साथ उनके पीछे चलती है और, इस प्रकार, मंदिरकी तीन प्रदक्षिणाएँ की जाती हैं. स्त्रियोंके इस समूहगत कार्यको 'तालप्पोली' कहा जाता है.

सुनाई दी—"वह आया मेरी देवीका बलि !" और एक मल्ल उसपर झपट पड़ा. रातको दिनके समान प्रकाशित करनेवाली दीप-शिखाओंके बीच, उस विश्वासघातीको व्याघ्रसे खदेड़े हुए जम्बूकके समान भागते और जन-समूहमें प्रवेश करते सभीने देख लिया था. उसे मौतके घाट उतार देनेके उद्देश्यसे उसपर आक्रमण करनेवाला और कोई नहीं, अम्पु नायर ही था.

तम्पुराननें दुर्गपर आक्रमण करते समय अपने साथके नायर-सैनिकों-को आज्ञा दे रखी थी कि वे मन्दिरमें प्रेक्षकोंके बीच सावधान होकर खड़े रहें और आवश्यकता पड़नेपर सहायताके लिए आ जायँ. उस नायर-सेनाका नेतृत्व अम्पु नायरके हाथमें था. इसीलिए प्रच्छन्न वेशमें वह अन्य प्रमुख व्यक्तियोंके साथ ऐसे स्थानपर खड़ा था जहाँसे सब आने-जाने वालोंको देखा जा सके.

चन्तुने भीड़में प्रवेश किया ही था कि दुःशासनको देखकर भीमसेन-के समान अम्पु नायर कम्मूके हाथसे तलवार लेकर उसपर झपट पड़े. कम्मू भी उनके पीछे हो लिया. पास आनेके बाद ही चन्तु नायरने अपने सालेको पहचाना. उसने "मरूँ तो क्या, तुमको तो मारकर ही मरूँगा" चिल्लाते हुए अम्पु नायरके ऊपर वायु-वेगसे अपनी तलवारका वार किया. अम्पु नायरको हटनेका समय भी नहीं मिला, परन्तु स्वामी-की रक्षामें जागरूक कम्मूने उस वारको अपनी ढालपर रोक लिया. अम्पु बच गए, परन्तु उनके कंधेपर तलवारकी धार लग ही गई.

जनताने अलग होकर द्वन्द्व-युद्धके लिए स्थान बना दिया. तुल्य अभ्यास तथा तुल्य पौरुषके इन दो वैरियोंमेंसे एकके मर जानेसे ही यह युद्ध समाप्त हो सकता था. दर्शक उत्सुकतासे परिणामकी प्रतीक्षा करने लगे. महाराजा स्वयं कहा करते थे कि आयुधधारियोंमें पप्पंवीट्टिल चन्तुके बराबर कोई नहीं है. चन्तु इसको प्रमाणित करता हुआ ही लड़ रहा था. पैशाचिक रौद्रताका रंगमंच बने हुए चेहरेके साथ चन्तु नायर और दृढ़ निश्चय प्रकट करने वाले शान्त-गंभीर भावके साथ अम्पु नायर

बहुत देरतक तुल्य नैपुण्यके असि-प्रयोग करते रहे. परन्तु चन्तुके असि-पराक्रमके सामने अम्पुका शरीर-लाघव मन्द पड़ने लगा.

चन्तु लड़ता-लड़ता थकने लगा तो अम्पु नायरने आत्म-रक्षाका तरीका छोड़कर आक्रमण आरम्भ किया. परन्तु चन्तुके शरीरमें एक खरौंच भी नहीं आई. अब अम्पु नायर थकने लगे और प्रेक्षकोंमें घबराहट शुरू हो गई.

दोनों बहुत थक गए थे, फिर भी चन्तुका बल अधिक मालूम होता था. उसने निश्चय कर लिया कि अब अम्पुको मारना आसान है. अम्पु नायरके वारोंकी शक्ति कम होने लगी और वार चूकने भी लगे. ढालकी पकड़ भी ढीली हो चली. ऐसे समय "अब ला तेरी गर्दन !" चीखते हुए चन्तुने अपनी सारी शक्ति लगाकर अम्पुपर प्रहार किया. परन्तु दैव गति ! एक केलेके छिलकेसे उसका पैर फिसल गया और जब वह गिरने लगा तो उसकी तलवार हाथसे छूटकर दूर जा पड़ी. अम्पु नायरकी तलवार और ढाल भी गिर चुकी थी. इसलिए उन्होंने अब मुष्टि-युद्ध आरम्भ कर दिया. प्राण-रक्षाके लिए लड़नेवाले चन्तुका पराक्रम किसी प्रकार कम नहीं होता था. उसकी पकड़में आये हुए अम्पु अपनी सारी शक्ति लगाकर छुटनेका प्रयत्न कर रहे थे. उसी समय चन्तुने अपने हाथ छोड़कर, पैर उठाकर एक झटका दिया, जिससे अम्पु नायर दूर जा गिरे. वह उठकर अम्पुपर फिरसे झपटना ही चाहता था कि स्वामीकी रक्षाके लिए तत्पर कम्मू तड़ित-वेगसे कूदकर उसकी छातीपर चढ़ बैठा. कैतेरीमें जो अपमान सहना पड़ा था उसकी यादसे ही क्रोधानल उगलते हुए उस युवक-केसरीको पहचानकर चन्तु तिरस्कारसे अट्टहास कर उठा. परन्तु उसकी शक्ति समाप्त हो चुकी थी. कम्मूके बलके नीचे वह दब गया. छातीपर बैठकर गला दबाने वाले कम्मूके मुखपर दुःशासनका वक्ष विदारित करने वाले भीमकी रौद्रता थी !

तेईसवाँ अध्याय

वृश्चिक-व्रत समाप्त करनेका शुभ दिन जब उदित हुआ तब कोट्टयं नगरमें एक मनोहर दृश्य उपस्थित था. नगरका घर-घर तोरण, बन्दनवार, कदली-वृक्ष आदिसे अलंकृत किया गया था. राज-वीथीपर प्रसन्न-वदन जनता शुभ्र वस्त्र पहनकर निश्चिन्तता और आनन्द प्रकट करती हुई विचरण कर रही थी. राजमहलके ऊपर ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी पताकाके बदले केरल-सिंहकी पताका लहरा रही थी. कम्पनीकी सेनाको परास्त करनेके बाद राज-मन्दिरमें महाराजाके वास करनेकी वार्ता प्रभातके पूर्व ही सारे देशमें फैल गई थी. कोट्टयं नगरकी आबाल-वृद्ध जनता उस रातको सोई नहीं अपने आराध्य देव तम्पुरानके दर्शन करनेकी उत्सुकतामें और उनके यशोगानमें ही उसने सारा समय व्यतीत कर दिया.

प्रभात होते ही सब ओरसे प्रमुख प्रभुजनोंका आना आरम्भ हो गया. कूटाळि नम्पियार, कीषूर वाषुन्नवर आदि प्रधान व्यक्ति बहुत पहले ही आ चुके थे. प्रातःकाल लगभग आठ बजे चन्द्रोत्तु नम्पियारने परिवार और सेवकोंके साथ नगरमें प्रवेश किया. उनके साथ दो अलंकृत शिविकाएँ भी थीं. जनता आश्चर्य करने लगी कि इनमें कौन हैं. नगरके

मुख्य द्वारपर ही महाराजाके प्रबन्धकर्ताओंने उन शिविकाओंका स्वागत किया और वे उन्हें राज-परिजनोंके संरक्षणमें आगे ले जाने लगे. यह देखकर जनताका औत्सुक्य और भी बढ़ गया. जब दोनों शिविकाएँ राज मन्दिरके अंत:पुरमें पहुँचीं तो बड़ी केट्टिलम्माने स्वयं आगे बढ़कर उनका स्वागत किया.

उस दिन राजोचित धूम-धामके साथ तम्पुरान देवी-दर्शनके लिए पधारे. अनुपम शिल्प-कलासे अलंकृत हाथीदाँतकी शिविकामें आरूढ़ होकर दोनों हाथोंमें वीरशृङ्खला और गलेमें मरकत-माला पहनकर, ब्राह्मणों, वेदपाठियों, सैनिकों और स्वजन-परिजनोंसे परिवृत्त होकर वे राजमंदिर-से देवी-मंदिरको गये. राजमार्गपर जनताने जय-जयकार करके अपनी राज-भक्ति और आनन्दका प्रकाशन किया. गोरोंको भगाकर हमारे अन्नदाता फिर से हमारा शासन करने आये हैं इसमें उस सीधी-सादी जनताको कोई शंका नहीं थी. पाश्चात्य म्लेच्छोंने कोट्टयं राजमहलमें कुछ दिन वास किया था इसे उसने एक दु:स्वप्नके समान भुला दिया. उसने मान लिया कि अब तम्पुरान ही हमारा राज करते रहेंगे.

दर्शन करके मन्दिरसे लौटे और भोजन करने बैठे तब दिन ढल चुका था. उसके बाद देशवासियोंको राजसी भोजन कराया गया. वेल्लूर एमन नायर, अम्पु नायर आदि प्रमुख व्यक्तियोंका सामर्थ्य उस समय देखने योग्य था. कलतक जो लोग जंगलों और पहाड़ोंमें थे और रात-दिनकी चिन्ता छोड़कर, भूख-प्यास सहकर देशकी स्वतन्त्रताके लिए लड़ रहे थे उन्हें ही आज भोजन करानेमें उत्साह दिखाते देखकर जनता मधुर शंकामें पड़ गई कि क्या सचमुच यही वे लोग हैं ! उन सबके मुँहसे लगातार सुनाई पड़ रहा था—"इधर खीर लाओ !", "कहाँ है रे केला !", "पहले यहाँ चाहिए !" "अरे रे ! इस पंक्तिमें काळन* नहीं पहुँचा !" आदि-जैसे सैनिक-पंक्तियोंमें, वैसे ही भोजन-पंक्तियोंमें

* केवल दहीकी कढ़ी.

भी ये आगे ही दिखलाई दिये ! जन-साधारणको भोजन परोस देनेके बाद ही इन प्रमुखोंको अपने भोजनकी सुध आई.

महाराजा के सचिवोंमें प्रमुख आठ लोग एक साथ भोजन करने बैठे. उन्हें भोजन करवानेके लिए और बात-चीतके औत्सुक्यके कारण अन्य प्रभुजन भी वहीं बैठ गए. कहनेकी आवश्यकता नहीं कि अपने आराध्य पुरुष महाराजाका पराक्रम, बुद्धि-वैभव, नय-निपुणता आदि ही उनकी चर्चाके विषय थे. उनकी प्रजा-वत्सलता, कर्त्तव्य-निष्ठा, भगवद्-भक्ति और श्रद्धा आदि गुणोंपर सभी एक समान मुग्ध थे. इन सब बातोंमें विशेष अभिरुचि न दिखाने वाले चन्द्रोत्तु नम्पियारने अन्तमें कहा—"एक बातसे मुझे बहुत आश्चर्य होता है. कंपनीकी एक प्रबल सैनिक-टुकड़ीके संरक्षणमें रहे इस नगरको आधे घंटेमें तम्पुराननें कैसे जीत लिया !"

इसका उत्तर वहाँ एकत्रित बहुत-से लोगोंको नहीं मालूम था. अपने नायकोंको अलग-अलग उत्तरदायित्व देकर इधर-उधर भेजनेके बाद ही तम्पुरान युद्धके लिए निकले थे. प्रधान सेनापति इडच्चेन कुंकन नायर-को ही पूरा रहस्य मालूम था. इसलिए उन्होंने ही उत्तर दिया—"युद्धमें विजय हो गई और उद्देश्य भी सफल हो गया, अब उस बातको गुप्त रखनेकी आवश्यकता नहीं है. मणत्तनाका युद्ध आप सब लोगोंको याद है. कर्नाटक सेनाका एक विभाग वहाँ था. लगभग सारी सेना वहाँ काम आ गई थी. उनकी सारी पोशाकें और शस्त्रादि हमने एकत्र कर लिए थे. उस सेनाके घायलोंको भी पकड़ लिया गया था. विगत दो मासोंसे मैं उन्हीं सैनिकोंद्वारा अपने सैनिकोंको कंपनी-सेनाकी युद्ध-पद्धतिका अभ्यास करा रहा था. पोषाक और बन्दूकें होनेके कारण उन्हें कर्नाटक-सेनासे अलग पहचानना कठिन था. उनका नेतृत्व महाराजाने चोक्करायर-को सौंपा. वे यहाँतक इस सेनाको ले आये. दुर्गकी सेना अन्ततक यह समझती रही थी कि यह कंपनीकी टुकड़ी है. युद्ध आरंभ होनेका समय

जब हुआ तभी तम्पुरानने नेतृत्व अपने हाथमें लिया. जो फल हुआ सो तो आप लोगोंने देख ही लिया है."

सबने आश्चर्य-चकित होकर तम्पुरानकी बुद्धि और रण-कुशलताका अभिनन्दन किया. चन्द्रोत्तु नम्पियारने कहा—"तम्पुरानने यह एक अति साहसका काम किया है. वेलेस्लीका इससे अधिक मान-भंग और किसी बातसे नहीं हो सकता."

इस बीच ही एक सेवकने आकर निवेदन किया कि नम्पियार और अम्पु नायरको महाराजाने याद किया है. दोनों क्षण-भरमें तम्पुरानके सामने उपस्थित हो गए. किसी प्रस्तावनाके बिना ही तम्पुरानने कहा — "तलश्शेरीसे एक समाचार आया है. उसके लिए तुरन्त कुछ करना चाहिए."

नम्पियार और अम्पु दोनोंने ही कुछ नहीं कहा. दोनों महाराजाके आदेशकी राह देखते रहे. महाराजाने फिर कहा—"यहाँ नम्पियारकी मदद ही काम दे सकती है."

नम्पियारने सिर झुकाकर कहा—"आज्ञा मिलने-भरकी देरी है."

महाराज—बात यह है, कर्नलने चिरुतक्कुट्टीको दण्ड देनेका निश्चय कर लिया है. वह अविवेकी है. स्त्री-हत्या करनेमें संकोच नहीं करेगा. उसको बचाना हमारा कर्तव्य है.

अम्पु—वह सुपरवाइजरको छोड़कर नहीं आयगी. मैंने वहुत समझाकर देखा. उसका निश्चय यही है कि जो हो सो हो, मैं सुपरवाइजरको छोड़कर नहीं जाऊँगी.

महाराजा—उस निश्चयको मैं ग़लत नहीं समझता. सुपरवाइजरके प्रति इतनी भक्ति और श्रद्धा है इसके लिए मैं उस स्त्रीका आदर करता हूँ. परन्तु उस बन्धनमें सुपरवाइजर कुछ कर नहीं पायगा. मालूम होता है कि कर्नलने जिद पकड़ ली है.

नम्पियार—आप आज्ञा दीजिए. अक्षरशः उसका पालन होगा.

महाराज—मुझे एक रास्ता सूझता है. मेजर होम्स, जो उण्णि-मूप्पनके पास हमारी कैदमें है, सुना है, गोरोंका एक प्रमुख व्यक्ति है. कप्तान स्टुवर्ट भी वैसा ही बड़ा आदमी है. मेजर होम्स वेलेस्लीका मित्र भी है. इसलिए मुझे लगता है कि यदि उसके पास संदेशा भेजा जाय कि चिरुतक्कुट्टिको छोड़ दो तो हम भी इन दोनों सेनानायकोंको छोड़नेको तैयार हैं, तो कार्य-सिद्धि हो जायगी.

पाश्चात्योंके आचार-विचारोंसे परिचित नम्पियारने सम्मति दी कि यह ठीक ही होगा. एक भारतीय स्त्रीका जीवन उनके लिए तुच्छ है. मेजर होम्स-जैसे व्यक्तियोंके बदलेमें वे कितने भी भारतीयोंको दे देनेमें संकोच नहीं करेंगे. इसमें सौ-फीसदी सफलता मिल सकती है. नम्पियारने यह भी कहा कि यदि एक पत्र लेकर जायँ तो ही कर्नल मानेगा.

तत्काल ही महाराजाने अपना रजत-नाराच लेकर ताल-पत्र पर लिखा—

"श्रीपोर्कलीकी जय.

"कोट्टयं राजमन्दिरमें विराजमान पुरळीश्वर श्री वीरप्रताप श्री श्री श्री केरलवर्मा कंपनीकी सेनाके नेता वेलेस्लीको बताना चाहते हैं—श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे अत्र कुशलं. विश्वास है कि वहाँ भी कुशल है. विशेष—हमें समाचार मिला है कि हमारे आश्रयमें रहनेवाली और हमारी प्रजा चिरुत नामकी स्त्रीको कर्नलकी आज्ञासे कारागृहमें रखा गया है और कर्नलकी कुछ ग़लतफहमीके कारण उसको कठिन दण्ड देनेका निश्चय किया गया है.

"हमारा धर्म और इस देशका आचार स्त्री-हत्याको स्वीकार नहीं करता. इस प्रकारका दण्ड हमारे राज्यमें दिया जायगा तो उसका पाप राजा होनेके कारण हमें ही लगेगा. अतएव यदि कर्नल इस पाप-कृत्यके लिए सन्नद्ध होंगे तो हम अपनी शत्रु-संहार-समर्थ कृपाणसे उसका प्रतिकार करनेको बाध्य हो जायँगे.

"इसके अतिरिक्त आपको स्मरण होगा, कंपनीके कर्मचारियोंमें-से मेजर होम्स, स्टुवर्ट आदि एक-दो गोरे लोग हमारे अधीन हैं. हमारे लोगोंके साथ आप धर्म और न्यायके अनुसार व्यवहार करें इसके लिए हम इन्हें बंधकके रूपमें मानते हैं.

"शेष इस पत्रको लानेवाले चन्द्रोत्तु नम्पियार मौखिक रूपसे बतायँगें."

पत्र लिखकर तम्पुराननें नम्पियारको बताया और कहा—"सब अच्छी तरह कहना. यह भी संकेत कर देना कि जंगलमें फाँसीके लिए अलग खम्भे गाड़नेकी जरूरत नहीं है. मददके लिए अम्पु साथ जायगा. आवश्यक अनुचरों और स्थानपतिके योग्य ठाट-बाटके साथ ही जाना. छिपकर तो नहीं जा रहे हो ?"

दोनों तत्काल ही विदा हो गए.

तम्पुरान राज-कार्यमें मग्न हो गए. दूर-दूरसे आये देश-प्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं और अन्य प्रमुख व्यक्तियोंसे मिलना उन्होंने अपना कर्तव्य समझा. प्रत्येकसे मिलकर, आवश्यकताके अनुसार वात्सल्य और ममता-के साथ बातें करके, विदा करनेके पूर्व सबको पारितोषिक आदि दिया. कम्पनीकी सेनाके आक्रमणके कारण जो हानि और विध्वंस हुआ था, उस सबके बारेमें लोगोंकी कहानियाँ सुनीं और सबको सान्त्वना तथा भविष्यम रक्षाका आश्वासन भी दिया. राज-भक्त प्रजाको उचित प्रोत्साहन देने, उदासीनोंको समझाकर नीति-नैपुण्यसे वशमें करने आदि राजनीतिक कार्योंमें ही बहुत-सा समय बीत गया. वेल्लूर यजमान, अरळात्तु नम्पि, कुंकन नायर आदि विश्वस्त मित्रोंके द्वारा देशवासियोंको अपने साथ दृढ़तासे बाँध लेनेका आदेश-निर्देश आदि भी उन्होंने बहुत सावधानीके साथ दिया.

सायंकाल होते-होते महाराजाको थोड़ा-सा विश्राम करनेका अवसर मिला. तब उन्होंने अरळात्तु नम्पि, एमन नायर और कुंकनको अपने अन्त-गृंहकी बैठकमें आनेका निमंत्रण दिया.

"क्यों, नम्पि, अब शुभ हुआ कि नहीं ?"

"इसमें क्या सन्देह ? यह तो हम लोगोंका सौभाग्य है कि हम अपनी आँखोंसे यह सब देख सके"—नम्पिने उत्तर दिया.

"नम्पिको शिकायत थी न कि मैं उदासीन हो गया था ?"

"महानुभावोंके हृदयकी गहनता मेरे-जैसे साधारण व्यक्ति कैसे समझ सकते हैं ? मैं क्षमा चाहता हूँ."

"नहीं, नहीं. मैंने कभी तुमको गलत समझा ही नहीं. परन्तु एक विशेष बात बतानेके लिए अभी मैंने आप लोगोंको यहाँ बुलाया है. अम्पु आदिके बारेमें नम्पिने कुछ शंका प्रकट की थी. अम्पु कम्पनीके साथ है और कैतेरीके लोग भी उस ओर झुके हुए हैं आदि भी कहा था न ?"

नम्पि लज्जित हुआ. परम सरल होनेके कारण जो-कुछ लोगोंसे सुना उसपर विश्वास कर लिया. महाराजाके प्रति भक्तिके कारण जो विश्वास किया सो सामने कह भी दिया.

तम्पुरानने कहा—मैं तुमको दोष नहीं दे रहा हूँ. उस प्रकारका एक अपवाद देश-भरमें फैला था. मैंने भी जगह-जगहसे सुना. इन सबने भी सुना होगा.

एमन नायरने अपनी ओर विशेष संकेत देखकर कहा—"मैंने भी सुना. केट्टिलम्माके बारेमें विशेष रूपसे बातें फैली थीं."

तम्पुरान—हाँ, माक्कम्के बारेमें भी इस प्रकारकी बातें करनेमें लोगोंने कसर नहीं रखी.

नम्पि—सबको पषयंवीट्टिल चन्तुने बिगाड़ा, यही लोगोंका कहना था. इस समय केट्टिलम्मा यहाँ नहीं हैं. इससे भी लोगोंकी शंका बढ़ी है. आज भी इसके बारेमें लोग बातें कर रहे थे.

महाराजाने दूर खड़े द्वारपालको बुलाकर कुछ कहा. वह अन्तःपुरमें चला गया. कुछ ही क्षणोंमें कुञ्ञानि केट्टिलम्माके साथ परस्पर हस्ता-

वलम्बी होकर मावकम् केट्टिलम्माने कमरेमें प्रवेश किया. उन्हें आते देखकर सबने उठकर अभिवादन किया.

"अब समझमें आया ?" तम्पुरानने पूछा. "मुझे मालूम है किसने ये बातें फैलाईं. अब कहनेसे क्या लाभ ? जैसा किया वैसा भोगा."

एमन नायर—चन्तुकी मृत्यु भयानक थी.

तम्पुरान—अन्यत्र व्यस्त रहा इसलिए सब-कुछ जान नहीं सका. क्या हुआ ?

एमन नायर—हमने जब दुर्गको घेरा तब वह अन्दर ही था. दीवार फाँदकर भाग निकलनेके प्रयत्नमें वह भगवतीके मन्दिरमें जन-समूहके बीच पहुँच गया. वहाँ अम्पुने उसे पकड़ लिया. भीम और दुःशासनके समान दोनों भिड़ गए. तलवारके युद्धमें अम्पुको विजय नहीं मिली. परन्तु पैर फिसलनेसे चन्तुकी तलवार छूट गई और मल्ल-युद्ध होने लगा. उसमें भी अम्पुको थका देखकर पास खड़े एक अन्य युवकने चन्तुके ऊपर झपटकर उसका काम तमाम कर दिया.

महाराज—क्या ? वह युवक कौन है जो चन्तुको मल्ल-युद्धमें हराकर मार सका ? उसका सामना करनेवाला केरलमें कोई नहीं था.

इसका उत्तर एडच्चेन कुंकन नायरने दिया—"आज सुबह अम्पुने सब बातें विस्तारसे बताईं. कैतेरीमें रहनेवाला एक कम्मू नामका युवक है, जिसने चन्तुको मारा. उसीने अम्पुको पहले भी बचाया था. युद्ध होनेके पहले ही चन्तुने तलवारका बार कर दिया था, उसे कम्मूने अपनी ढालपर ले लिया. ऐसा न किया होता तो शायद अम्पुकी कहानी वहीं समाप्त हो गई होती. तलवार ढालसे उचटकर कम्मूके कंधेपर भी लगी थी, परन्तु वह अपने स्थानपर डटा रहा. मल्ल-युद्धमें अम्पुको थकता हुआ देखकर वह आगे बढ़कर चन्तुसे भिड़ गया."

महाराज—ओहो ! समझ गया ! हमारी उण्णिनंङाका छोटा भाई है कम्मू. उसका पराक्रम इसके पहले भी एक बार मैंने स्वयं देखा था. जो उचित होगा, कर लूँगा.

फिर विषयको बदलकर महाराजाने दोनों केट्टिलम्माकी ओर संकेत करके कहा—"सुनो नम्पि, आज ये दोनों देवी-दर्शनके लिए जायँगी. तुम और एमन दोनों साथ हो लेना. लोकापवादसे डरना चाहिए. जनता देखकर ही जान ले."

तम्पुरानकी प्रजा-वत्सलता और सज्जनताने उन राज-भक्तोंकी आँखोंको सजल कर दिया.

चौबीसवाँ अध्याय

कर्नल वेलेस्लीके केरल छोड़कर जानेका दिन पास आने लगा तो परिस्थितियाँ भी कुछ बदलने लगीं. बेबरके पार्श्ववर्ती, जो अबतक दबे बैठे थे, अब सिर उठाने लगे. इतना ही नहीं, वे स्पष्ट रूपसे कर्नलको बुरा-भला भी कहने लगे. जब यह समाचार तलश्शेरी पहुँचा कि महाराजाने कोट्टयंकी सेनाका पूरा सफाया करके राजधानीपर अधिकार कर लिया है तब कर्नल और बेबरका पारस्परिक संघर्ष स्पष्टतया प्रकट हो गया.

बेबरने परिहास-भावसे कहा—"केरलवर्माका यह काम अनवसर चेष्टा हो गया." जब यह बात वेलेस्लीके पास पहुँची तो उसने महसूस किया कि यह मेरा ही नहीं, मेरे भाई गवर्नर-जनरलका भी अपमान है.

वेलेस्लीने गवर्नर-जनरलको लिख दिया था कि केरलवर्मा पराजित हो गया है और समस्त प्रदेशमें विद्रोहको दबा दिया गया है. सफलताकी इस रिपोर्टके बलपर ही गवर्नर-जनरलने उसे मराठोंसे लड़नेके लिए संगठित सेनाका प्रधान सेनापति नियुक्त किया था. अब केरलवर्माकी कार्रवाईसे वह सारी रिपोर्ट झूठी पड़ गई. गवर्नर-जनरलके विरोधी-दलके लोगों और बम्बई-सरकारके हाथ इस नई स्थितिसे मजबूत हो जायँगे. केरल-

वर्माके इस कार्यसे कर्नलका अभूतपूर्व तेजोभंग हुआ और उसने माना कि इससे मेरे मुँहपर कालिख-सी लग गई है.

कर्नलको इससे जितनी व्याकुलता हुई, बेबरको उतनी ही प्रसन्नता हुई. वह अन्दर-ही-अन्दर महसूस कर रहा था कि बम्बई-सरकारको तुच्छ माननेवाले कर्नलकी पराजय मेरी विजय है. वह सोचता था कि वेलेस्ली अब विजयी होकर घमण्ड तो न कर सकेगा.

इस व्याकुलतामें भी कर्नलने एक बातमें अपनी हठ नहीं छोड़ी. विद्रोहियोंको मदद करनेवाला जो संगठन तलश्शेरीमें था उसे नष्ट करनेका वह और भी तत्परतासे प्रयत्न करने लगा.

बेबरके साथ हुए निश्चयके अनुसार चिरुतक्कुट्टीके विरुद्ध पाये गए प्रमाण दो निष्पक्ष अधिकारियोंको सौंप दिये गए. उनको ठीक तरहसे जाँच लेनेके बाद उन्होंने निर्णय दिया कि मूसा, पेरेरा और चिरुतक्कुट्टी विद्रोहियोंके गुप्तचर रहे हैं, अतएव उन्हें सैनिक-नियमोंके अनुसार मृत्यु-दण्ड दिया जाना चाहिए.

मूसाके नगर छोड़नेकी बात इस निर्णयके बाद ही कर्नलको मालूम हुई. जब उसे गिरफ्तार करनेके लिए पता लगाया गया तो मालूम हुआ कि वह चतुर व्यापारी तीन-चार दिन पहले ही तलश्शेरी छोड़कर चला गया था. उसके प्रबंधकने बताया कि वे किसी कामके लिए कोलम्बो गये हैं.

निष्पक्ष न्यायाधिपतियोंका निश्चय बेबर आदिको बतानेके लिए कर्नलने एक सभाका ही आयोजन कर डाला. बेबर और उप-अधिकारीगण कर्नलके कार्यालयमें उपस्थित हुए, परन्तु किसीको यह पता नहीं था कि सभाका प्रयोजन क्या है ?

केरलके विविध प्रदेशोंसे आमंत्रित सेनाधिकारी, वेलेस्लीके अंगरक्षक और अन्य सैनिक कर्मचारी वहाँ पहलेसे ही उपस्थित थे. सबके यथास्थान बैठ जानेके बाद कर्नलने कहा—"परसों मैं यह देश छोड़कर जा रहा हूँ. महामान्य गवर्नर-जनरलके पाससे आदेश आया है कि मैं

दूसरे सेनापतिके नियुक्त होनेतकके लिए आप सबको रक्षाके तरीकेका निर्देश करके जाऊँ. अभी-अभी जो समाचार मिला है उससे स्पष्ट है कि उपद्रव अभी शान्त नहीं हुआ और केरलवर्मा अविवेक करता रहनेपर तुला हुआ है. इससे मेरी जिम्मेदारी बढ़ गई है. मैं सैनिकोंको आवश्यक आज्ञाएँ दे चुका हूँ. परन्तु किसी साम्राज्यकी जय और पराजय केवल सेनापर निर्भर नहीं करती. नागरिक अधिकारियोंका सहारा न मिले तो सेना दुर्बल हो जाती है. इस शहरमें हमारे विरुद्ध काम करनेवाला एक प्रबल दल है. इसका प्रमाण मिल चुका है. उस दलको जड़-मूलसे नष्ट-कर देना अति आवश्यक है. इसमें मेरे और नागरिक अधिकारियोंके बीच कुछ मतभेद था, इसलिए जो प्रमाण प्राप्त हुए हैं उन्हें दो निष्पक्ष निर्णायकोंके हाथोंमें सौंप दिया गया था. उनका निर्णय आज सुबह मेरे पास पहुँच गया है. उसके अनुसार दलके सूत्रधार मूसा मरय्कार, चिरु-तक्कुट्टी और पेरेराको सैनिक-नियमोंके अनुसार फाँसी दी जानी चाहिए. अन्य मददगारोंको गिरफ्तार करके कैदमें रखना चाहिए. आप लोगोंकी क्या राय है ?"

बेबर क्रोधसे आँखें लाल किये हुए खड़ा हो गया. थोड़ी देर तो आवेशके कारण वह कुछ कह ही न सका, बादमें बोला—"यह सम्मति न तो ठीक है और न उचित ही. केरलवर्मापर जोर न चल सका तो क्या अब स्त्रियोंपर गुस्सा निकाला जा रहा है ? अपने मित्र मूसाको तो पहले ही कहीं भेज दिया—बहुत न्यायी हैं आप ! इस निर्णयका मैं विरोध करता हूँ. इस मामलेपर विचार करनेका अधिकार नागरिक अधिकारियोंको है. इस सम्बन्धमें बम्बई-सरकारको लिख दिया गया है. उसका उत्तर आनेतक कोई कार्रवाई करना मुझे स्वीकार नहीं है."

सभाका वातावरण क्षुब्ध हो रहा था कि इतने मे ही एक सैनिकने आकर निवेदन किया कि केरलवर्माके दो स्थानपति कुछ महत्त्वपूर्ण संदेश लेकर कर्नलके पास आये हैं. समाचार सुनकर सभी लोग आश्चर्यमें पड़ गए.

कर्नल—क्या ? केरलवर्माके स्थानपति ?

सैनिक—जी हाँ ! सीधे कोट्टयंसे आये हैं.

बेबरने हँसी उड़ाते हुए कहा—विदाईके उपलक्ष्यमें केरलवर्माने कर्नलके लिए उपहार आदि भेजे होंगे ! कुछ भी हो पषश्शिने असमय बाधा डाल दी है !

वेलेस्लीने बढ़ते हुए क्रोधको दबाकर स्थानपतियोंको ले आनेकी आज्ञा दे दी.

अम्पु नायर और चन्द्रोत्तु नम्पियारने पदके अनुरूप वेश-भूषामें सभा-में प्रवेश किया. वहाँ एकत्र लोगोंमें से बहुत-से नम्पियारको जानते थे. परन्तु वेलेस्लीका उनसे परिचय नहीं था. फिर भी वेश और व्यक्तित्व आदिसे आदरणीय समझकर कर्नलने उनको बैठनेके लिए आमन्त्रित किया.

कर्नल—आप केरलवर्माके पाससे आ रहे हैं ?

नम्पियार—हम महामहिम कोट्टयं महाराजकी आज्ञासे ही आये हैं.

कर्नल—केरलवर्मा यहाँ क्या निवेदन करना चाहता है ? यदि संधि-प्रार्थना है तो पहले ही कहे देता हूँ, उसका समय बीत गया.

नम्पियारने एक मन्दहासके साथ उत्तर दिया—"विजयश्रीसे स्वयंवृत हमारे महाराजा सदा ही शान्तिप्रिय हैं. यदि अपने और देशके सम्मान-के लिए बाधक न हो तो वे किसी भी समय सन्धि करनेके लिए तैयार हैं. परंतु अभी हमारे आनेका उद्देश्य यह नहीं है. यह पत्र पढ़ लेंगे तो आपको सब मालूम हो जायगा. यह महाराजाने आपके लिए ही भेजा है.

रेशमके वस्त्रमें लपेटे हुए ताल-पत्र उन्होंने कर्नलके हाथमें दे दिये. उलट-पुलटकर देखनेके बाद उसने वे तालपत्र पढ़कर और अनुवाद करके सुनानेके लिए सिकुवेराके हाथमें दिये. उसने पत्र पढ़कर सबको अक्षरशः समझा दिया.

अनुवाद समाप्त हुआ तो कर्नलका मुख देखने योग्य था. क्रोधमें आकर वह बोलने लगा—"इस मूर्ख राजाका इतना साहस ! वह हमारे

साथ समान भावसे संधि-व्यवस्था करना चाहता है ! उससे कह देना कि राज-द्रोह के अपराधमें मृत्यु-दण्ड पाये हुए अपराधियों को साम्राज्याधिकार रखने वाली कंपनी कभी नहीं छोड़ेगी. और यदि उसने किसी गोरे व्यक्तिका बाल भी बाँका किया तो हम इस सारे देशको भस्म कर देनेमें भी संकोच नहीं करेंगे."

सिकुवेराने यह बात अनुवाद करके सुना दी. नम्पियारने कुछ सोचनेके बाद शान्तिके साथ फ्रांसीसी भाषामें कहा—"महाराजा कभी यह नहीं चाहते कि निरपराध व्यक्तियोंका रक्त बेकार बहाया जाय. वे जानते हैं कि मेजर होम्स एक आदरणीय सेना-नायक हैं और वे इंग्लैडके एक ऊँचे कुलमें पैदा हुए हैं. परन्तु अभी हमने आपके सामने जो व्यवस्था प्रस्तुत की है उसे न मानकर यदि आप कोई साहस करेंगे तो महाराजाका कथन केवल धमकी नहीं होगा. पुरळी पहाड़पर फाँसीके लिए विशेष खंभे खड़े करनेकी आवश्यकता नहीं है."

नम्पियारने यह सोच कर फ्रांसीसी भाषामें बात की कि सभामें कर्नलके अलावा कम-से-कम कुछ लोग तो फ्रांसीसी भाषा समझनेवाले होंगे ही, इसलिए यदि मैं उसमें बात करूँ तो वे भी साक्षी हो सकेंगे. फल अनुकूल ही निकला. उनकी बातें जो अधिकारी समझे वे एक-दूसरेकी ओर देखने लगे. उन्होंने महसूस किया कि "यदि केवल एक देशी स्त्री और एक दुभाषियेके लिए हमारे बीच के सम्मान्य लोगोंको फाँसी दी जाय और जानते हुए भी उसे रोका न जाय तो यह एक घोर अपराध होगा." उनका भाव समझकर बेबर परिहासके साथ बोला—"मेजर होम्स कुलीन हैं, वीर हैं, सम्मान्य सेना-नायक हैं, और इंग्लैंडमें उनके बहुत-से सम्बन्धी ऊँचे-ऊँचे पदों पर विराजमान हैं. कप्तान स्टुवर्टकी भी बात ऐसी ही है. ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षाके लिए यदि ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियोंके प्राणोंकी आहुति देनी पड़े, उनकी मृत देह कौओं और गिद्धोंकी शिकार बन जाय, तो भी क्या ? उनके लिए दुःखी होनेवाले हम मूर्ख हैं. यह मत सोचिए कि उनके प्राण एक तुच्छ स्त्री और एक दुभाषियेके प्राण

लेनेके लिए बलि किये जा रहे हैं ! यदि इनके कारण कंपनीका प्राबल्य नष्ट होता हो तो इन्हें छोड़ा कैसे जाय ?"

सैनिक-अधिकारियोंमेंसे कई एक-साथ चिल्ला उठे—"क्या कहते हैं ? मेजर होम्स आदिको फाँसीपर चढ़ाये जानेके लिए उनके हाथोंमें सौंप दें ? नहीं, कभी नहीं. इस स्त्रीको दण्ड देनेके दुराग्रहसे यदि हम मेजर होम्सके वधको स्वीकार कर लेंगे तो इसका अर्थ यह होगा कि हमने ही उनको अन्यायसे मार डाला."

वेलेस्लीने देखा कि अन्य कर्मचारियोंका मत भी वैसा ही है तो वह चिन्तामें पड़ गया—अब क्या किया जाय ? सैनिक अधिकारियोंकी बात न्याय-संगत है, ऐसा उसे भी लगा, और साधारण परिस्थितिमें वह केरल वर्माके प्रस्तावको सहर्ष स्वीकार भी कर लेता, परन्तु इस समय उसे लग रहा था कि इसमें बेबरकी विजय है. फिर भी दूसरा चारा न देख कर उसने फ्रांसीसी भाषामें ही उत्तर दिया—"आपका मतलब मैं समझ गया. इस दुश्चरित्रा स्त्रीको और उस तुच्छ दुभाषियेको मार डालने से कोई लाभ नहीं. यदि केरल वर्मा मेजर होम्स और कप्तान स्टुवर्टको स्वतन्त्र करके मेरे पास पहुँचा देनेके लिए तैयार हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं; कल सायंकालतक वे यहाँ आ जायँ."

नम्पियारने अपनी स्वीकृति दे दी. परन्तु उन्होंने कहा कि इस करारको लिखकर पक्का कर दिया जाय, अथवा दण्ड-प्राप्त व्यक्तियोंको कंपनीकी अधिकार-सीमाके बाहर रख दिया जाय.

बेबरने कहा—इसकी आवश्यकता नहीं है. मेजर होम्स आदिके यहाँ पहुँचते ही आपके लोगोंको मैं खुद आपके हाथोंमें सौंप दूँगा. परन्तु यह विनिमय स्वयं दण्डितोंको स्वीकार है या नहीं, यह भी तो जान लेना आवश्यक है ?

अन्य सैनिक-अधिकारियोंका मत था कि अंग्रेज-अधिकारियोंकी तुलनामें ये देशी लोग कीड़े-मकोड़ोंके समान हैं, इसलिए इनसे पूछ-ताछ करनेकी कोई गुञ्जाइश ही नहीं है. वेलेस्ली इस मामलेमें उदासीन मालूम

हुआ. उसने अन्तमें कहा—"परसों प्रभातके पहले हमारे लोग यहाँ पहुँच जायँ. आपको और कुछ तो कहना नहीं ?"

नम्पियारने मलयालम्में उत्तर दिया—"महाराजाने निवेदन करने की आज्ञा दी है कि उनकी कामना है, आपको यात्रामें कोई कष्ट न हो और आप सकुशल अपने निर्दिष्ट स्थानको पहुँच जायँ !"

वेलेस्लीकी कोपाग्निमें घृताहुति-सी पड़ गई. उसने समझ लिया कि महाराजा इस प्रकारके संदेशसे मुझे अपमानित कर रहे हैं. वह क्रोधसे आँखें लाल करके वहाँसे चला गया. सभा विसर्जित हो गई.

बेबरने बाहर निकलकर नम्पियारको पास बुलाया और उन्हें साथ लेकर बंगलेकी ओर चल दिया. उसने पूछा—"आप तो कंपनीके मित्र हैं, इस प्रकार कैसे आये ?"

नम्पियारने उत्तर दिया—"मैं कंपनीका मित्र होनेके कारण ही इस साहसके लिए तैयार हो गया। ईर्ष्यालु लोग मेरे इस प्रयत्नको गलत समझेंगे, परन्तु आपके-जैसे महानुभाव सच्ची स्थिति जान लेंगे. सच बताता हूँ. एक बार चिरुतक्कुट्टीने मुझपर एक भारी उपकार किया था. उसके खयालसे क्या उसको इस विपत्तिसे बचाना मेरा काम नहीं था ?"

बेबर—उसने आपकी क्या सहायता की थी !

नम्पियार—आपको याद नहीं. मेरे आश्रयमें रहनेवाली एक युवती-को कुछ सैनिक पकड़ लाये थे और आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके उसे छोड़ दिया था.

बेबर—ठीक ! आपने ठीक ही किया. आप न आते तो ये क्रूर उस बेचारी लड़कीकी हत्या ही कर डालते. मैं जानता हूँ कि वह निरप-राधिनी है. परन्तु केरल वर्माकी एक अंगूठी उसके पास निकली है. यही उसके विरुद्ध प्रमाण है. परन्तु क्या एक प्रकारकी अँगूठियाँ दो लोगोंके पास नहीं हो सकतीं ? मैं तो मान ही नहीं सकता कि चिरुतक्कुट्टीने कभी कोई गलती की है.

नम्पियार—उस अंगूठीके बारेमें संदेह नहीं होना चाहिए. वह महाराजाने एक बार मुझे दी थी. उस बालिकाको छुड़ानेमें जब उसने मेरी इतनी सहायता की तो मैंने ही कृतज्ञता-प्रकाशनके रूपमें वह उसको दी थी.

बेबर—अब मेरे हृदयसे भी एक भार उतर गया.

इतने समयमें वे तीनों बँगलेतक पहुँच चुके थे. एक नौकर घबराया हुआ सामने आया और उसने बेबरसे कुछ कहा. दरवाजा खुला तो वहाँका दृश्य भयानक था. वहाँ चिरुतक्कुट्टीका निष्प्राण शरीर पड़ा हुआ था. इतने समयतक चुपचाप चले आनेवाले अम्पुनायरने दौड़कर उसका सिर अपनी गोदमें ले लिया. नम्पियार आश्चर्यसे देखते खड़े रहे.

वे लोग वहाँ अधिक समय नहीं रुके. लौटते हुए अम्पु नायरने नम्पियारको सत्य स्थिति बताई. चिरुतक्कुट्टी उनकी पत्नीकी जुड़वाँ बहन थी. दोनों ही टीपूके आक्रमणके समय एक मुसलमान सेनापतिके हाथमें पड़ गई थीं. अम्पुकी पत्नीने आत्म-हत्या करके अपने मान तथा चरित्रकी रक्षा की. परन्तु उसकी अविवाहिता बहनकी उतनी हिम्मत न हुई. बादमें वह पेरेराके हाथमें आई. वही चिरुतक्कुट्टी थी.

अम्पुनायरने बताया—"अपनी पत्नीको खोजता हुआ मैं परदेशोंमें बहुत घूमा. बहुत लोगोंसे सुना था वह जीवित है और पेरेरा उसे किसी कोंकणस्थसे खरीदकर तलश्शेरीमें ले आया है. मैंने उसकी रक्षाके लिए बहुत प्रयत्न किया. परन्तु तलश्शेरीमें आकर जब उससे मिला तो सब सच बात मालूम हुई. वह मेरी पत्नी नहीं, चिरुतक्कुट्टी थी. उसने बेबरको छोड़कर आनेसे साफ इनकार कर दिया."

वह भ्रष्टा हो चुकी थी. अम्पु यदि उसे ले आता तो भी लाभ क्या होता ? उसने बहुत कष्ट सहे थें. परन्तु बादमें वह एक अनुराग-सुरभित जीवनमें पहुँच गई थी. इससे अम्पुको बहुत प्रसन्नता हुई. बेबर और चिरुतक्कुट्टीका पारस्परिक प्रेम असाधारण था.

नम्पियारके मुँहसे केवल एक उद्गार निकला—"हाय!"

पच्चीसवाँ अध्याय

पुरळीश्वरोंकी पुरातन राजधानीका कम्पनीकी सेनासे मुक्त करा लिया जाना समस्त केरलके लिए उल्लासका विषय था. कालीकटसे जब पुर्तगीज नौसेनापतिको हराकर भगाया गया, उसके बाद इतनी महत्त्वपूर्ण विजय किसी अन्य केरलीय राजाने नहीं पाई थी. कन्याकुमारीसे गोकर्ण तककी जनताने महाराजा केरलवर्माका अभिनन्दन किया. कोदण्ड शास्त्रीने कोट्टयंके राजाओंके विषयमें यह कहा था कि "**युद्धे येषां अहित हतये चण्डिका सन्निधत्ते**", उसका पण्डित लोग समर्थन करने लगे—"यह सच ही होना चाहिए ! श्री पोर्कली भगवतीने स्वयं युद्ध-क्षेत्रमें आकर सहायता की होगी !" लोग कहने लगे—"यही केरल-सिंह है !"

अपने महलमें रहकर तम्पुरान शासनका कार्य पूर्ववत् करने लगे. उनके सभी कार्यकर्ता सारा काम पूर्ववत् करनेमें निरत थे. अन्यान्य देशोंसे लोग तम्पुरानके लिए उपहार लेकर आते और इस बहाने दर्शन-कर जाते. तम्पुरान सबका यथोचित आदर-सत्कार करके और उन्हें अपना बनाकर ही विदा करते थे. उनका व्यवहार ऐसा था मानो अब सदा ही कोट्टयंमें रहेंगे. एक बातसे महाराजाको बहुत प्रसन्नता थी कि

मा।क्कम्-कोट्टिलम्माके बारेमें फैला हुआ अपवाद मिट गया. अग्निबाधा-से शरीरको जो हानि पहुँची थी वह पूरी तरह ठीक न होनेपर भी वह साध्वी बड़ी केट्टिलम्माके साथ और अपनी प्रतिष्ठाके अनुरूप स्वजन-परिजनों समेत प्रतिदिन देवी-दर्शनके लिए जाया करती थी. उसके बारे-में जो बातें फैली थीं उनसे तम्पुरान कितने व्याकुल थे यह केवल कुञ्ञानि केट्टिलम्मा ही जानती थीं. उसका पूर्ण निवारण करनेका प्रयत्न भी वे कर रही थीं.

तलश्शेरीसे आकर चन्द्रोत्तु नम्पियार और अम्पु नायरने सारा वृत्तांत तम्पुरानको सुनाया. उनकी सलाह थी कि चिरुतक्कुट्टीकी मृत्यु हो जानेसे अब वेलेस्लीके साथ किये हुए करारका पालन आवश्यक नहीं है. परन्तु तम्पुरानको यह स्वीकार नहीं था. उनका कहना था कि चिरु-तक्कुट्टीकी मृत्युकी जिम्मेदारी वेलेस्लीकी नहीं है. इसलिए अपनी ओरसे किया हुआ वादा पूर्ण करना ही उचित है. अन्ततः मेजर होम्स और कप्तान स्टुवर्टको वेलेस्लीके पास पहुँचा देनेका ही निश्चय किया गया. चोक्करायरने भी इस निर्णयका अभिनन्दन किया और कहा—"इनको कैदमें रखनेसे हमें कठिनाई ही होगी. अभी छोड़ दें तो उसका अर्थ यह होगा कि प्रतिफलकी इच्छा किये बिना ही हमने उदारता दिखाई. वेलेस्ली भी इसे समझेगा और ऐसा भी न माना जायगा कि हमने डरके कारण उनको छोड़ दिया है."

नम्पियारका ही दोनों बन्दियोंको तलश्शेरी ले जाकर वेलेस्लीको सौंप आना उचित माना गया. दोनों हाथोंके लिए वीर-शृङ्खला और बहु-मूल्य पारितोषिक आदि देकर उन्हें विदा करते हुए महाराजाने गुप्त रूपसे उनसे कहा—"आपको पता है, हमनें थोड़े ही दिनोंमें यहाँसे हट-कर वयनाट्टुमें स्थायी रूपसे रहनेका निश्चय किया है. इसलिए, पता नहीं, अब कब मिल सकेंगे. हम कहीं भी रहें, आपकी शक्ति और सहायता-का भरोसा है.

नम्पियारने गद्गद् होकर उत्तर दिया—"आप कहीं भी जाकर विराजें, हमारे लिए प्रत्यक्ष देवता और कोई नहीं है. श्री पोर्कली भगवतीकी कृपासे सब मंगल ही होगा."

नम्पियारके विदा होनेके बाद अम्पु नायर अन्तःपुरमें गये. माक्कम्के साथ उण्णिनंङा भी आई थी, परन्तु उससे मिलनेका अवसर अबतक उन्हें नहीं मिला था. यह जानकर कि अम्पु नायर माक्कम्के स्वास्थ्यके बारेमें जाननेके लिए आये हैं, बड़ी केट्टिलम्मा स्वयं स्वागतके लिए आई. उनके पीछे उण्णिनंङा भी थी. उसे देखकर अम्पुने समझ लिया कि मेरे आनेका सच्चा उद्देश्य बड़ी केट्टिलम्माने जान लिया है.

केट्टिलम्माने कहा—अनुजत्ती* का शरीर इधर-उधर थोड़ा-सा जल गया था. अब बहुत-कुछ ठीक हो गया है. घबरानेकी कोई बात नहीं.

अम्पु—जब आप चिंता करनेवाली हैं तब हम लोगोंको क्या घबराहट होगी ?

केट्टिलम्मा—चिन्ता मैं नहीं, यह करती है. इतना स्नेह और श्रद्धा मैंने कहीं नहीं देखी. माक्कम्की खाटसे अलग उण्णिनंङा देखनेको भी नहीं मिलती.

अपनी प्रशंसा सुनकर उण्णिनंङाने लज्जित होकर सिर झुका लिया. केट्टिलम्माने फिर कहा—"अम्पु नायर भाग्यशाली है. इस मातृहीन बालिकाका कन्या-दान मैं ही करनेवाली हूँ."

"क्या ? कुञ्ञानी, मुझसे नहीं पूछोगी ?—"महाराजकी आवाज सुनकर सब उठ खड़े हुए. "घबराओ नहीं," तम्पुरानने हँसते हुए कहा, "परन्तु कुञ्ञानीकी बात पूरी तरह मुझे स्वीकार नहीं. जिनके माता-पिता नहीं हैं उनका रक्षक राजा है. इसलिए इसका दान करनेका अधिकार मेरा है."

---

* अनुज-स्त्री; तद्भव—अनुजत्ती, अनियत्ती; छोटी बहन.

और अधिक सुननेके लिए उण्णिनंङा वहाँ खड़ी नहीं रही. वह भागकर माक्कम्के पास पहुँच गई.

केट्टिलम्माने तम्पुरानको उत्तर देते हुए कहा—"राजाधिकारमें हस्तक्षेप करनेका साहस मैं करूँगी ? कभी नहीं. सुना है—'**कंकणं राजहस्तेन**'; यहाँ '**कन्याका राजहस्तेन**' क्यों न हो ?"

तम्पुरान—सब यथासमय ठीक हो जायगा. क्यों अम्पु ! पष्यंवीट्टिल चन्तुके साथ मल्ल-युद्धकी कहानी हमने सुनी थी.

अम्पु—जी ! उसमें मुझे पराजय ही मिली !

तम्पुरानने मुसकराकर कहा—एक बार तो तुमने अपनी हार मानी ! मैं कहता था न कि उससे भिड़ना हो तो जरा सँभलकर भिड़ना ? अन्तमें उस कम्मूने ही···

अम्पु—जी ! पहले ही अपने ऊपर प्रहार झेलकर उसने मुझे बचा लिया. उस घावकी परवाह किये बिना अन्तमें मल्लयुद्ध करके उस चाणूरको उसने खत्म कर दिया. उसका पराक्रम असाधारण है.

तम्पुरान—मैंने भी एक बार कैतेरीमें देखा था. उसे ज्यादा घाव तो नहीं लगा ? कल सुबह मेरे पास लाना. उसे मैं अपना अंग-रक्षक बना लेना चाहता हूँ.

कुञ्ञानी केट्टिलम्मा—तो एक और कन्या-दान भी कर दीजिए. मालूम होता है, आज सबको खुश करनेपर ही तुले हुए हैं !

तम्पुरान—वह कौन ?

केट्टिलम्माने कम्मू और नीलुक्कुट्टीकी प्रेम-कथा भी महाराजको बताई.

"ऐसी बात है ? तो ठीक है." महाराजने अपनी सम्मति दे दी.

शीघ्र ही एक शुभ मुहूर्तमें दोनों विवाह महाराजाकी उपस्थितिमें सम्पन्न हो गए.

इन दोनों दम्पतियोंसे अधिक आनन्द माक्कम्को हुआ. उण्णिनंङाके साथ उसका स्नेह सहोदरीके समान हो गया था. वह कहा करती थी कि

उण्णिनंङाकी स्नेहमय सेवा न होती तो मैं बचती ही नहीं. अब वह उण्णिनंङाको चिढ़ानेके लिए बहुधा कहने लगती—"जान गई, इतने स्नेहका कारण क्या था !" और उण्णिनंङा रूठकर मुँह फेर लेती थी.

× × ×

महाराजाकी आज्ञाके अनुसार उण्णिमूप्पनने मेजर होम्स और कप्तान स्टुवर्टको चन्द्रोत्तु भवनमें पहुँचा दिया. पूर्व-निश्चयके अनुसार जब नम्पियार उन्हें लेकर तलश्शेरी पहुँचे उस समय वेलेस्ली जहाजके लिए अपने वासस्थानसे निकल चुका था. बन्दरस्थानमें उसके विदाई-सत्कारके लिए सब सैनिक तथा नागरिक अधिकारी उपस्थित थे. बेबर भी प्रमुख स्थानपर सर्वोच्च अधिकारी बनकर खड़ा था. वेलेस्लीके मुखपर ग्लानि थी, फिर भी उसने स्नेहपूर्वक सबसे विदा ली और सुपरवाइजरसे कहा—"मैं मलयाल-प्रदेशसे जा रहा हूँ. मेरी इच्छा थी कि केरलवर्मा को दबाकर यहाँ स्थायी शान्ति स्थापित करके जाऊँ. दैवगतिसे मेरी योजनाएँ पूर्णतः सफल नहीं हुई. इसके अतिरिक्त मेजर होम्स और कप्तान स्टुवर्ट शत्रुके हाथमें हैं यह भी मेरे लिए अपमानका विषय है. एक बात तो निश्चित है. यदि आवश्यकता हुई तो अपने प्रारम्भ किये हुए इस कार्यको पूर्ण करनेके लिए मैं फिर यहाँ आनेमें संकोच नहीं करूँगा. केरलवर्मा जबतक अधीन नहीं होता तबतक मैं अपने-आपको पराजित ही मानता हूँ."

वेबर—आपको व्याकुल नहीं होना चाहिए. यहाँके छोटे-छोटे दंगों-को शान्त करनेके लिए आप-जैसे महान् सेनापतियोंकी आवश्यकता नहीं है. वे सब धीरे-धीरे अपने-आप शान्त हो जायँगे.

बेबरकी बात पूरी भी न हो पाई थी कि बाहरसे संदेश आया—केरलवर्माके पाससे संदेशवाहक आया है. आज्ञा पाकर नम्पियार कर्नलके सामने आये और फ्रांसीसी भाषामें बोले—"हम जो बन्दी-विनिमय चाहते

थे वह ईश्वरकी इच्छासे पूर्ण नहीं हुआ. फिर भी महानुभाव महाराजा-ने आपके उद्देश्यका अभिनन्दन करके इन बन्दियोंको आपके पास भेज दिया है."

वेलेस्लीका म्लान मुख खिल उठा. उसने फ्रांसीसी भाषामें ही उत्तर दिया—"महाराजासे निवेदन कीजिए कि मणत्तनामें सेनाको नष्ट कर देने या कोट्टयंपर अधिकार कर लेनेसे वेलेस्ली पराजित नहीं हुआ था ; परन्तु उनके इस वीरोचित कार्यसे वह आज पराजित हो गया है. इतनी योग्यता, बुद्धि, गुण और स्वातन्त्र्य-बुद्धि रखनेवाले महाराजासे कंपनीको वैर-भाव रखना पड़ता है यह मेरे लिए दुःखका कारण है. मैं स्वयं उनकी महत्ता और उदारताके बारेमें गवर्नर-जनरलसे निवेदन करूँगा."

नम्पियारने महाराजाकी ओरसे कर्नलको धन्यवाद दिया. दोनों बन्दी उपस्थित अधिकारियोंसे मिलनेके बाद कर्नलके साथ ही जहाजपर बैठ गए, सबके जय-जयकारके बीच जहाज रवाना हुआ. जब सब लोग अपने-अपने स्थानको प्रस्थान करने लगे तब बेबरने नम्पियारसे कहा—"कैसे-कैसे षड्यंत्र रचे इस कर्नलने ! महाराजाका कोई गुप्त सहायक यहाँ था तो वह मुसलमान था. उसे पहले ही यहाँसे खिसका दिया !"

नम्पियारने उत्तर दिया—यहाँ गुप्त सहायक ? मुझे तो विश्वास नहीं होता !

बेबर—कुछ भी हो, आज आपने कंपनीका बड़ा काम किया. मैं इसे कभी नहीं भूलूँगा. कर्नलके जानेके बाद वे लोग कैदमें रह जाते तो जिम्मेदारी मुझपर आ जाती.

नम्पियार—यह सब कर सकनेका मुझे आनन्द है. कंपनीकी मददसे ही तो हमारे-जैसोंका गुजारा है. कर्नलके विदाई-समारोहमें सम्मिलित होनेका सौभाग्य भी मिल गया. सब शुभ ही हुआ.

अच्छा-अच्छा ! अब हमारे बँगलेमें आकर, काफी पीकर जाना.

× × ×

कर्नल वेलेस्लीको गए दो दिन बीत गये थे. महाराजा केरलवर्मा मन्त्रियों, सेनापतियों आदिके साथ राज-सभामें बैठे थे. वहाँ चोक्करायर दर्शनोंके लिए आये. महाराजाने आदरके साथ उनका स्वागत करके अर्धासनपर बैठाया और बादमें कहा—"मित्रवर—नहीं-नहीं, मेरे भाई! कुछ दिन और मेरे साथ न रहोगे ?"

चोक्करायर—आपकी सेवामें यहीं बना रह सकूँ तो मेरा अहो-भाग्य ! परन्तु आप सब जानते हैं. मेरे मालिक और मेरी मातृभूमिकी पुकार है. उनकी सेवा मेरा प्रथम कर्तव्य है.

तम्पुरान—उनमें मैं कभी बाधक नहीं बनूँगा. मैसूर राज्यकी स्थिति सोचनेपर कौन कह सकता है कि आपकी उपस्थिति वहाँ आवश्यक नहीं है ? महामनस्विनी राजमाता और अपने युवक महाराजाके प्रति मेरी शुभकामना निवेदित कीजिए. मैं कुछ स्नेहसूचक उपहार साथ दे रहा हूँ वे भी उनको सादर समर्पित कीजिए.

चोक्करायर—आपका पावन चरित उस राजधानीमें सदा ही चर्चा-का विषय रहता है. इसलिए कुछ अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं. मैं जो थोड़े दिन आपकी सेवामें रह सका इसे चण्डिका देवीका ही बर-दान समझता हूँ. आपको मुझपर इतना स्नेह और विश्वास हुआ यह मेरे पूर्व सुकृतोंका फल है.

तम्पुरान—ऐसा न कहिए. आपने मेरी जो मदद की उसके लिए मैं आजीवन आपका ऋणी रहूँगा. सोचकर देखिए—मैं जो आज इस राज-धानीमें अभिमानके साथ बैठा हूँ उसका कारण आप ही हैं न ? कोट्टयं नगर मैंने नहीं, आपने जीता है.

चोक्करायर—महानुभावोंके लिए नम्रता ही सबसे बड़ा गुण है. आपके यह कहनेसे मुझे आश्चर्य नहीं होता.

तम्पुरान—यही नहीं, वयनाट्टुमें आपने जो प्रबन्ध किया है वह इससे भी कितना अधिक महत्त्वपूर्ण है ? उससे हमारी रक्षा सुनिश्चित

हो गई. अब कितने भी वेलेस्ली क्यों न आ जायँ, कितनी भी बन्दूकें क्यों न ले आयँ, आपका प्रबन्ध जबतक कायम है, वयनाट्टु सुरक्षित है.

चोक्करायर—मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि आपको वयनाट्टु जानेकी आवश्यकता ही न हो. यदि जाना ही पड़े तो मेरे प्रबन्धमें कोई अन्तर नहीं पड़ेगा.

तम्पुरान—अभी यहीं रहनेका इरादा है. तलष्कल चन्तुने समाचार दिया है कि वयनाट्टुमें तैयारी पूरी है. भविष्यमें, वेलेस्लीके बदलेमें आनेवाले व्यक्तिको देखकर निश्चय करूँगा.

चोक्करायर—तो, अब आज्ञा दीजिए.

महाराजाने भद्रासनसे उठकर चोक्करायरका स्नेहके साथ आलिंगन किया. उन्होंने चोक्करायरको सुरक्षित स्थानतक पहुँचा देनेके लिए वेल्लूर एमन नायरको आज्ञा देते हुए कहा—"तुमको मैं वयनाट्टूका अधिकारी नियुक्त करता हूँ. वहाँ सदैव पूरी तैयारी रखना."

चौक्करायरको विदा करके महाराजा अन्तःपुरमें गये. वहाँ माक्कम् एक झूलेपर बैठी हुई थी. साथमें उण्णिनंङा और नीलुक्कुट्टी भी थीं. महाराजाको देखकर दोनों चली गईं.

माक्कम्—आज इतनी जल्दी सभा विसर्जित करके कैसे आ गए ?

महाराजा—क्यों ? बेअवसर आ पहुँचा ?

माक्कम्—कभी एक झलक पाना भी तो कठिन है. ऐसे लोगोंके लिए भी बेअवसर होता है ?

महाराजा—अब तो ऐसी बात नहीं है. कुछ दिन यहीं रहनेका निश्चय किया है.

माक्कम्—हाँ, हाँ ! मैं सब जानती हूँ. जीजीने सब कहा है. अब जायँगे तो साथ मैं भी हूँगी. मैं यहाँ रहूँ तो लोग कुछ-कुछ कहते हैं. आप भी तो कहते हैं—फूल सजाकर बैठी हूँ ! स्वामी गहन वन में और मैं जाति, मल्लिका और केतकीको एक साथ साजकर महलमें ! इससे अधिक अपवाद और क्या हो सकता है ?

महाराजा—अपनी गलती मैंने स्वीकार कर ली, देवि ! अब ऐसा नहीं लिखूँगा. "**जाती ! जातानुकम्पा भव** !" भी आगे नहीं कहूँगा. प्रतिज्ञा करता हूँ.

माक्कम्— फिर भी उस जाति-पुष्पके प्रति मैं बहुत कृतज्ञ हूँ. कितने दिन उस श्लोकको रट-रटकर मैंने अपने-आपको शान्त रखा है ! जीजीने भी तो कहा था कि वह मेरे रोगोंके लिए रामबाण औषधि है ?

महाराजा—देखो तो सही ! यही तो स्त्रियोंकी विपरीत बुद्धि है !